कुरआन, हदीस और सच्चे वाकिआत की रौशनी में



बुज़ुर्गों के अकीदे

फकीहे मिल्लत मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

मक्तबा फ़कीहे मिल्लत
दिल्ली

तमाम भाईयो को सलाम किताबे

स्केन करके पीडिएफ में आप

तक पहुँचाने के लिए इस

फ़क़ीर को अपनी दुआओ मे

खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

कुरआन, हदीस और सच्चे वाकिआत की रौशनी में

बुज़ुर्गों के अक़ीदे

लेखक
मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
दारुलऊलूम अमजदिया अरशदुलऊलूम
हैदरपुर ओझा गंज-बस्ती

मिलने का पता
मकतबा फकीहे मिल्लत
523 मटिया महल, जामा मस्जिद-दिल्ली-6
मो0- 9936919820, 8799372826

ाम किताब : बुज़ुर्गों के अक़ीदे
ेखक : फ़कीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
ड्डेटिंग : मोहम्मद जहांगीर हसन
ार्ष : नवम्बर 2009
ंख्या : 1100
ेज : 400
ूल्य : Rs.120/-

प्रकाशक

मकतबा फकीहे मिल्लत
523 मटिया महल, जामा मस्जिद-दिल्ली-6
मो0- 9936919820, 8799372826

मिलने के पते:

कुतुब ख़ाना अमजदिया
निकट टाउन क्लब, पक्का बाज़ार, बस्ती

न्यू सिलवर बुक एजेन्सी
मुहम्मद अली रोड भिन्डी बाज़ार, मुम्बई-3

नाज़ बुक डिपो
मुहम्मद अली रोड भिन्डी बाज़ार, मुम्बई-3

विषय सूची

दो शब्द

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इस तरह दुआ करने का हुक्म फ़रमाया है। "ऐ अल्लाह! हमें सीधा रास्ता चला। उन लोगों का रास्ता कि जिन पर तूने एहसान फ़रमाया" (1)

और जिन पर अल्लाह तआला ने एहसान फ़रमाया उनका ज़िक्र पाँचवें पारे में यूँ है। "जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करे तो वह उन लोगों के साथ होगा कि जिन पर अल्लाह तआला ने एहसान फ़रमाया। यानी अंबिया, सिद्दीक़ीन, (सच्चे) शोहदा (शहादत पाने वाले) और सालेहीन (नेक लोग) के साथ" (2)

इन दोनों आयतों के मिलाने से साफ़ ज़ाहिर है कि अंबिया-ए-किराम व बुज़ुर्गानेदीन ही का तरीक़ा सीधा रास्ता है। लेकिन आज कल बहुत से लोग बुज़ुर्गानेदीन के अक़ीदे और उन के तरीक़े से मुसलमानों को बहका रहे हैं। इसलिए हम ने आसान अन्दाज़ में चन्द मसाइल पर बुज़ुर्गों के अक़ीदे इस किताब में लिख दिए हैं, ताकि मुसलमान उनके अक़ीदे पर क़ायम रहें और किसी बहकाने वाले के धोके में न आऐं।

इस किताब में अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम के भी ईमान और अक़ीदे लिखे गए हैं। इस लिए कि किसी चीज़ को हक़ जान कर दिल में जमाए हुए यक़ीन को ईमान व अक़ीदा कहते हैं।(3) तो यह हज़रात जिस तरह ख़ुदा-ए-तआला की वहदानियत

(1)सूरह फातिहा,आयत6.7 (2)सूरह निसा, आयत 69
(3)ग्यासुल्लुग़ात पे०: 465 में है। अकीदा–चीज़े रा हक दानिस्ता दर दिले खुद मुहकम गिरफ्तन 12

(एक होने) और अपनी नुबुव्वत पर ईमान व अक़ीदा रखते और उसकी तबलीग़ और इशाअत (प्रचार व प्रसार) करते हैं। इसी तरह वह अपने बारे में तसर्रुफ़ (अधीकार) अमल-दख़ल व इख़्तियार, इल्मे ग़ैब और वसीले वग़ैरह का भी ईमान व अक़ीदा रखते हैं और अपने क़ौल व अमल से उन का प्रचार एवं प्रसार करते हैं।

और इस किताब में चूँकि बुज़ुर्गों को बहुत से मक़ामात पर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखा गया है जिस पर बाज़ लोगों को एतेराज़ हो सकता है। इस लिए सहाब-ए-किराम के अलावा दूसरे बुज़ुर्गों को रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहने और लिखने का तफ़सीली फ़तवा भी किताब के आख़िर में शमिल कर दिया गया है।

दुआ है कि अल्लाह व रसूल (जल-ल जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की बारगाह में यह किताब मक़बूल हो और मुसलमानों के लिए फ़ायदेमन्द हो। ईमान पर हमारा ख़ात्मा हो और क़यामत के दिन हुज़ूर पुर नूर शाफ़-ए-यौमुन्नुशूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफाअत नसीब हो। आमीन" बिहुर्मतिन्नबिय्यिल करीम अलैहि व अला अलिही अफ़ज़लिस्सलाति व अकमलित्तसलीम।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी
10 शव्वालुल मुकर्रम सन् 1413 हि0
मुताबिक़ 3 अप्रैल सन् 1993 ई0

तसर्रुफ़
(अ़मल-दख़्ल)

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम और औलिया-ए-इज़ाम अ़लैहिमुर्रहमतु वर्रिज़वान को ख़ुदा-ए-तआ़ला दुनिया में तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़्ल) करने का इख़्तियार देता है या नहीं? इस के बारे में सरकारे दोआ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाब-ए-किराम, मुहद्दिसीने इज़ाम, फ़ुक़हा-ए-इस्लाम और बुज़ुर्गाने दीन के अक़ीदे मुलाहज़ा फ़रमाऐं।

अंबिया-ए-किराम के अक़ीदे
हुज़ूर सय्यदे आलम का अ़क़ीदा
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्हों ने फरमाया कि मक्का वालों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप कोई मुअ़जज़ा (ख़ुदाई चमत्कार) दिखायें तो सरकारे दोआ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाँद के दो टुकड़े फरमा कर उन्हें दिखा दिया। यहाँ तक कि मक्के वालों ने"हिरा" पहाड़ को चाँद के दो टुकड़ों के दर्मियान देखा।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द 1 पे०: 546)

और हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि उन्हों ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़मान-ए -मुबारक में चाँद दो टुकड़े हो गया। एक

टुकड़ा पहाड़ के ऊपर था और दूसरा टुकड़ा उस के नीचे।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्दः 2 पे०: 721)

इस वाक़ेए से साबित हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह अक़ीदा था कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे चाँद पर तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़्ल) की ताक़त बख़्शी है। इसी लिए आपने उसे उंगली से इशारा फरमा कर दो टुकड़े कर दिया। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ऐसा अक़ीदा न होता तो इशारा करना तो बहुत बड़ी बात है आप एक लम्हा के लिए उसे सोच भी नहीं सकते थे। जैसे एक आदमी जब पहाड़ की बहुत बड़ी चट्टान को देखता है तो उसे अपने हाथों से उठाने को एक पल के लिए भी नहीं सोचता मगर वही शख़्स जब चट्टान का छोटा टुकड़ा देखता है और जानता है कि मैं पत्थर के इस टुकड़े को उठा सकता हूँ तो वह उसकी जानिब मुतवज्जेह होता है और उसको उठाने की कोशिश करता है फिर जब वह पत्थर के उस टुकड़े को उठा लेता है तो ज़ाहिरी तौर पर अपना यह अ़क़ीदा साबित कर देता है कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे इस पत्थर के उठाने की ताक़त दी।

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है। उन्होंने फ़रमाया कि"रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में पानी का एक बर्तन पेश किया गया और आप "ज़ौरा" के मक़ाम पर थे। आप ने बर्तन के अंदर अपना मुबारक हाथ रख दिया तो आप की उँगलियों के दर्मियान से पानी के चश्मे (सोते) फूट पड़े और सब लोगों ने वुज़ू कर लिया। हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि मैं ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मालूम किया कि आप लोग कितने

थे? जवाब दिया कि तीन सौ तीन या तीन सौ के लग भंग।"

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द:1 पे०: 504)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अलक़मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया कि "हंम तो मुअ्जिज़ात (नबी द्वारा चमत्कार) को बरकत का ज़रीया समझते हैं और तुम उनको तख़्वीफ़ (डराना) का सबब समझते हो। हम एक सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ थे पानी कम हो गया तो हुजूर ने फरमाया कि थोड़ा सा बचा हुआ पानी तलाश कर लाओ तो लोग एक बर्तन लाये जिस में थोड़ा सा पानी मौजूद था हुजूर ने अपना मुबारक हाथ बर्तन में डाल दिया और उसके बाद फरमाया बरकत वाले पानी के पास आओ और बरकत खुदा-ए-तआला की तरफ से है। तो मैं ने यक़ीनी तौर पर देखा कि हुज़ूर की मुबारक उंगलियों की घाइयों से पानी उबल रहा था।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि०: 1 पे०: 505)

और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है। उन्होंने फ़रमाया कि "सुलहे हुदैबिया (हुदैबिया समझौता) के दिन लोग प्यासे थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक प्याला था जिस से आपने वुज़ू फ़रमाया तो लोग आप की जानिब दौड़े, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या बात है? लोगों ने अर्ज़ कि हमारे पास वुज़ू करने और पीने के लिये पानी नहीं है मगर यही जो आपके सामने है। तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आपना हाथ मुबारक उसी प्याले में रख दिया तो आप की उंगलियों के दर्मियान से चश्मों (सोतों) की तरह पानी उबलने लगा। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हम तमाम लोगों ने

पानी पिया और वुज़ू किया। हज़रत सालिम फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा आप हज़रात कितनी तादाद में थे? उन्होंने फ़रमाया कि अगर हम एक लाख भी होते तब भी वह पानी काफ़ी होता उस वक़्त तो हमारी तादाद पन्दरह सौ (1500) थी।" (बुख़ारी शरीफ़ जि०:1 पे०: 505).

इन मुबारक हदीसों से मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लहु तआला अलैहि वसल्लम का यह अक़ीदा था कि ख़ुदा-ए-तआला ने मुझे उंगलियों की घाइयों से दरिया बहाने की ताक़त व कुव्वत भी बख़्शी है।

उंगलियां हैं फैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नद्यां पंजाबे रहमत की हैं जारी वाह वाह

और हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाय। कल मैं यह झन्डा ज़रूर उस शख़्स को दूंगा जिस के हाथ पर अल्लाह तआला फ़तह (जीत) अता फ़रमाएगा। लोग तमाम रात इस फ़िक्र में रहे कि देखिए सुबह किस खुश नसीब को झन्डा अता फ़रमाया जाएगा। जब सुबह हुई तो हर एक यह तमन्ना लिए हुए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ कि झन्डा उसे अता हो। आपने फ़रमाया।"अ़ली बिन अबू तालिब कहाँ हैं? लोगों ने जवाब दिया या रसूलल्लाह! उन की आँखें दुखती हैं। फ़रममाया उन्हें बुला कर लाओ पस उन्हें आप की ख़िदमत में लाया गया तो आप ने उन की आँखों में लुआबे दहन (थूक मुबारक) लगा दिया और उनके लिए दुआ फ़रमाई तो वह इस तरह तन्दुरूस्त हो गए जैसे उन्हें कोई तकलीफ़ ही नहीं हुई थी।" (बुख़ारी शरीफ़ जि०:1 पे०:525)

और हज़रत उतबा बिन फरकद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की

बीबी हज़रत उम्मे आसिम फ़रमाती हैं कि उतबा के यहां हम चार औरतें थीं। हम में से हर एक उतबा की ख़ातिर एक दूसरी से ज्यादा खुशबूदार रहने की कोशिश करती, फिर भी जो खुश्बू उतबा के जिस्म से आती वह हमारी ख़ुश्बू से बहुत ज़्यादा अच्छी होती।"और जब वह लोगों के पास जाता तो लोग कहते हम ने कोई ऐसी ख़ुश्बू नहीं सूँघी जो उतबा की खुश्बू से अच्छी हो। एक दिन हम ने उसके बारे में उस से पूछा तो उस ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ाहिरी ज़मान-ए-मुबारक में मेरे बदन में फुन्सियाँ निकल आईं तो मैं ने हुज़ूर की ख़िदमत में उस बीमारी की शिकायत की। आप ने फ़रमाया कपड़े उतार दे, मैं ने कपड़े उतार दिये और अपना सत्र (छुपाने योग्य बदन का अंग) छुपा कर आप के सामने बैठ गया। आपने अपना लुआबे दहन (थूक मुबारक) अपने मुबारक हाथ पर डाल कर मेरे पेट और पीठ पर मल दिया तो मेरी बीमारी दूर हो गई और उसी दिन से मुझ में यह ख़ुश्बू पैदा हो गई।"

(ख़साइसुल कुबरा जि०: 2 पे०: 84)

और हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ऐक रज़ियल्लहु तआला अन्हु अबू राफ़े यहूदी को (जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का बहुत बड़ा दुश्मन था) कत्ल करने के बाद उसके ऊंचे मकान से उतरने लगे तो ज़ीने से गिर गये और उनकी पिन्डली टूट गई उन्हों ने उसी वक़्त गर्म गर्म पिण्डली अपने अमामे (पगड़ी) से बांध ली और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपना सारा माजरा बयान किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अपना पाँव फैलाओ, मैं ने फैला दिया तो हुज़ूर ने जब उस पर

अपने करम का हाथ फेर दिया तो ऐसा हो गया जैसे उस में सिरे से कोई तकलीफ़ हुई ही न थी।" (बुख़ारी शरीफ़ जि०: 2 पे०: 577)

इन वाकिआत से हुज़ूर सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने मुझे तसर्रूफ़ (हुक्म चलाने) की वह ताक़त अता फरमाई है कि मैं अपने लुआबे दहन से बीमारियाँ दूर कर देता हूँ बल्कि चाहता हूँ तो मरीज़ के जिस्म को उसी लुआबे दहन से हमेशा के लिए बेहतरीन खुशबूदार बना देता हूँ और पलास्टर के बेग़ैर सिर्फ़ अपना हाथ फेर कर फौरन टूटी हुई हड्डी सही कर देता हूँ। और अलहम्दुलिल्लाह! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बारे में हम लोगों का भी यही अक़ीदा है।

और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रवायत है। उन्होंने कहा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया। "ऐ आइशा! अगर मैं चाहूँ तो मेरे साथ सोने के पहाड़ चलें।"(मिश्कात शरीफ़ पे०: 521)

और हज़रत अबू राफ़ेअ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है। उन्हों ने फरमाया:"मेरे पास बकरी तोहफ़े के तौर पर भेजी गई, उसे हान्डी में डाला फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। फरमाया, अबू राफ़ेअ़! यह क्या है? अर्ज़ किया यह बकरी है जो हमे तोहफ़े के तौर पर मिली है। फिर हम ने उसे हान्डी में पका लिया। हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ अबू राफ़ेअ़! हम को एक बाज़ू (हाथ) दो। मैं ने बाज़ू (हाथ) पेश कर दिया। फिर फरमाया कि दूसरा बाज़ू भी दो। मैं ने दूसरा बाज़ू भी पेश कर दिया। फिर फ़रमाया ऐ अबू राफ़ेअ़! और बाज़ू लाओ। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! बकरी के दो ही बाज़ू होते हैं। तब उन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम चुप

रहते तो हम को बाज़ू पर बाज़ू (हाथ) देते रहते जब तक कि चुप रहते।"/(अहमद, दारमी, मिश्कात पे०: 41)

और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से इसी किस्म का एक दूसरा वाकिआ़ रवायत है। वह फरमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के हमराह हज से फ़ारिग़ हो कर जब मक़ामे "रौहा" में पहुंचे तो एक औ़रत ने भुनी हुई बकरी पेश की। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के फ़रमान के मुताबिक़ हम ने एक के बाद दूसरे बाज़ू को पेश किया। फिर जब आपने फ़रमाया कि और बाज़ू लाओ तो मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाहु! बाज़ू तो दो ही होते हैं जो मैं आपको पेश कर चुका हूँ तो रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "कसम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़-ए-कुदरत में मेरी जान है कि अगर तुम चुप रहते तो जब तक मैं बाज़ू मांगता तुम देते रहते।" (अबू यअ़ला, बैहक़ी, खसाइसे कुबरा पे०: 36)

इन अहादीसे करीमा से मालूम हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का यह अक़ीदा था कि खुदा-ए-तआ़ला ने मुझे ऐसे बुलन्द मरतबे से सरफ़राज़ फ़रमाया है कि अगर मैं चाहूँ तो मेरे साथ सोने के पहाड़ चलें। और एक बकरी में अगर्चे दो ही बाज़ू (हाथ) होते हैं लेकिन मैं तलब करता रहूँ और पेश करने वाला देने का इरादा करता रहे तो एक ही बकरी के गोश्त से हज़ारों बाज़ू पैदा होते रहेंगे।

और हज़रत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "ऐ लोगो! खुदा ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया है। "अक़रअ़ बिन हाबिस" ने खड़े हो कर अर्ज़ किया। या रसूलुल्लाह! क्या हर साल हज फर्ज़ है? फ़रमाया अगर मैं हां कह

दूँ तो हर साल हज फ़र्ज़ हो जाए! और अगर हर साल फ़र्ज़ हो जाए तो तुम उसे अदा करने की ताक़त नहीं रखते।"

(अहमद, नसई, दारमी, मिश्कात पे०: 222)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तअ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में बैठे हुए थे कि एक शख़्स आया और कहने लगा या रसूलुल्लाह! मैं हलाक हो गया। हुज़ूर ने पूछा क्या हुआ? उसने बताया कि मैं रोज़े की हालत में अपनी बीवी से हमबिस्तरी (सम्भोग) कर बैठा। आपने पूछा तुम्हारे पास कोई गुलाम है जिसे तुम आज़ाद कर सको। अर्ज़ किया नहीं। फ़रमाया दो महीने लगातार रोज़े रख सकते हो? कहा नहीं। फरमाया साठ मिस्कीनों (फ़क़ीरों) को खाना खिला सकते हो? बोला नहीं, आपने कुछ देर तक कुछ न फ़रमाया, हम भी ख़ामोश रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पास एक टोकरा खुजूर का लाया गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सवाल करने वाला कहाँ हैं? उसने अर्ज़ किया मैं हाज़िर हूँ। फ़रमाया इसे ले जाओ और बांट दो। उसने पूछा।"या रसूलुल्लाह! क्या मैं उसे दूँ जो मुझ से ज्यादा मुहताज हो। क़सम खुदा की मदीना शरीफ़ के दोनो पथरीले मैदानों के दर्मियान मेरे अहलो अयाल (बाल बच्चों) से बढ़ कर कोई मुहताज नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हंस दिए, यहाँ तक कि सामने के दोनो दाँत दिखाई दिए। फिर फ़रमाया जाओ अपने घर वालों को खिला दो।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि०: 1 पे०: 260)

और हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे ख़ालू हज़रत अबु बुर्दा ने नमाज़े ईद से पहले कुर्बानी करली तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि "तुम्हारी वह बकरी गोशत के लिये हुई। उन्हों

Scanned by CamScanner

ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे पास एक मोटा ताज़ा छः माहा बकरी का बच्चा है। फ़रमाया उसी को ज़िवह कर दो और तुम्हारे सिवा किसी के लिए यह करना दुरूस्त न होगा।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि०: 2 पे०: 834)

और हज़रत नोमान बिन वशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक देहाती से घोड़ा ख़रीदा। फिर देहाती ने घोड़े के फरोख़्त कर दिए जाने से इनकार कर दिया। तो हज़रत खुज़ैमा बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए और उन्हों ने कहा ऐ देहाती! मैं गवाही देता हूँ कि तू ने घोड़ा वेच दिया है। नवी-ए-पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ खुज़ैमा! तुम कैसे गवाही देते हो (जब कि ख़रीदारी के वक़्त में तुम मौजूद नहीं थे) तो हज़रत खुज़ैमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि "मैं हुजूर की तसदीक़ आसमानी ख़बरों पर करता हूँ तो उस देहाती पर तसदीक़ (सच होने की गवाही) क्यों न करूँ। तो नवी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनकी गवाही को दो मर्दों की गवाही के बराबर कर दिया। और हज़रत खुज़ैमा के अलावह इस्लाम में किसी मर्द के लिए जाइज़ न हुआ कि उस की गवाही दो मर्दों की गवाही क़रार दी गई हो।"

(ख़साइसे कुबरा जि०: 2 पे०: 263)

इन अहादीसे मुबारका से मालूम हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह अक़ीदा था कि खुदा-ए-तआला ने मुझे शरीअत के अहकाम पर भी पूरा इख़्तियार अता फ़रमाया है।

मुस्तफ़ा आइन-ए-रूए ख़ुदा अस्त
मुनअकिस दरवै हमा खूए ख़ुदा अस्त (डा० इक़बाल)

★★★

हज़रत ईसा का अक़ीदा
(अलैहिस्सलातो वस्सलाम)

सूरह आले इमरान में है, आप ने वनी इसराईल से फ़रमाया:"मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दों की सी सूरत बनाता हूँ फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह फ़ौरन परिन्दा (पक्षी) हो जाती है अल्लाह के हुक्म से। और मैं शिफ़ा देता हूँ मादरज़ाद (पैदाइशी) अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले को और मुर्दे को ज़िन्दा करता हूँ अल्लाह के हुक्म से।" (पाराः 3 रूकूअ: 13)

इस आयते करीमा से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का अक़ीदा था कि मिट्टी की चिड़िया बना कर उसे ज़िन्दगी बख़्श देने, मादरज़ाद (पैदाइशी) अंधे और कोढ़ी को अच्छा करदेने और मुर्दे को ज़िन्दा कर देने का खुदा-ए-तआला ने मुझे इख़्तियार दिया है। चुनाँचे वनी इसराईल की अर्ज़ी पर आपने मिट्टी से चमगादड़ की सूरत बनाई फिर उस में फूंक मारी तो वह उड़ने लगी। और कई मुर्दों को आपने ज़िन्दा फ़रमाया और बे शुमार मादरज़ाद (पैदाइशी) अंधे और कोढ़ियों को आपने शिफ़ा बख़्शी।

★★★

Scanned by CamScanner

सहाब-ए-किराम के अक़ीदे

हज़रत उमर का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ालः 23 हि0)

आप का नाम पाक "उमर" है कुन्नियत (उपनाम) "अबू हफ़्स" और लक़ब (उपाधी) "फ़ारूक़े आज़म" है। आपके वालिद का नाम"ख़त्ताब" और माँ का नाम "अ़नतमा" है जो हिशाम बिन मुग़ीरा की बेटी यानी अबू जेहल की बहन हैं। आठवीं पुश्त (पीढ़ी) में आपका शजर-ए-नसब (ख़ानदान) सरकारे दोआ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के ख़ानदानी शजरे से मिलता है। आप वाक़िअ-ए-फ़ील के तेरह साल बाद पैदा हुए और एलाने नुबुव्वत के छठे साल सत्ताइस (27) बरस की उमर में इस्लाम में दाख़िल हुए। आपने उस वक्त इस्लाम क़ुबूल फरमाया जबकि चालीस मर्द और ग्यारह औरतें ईमान ला चुकी थीं और बाज़ उलमा ने लिखा है कि उनतालीस (39) मर्द और तेईस (23) औरतों के बाद इस्लाम क़ुबूल किया।

हज़रत "मुग़ीरा बिन शोअ़बा" रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ग़ुलाम "अबू लूलू फीरोज़ मजूसी" ने 26 ज़िलहिज्जा 23 हि0 के दिन आप पर क़ातिलाना हम्ला किया। ज़ख्मी होने के तीन दिन बाद दस बरस, छः माह चार दिन ख़िलाफ़त (हुकुमते इस्लामिया) के फ़राइज़ को अंजाम दे कर 63 साल की उमर में वफ़ात पाई।

हज़रत अबुश्शैख़ किताबुलइसमः में हज़रत "क़ैस बिन हज्जाज" रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत करते हैं कि जब

हज़रत "अमर बिन आस" रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत "उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़िलाफ़त (हुकूमत) के ज़माने में मिस्र को फ़तह किया तो अहले अजम (ग़ैर अरब) एक तयशुदा दिन पर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास आए और कहा"यानी ऐ हाकिम! हमारे इस दरिया-ए-नील के लिए एक पुराना तरीक़ा चला आ रहा है कि जिस के बेग़ैर वह जारी नहीं रहता है बल्कि ख़ुश्क (सूख) हो जाता है और हमारी खेती का दारो मदार इसी दरिया-ए-नील के पानी पर है।" हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन लोगों से दर्याफ़्त फ़रमाया कि दरिया-ए-नील के जारी रहने का वह पुराना तरीक़ा क्या है? उन लोगों ने कहा कि जब उस महीने के चाँद की ग्यारहवीं तारीख़ आती है तो हम लोग एक कुँवारी जवान लड़की को चुन करके उस के माँ बाप को राज़ी करते हैं फिर उसे बेहतरीन क़िस्म के ज़ेवरात और कपड़े पहनाते हैं उसके बाद लड़की को दरिया-ए-नील में डाल देते हैं।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमायाः "इस्लाम में ऐसा कभी नहीं हो सकता।" यह तमाम बातें बेकार और बे सरो पैर हैं, इस्लाम इस क़िस्म की तमाम बातों को मिटाने आया है वह लड़की को दरिया-ए-नील में डालने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दे सकता, आपके इस जवाब के बाद वह लोग वापस चले गए। कुछ दिनों के बाद वाक़ई दरिया-ए-नील बिल्कुल ख़ुश्क हो गया यहाँ तक कि बहुत से लोग वतन छोड़ने पर आमादा हो गए। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने यह मुआमला देखा तो एक ख़त लिख कर हज़रत उम्र फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सारे हालात से आगाह किया आप ने ख़त पढ़ने के बाद हज़रत अमर बिन आस रज़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हु को जवाब में फ़रमाया कि तुम ने मिस्रियों को बहुत उमदा जवाब दिया बेशक इस्लाम इस क़िस्म की तमाम बेहूदा बातों को मिटाने आया है। मैं इस ख़त के हमराह एक रूक़आ (परचा) रवाना कर रहा हूँ तुम इसको दरिया-ए-नील में डाल देना।

जब वह परचा हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पहुंचा तो आपने उसे खोल कर पढ़ा उस में लिखा हुआ था कि "अल्लाह के बन्दे उमर अमीरूल मोमिनीन की तरफ़ से, मिस्र के दरिया-ए-नील को, मालूम हो कि अगर तू बज़ाते खुद जारी होता है तो मत जारी हो। और अगर खुदा-ए-तआला तुझ को जारी फ़रमाता है तो मैं अल्लाह वाहिदे कह्हार से दुआ करता हूँ कि वह तुझे जारी फरमादे।"

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ अज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस ख़त को रात के वक़्त दरिया-ए-नील में डाल दिया। मिस्र वाले जब सुबह को नींद से बेदार हुए तो देखा कि अल्लाह तबारक व तआला ने उसको इस तरह जारी फरमा दिया है कि सोलह हाथ पानी ऊपर चढ़ा हुआ है। फिर दरिया-ए-नील इस तरह कभी नही सूखा। और मिस्र वालों की यह जाहिलाना रस्म हमेशा के लिए ख़त्म हो गई। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पे०: 87)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दरिया-ए-नील को ख़त लिख कर अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि खुदा-ए-तआला ने मुझे बहरो बर (खुश्की व पानी) दोनों पर हुकूमत अता फ़रमाई है।

और हज़रत ख़्वाजा अमीर खुर्द किरमानी निज़ामी कुद्दिस सिर्रूहू बयान फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना मुनव्वरह के नवाह (छेत्र) में ईंटें बना रहे थे,

सूरज की तेज़ किरणें आप की पीठ मुबारक पर पड़ रही थीं। सूरज की गर्मी ने आप पर असर किया। आपने निहायत नाराज़ हो कर सूरज की तरफ़ देखा जिस से सूरज की रौश्नी व तपिश जाती रही, दुनिया तारीक (काली) हो गई, सारे मदीने में शोर मच गया कि क़यामत आगई, फिर आप ने निगाहे लुत्फ़ो करम से सूरज की तरफ देखा अल्लाह तआला ने सूरज की रोशनी उसे लौटा दिया। (सियरूल औलिया पे०: 54)

और बयान है कि एक मर्तबा हज़रत फ़ारूक़े अज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त (हुकूमत) में "ज़लज़ला" आया जिस की वजह से ज़मीन बार बार दहलती थी। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला की हम्दो सना (तसबीह) बयान की और ज़मीन पर कोड़ा मार कर फ़रमाया कि ठहर जा क्या मैं ने तुझ पर अद्ल व इन्साफ़ नहीं किया। यह फ़रमाना था कि ज़मीन ठहर गई और ज़लज़ला फ़ौरन बन्द हो गया।

(जामे करामते औलिया पे०:451, बरकातुस्सालिहीन हिस्सा:1 पे०:40)

और हज़रत अल्लामा नबहानी रहमतुल्लाहि अलैह इरशाद फरमाते हैं कि इमाम राज़ी ने अपनी मशहूर तफ़सीर में सूर-ए-कहफ़ की शरह (वज़ाहत, कुंजी) में लिखा है कि मदीना तय्यबा में किसी घर को आग लग गई जनाब फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक चिथड़े पर लिखा ऐ आग! हुक्मे खुदावन्दी से थम जा। लोगों ने वह चिथड़ा आग में डाल दिया तो आग फ़ौरन बुझ गई। (जामे करामाते औलिया पे०: 453)

★★★

हज़रत अनस का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

आप मालिक बिन नज़र के बेटे हैं। कुन्नियत अबू हमज़ा है। क़बील-ए-ख़ेज़रज से तअ़ल्लुक़ रखते हैं और हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के ख़ास ख़ादिम हैं आप की वालिदा का नाम उम्मे सलीम बिन्ते मलहान है। जब नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम मदीना तय्यबा तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त आप की उम्र दस (10) साल थी। हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में बसरा जाकर बस गए ताकि वहाँ के लोगों को दीन की बातें सिखायें। बसरा के सहाबा में सब से आख़िर में आपका विसाल (स्वर्गवास) हुआ आपकी उम्र एक सौ तीन साल (103) हुई।

अ़ल्लामा इब्ने अब्दुलबर्र कहते हैं सही यह है कि उनकी सौ (100) औलाद हुइ और बाज़ लोगों ने कहा कि अस्सी (80)। जिन में अठहत्तर (78) लड़के और दो लड़कियां। (ख़तीबे तबरेज़ी)

आप फ़रमाते हैं कि"मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इस हाल में देखा कि अस्र की नमाज़ का वक़्त हो गया था और लोगों को वज़ू के लिए पानी की ज़रूरत थी मगर उन्हें मिलता नहीं था। तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में वुज़ू के लिए पानी पेश किया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस बरतन में अपना मुबारक हाथ रखते हुए लोगों को हुक्म दिया कि इस पानी से वुज़ू करो। मैं ने देखा कि आपकी मुबारक उंगलियों के नीचे से

पानी उबल रहा था। लोगों ने वुज़ू करना शुरू किया यहाँ तक कि सब वुज़ू कर लिए।"(बुख़ारी शरीफ़ जि०: 1 पे०: 504)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि"नमाज़ का वक़्त हो गया तो जिन लोगों के घर मस्जिद के क़रीब थे वह वुज़ू करने चले गए और बहुत से लोग रह गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पत्थर का एक बरतन हाजिर किया गया जिस के अंदर पानी था। आपने अपना मुक़द्दस (पवित्र) हाथ पानी में डाल दिया लेकिन बरतन छोटा होने के सबब हाथ नहीं खुलता था तो उंगलियों को मिला कर बरतन में डाला तो सब लोगों ने वुज़ू किया। हज़रत हमीद कहते हैं कि मैं ने हज़रत अनस से पूछा वह लोग कितने थे? फ़रमाया अस्सी (80) आदमी थे।"

(बुख़ारी शरीफ़ जिः 1 सः 505)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इन वाक़िआत को बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि रसूले अकरम मुख़्तारे दो आलम सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम को ख़ुदा-ए-तआला ने तसर्रूफ़ व इख़्तियार की वह ताक़त बख़्शी थी कि आप जब चाहते अपनी उंगलियों की घाइयों से दरिया बहा देते।

नूर के चश्मे लहराये दरिया बहे
उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम

★★★

हज़रत अबू हुरैरा का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु इन्तिक़ाल 59 हि०)

आपके नाम में इख़्तिलाफ़ है। ज़्यादा मशहूर अब्दुर्रहमान है। अब्दुल्लाह भी कहा गया है। ज़मान-ए-जाहिलियत में आप का नाम अब्दुश्शम्स या अब्दे अम्र था। छोटी सी बिल्ली पालने के सबब अबू हुरैरा कुन्नियत (उपनाम) को आपके नाम से ज़्यादा शोहरत हासिल हो गई और कुन्नियत (उपनाम) का इस्तिमाल नाम पर ग़ालिब आ गया। आप बिलादे (शहर) दोस से हैं। फ़तहे (विजय) ख़ैबर के साल जो हिजरत का सातवाँ साल है इस्लाम लाए और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप के हो कर रह गए। आपने पूरी तवज्जेह व लगन के साथ इल्मे दीन हासिल किया और क़नाअत व सब्र और कम खाने का तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया। सहाब-ए-किराम में सब से बड़े हाफ़िज़ थे। ज़ेहनी ताक़त, संजीदगी, मुस्तक़िल मिज़ाजी, ज़कावत (अक़्लमन्दी) और इल्म पर कंट्रोल की ख़ूबी में अपनी मिसाल आप थे। रोज़ादार, शब बेदार और ज़िक्रो तसबीह व ज़िक्रे इलाही वाले थे। (अश्अतुल्लमआत)

आपने फ़रमाया है अल्लाह कि जिस के सिवा कोई माबूद (ख़ुदा) नहीं मैं भूक में रूए ज़मीन पर अपने जिगर पर भरोसा करता था। और मैं भूक से अपने पेट पर पत्थर बाँधा करता था। एक दिन मैं आम रास्ते पर बैठा था तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का उस रास्ते से गुज़र हुआ। मैं ने उन से कुरआन मजीद की एक आयते करीमा के बारे में पूछा। और मैं ने उन से सिर्फ़ इस लिए पूछा ताकि वह मुझे अपने साथ ले जायें

(और कुछ खिलायें) मगर वह चले गए। थोड़ी देर बाद हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मेरे पास से गुज़रे, मैं ने उन से कुरआन मजीद की एक आयत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। और उन से भी मैं ने इसी लिए पूछा था कि वह मुझे अपने हमराह ले जायें, मगर वह भी चले गए और मुझे अपने साथ नहीं ले गए।

फिर अबुल क़ासिम हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो आपने मुझे देखा और मेरे दिल की कैफ़ियत जान कर मुस्कुराए। उसके बाद फ़रमाया! ऐ अबू हुरैरा! मैं ने अर्ज़ किया हाज़िर हूँ या रसूलुल्लाह! फ़रमाया मेरे साथ चलो। और आप तशरीफ़ ले चले तो पीछे पीछे मैं भी चलने लगा। जब आप काशान-ए-नुबुव्वत में दाख़िल हो गए तो मैं ने भी अंदर आने की इजाज़त तलब की। आपने मुझे इजाज़त दे दी और मैं भी अंदर दाख़िल हो गया। मैंने वहां दूध का एक प्याला देखा। हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने पूछा यह दूध कहाँ से आया है? जवाब दिया गया कि फ़लाँ ने आप को तोहफ़ा भेजा है। हुज़ूर ने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरा! मैं ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लह! फ़रमाया जाओ, असहाबे सुफ़्फ़ा (सूफ़ियों की टोली) को मेरे पास बुला लाओ।

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि असहाबे सुफ़्फ़ा इस्लाम के मेहमान थे, न तो उनके पास घर था और न माल व दौलत। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पास कुछ सदक़ा आता तो आप उसे उनके पास भेज देते। और ख़ुद उस में से कुछ न लेते। और जब आप के पास कोई तोहफ़ा व हदिया भेजता तो आप उसे क़ुबूल फ़रमा लेते और असहाबे सुफ़्फ़ा को भी उस में शरीक कर लिया करते। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि यह बात मुझ

पर दुश्वार (सख़्त) गुज़री और मैं ने अपने दिल में कहा कि असहाबे सुफ़्फ़ा के लिये सिर्फ़ एक प्याला दूध का क्या काम देगा? और मैं चाहता था कि पूरा दूध मुझे ही मिल जाता। ताकि उसे पीने के वाद मेरे अंदर कुछ ताक़त पैदा हो जाती। और चुँकि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का क़ासिद हूँ लिहाज़ा जव वह लोग आयेंगे (जिन की तादाद सत्तर है) तो हुज़ूर मुझे हुक्म देंगे कि यह प्याला उन्हें दे दूँ। तो फिर शायद ही मुझे इस का कुछ हिस्सा मिल सके। लेकिन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआ़ल अलैहि वसल्लम की फ़रमाँवरदारी के सिवा मेरे लिए कोई चारा-ए-कार न था तो मुझे असहावे सुफ़्फ़ा के पास आना पड़ा। और जव वह लोग आ गए और सव अपनी-अपनी जगह पर घर में बैठ गये। तो हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ अवू हुरैरा! मैं ने अर्ज़ किया हाज़िर हूँ या रसूलुल्लाह! फ़रमाया:"प्याला उठाओ और उन लोगों को दो तो मैं ने प्याला उठा कर एक शख़्स को दे दिया। उस ने प्याले से पिया यहाँ तक कि ख़ूब सैर हो गया। फिर उसने प्याला मुझे वापस कर दिया। इस तरह यके वाद दीगरे पीते और पिलाते हुए वह प्याला रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने प्याला अपने मुवारक हाथ पर रखा और मेरी तरफ़ देख कर मुस्कुरा कर फ़रमाया। ऐ अवू हुरैरा! मैं ने अर्ज़ किया लव्वैक या रसूलुल्लाह! फ़रमया अव हम और तुम बाक़ी रह गए हैं। मैं ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपने सच फ़रमाया। फ़रमाया बैट जाओ और पिओ। तो मैं ने पिया। फ़रमाया और पिओ तो मैं ने फिर. पिया। आप यही फरमाते रहे कि और पिओ। तो मैं और पीता रहा याहँ तक कि मैं ने अर्ज़ कि क़सम है उस ज़ात की जिसने आप को हक़ के साथ मवऊस (विराजमान) फ़रमाया कि अव दूध गुज़रने की भी राह बाक़ी नहीं रही। और

वह प्याला मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को पेश कर दिया तो आपने अल्लाह तआला की हम्द की और विस्मिल्लाह पढ़ कर बचा हुआ दूध पी लिया।"

(बुख़ारी शरीफ़, ख़साइसे कुवरा जि० 2 स० 48)

क्यों जनावे वू हुरैरा कैसा था वह जामे शीर
जिस से सत्तर साहिवों का दूध से मुंह फिर गया।

और हज़रत अवू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है। उन्हों ने फ़रमाया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम एक लड़ाई में थे कि इस्लामी फ़ौजियों को खाने की कमी का सामना करना पड़ा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया ऐ अवू हुरैरा! तुम्हारे पास खाने को कुछ है? मैंने अर्ज़ किया मेरे थैले में कुछ खजूरें हैं। फ़रमाया ले आओ, तो मैं थैले को ले कर हाज़िर हुआ। फ़रमाया, दस्तरख़्वान ले आओ, तो मैं दस्तरख़्वान ले आया और उसे विछा दिया। फिर आप ने खजूरें निकालीं तो वह इक्किस (21) दाने थे। आपने विस्मिल्लाह पढ़ी और एक एक खजूर को अपने मुक़द्दस हाथ में लिया और बिस्मिल्लाह पढ़ते रहे यहाँ तक कि सब दाने आप के मुवारक हाथ में आ गए। फिर आपने उन को जमा करके फ़रमाया कि"फ़लाँ और उनके साथियों को बुलाओ। तो उन्हों ने खाया यहाँ तक कि वह पेट भर कर चले गए फिर फरमाया फ़लाँ और उन के साथियों को लाओ। तो वह लोग भी पेट भर खा के चले गए। फिर फ़रमाया फ़लाँ और उनके साथियों को बुलाओ तो वह सब भी ख़ूब सैर हो कर खा के चले गए और खजूरें बाक़ी रहीं तो हुज़ूर ने उन्हें थैले में डाल दिया और मुझ से फरमाया जब तुम निकालना चाहो तो अपना हाथ डाल कर खजूरें निकालते रहना मगर उसे उल्टा न करना। तो मैं हाथ डालता और जितनी

खजूरें चाहता निकाल लेता। और मैंने उस में से पचास वसक़ (अरबी वज़न, 240 कि॰ ग्रा॰) खजूरें खुदा की राह में दीं। वह थैली हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माना में मेरी सवारी के पीछे लटकी हुई थी।"

(बैहक़ी. अबू नईम. ख़साइसे कुबरा जि०:2 स०:51).

एक वसक़ साठ साअ़ का होता है और एक साअ़ तक़रीबन चार किलोग्राम का तो पचास वसक़ खजूरें लग-भग बारह हज़ार किलोग्राम हुई। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इन अहादीसे करीमा को बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को तसर्रूफ़ व इख़्तियार की वह ताक़त बख़्शी थी कि जब आपने चाहा तो एक प्याला दूध से सत्तर भूकों का पेट भर दिया और चन्द खजूरें थैले में डाल दीं तो एक सौ बीस कुन्टल से ज़्यादा खजूरें उस में से बरामद हुई।

★★★

मुहद्दिसीन के अक़ीदे

इमाम बुख़ारी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 256 हि०)

आप का असली नाम मुहम्मद है। आप के वालिद इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरा थे। मुग़ीरा मजूसी (आग के पुजारी) थे जो हाकिमे यमान जुअ़्फ़ा के हाथ पर मुसलमान हुए थे। बचपन ही में आपके वालिद (बाप) का इन्तिक़ाल हो गया तो परवरिश की सारी ज़िम्मेदारी आप की वालिदा (माँ) ने संभाली, बचपन ही में आप नाबीना (अंधे) हो गए बहुत इलाज किया गया मगर फ़ायदा न हुआ। आप की वालिदा बड़ी इबादत गुज़ार थीं। उन्हों ने रो-रो कर अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद की। एक रात उन्हें ख़्वाब में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़ियारत हुई। फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी आहो-ज़ारी और दुआओं की कसरत के सबब तुम्हारे बेटे की आँख सही करदी। इमाम बुख़ारी सुबह उठे तो उनकी आँखें रौशन थीं और ऐसी रौशन हुई कि चाँद की रौशनी में बुख़ारी लिख कर मुकम्मल फ़रमाई।

अल्लामा हजर असक़लानी के मुताबिक़ आपने कुल 22 किताबें लिखी हैं मगर उन में सब से ज़्यादा मशहूर बुख़ारी शरीफ़ है। और क्यों न हो कि आप हर हदीस को लिखने से पहले "आबे ज़मज़म" से ग़ुस्ल फ़रमाते, "मक़ामे इब्राहीम" में दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ते, उस के बाद हदीस को लिखते, मुसव्वदा (मैटर) मुकम्मल करने के बाद मदीना तय्यबा में रौज़-ए-अनवर और मिम्बर शरीफ़

के दर्मियान साफ़ व सही फ़रमाया। इमाम बुख़ारी फरमाते हैं कि मैं ने अपनी इस किताब को सोलह साल की मुद्दत में मुकम्मल किया।

ख़ुदा-ए-तआला ने आप को वे मिसाल याद रखने की ताक़त अता फ़रमाई थी कि आप को छः लाख हदीसें उनके ब्यान करने वालों के नाम के साथ याद थीं।

बुख़ारी शरीफ़ में कुल सात हज़ार दो सौ पचहत्तर (7275) हदीसें हैं जिन की तादाद मुकर्ररात (यानी जो एक से ज़्यादा बार आई हैं उन) को छोड़ने के बाद चार हज़ार हैं। ईद की चाँद रात 256 हि० में 13 दिन कम 62 साल की उम्र में आप ने वफ़ात पाई। समरक़न्द के क़रीब फरतंग में आप का मज़ारे मुबारक अवाम की ज़्यारत गाह है।

आप लिखते हैं हज़रत वरा विन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वयान है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हिजरत के मौक़े पर हम और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सारी रात सुबह तक चलते रहे यहाँ तक कि दो पहर हो गई। हमें एक बड़ा सा पत्थर नज़र आया जिस का साया था और वहाँ धूप नहीं थी। हम ने उसके साये में अपनी पोस्तीन (विस्तर) बिछादी और रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि आप इस पर सो जाइए। तो हुज़ूर आराम फ़रमाने लगे और मैं पहरा देता रहा। उस दर्मियान हम ने एक बकरी का दूध उस के चरवाहे से इजाज़त ले कर दूहा और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बेदार हुए तो मैं ने ये दूध आपकी ख़िदमत में पेश किया। आप ने उसे पी लिया और बहुत ख़ुश हुए। अब हम वहाँ से चल पड़े क्योंकि दिन ढल चुका था।

"इसी दौरान हमारा पीछा करता हुआ सुराक़ा बिन मालिक आ गया, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! कोई हमारे पीछे आ गया है। फ़रमाया न डरो अल्लाह हमारे साथ है। फिर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए दुआ की तो उस का घोड़ा पेट तक सुराक़ा समेत ज़मीन में धंस गया। उसने कहा मेरे ख़्याल में आप दोनों ने मेरी हलाकत के लिये दुआ की है। अब मेरी नजात (बचाव) के लिये दुआ करें। ख़ुदा की क़सम मैं आप की तलाश में फ़िरने वालों को वापस कर दूँगा। तो नबी-ए-करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम ने उस के लिए दुआ की तो ज़मीन ने उसे छोड़ दिया। पस जो शख़्स भी उस से मिलता तो उस से कह देता कि इधर तो मैं तलाश कर आया हूँ और जो भी मिलता वह उसे वापस कर देता और उसने जो हम से वादा किया था उसे पूरा किया।" (बुख़ारी शरीफ़ जि0: 1 स0: 511)

और इमाम बुख़ारी हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत करते हैं। उन्हों ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! "मैं ने आप से बहुत सी हदीसें सुनीं लेकिन वह सब भूल गया। हुज़ूर ने फ़रमाया अपनी चादर फैलाओ मैं ने फैलादी। तो आपने लप भर कर उस में डाल दिया फिर फरमाया इसे सीने से लगा लो। तो मैं ने लगा लिया। पस मैं उसके बाद किसी हदीस को नहीं भूला।" (बुख़ारी शरीफ़ जि0: 1 स0: 515)

हज़रत इमाम बुख़ारी और बयान फ़रमाते हैं। सईद बिन मीना का बयान है कि मैं ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फरमाते हुए सुना कि जब ख़न्दक़ खोदी जा रही थी तो मैं ने देखा कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सख़्त भूक लगी है। पस मैं अपनी

बीवी के पास आकर कहने लगा कि खाने की कोई चीज़ है? क्योंकि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सख़्त भूक की हालत में देखा है। उस ने बोरी निकाली तो उस में एक साअ् (चार किलो से ज़्यादा) जौ थे। और हमारे पास बकरी का एक बच्चा था पस मैं ने बकरी का बच्चा ज़िबह किया और बीवी ने जौ पीस लिए। मैं ने गोश्त की बोटियां बनाकर उन्हें पानी में डाल दिया। जब मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर होने की ख़ातिर जाने लगा तो बीवी ने कहा कहीं मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और आप के साथियों के सामने रूसवा न करना।

मैंने हाज़िरे ख़िदत होकर आहिस्ता से अर्ज़ किया कि मैंने बकरी का एक बच्चा ज़बह किया है और हमारे पास एक साअ् जौ का आटा है लिहाज़ा आप चन्द हज़रात को साथ लेकर तशरीफ ले चलें तो नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बुलन्द आवाज़ से फरमाया कि ऐ ख़न्दक़ वालो! जाबिर ने तुम्हारे लिये दअ्वत का इंतिज़ाम किया है लिहाज़ा आओ चलो, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से फरमाया कि मेरे आने तक हांडी न उतारना और रोटियां न पकवाना, पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ ले आये और आप सब लोगों के आगे थे, जब मैं घर गया तो बीवी ने घबरा कर मुझ से कहा कि आप ने मेरे साथ वही बात कर दी जिस का अन्देशा था मैंने कहा कि तुम ने जो कुछ कहा वह मैं ने अर्ज़ कर दिया था।

"पस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आटे में लुआबे दहन (थूक मुबारक) डाला और बरकत की दुआ मांगी। फिर हांडी में लुआबे दहन (थूक मुबारक) डाला और

दुआ-ए-बरकत की उसके बाद फ़रमाया कि रोटी बनाने वाली एक औरत बुला लो ताकि मेरे सामने रोटियां पकाए और तू अपनी हाँडी से गोश्त निकाल कर देती जाये और फ़रमाया कि हाँडी को नीचे न उतारना। खाने वालों की तादाद एक हज़ार थी। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम सब ने खाना खा लिया यहाँ तक कि सब सैराब हो कर चले गए और खाना भी पीछे छोड़ गए। देखा गया तो हाँडी में उतनाही गोश्त मौजूद था जितना पकने के लिए रखा था और हमारा आटा भी उतनाही था जितना कि पकाने से पहले था।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि०: 2 स०: 589)

हज़रत इमाम बुख़ारी रवायत करते हैं कि हज़रत सलमा बिन अकवाअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पिन्डली पर जंगे ख़ैबर के दिन ऐसी ज़बर्दस्त मार लगी कि लोगों को आप के शहीद होने का गुमान हो गया। हज़रत सलमा फ़रमाते हैं कि "मैं नबी-ए-करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप ने तीन बार उस पर थुक थुकाया फिर पिन्डली में कभी दर्द न हुआ।" **(बुख़ारी शरीफ़** जि०: 2 स०: 605)

हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऊपर ज़िक्र की गई हदीसों का बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ऐसे अज़ीम मरतबे से सरफ़राज़ फ़रमाया था कि उनके चाहने से घोड़ा अपने सवार समेत पेट तक ज़मीन में धंस गया। फिर हुज़ूर ही के चाहने से ज़मीन ने उस को छोड़ा। और कुव्वते हाफ़िज़ा (याद रखने की ताक़त) जैसी चीज़ को आप ने चादर में डाल कर उसे दिमाग़ तक पहुंचा दिया और आटा व हाँडी में थूक डाल दिया तो वह बहुत ज़्यादा हो गए।

यहाँ तक कि गोश्त के साथ शोरबे का मसाला भी बढ़ गया। और सिर्फ थूक से हलाक करने वाला जख़्म हमेशा के लिए अच्छा हो गया।

★★★

इमाम मुस्लिम का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 261 हि0)

आप का नाम मुस्लिम बिन हुजाज कुशैरी है।। कुन्नियत (उपनाम) अबुल हुसैन और लक़्ब (उपाधि) असाकिरूद्दीन है। आप का तअल्लुक़ क़बीला बनी कुशैर से था इस लिए आप को कुशैरी कहा जाता है। आप 204 हि0 में पैदा हुए। वतन नीशापुर है जो ईरान में ख़ुरासान प्रदेश का मशहूर शहर है। आपने कई किताबें लिखी हैं लेकिन उन तमाम किताबों में सही मुस्लिम सब से ज़्यादा मशहूर व मक़बूल है। जमहूर (अक्सर) उलमा के नज़दीक आप की सही मुस्लिम जो सही होने व सनद अहमियत में सही बुख़ारी के बाद दूसरे दर्जे की किताब है जिसे आप ने तीन लाख हदीसों से छाँट कर तैयार किया है।

शैख़ मुहक़्क़िक़ अलैहिर्रहमतो व रिज़वान के फ़रमान के मुताबिक़ आप उलमा-ए-सल्फ़ में ऐसे इमाम व पेशवा हैं कि बाद का कोई आलिम व मुहद्दिस आप के मर्तबे को नहीं पहुंच सका। आप की वफ़ात (स्वर्गवास) 261 हि0 में हुई जिस का सबब अजीब व ग़रीब है कि आप को एक हदीस की तलाश थी जिसे अपने मुसव्वदात (हदीस के ज़ख़ीरे) में आप तलाश कर रहे थे और क़रीब ही एक टोकरा खुजूर का रखा हुआ था उस में से खुजूर निकाल कर खाते जाते थे यहाँ तक कि सब खुजूरें ख़त्म

हो गईं और उस वक़्त आप को इस का एहसास न हुआ मगर बाद में वही बेअंदाज़ा खुजूरें खा लेना ही आप की वफ़ात (इन्तिक़ाल) का सबब बना।

आप हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत करते हैं। उन्हों ने फ़रमाया कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मदीना तैय्यबा में मक़ाम ज़ोरा पर थे कि एक प्याला हुज़ूर की ख़िदमत में पेश किया जिस में कुछ पानी था तो आपने अपनी मुक़द्दस (पाक) हथेली उस में रख दी।"पस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुबारक उंगलियों की घाइयों से पानी निकलने लगा तो सारे सहाबा ने वुज़ू कर लिया। हज़रत क़तादा फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत अनस से पूछा कि ऐ अबू हमज़ा आप लोग कितने थे? तो उन्होंने फ़रमाया कि तक़रीबन तीन सौ।" (मुस्लिम शरीफ़ जि०: 2 स०: 246)

और हज़रत सलमा बिन अकवअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत करते हैं उन्होंने फ़रमाया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने एक शख़्स ने अपने बायें हाथ से खाया तो हुज़ूर ने फरमाया:"अपने दाहिने हाथ से खा। उसने कहा मैं दाहिने हाथ से नहीं खा पाता। हुज़ूर ने फ़रमाय तू दाहिने हाथ से न खा सके। उसने तकब्बुर की वजह से झूठा उज़्र किया था। रवायत करने वाले ने कहा तो वह अपना दाहिना हाथ मुंह तक कभी नहीं पहुंचा सके।"

(बुख़ारी शरीफ़ बहवाल–ए–मिशकात शरीफ़ स० 536)

और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत करते हैं उन्होंने फ़रमाया कि"हम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र कर रहे थे कि"बे आबो ग्याह" वादी यानी मैदान में उतरे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

क़ज़ा-ए-हाजत के लिए तशरीफ़ ले गए लेकिन पर्दे की कोई जगह आप को न मिली अचानक आप की नज़र उस वादी (मैदान) के किनारे दो दरख़्तों पर पड़ी। हुज़ूर उन में से एक के पास गए और उस की एक शाख़ को पकड़ कर दरख़्त से फरमाया कि खुदा के हुक्म से मेरे साथ चल। वह दरख़्त उस ऊँट की तरह चल पड़ा जिसकी नाक में नकेल बंधी रहती है और अपने सारेबान (ऊँटबान) की फ़रमाँबरदारी करता रहता है। यहाँ तक कि हुज़ूर उस दूसरे दरख़्त के पास पहुंचे हुज़ूर जब उन दरख़्तों के दर्मियान की जगह में पहुंचे तो फ़रमाया कि ऐ दरख़्तो! तूम दोनों हुक्मे इलाही से आपस में मिल कर मेरे लिए पर्दा बन जाओ तो दोनों एक दूसरे से मिल गए और हुज़ूर ने उन दरख़्तों की आड़ में क़ज़ा-ए-हाजत (इस्तिन्जा) फ़रमाई। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि उस अजीब वाक़ेए को देख कर मैं बैठा सोच रहा था कि मेरी निगाह उठी तो अचानक मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं और देखा कि अचानक वह दोनों दरख़्त जुदा हो कर चले और अपने तने (पेड़) पर खड़े हो गए।"

(मुस्लिम शरीफ़ बहवाल–ए–मिशकात स0 533)

हज़रत इमाम मुस्लिम रिज़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इन अहादीसे मुबारका को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को खुदा-ए-तआ़ला ने तसर्रूफ़ (ग़ैबी ताक़त) व इख़्तियार का वह मरतबा अता फ़रमाया था कि हुज़ूर अपनी उंगलियों की घाइयों से पानी निकालते। और एक को कह दिया कि तू दहिने हाथ से न खा सके तो फिर वैसा ही हुआ और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम दरख़्तों को इस तरह चलाते जैसे ऊँट चलाए जाते हैं।

★★★

इमाम तिर्मिज़ी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 279 हि०)

आप अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा असलमी हैं। आप बुलन्द मर्तबा उलमा, रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की अहादीस के हाफ़िज़ और मुत्तिफ़क़ अ़लैहि मोअ़तबर मुहद्दिसीन में से हुए हैं। इल्मे फ़िक़ह व हदीस में महारत रखते थे। आप की किताब तिर्मिज़ी शरीफ़ सिहाहे सित्ता (हदीस की मशहूर व अहम छः किताबों) में से एक है जो आप की अज़मते शान, बेमिसाल याददाश्त, कसरते मुतालआ (अति अध्ययन) और हदीस के फ़न में आप की हद दरजा इल्मी कमाल पर दलालत करती है। उलमा ने आप की किताब तिर्मिज़ी शरीफ़ की शान में कहा है। यानी यह किताब मुजतहिद के लिये काफ़ी व वाफ़ी और मुक़ल्लिद (पैरोकार) को बेनियाज़ करने वाली है।

आप ने तिर्मिज़ी शरीफ़ लिखाने के बाद हिजाज़ (मक्का-मदीना) इराक़ और खुरासान के उलमा की ख़िदमत में पेश की तो सब ने उसे पसन्द फ़रमाया और अच्छी किताब क़रार दिया। "शमाइलुन्नबी" सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम भी आप की लिखी हुई है जो शमाइले नबवी (आ़दत व सिफ़त) के मौज़ू (विषय) पर एक बेहतरीन किताब है और बहुत ख़ैरो बरकत का ज़रिया है। मुश्किलात हल करने के लिए उस का पढ़ना मशाइख़ व अकाबिर के ज़रिये तजरबे में आचुका है, आप 209 हि० में पैदा हुए और 279 हि० में वफ़ात (स्वर्गवास) पाई। अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान। (बहवाला अशअतुल्लमआत)

हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तसर्रूफ़

के मुतअल्लिक़ आप का अक़ीदा मुलाहज़ा हो। आप इरशाद फ़रमाते हैं।"हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि एक देहाती हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मैं कैसे यक़ीन करूँ कि आप सच्चे नबी हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि खुजूर के उस खोशे को अगर मैं बुलाऊँ और वह मेरे पास आकर इस बात की गवाही दे कि मैं ख़ुदा-ए-तआला का रसूल हूँ जब तुझे यक़ीन आ जाएगा। चुनान्चे हुज़ूर ने उस खोशे को बुलाया तो वह खुजूर के दरख़्त से उतरने लगा यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के क़रीब ज़मीन पर आ कर गिरा। फिर आपने फ़रमाया वापस चला जा तो वह खोशा (खुजूर का गुच्छा) वापस चला गया। यह देख कर आराबी (देहाती) मुसलमान हो गया।"

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जि०: 2 स०: 203)

इस हदीस शरीफ़ को लिख कर हज़रत इमाम तिर्मिज़ी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने अपना यह अक़ीदा साफ़ कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने दरख़्त के फलों को भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़ेरे फ़रमान (मातहत) कर दिया था।

★★★

अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तेक़ाल 544 हि०)

आप का नाम अयाज़ है। और बाप का नाम मूसा बिन अयाज़ बिन उमर बिन मूसा बिन अयाज़ यहसबी सबती गरनाती। आप मालिकी मज़हब के थे। 476 हि0 में पैदा हुए और मराकश में जुमआ के दिन जमादिउल उख़रा 544 हि0 में वफ़ात हुई।

आप को यहसबी इस लिए काहा जाता है कि यमन के मशहूर क़बीला यहसब से आप का तअल्लुक़ था। और शहरे सबता में पैदा हुए जहाँ आप का वतन था इस बुनियाद पर आप को सबती कहा जाता है। और अर्से-ए-दराज़ तक सबता के क़ाज़ी रहे 531 हि0 में चुँकि आप ग़रनाता चले गए थे इस लिए आप को ग़रनाती भी कहा जाता है। और आपके आबा ओ अजदाद (पूर्वज) उन्दुलुस (स्पेन) के रहने वाले थे जो वहाँ से शहरे फ़ास आबाद हो गए फिर सबता में आकर रिहाइश इख़्तियार किए इस बुनियाद पर बाज़ लोगों ने आपको उंदुलुसी भी लिखा है।

आप तफ़सीर, हदीस, फ़िक़्ह और दीगर उलूमे अक़लिया (मन्तिक़ व फ़लसफ़ा) के इमाम व बेहतरीन ख़तीब (धर्म-वक्ता) थे। कुल तीस किताबें आप ने लिखी हैं जिन में सब से ज़्यादा मशहूर व मक़बूल "अशिफ़ा बितारीफ़े हुक़ूकिल मुस्तफ़ा" है। (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) बुज़ुर्गों ने फ़रमाया शिफ़ा शरीफ़ वह मुतबर्रक किताब है कि जिस मकान में रहे उसे कोई ज़रर (नुक़्सान) न पहुंचे और जिस कश्ती में रहे वह डूबने से महफ़ूज़ रहे और मरीज़ उस किताब को पढ़े या सुने वह शिफ़ा पाये।

आप हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत करते हैं उन्होंने फ़रमाया कि जंगे ज़ी क़ुर्द में हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चेहरे पर एक तीर लगा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन को बुलाया। "और ज़ख़्म पर थूक लगा दिया। फरमाते हैं उस वक़्त से न तो मुझे दर्द हुआ और न ज़ख़्म में पीप पड़ी बल्कि अच्छा हो गया।"

(शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1 स0: 212)

और बयान फ़रमाते हैं कि जंगे बद्र में अबू जहल ने हज़रत मुअव्वज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ काट

डाला।"पस वह अपना हाथ उठाए हुए हाज़िर हुए तो हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम ने उस हाथ पर थूक मुवारक लगा दिया और उस को जोड़ दिया तो वह उसी वक्त जुड़ गया।"

(शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1 स0: 213)

और वयान फ़रमाते हैं कि जंगे वद्र में हज़रत हवीव विन यसाफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु के मूंढे पर ऐसी ज़र्ब (चोट) लगी कि जिस से मूंढा कट कर लटक गया।"पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने उस मूंढे को उसकी जगह पर रखा और उस पर थूक दिया तो वह मूंढा विलकुल ठीक हो गया।"

(शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1 स0: 213)

और वयान फ़रमाते हैं कि"रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम ने हज़रत क़तादा विन मलहान के चेहरे पर अपना मुक़द्दस हाथ फेरा तो उनके चेहरे में इतनी चमक पैदा हो गई कि उस में चीज़ों का अक्स (परछाई) उसी तरह देखा जाता जैसे आइने में। (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1 स0: 220)

इमाम क़ाज़ी अयाज़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु और वयान फरमाते हैं।"रहमते आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने एक गंजे वच्चे के सर पर अपना मुक़द्दस हाथ फेरा तो उसका गंजापन जाता रहा और सव वाल वरावर हो गए।

(शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1 स0: 220)

और वयान फ़रमाते हैं कि हज़रत इव्ने अव्वास रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा से रवायत है। उन्हों ने फ़रमाया।"एक औरत अपने ऐसे लड़के को ले कर हाज़िरे ख़िदमत हुई जिसे जुनून (पागल पन) था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने अपना मुक़द्दस (पवित्र) हाथ उस के सीने पर फेरा तो उस ने कै़ की और उसके पेट से काले पिल्ले जैसी एक चीज़ निकली जो

दौड़ती फिरती थी।" (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2 स0: 214)

हज़रत इमाम क़ाज़ी अयाज़ अलैहिर्रहमतु व रिज़वान ने इन अहादीस करीमा को लिख कर अपना यह अक़ीदा सावित कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम को खुदा-ए-तआ़ाला ने तसर्रुफ़ व इख़्तियार की वे पनाह ताक़त मरहमत फरमाई थी।

एक ऐतराज़ का जवाव

अगर कोई शख़्स कहे कि जव हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को यह कुदरत हासिल थी कि हज़रत मुअव्वज़ विन अफ़रा रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु का कटा हुआ हाथ आपने जोड़ दिया और हज़रत हवीव विन यसाफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु के कट कर लटके हुए मूंढे को आपने सही कर दिया तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में लशकरे इस्लाम के किसी एक सिपाही को भी ज़ख़्मी हो कर शहीद नहीं होना चाहिए था।

तो इस ऐतराज़ का जवाव यह है कि इरशादे खुदावन्दी है यानी जब उनको मौत आएगी तो एक साअत (घड़ी) आगे पीछे नहीं होगी। (पा0: 11 रू0: 10)

और इरशाद फरमाया यानी अल्लाह तआ़ाला किसी जान की मौत को हर्गिज़ मुअख़्ख़र (लेट) नहीं फ़रमाएगा जव कि उसका वक़्त आजाएगा। (पा0: 28 रू: 14)

तो जब रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम जानते हैं कि उस ज़ख़्मी की शहादत का वक़्त अभी नहीं आया है तो आप उसके बारे में तसर्रुफ़ व इख़्तियार फरमाते और जब जान लेते कि उसकी दुनियवी ज़िन्दगी ख़त्म हो गई है तो उसके बारे में आप कुछ न करते।

★★★

अल्लामा खतीब तबरेज़ी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 740 हि0)

आप बयान फरमाते हैं कि"हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रवायत है उन्होंने फरमाया कि हम नवी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र कर रहे थे कि एक देहाती आया जब वह हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के क़रीव पहुंचा तो आपने उस से फरमाया क्या तू इस बात की गवाही देता है कि खुदा के सिवा कोई माबूद (ख़ुदा) नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ख़ुदा-ए-तआ़ला के बन्दे और उसके रसूल हैं। देहाती ने कहा आपकी बातों पर मेरे सिवा और कौन गवाही देगा? हुजूर ने फरमाया कि बबूल का दरख्त गवाही देगा। यह फरमा कर आप ने उस दरख़्त को बुलाया। आप वादी (घाटी) के किनारे थे। वह दरख्त ज़मीन को फाड़ता हुआ चला यहाँ तक कि आप के सामने खड़ा हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उससे तीन बार (खुदा-ए-तआ़ला के एक होने और अपनी रिसालत पर) गवाही तलव फ़रमाई उस दरख़्त ने तीनों बार गवाही दी कि हक़ीक़त में ऐसा ही है जैसा कि आपने फरमाया उसके बाद वह दरख़्त अपनी जगह पर चला गया।"(मिशकात शरीफ़ 541)

हज़रत अल्लामा ख़तीव तवरेज़ी रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि इस हदीस शरीफ़ को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को तसर्रुफ़ व क़ुदरत का वह इख़्तियार बख़्शा था कि आप दरख़्त को बुलाते तो वह ज़मीन के सीने को चीरता हुआ

हुजूर की वारगाह में हाज़िर होता और जिस बात की आप उस से गवाही तलव फरमाते वह उस बात की गवाही देता।

★★★

अ़ल्लामा जलालुद्दीद सुयूती का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा इन्तिक़ाल 911 हि0)

आप का नाम अब्दुर्रहमान, लक़ब जलालुद्दीन और कुन्नियत (उपनाम) अबुल फ़ज़्ल है। पहली रजब 849 हि0 में शहरे सुयूत में पैदा हुए जो इलाक़-ए-मिस्र में दरिया-ए-नील के पश्चिमी जानिब मौजूद है। आप पाँच साल सात माह के थे कि बाप के साए से महरूम हो गये। वसीयत के मुताबिक़ चन्द बुज़ुर्गों ने आपकी सरपरस्ती की जिन में शैख़ कमालुद्दीद इब्ने इलहाम हनफ़ी थे। उन्होने आपकी तरफ़ पूरी तवज्जुह की तो आप ने आठ साल से कम उम्र में हिफ़्ज़े कुरआन से फारिग़ हो कर कई इल्मी कितावें हिफ़्ज़ कीं।

इल्म हासिल करने के बाद 871 हि0 में फ़तवा लिखने का काम शुरू किया और 872 हि0 से हदीस शरीफ़ के लिखने में मशग़ूल हुए और पढ़ाने की इजाज़त तो आप को 866 हि0 में मिल गई थी आपने खुद "हुस्नुलमुहाज़रा" में लिखा है कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे तफ़सीर, हदीस, फ़िक़्ह, नह्व, मआ़नी, बयान और बदीअ़ सात उलूम में महारत व कमाल अता फ़रमाया था। आप अपने ज़माने में इल्मे हदीस के सब से बड़े आ़लिम थे आप ने खुद फरमाया है कि मुझे दो लाख हदीसें याद हैं। अगर मुझ को इस से ज़्यादा मिलतीं तो उनको भी याद करता। आपने कुल तीन सौ किताबें लिखी हैं जिन में तफ़सीर जलालैन का निस्फ़े अव्वल,

(पहला आधा) तफ़सीरे इतक़ान, खसाइसे कुबरा और तारीख़े खुलफ़ा बहुत मशहुर हैं।

चालीस साल की उम्र में आपने दर्स व तदरीस (शिक्षा-दीक्षा) इफ़्ता व क़ज़ा और तमाम दुनियवी तअल्लुक़ात से अलग होकर गोशा नशीनी (तन्हाई) इख़्तियार करली और बड़ी तवज्जुह व लगन के साथ किताबें लिखने और इवादत व रियाज़त व नसीहत व हिदायत में मश्गूल हो गए। आपने 63 साल की उम्र पाई और एक मामूली से मर्ज़ हाथ के वर्म (सुजन) में मुब्तला होकर 911 हि0 में अलमुस्तमसिक बिल्लाह के ज़माने में इन्तिक़ाल फरमाया।

आप इरशाद फ़रमाते हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रवायत है कि "हज़र मौत" के चन्द ज़मीनदार हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की खिदमते अक़दस में हाज़िर हुए, जिन में अशअस बिन क़ैस भी थे। उन लोगों ने कहा हमने एक़ बात दिल में छुपा रखी है बताइये वह क्या है? आपने फरमाया सुबहानल्लाह यह तो काहिन (नुजूमी) का काम है। और काहिन (ज्योतिश) का मक़ाम दोज़ख़ है। "तो उन लोगों ने कहा फिर हम किस तरह जानें आप अल्लाह के रसूल है? तो आपने एक मुट्ठी कंकरी ज़मीन से उठा कर फरमाया कि यह गवाही देंगी कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुक़द्दस हाथ में कंकरियों ने तसबीह पढ़ी। यह सुनते ही उन लोगों ने कहा हम भी गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं।"

(खसाइसे कुबरा जि0: 2 स0: 75)

बहुत सी हदीसों से साबित है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम दिलों की कैफ़ियात व हालात पर आगाह थे। लेकिन इस मौक़े पर जो फरमाया कि यह काहिन

(ज्योतिशी) का काम है तो उस में मसलेहत यह थी कि जब हुज़ूर उनके दिल की बात बता देते तो हो सकता था वह कहते कि यह तो काहिन भी कर दिया करते हैं। लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इसकी बजाए कंकरियों से अपना कलेमा पढ़वा दिया। जो काहिन से मुम्किन नहीं था।

और लिखते हैं कि हज़रत अक्काशा बिन मुहसिन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि बद्र की लड़ाई में मेरी तलवार टूट गई।"पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझे एक लकड़ी दी तो वह सफ़ेद लम्बी तलवार हो गई और मैं ने उस से लड़ाई की यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मुश्रिकों को शिकस्त (मात) दी। वह तलवार हज़रत अक्काशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास उन के इन्तिक़ाल तक रही।"

(बेहक़ी, इब्ने असाकिर, खसाइसे कुबरा जि0: 1 स0: 205)

और लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तलवार जंग उहद में टूट गई।"तो नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनको खुजूर की एक शाख़ (टेहनी) अता फ़रमाई जो उनके हाथ में तलवार बन गई।"**(बैहक़ी, खसाइसे कुबरा जि0: 1 स0: 217)**

और बयान फरमाते हैं। हज़रत अबू उमरा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है। उन्होंने फरमाया कि हम एक जंग में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हमराह थे तो एक रोज़ बहुत प्यासे हुए। हुज़ूर ने एक छागल मंगवा कर उसको अपने सामने रखा और थोड़ासा पानी डाल कर उस में कुल्ली की और जो कुछ अल्लाह ने चाहा" कलाम पढ़ा।"फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी छोटी उंगली उस में डाल दी। खुदा की क़सम मैं ने देखा

कि आपकी उंगलियों से पानी के चश्मे फूट पड़े फिर आपने लोगों को हुक्म दिया तो लोगों ने खुद पिया और अपने जावनरों को पिलाया और मश्कें और डोलचियाँ भर लीं। यह देख कर आप मुस्कुराए यहाँ तक कि आपके दाँत मुवारक ज़ाहिर होगए।"

(अबूनईम, ख़साइसे कुबरा जि०: 2 स०: 42)

उंगलियां पाईं वह प्यारी प्यारी जिन से दरिया-ए-करम है जारी
जोश पर आती है जब ग़मख़्वारी तिश्ने सैराव हुआ करते हैं

बयान फरमाते हैं। हज़रत अरवाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रवायत है उन्होंने फ़रमाया कि जंगे तबूक में एक रात हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत विलाल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाया ऐ विलाल! क्या तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है? उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर! आपके रव की क़सम। हमारे तोशा-दान ख़ाली हो चुके हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छी तरह देखो और अपने तोशा-दान झाड़ो। सब ने अपने अपने तोशा-दान (खाने के बर्तन) झाड़े तो कुल सात खुजूरें मिलीं। आपने उनको एक दस्तरख़्वान पर रखा। फिर उन पर अपना मुक़द्दस (पवित्र) हाथ रखा और फ़रमाया विस्मिल्लाह खाओ। हम तीनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ मुवारक के नीचे से एक एक उठा कर खाने लगे। हज़रत विलाल फ़रमाते हैं कि मैं वाऐं हाथ में गुठलियां रखता जाता था, पेट भर खाने के वाद जव मैं ने उन को गिना तो वह 54 थीं। इसी तरह हमारे दोनों साथियों ने भी पेट भर खाया। जव हम लोग सैर हो गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपना हाथ उठा लिया। वह सात खजूरें उसी तरह मौजूद थीं।

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमाया। ऐ बिलाल! इन खुजूरों को संभाल कर रखो उनमें से कोई न खाए फिर काम आयेंगी। हज़रत विलाल फरमाते हैं कि हम ने उन को नहीं खाया। फिर जब दूसरा दिन आया और खाने का वक्त हुआ तो आप ने उन्हीं सात खुजूरों को लाने का हुक्म फरमाया। आप ने फिर इसी तरह उन पर अपना दस्ते मुवारक रखा और फरमाया विस्मिल्लाह खाओ। अब हम दस आदमी थे सब ने पेट भर खाया। फिर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ मुवारक हटाया तो वदस्तूर सात खुजूरें मौजूद थीं। आपने फरमाया ऐ विलाल!"अगर मुझे अल्लाह तआ़ला से शर्म न आती तो मदीना वापस जाने तक हम उन ही सात खुजूरों से खाते। फिर आपने वह खुजूरें एक लड़के को अता फारमार्दी वह उन्हें खाता हुआ चला गया।"

(अबूनईम, इब्ने असाकिर, ख़साइसे कुबरा जि०: 1 स०: 275)

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला ने ऊपर ज़िक्र कि गईं हदीसों को ख़साइसे कुबरा में लिख कर अपना यह अक़ीदा खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को अल्लाह की जानिब से हर किस्म के तसर्रूफ़ात व इख़्तियार अता किए गए हैं।

और देवबन्द के मौलाना मुहम्मद हनीफ़ गंगोही लिखते हैं कि हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के खास खादिम मुहम्मद अली हवाक का बयान है कि एक रोज़ आप ने कैलूला (दोपहर का आराम) के वक्त फ़रमाया कि अगर तुम मेरे मरने से पहले इस राज़ को फ़ाश (जाहिर) न करो तो आज अस्र की नमाज़ मक्का मुअ़ज़्ज़मा में पढ़वादूँ, अर्ज़ किया ज़रूर। फरमाया आँखें बन्द कर लो और हाथ पकड़ कर तक़रीबन सताइस क़दम चल कर फरमाया आँखें खोल दो। देखा तो हम"वावे मुअल्लात"

पर थे। हरम पहुंच कर तवाफ़ किया "ज़मज़म" पिया। फिर फरमाया कि इस से तअज्जुब मत करो कि हमारे लिए ज़मीन सिमट गई बल्कि ज़्यादा तअज्जुब इस का है कि मिस्र के बहुत से मुजाविरीने हरम हमारे जानकार यहाँ मौजूद हैं मगर हमें न पहचान सके। फिर फरमाया चाहो तो साथ चलो वरना हाजियों के साथ आ जाना। अर्ज़ किया साथ ही चलूँगा।"बाबे मुअल्लात" तक गए और फरमाया आँखें बन्द कर लो और मुझे सात क़दम दौड़ाया। आँखें खोलीं तो हम मिस्र में थे। (अहवालुल मुसन्निफ़ीन स0 46)

इस वाकिए से हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि चन्द घड़ी में एक मुल्क से दूसरे मुल्क पहुँचने, बल्कि दूसरे को पहुँचाने क़ी भी ताक़त खुदा-ए-तआला ने मुझे मरहमत फरमाई।

हरके इश्क़े मुस्तफ़ा सामाने ओस्त
वहरो वर दर गोश-ए-दामाने ओस्त

(डा0 इक़बाल)

★★★

अल्लामा शतनौफी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, वफ़ात 713 हि0)

आप को अल्लामा शम्सुद्दीन ज़हवी ने अपनी किताब "तवक़ातुल मुक़रिईन" में और ख़ातिमुल हुफ्फ़ाज़ अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने "हुस्नुल मुहाज़रा फ़ी अख़बारि मिस्र वलक़ाहिरा" में वेनज़ीर इमाम कहा है। वह बयान फरमाते हैं।"मैं ने पहले ज़माने के बुज़ुर्ग मशाइख़ को यह कहते हुए पाया कि

चार बुज़ुर्ग ऐसे हैं जो मादरज़ाद (जनम से) अंधे और कोढ़ी को अच्छा करते हैं शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, शैख़ बक़ा बिन बतू, शैख़ अबू सअद कैलवी और शैख़ अली बिन हैती। रजियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।"(बहजतुल असरार स0: 63)

और बयान फ़रमाते हैं। मैं ने ऐसे चार मशाइख़ (औलिया) को देखा है जो अपनी क़बरों में ऐसे तसर्रूफ़ व इख़्तियार करते हैं जैसे ज़िन्दा करते हैं। "हज़रत शैख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी, हज़रत शैख़ मारूफ़ करख़ी "हज़रत शैख़ अक़ील मुन्जी" और हज़रत शैख़ हया बिन कैस हरानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

(बहजतुल्लाह असरार स0: 63)

और हज़रत शैख़ अली बिन हैती अलैहि र्रहमतु वर्रिज़वान के तआरूफ़ में बयान फ़रमाते हैं।"आप उन चार बुज़ुर्गों में से एक हैं जिन को इराक़ के बुज़ुर्ग मशाइख़ "बरअह" कहते थे इस वजह से कि वह हज़रात मादरज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले को अच्छा करते थे। और वह शैख़ "अब्दुलक़ादिर जीलानी," शैख़ अली बिन हैती, शैख़ बक़ा बिन बतू, और शैख़ सअद कैलवी हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।"

"यह वह बात है जिसकी हम को अबुलफ़तूह अब्दुलहमीद बिन मआली सरसरी ने ख़बर दी। उन्होंने कहा हम को शैख़ अली बिन खब्बाज़ ने खबर दी। उन्होंने कहा मैं ने दो उमर कीमानी और बज़्ज़ाज़ से सुना। वह दोनों कहते थे कि हमने पहले ज़माने के मख़सूस मशाइख़ को पाया कि वह शैख़ "अब्दुलक़ादिर जीलानी", "शैख़ अली बिन हैती, शैख़ बक़ा बिन बतू" और शैख़ अबू सअद कैलवी (अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान) को बरअह कहते थे। यानी यह मादरज़ाद सफ़ेद दाग़ वाले को अच्छा करते थे।"

(बहजतुल असरार स0 153)

हज़रत अल्लामा शतनौफी रहमतुल्लाहि तआ़ाला अलैहि ने ऊपर गुज़री इबारतों व हवालों में अपना यह अक़ीदा साफ़ लफ्ज़ों में बयान कर दिया कि चार मशाइख़ मादरज़ाद (जनम से) अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर दिया करते थे। साथ ही यह भी ज़ाहिर कर दिया कि यह सिर्फ मेरा अक़ीदा नहीं है बल्कि पहले ज़माने के बुज़ुर्गों का भी यही अक़ीदा रहा। और अपना यह अक़ीदा भी ज़ाहिर कर दिया कि चार मशाइख़ अपनी क़ब्रों में ज़िन्दों की तरह तसर्रुफ़ व हुकूमत करते हैं।

हज़रत अ़ल्लामा शतनौफी रहमतुल्लाहे तआ़ला अलैहि और बयान फरमाते हैं कि खबर दी हम को शैख़ सालिह अबू मुहम्मद अब्दुल जब्बार बिन अहमद बिन अली क़रशी मिस्री मुअद्दब ने उन्होंने कहा खबर दी हम को शैख़ इमाम अबूर्रबीअ़ सुलैमान बिन अहमद बिन अली सादी मुक़री ने (जो इब्ने मुइज्ज-बिल से मशहूर हैं) कहा कि मैं ने शैख़ आरिफ़ अबुल अब्बास अहमद बिन बरकात बिन इसमाईल सादी मुक़री जो हज़रत शैख़ अबू अम्र उसमान बिन मरज़ूक़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु के खादिम थे। उन से सुना वह कहते थे कि एक मर्तबा मैं ने हज़रत के साथ मुल्के शाम तक तजरीद के क़दम पर सफ़र किया। यानी अल्लाह तआ़ाला के अलावह और कोई तीसरा हमारे साथ न था। तीन दिन गुज़र गए कि मुझे कोई खाने पीने का चीज़ न मिली। क़रीब था कि मैं ज़मीन पर गिर पड़ता। जब हज़रत ने मुझे इस हाल में देखा तो रेत के टीले पर चढ़ कर दोनों हाथों से रेत भर ली। यानी मुझ को भुना हुआ सत्तू जिस में शकर पड़ी हुई थी दिया मैं ने उसको खाया यहाँ तक कि मेरा पेट भर गया। फिर टीले पर एक हाथ मारा तो उस में से एक मीठा चश्मा (पानी का सोता) निकल आया जो कि दुनिया के मीठे चश्मों से बेहतर था। मैं ने उस से पानी

पिया यहाँ तक कि सैराब हो गया। (बहजतुलअसरार स0: 175)

हज़रत अल्लामा शतनौफी रहतुल्लाह अलैहि और बयान फरमाते हैं कि खबर दी हम को अबू मुहम्मद मालिक बिन शैख़ अबुल फ़तह मुन्जी ने। उन्होंने कहा खबर दी हम को शैख़ आरिफ़ फ़क़ीह फाज़िल अबुल फरह उबैद बिन मुनीअ़ बिन कामिल असअसी मुक़री ने उन्होंने कहा खबर दी हम को शैख़ आरिफ़ अबू यहया ज़करिया बिन शैख़ अबू ज़करिया यहया बिन शैख़ बुज़ुर्ग अबू हफ़्स उमर बिन यहया मशहूर हर्दीदी ने। उन्होंने कहा कि मैं ने अपने बाप से सुना। वह कहते थे कि मैं ने शैख़ आरिफ होशयार अबूस्सना अहमद बिन अब्दुल हमीद सन्जारी ज़रई से सुना। वह कहते थे कि एक साल मैंने शैख सुबैद रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु के साथ क़दम तजरीद (सिर्फ़ खुदा के सहारे) पर हज किया।

जब हम एक जंगल में पहुंचे तो पानी हमारे पास खत्म हो गया और हम को सख्त प्यास लगी यहाँ तक कि हम मरने के क़रीब हो गए। हज़रत ने रास्ते से थोड़ा हट कर दो रकअत नमाज़ पढ़ी और मैं आप के साथ था। वहाँ एक पत्थर था जिस पर आप ने अपना हाथ मारा तो उस में से एक निहायत मीठा चश्मा (पानी का सोता) फूट पड़ा हम ने खूब पानी पिया यहाँ तक कि सैर हो गए। और हज़रत ने अपने हाथ से एक चुल्लू भर कर मुझे पिलाया तो मैं ने पानी और सत्तू पिया। फिर एक चुल्लू भरा और पिया। फिर उस पर अपना हाथ फेरा तो वह पहले की तरह सख़्त पत्थर बन गया जिस पर तरी का कुछ नाम व निशान न था। यानी फिर मुझे सात रोज़ तक़ खाने पीने की ज़रूरत पेश नहीं आई। (बहजतुलअसरार स0: 179)

हज़रत अ़ल्लामा शतनौफी रहमतुल्लाहे अ़लैहि और ज़िक्र

करते हैं कि ख़बर दी हम को हमारे शैख़ नजीबुद्दीन अबुल फरह अब्दुल लतीफ़ बिन शैख़ नजमुद्दीन अब्दुल मुनइम बिन अली बिन सैक़ल हरानी ने। उन्होंने कहा कि मैं ने अपने बाप रहमतुल्लाहे तआ़ला अलैहि से सुना वह कहते कि हज़रत शैख़ हयात् हरानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने एक साल हज किया। जब एक मन्ज़िल पर सब क़ाफला उतरा तो हज़रत और उनके साथी एक बबूल के दरख़्त के नीचे बैठे। उनके ख़ादिम ने अर्ज़ किया ऐ मेरे सरदार! मैं ताज़ा खुजूर खाना चाहता हूँ। आप ने फ़रमाया"इस दरख्त को हिला।" उसने अर्ज़ किया ऐ मेरे सरदार! यह तो बबूल का दरख्त है। आपने फरमांया उसी को हिला। जब उस ने हिलाया तो उस पर से ताज़ा खुजूरें गिरीं और उनको सब ने खाया यहाँ तक कि वह सैर हो गये। और फिर वहाँ से चल दिए।

(बहजतुलअसरार स0: 182)

और बयान फरमाते हैं कि खबर दी हम को शैख़ अबूलमआली अब्दुल रहीम बिन मुज़फ्फर बिन मुहज़्ज़ब क़रशी ने उन्होंने कहा कि मैं ने अपने बाप रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि से सुना जो हज़रत शैख़ अली बिन इदरीस रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मुरीदों में से थे। उन्होंने बयान किया कि हमारे इलाके में एक ऐसा हाकिम आया जिस ने हम लोगों पर बहुत जुल्म और ज़्यादती की। मैं हज़रत शैख़ अली बिन इदरीस रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनके पास याकूबा के मक़ाम पर ठहरा रहा मगर उनके रोअ़ब व दबदबा और हैबत की बहज से हाकिम के बारे में उन से कुछ अर्ज़ न कर सका। फिर जब चौथी रात हुई और हज़रत मग़रिब की नमाज़ पढ़ कर बैठे और तमाम मुरीदों ने आप को चारों तरफ़ से घेर लिया तो आप ने एक मुरीद के हाथ में तीर और कमान देख कर फरमाया

कि यह मुझे देदे।

उसने आप को दे दिया। फिर शैख़ ने तीर को कमान के जिगर पर रख कर मुझे फ़रमाया क्या मैं तीर चला दूँ? मैं ने अर्ज़ किया ऐ मेरे सरदार! अगर आप चाहें चलादें। आपने तीर और कमान को ज़मीन पर रख दिया। कुछ देर के बाद उन्हें फिर उठा कर फ़रमाया क्या मैं तीर चला दूँ? मैं ने कहा ऐ मेरे सरदार! अगर आप चाहें तो चलादें। दूसरी मर्तबा फिर आपने उन्हें ज़मीन पर रख दिया तीसरी बार फिर उन्हें उठा कर फ़रमाया क्या में तीर चला दूँ? मैंने अर्ज़ किया ऐ मेरे सरदार! जैसी आप की मर्ज़ी हो।

तब आप ने तीर फेंका तो वह एक दरख्त में लगा जो आप के सामने था। आप में और उस दरख्त में चार पाँच गज़ का फासला था। आप ने फ़रमाया कि मैं ने तीर चला दिया और उस ज़ालिम हाकिम की गर्दन पर लगा तो हम ने और तमाम हाज़िरीन ने नार-ए-तकबीर लगाया। और तीरो कमान के मालिक ने खड़े हो कर उन को ले लिया। जब सुबह हुई तो हम को खबर मिली कि हाकिम अपने मकान में मग़रिब के बाद घर की छत पर लेटा हुआ था कि उसको एक ग़ैबी तीर पहुंचा जो न मालूम कहाँ से आया हुआ था उस की गर्दन में लगा जिस से वह ज़िबह हो कर मर गया। (बहजतुल असरार स0: 230)

हज़रत अल्लामा शतनौफी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने पेश किये गए वाक़ेआ़त को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित करदिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने औलिया-ए-किराम को कायनात में तसर्रुफ़ व हुकूमत का इख़्तियार अता फरमाया है।

★★★

शैख़ अब्दुलहक़ देहलवी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, विसाल 1052 हि0)

आप का नाम अब्दुल हक़, वालिदे गिरामी (पिता) का नाम सैफ़ुद्दीन बिन सअ़दुल्लाह तुर्क देहलवी बुख़ारी। अबुलमज्द कुन्नियत (उपनाम) थी। आप के आबा व अजदाद (पूर्वज) बुख़ारा के रहने वाले थे जो दिल्ली में आकर आबाद हुए। आप माहे मुहर्रम 958 हि0 में पैदा हुए। अपने वालिद से दो तीन महीने में पूरा कुरआन मजीद पढ़ लिया और एक माह की क़लील मुद्दत में लिखना सीख लिया। इस के बाद मीज़ान याद की। गुलिस्ताँ, बोसताँ, दीवाने हाफ़िज़, और मिस्बाह व काफ़िया भी अपने वालिद से पढ़ी, बारह साल की उम्र में शरहे शमसिया व शरहे अक़ाइद और पन्द्रह साल की उम्र में मुख़्तसर व मुतव्वल पढ़ी। और इब्तिदाई ज़माने ही में एक साल कुछ महीने में कुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया। सात आठ साल तक फ़ुक़हा-ए-मावराउन्नहर के दर्स (क्लास) में रहे जिन्हों ने रूख़सत होते वक़्त आप से यह कहा कि हम ने तुम से फ़ायदा उठाया तुम पर हमारा कोई एहसान नहीं।

बाईस साल की उम्र में तहसीले इल्म से फ़ारिग़ हो कर मसनदे तदरीस (अध्यापक पद) पर जलवा अफरोज़ हुए मगर फिर उम्र के अड़तीसवीं साल में मक्का मुअज्ज़मा चले गए वहाँ के मुहद्दिसीन से बुख़ारी और मुस्लिम का दर्स लिया। माहे रमज़ान 996 हि0 में हज़रत शैख़ अब्दुल वहाब मुत्तक़ी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मिशकात शरीफ़ पढ़ना शुरू किया। दर्मियान में तकरीबन तीन माह मदीना तय्यबा सरकार अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर

रहे। फिर मक्का मुअज़्ज़मा वापस आकर हज़रत शैख़ अब्दुलवहाब से मिशकात शरीफ़ का इल्म मुकम्मल किया। हक़ीक़त में हदीस, तसव्वुफ़, और फ़िक़ह की आला (उच्च) तालीम आपने उसी बरगुज़ीदा हस्ती से हासिल की आपकी ज़ात पर हिन्दुस्तान को फ़ख़्र है कि मक्का मुअज्ज़मा से 999 हि0 में वापस आकर सब से पहले इल्मे हदीस से हिन्दुस्तान को आपही ने मुनव्वर किया है और अपनी किताबों से इल्मे हदीस को इस मुल्क के हर गोशे में पहुंचा दिया। आपकी कुल किताबें साठ हैं जिन में "लमआत शरह मिशकात अरबी, अशअतुल्लमआत शरह मिश्कात फ़ारसी, मदारिजुन्नबूवत, शरहे सफ़रुस्सआदत, शरहे फ़ुतूहुलग़ैब, जज़बुल्क़ुलूब, अख़बारूल अख़यार, ज़ुबदतुलआसार और मासबत बिस्सुन्नत वग़ैरा बहुत ज़्यादह मशहूर व मक़बूल हैं।"

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की बारगाह में आप को बहुत मक़बूलियत हासिल हुई कि हुज़ूर ने चार बार आपको ख़्वाब में अपने जमाले जहाँ आरा के दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया। 1052 हि0 में आप का विसाल हुआ। शहरे दिल्ली के मशहूर मुहल्ला मेहरौली शरीफ़ में हौज़े शम्सी के करीब आप का मज़ारे मुबारक है। आज जिस की वीरानी देख कर मुहब्बत वाले का दिल खून का आँसू बहाता है कि अवाम तो अवाम उलमा-ए-अहले सुन्नत तो हज़रत कुतुब साहिब के यहाँ तो बड़े शौक़ से जाते हैं मगर उसी महल्ले में हज़रत शैख़ के आस्ताने पर हाज़िरी नहीं देते जब कि उनके एहसानात से वह कभी आज़ाद नहीं हो सकते।

हज़रत शैख़ देहलवी हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बारे में अपना अक़ीदा बयान करते हुए फरमाते हैं।"हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को खज़ानों

की कुन्जियाँ दी गईं और ख़ज़ाने उनके सुपुर्द कर दिए गए। उस का जाहिर तो यह है कि शाहाने फ़ारस व रूम के सारे ख़ज़ाने सहावा के हाथ में आए। और बातिन यह है कि अजनास आलम के ख़ज़ाने मुराद हैं कि सब के रिज़्क़ हाथ मुबारक कुदरत व इख़्तियार में दे दिए गए और उन्हें ज़ाहिर व बातिन सब की तरबियत व परवरिश की ताक़त हासिल थी।''

(मुकद्दमा अशअतुल्लमआत उर्दू स0: 106)

मिशकात शरीफ़ स0: 84 पर मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस है जो हज़रत रबीआ बिन कअ्ब असलमी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है। उन्हों ने कहा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया ''सल'' यानी मांग, तो मैंने अर्ज़ किया, मैं जन्नत में हुज़ूर की रिफ़ाक़त (संगति) चाहता हूँ। फ़रमाया कुछ और? मैं ने अर्ज़ किया मेरी मुराद तो बस यही है। उस हदीस शरीफ़ की शरह करते हुए हज़रत शैख़ बयान फ़रमाते हैं।''मांग सवाल को मुतलक़ फ़रमाने किसी ख़ास चीज़ से मुक़य्यद न फ़रमाने से मालूम होता है कि सारा मआमला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुक़द्दस हाथों में है जो कुछ चाहें जिस के लिये चाहें अपने रब के हुक्म से अता फरमादें। इस लिए कि दुनिया की खुश्हाली आप ही की सख़ावत से है और लौह व क़लम आप के उलूम का एक हिस्सा है। अगर दुनिया व आख़िरत की भलाई चाहते हो तो उनकी बारगाह में हाज़िर हो और जो चाहो मांग लो।''

(अशअतुल्लमआत जि0: 1 स0: 396)

और हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इख़्तियारे कुल्ली के मुतअल्लिक़ साफ़ लफ़्ज़ों में बयान फरमाते हैं।''जिन्नो इन्स के तमाम मुल्क व हुकूमत और सारे जहाँ

ख़ुदा वन्द कुद्दूस की अता से हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कुदरत व तसर्रूफ़ में हैं।'' (मुकद्दमा अशअतुल्लमआत उर्दू जि0 1 स0: 107)

और हज़रत शैख़ बुज़ुर्गों के तसर्रूफ़ व ताक़त के बारे में तहरीर फरमाते हैं।''हज़रत शैख़ अली बिन हैती रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु उन चार मशाइख़ में से हैं जिन्हें मशाइख़े इराक़ शिफ़ा कहते थे। इस लिए कि वह मादरज़ाद अंधे और बर्स (सफ़ेद दाग़) के मरीज़ को अच्छा कर देते थे। हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी, हज़रत शैख़ अली बिन हैती, हज़रत शैख़ बक़ा बिन बतू और हज़रत शैख़ अबू सअ़द कैलवी। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम।'' (जुबदतुलअसरार स0: 9)

और औलिया अल्लाह के विसाल (इन्तिक़ाल) के बाद तसर्रूफ़ व हुकूमत करने के मुतअल्लिक़ फरमाते हैं कि''हज़रत शैख़ करशी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि मैं ने चार ऐसे मशाइख़ बुज़ुर्गों को देखा जो अपनी क़बरों में ज़िन्दों की तरह तसर्रूफ़ व हुकूमत करते हैं हज़रत शैख़ अब्दुलकादिर जीलानी, हज़रत शैख़ मारूफ़ करखी, हज़रत शैख़ अ़क़ील मुन्जी हयात बिन कैस हरानी। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहुम।'' (जुबदतुलअसरार स0: 9)

और उसी के मिस्ल आपने अशअतुल्लमआत जि0: 1 स0: 715 में भी बयान फ़रमाया है।

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ऊपर ज़िक्र किए गए वाक़ेआ़त से अपना यह अक़ीदा साफ़ कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने तमाम आलम को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के तसर्रूफ़ व क़ब्ज़े में कर दिया है और औलिया अल्लाह भी अपनी ज़ाहिरी ज़िंदगी और विसाल के बाद दोनों हालतों में तसर्रूफ़ व हुकूमत करते हैं।

★★★

शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी का अक़ीदा

(रहमतुल्लाहे अलैहि, विसाल: 1176 हि०)

आप लिखते है कि हज़रत ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम अकबराबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि सफ़रे हज में जहाज़ के अपने साथियों को मक़ामात और करामाते औलिया सुनाया करते थे। चुनाँचे एक दफ़ा औलिया के पानी पर चलने और दूर दराज़ मक़ामात को आनन फ़ानन तै करने की बात चल पड़ी तो जहाज़ के कप्तान ने उन करामात से इनकार कर दिया। और कहने लगा कि ऐसे झूट के क़िस्से बहुत सुनने में आते हैं जिन की कोई हक़ीक़त नहीं होती। यह सुन कर आप की ग़ैरते ईमानी जाग उठी और समन्दर में छलांग लगा दी।

यह देख कर लोगों ने कप्तान को मलामत की और वह खुद भी इस बात पर नादिम हुआ कि मेरे झगड़ने की वजह से फ़क़ीर हलाक हुआ। और खलीफ़ा के साथी भी हज़रत की जुदाई के तसव्वुर से ग़मगीन होने लगे। ठीक उसी वक्त हज़रत खलीफ़ा ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि रन्जीदा न हों मैं ख़ैरो आफ़ियत से पानी के ऊपर चल रहा हूँ। यह सुन कर तमाम एहले जहाज़ और कप्तान ने आइन्दा फ़क़ीरों के साथ गुस्ताख़ी करने से तौबा की और हलक़ए नियाज़मन्दाँ में शामिल हो गए। उनके रूजूअ़ व तौबा के बाद हज़रत खलीफ़ा सही और सालिम जहाज़ पर चढ़ आए।

(अन्फ़ासुल आरिफ़ीन स0: 77)

और लिखते हैं कि रहमतुल्लाह कफ़श दोज़ ने बयान किया कि एक मौके पर हज़रत शैख़ अबूरज़ा मुहम्मद रहमतुल्लाहे तआला अलैहि मस्जिद में बैठे हुए थे और उन के सामने एक दरख़्त के

नीचे खड़ा था कि आप की ख़िदमत में एक शख़्स ने कहा कि हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि बाज़ औक़ात किसी की तरफ़ निगाह उठा कर देखते थे तो ताक़ते जज़्ब और शैख़ की निगाह की गर्मी से उस की जान निकल जाती थी। आज कल हम बुजुर्ग, मशाइख़ का शोर सुनते हैं मगर किसी की ताक़त में यह तासीर नहीं देखी। यह सुन कर हज़रत शैख़ ने जोश में फरमाया कि बायज़ीद रूहें तो निकाल लेते थे मगर जिस्म में वापस नहीं लौटाते थे। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मेरे दिल को अपने क़ल्बे पाक के ज़ेरे साया ऐसी तरबियत व परवरिश और वह ताक़त अता फरमाई है कि जब चाहूँ किसी की रूह खींच लूँ और जब चाहूँ उसे वापस लौटा दूँ।

ठीक उसी वक्त शैख़ ने मुझ पर नज़र करके मेरी रूह खींच ली और मैं ज़मीन पर गिर कर मर गया और मुझे उस दुनिया का कोई शुऊर (होश) नहीं रहा सिवाए उस के कि मैं ने अपने आप को एक बहुत बड़े दरिया में डूबा हुआ पाया। आपने ऐतराज़ करने वाले की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फरमाया कि उसे देखो मुर्दा है या ज़िन्दा? उस ने सोच कर कहा कि मुर्दा है। फरमाया अगर तू चाहे तो उसे मुर्दा छोड़ दूँ और अगर पसन्द करे तो उसे ज़िन्दा कर दूँ। कहने लगा अगर ज़िन्दा हो जाए तो यह इन्तिहाई मेहरबानी होगी। आपने मुझ पर दोबारा तवज्जह डाली तो मैं ज़िन्दा हो कर उठ खड़ा हुआ। तमाम हाज़िरीने मज्लिस हज़रत शैख़ की कुव्वते हाल से बहुत हैरान हुए। (अन्फ़ासुलआरिफ़ीन स0: 207)

और बयान फरमाते हैं कि एक बार सय्यद बुरहान बुख़ारी कौलेन्ज के दर्द में मुब्तला हो गए और सख़्त बेचैनी महसूस करने लगे। हज़रत शैख़ मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से अर्ज़ किया गया तो आप उनके घर तशरीफ़ ले गए और उन के सरहाने

बैठ कर उनके मर्ज़ को इस तरह खींच लिया कि उन्हें फ़ौरन शिफ़ा-ए-कामिला हो गई अलबत्ता कभी-कभी कोलेन्ज का यह दर्द हज़रत शैख़ को हो जाता था। (अन्फ़ासुलआरिफ़ीन स0 367)

और बयान फरमाते हैं कि हज़रत शैख़ अहमद नख़ली रहमतुल्लाहे तआ़ला अलैहि के फरज़न्द हज़रत शैख़ अब्दुर्रहमान नख़ली बयान करते हैं कि उन के दादा के यहाँ औलादे नरीना (लड़के) जिन्दा नहीं रहती थी जिस की वजह से वह परेशान रहते थे। जब शैख़ अहमद पैदा हुए तो उनके लिए औलिया अल्लाह से दुआ की दरख़्वास्त की और उन से फ़रियाद व रूहानी तवज्जुह के तालिब हुए। वह हर जुमे के दिन शैख़ अहमद नख़ली को हज़रत शैख़ ताज सन्भली रहमतुल्लाहे तआ़ला अलैहि की ख़िदमत में भेजते थे। एक रोज़ इत्तिफ़ाक़ से शैख़ ताज सन्भली ने थोड़ा ग़ौर के बाद शैख़ अहमद को लाने वाले ख़ादिम के ज़रीए कहला भेजा कि यह बच्चा आपकी तरह का नहीं। बल्कि आप से बढ़ कर साहिबे फ़ज़्ल (बुज़ुर्ग) और सआदतमन्द (नेक) है। यह अलग बात है कि उस की उम्र कम है।

जब ख़ादिम अपने मालिक के पास पहुंचा और उन्हें शैख़ ताज सन्भली का पैग़ाम सुनाया तो उन्हों ने यह कह कर उसे फ़ौरन वापस भेजा कि मेरी तरफ से हज़रत शैख़ ताज संभली की ख़िदमत में अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे आक़ा! मैं ने अपनी उम्र इस बच्चे को दे दी है और इस बारे में आप से सिफारिश का तलबगार हूँ, जब हज़रत शैख ने यह पैग़ाम सुना तो फौरन तवज्जुह की और चन्द मिनट के बाद उस ख़ादिम से कहा अपने मालिक से कह दो कि उनका मुद्दआ पूरा हो गया है और अपनी तरफ से उन्हें (यानी शैख़ अहमद नखली के वालिद को) तीन माह की मुहलत सफ़रे आख़िरत की तैयारी के लिए अता की। चुनाँचे

शैख़ अहमद नखली के वालिद उसी मुद्दत में इस दुनिया से रूख़सत हो गए और शैख़ अहमद नखली ने नब्बे साल की उम्र पाई। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन स0: 393)

ऊपर ज़िक्र किए गए वाक़िआ़त को हज़रत शाह वलियुल्लाह साहिब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने ज़िक्र फरमाकर अपना यह अक़ीदा बिलकुल साफ़ कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने औलिया अल्लाह को कायनाते आलम में तसर्रूफ़ (अ़मल-दख़ल) करने की बे पनाह ताक़त अता फ़रमाई है यहाँ तक कि वह एक निगाह से ज़िन्दा से मुर्दा और मुर्दा से ज़िन्दा कर देने का इख़्तियार रखते हैं और लोगों की ऊमरें घटाने बढ़ाने पर भी क़ादिर होते हैं। अगर हज़रत शाह साहिब का ऐसा अक़ीदा न होता तो वह इन वाक़िआ़त को अपनी किताब में हर्गिज़ न लिखते।

बल्कि आप औलिया अल्लाह के तसर्रूफ़ात (इख़्तियार) को बयान करते हुए अपना अक़ीदा साफ़ लफ़्ज़ों में लिखते हैं कि "और नक्शबन्दियों के लिए अजाइबे तसर्रूफात में हिम्मत बाँधना किसी मुराद पर बस होती है। वह मुराद हिम्मत के मुवाफ़िक़ और तालिब में तासीर करना और बीमारी को मरीज़ से दफ़ा करना। और आसी (गुनहगार) पर तौबा का इज़ाफा करना। और लोगों के दिलों में तसर्रूफात करना ताकि वह महबूब और मुअज़्ज़म हो जाएं या उनके ख़्यालात में तसर्रूफ़ करना ताकि उन में वाक़िआ़ते अज़ीमा मुतमस्सिल हों, आगाह हो जाना अहलुल्लाह की निस्बत पर ज़िन्दा हों या एहले कुबूर और लोगों के ख़तराते क़ल्बी (दिली) पर जो उनके सीनों में खलजान कर रहा है उस पर मुत्तला (बाख़बर) होना और आइन्दा वाकेअ़ होने वाले का मकशूफ़ (ज़ाहिर) होना। और बलाए नाज़िल (आने वाली बला) को दफ़अ़ (दूर) कर देना।

और सिवाए उन के और भी तसर्रूफ़ात (इख़्तियार) हैं। और हम तुझ को ऐ किताब के देखने वाले! उन में से बाज़ तसर्रूफ़ात पर आगाह करते हैं नमूने के तरीक़े पर।"

(शिफ़ाउलअलील तरजमा अलक़ौलुलजमील)

और लिखते है। वालिद माजिद ने फ़रमाया कि अकबराबाद में मिर्ज़ा मुहम्मद ज़ाहिद से तालीम के दौरान एक दफ़ा सबक़ से वापसी पर एक लम्बी गली से गुज़र हुआ। उस वक़्त मैं ख़ूब ज़ौक़ में हज़रत शैख़ सादी शिराज़ी के यह अशआर गुनगुना रहा था। तर्जमा: "महबूब की याद के अलावह जो कुछ तू करे उम्र बेकार है। इश्क़ के राज़ के सिवा तू जो कुछ पढ़े सब बातिल (ख़राब) है। ऐ सअ्दी! ऐसा नक़्श जो हक़ के अलावह हो उस से दिल की तख़्ती धो डाल। जो इल्म कि राहे हक़ न दिखाए जेहालत है।"

वालिद माजिद ने फ़रमाया इत्तिफ़ाक़ की बात चौथा मिसरा (पंक्ती) मेरे ज़हन से उतर गया। हर चन्द जहन पर ज़ोर दिया लेकिन याद न आया। उस तार के टूटने से मेरे दिल में सख़्त परेशानी और बे ज़ौकी की कैफ़ियत पैदा हुई कि अचानक एक फ़क़ीर मनुश्य, ख़ूबसूरत चेहरा, लम्बी ज़ुल्फ़ वाला बूढ़ा मर्द नमूदार हुआ और उसने मुझे बताया।

"इल्मे कि रहे हक़ न नुमायद जेहालतस्त"

मैं ने कहा जज़ाकल्लाहु ख़ैरलजज़ा। आपने मुझे कितनी परेशानी से नजात दिलाई है। और मैंने उनकी ख़िदमत में कुछ पान पेश किए। उन्हों ने मुसकुराते हुए फ़रमाया। यह भूला मिसरा याद दिलाने की मज़दूरी है? मैं ने अर्ज़ किया नहीं। यह तो बतौरे हदिया और शुक्रिया पेश कर रहा हूँ। उस पर उन्हों ने फ़रमाया मैं पान इस्तिमाल नहीं किया करता। मैं ने अर्ज़ किया पान के इस्तिमाल में कोई शरई पाबन्दी है या तरीक़त (तसव्वुफ़) की

रुकावट? अगर कोई ऐसी बात है तो मुझे बताइए ताकि मैं भी इस से परहेज़ करूँ उन्हों ने फ़रमाया ऐसी कोई बात नहीं। अलबत्ता मैं पान खाया नहीं करता। फिर फ़रमाने लगे मुझे जल्दी जाना चाहिए मैं ने कहा मैं भी जल्दी चलूंगा। उन्होंने फ़रमाया मैं बहुत जल्द जाना चाहता हूँ, यह कह कर उन्होंने क़दम उठाया और गली के आख़िर में रखा। मैं ने जान लिया कि किसी अल्लाह वाले की रूहे मुबारक इन्सानी शक्ल में जलवागर है। मैं ने आवाज़ दी अपने नाम से तो बाख़बर करते ताकि मैं फ़ातिहा तो पढ़ लिया करूँ। फ़रमाया फ़क़ीर को सअ्दी कहते हैं।

(अन्फ़ासुलआरिफ़ीन स0: 112)

हज़रत शाह वलियुल्लाह साहब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने इस वाक़िए को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित किया कि अल्लाह वाले बादे विसाल (इन्तिक़ाल) भी तसर्रूफ़ (इख़्तियार) की वह ताक़त रखते हैं कि इन्सानी शक्ल में दूर दराज़ मक़ामात पर भी पहुंच कर लोगों की मदद करते हैं और उन को परेशानियों से छुटकारा दिलाते हैं।

★★★

अल्लामा निबहानी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1350 हि0★)

आप ज़िक्र फ़रमाते हैं कि हज़रत सुफ़ियान सोरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते है कि मैं और हज़रत शैबान राई अलैहिर्रहमतु वरिज़वान सफ़रे हज के लिए निकले रास्ते में एक

★ आपका मुख़्तसर तआरूफ़ इसी किताब के हाज़िर व नाज़िर के बयान में मुलाहज़ा हो। अनवार अहमद क़ादरी

जगह एक शेर हमारे सामने आगया। मैं ने हज़रत शैबान से कहा देखिए यह कुत्ता हमारे रास्ते में हाइल (आड़) हो गया है। फ़रमाने लगे सुफ़ियान ख़ौफ़ज़दा होने की ज़रूरत नहीं। शेर ने हज़रत के अलफाज़ सुने तो दुम हिलाने लगा जिस तरह पालतू कुत्ता दुम हिलाता है। हज़रत शैवान उस की तरफ मुतवज्जह हुए और उस के कान पकड़ कर मरोड़े। मैं ने कहा यह तो शोहरत तलब करना हुई। फ़रमाने लगे सोरी! इस में कौन सी शोहरत तलबी है। मैं तो शोहरत को पसन्द नहीं करता। अगर मुझे शुहरत पसन्द होती तो मैं मक्का शरीफ़ तक अपना सामान इस की पुश्त पर लाद कर ले जाता।(जामेए करामाते औलिया स0: 474)

और इरशाद फ़रमाते हैं कि कुछ लोग हज़रत मुहम्मद बिन अहमद हम्दविया रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मेहमान हुए आप उन के पास ख़ातिर व मदारात के लिए मैदा की रोटियाँ और भुना हुआ गोश्त लाए। वह लोग कहने लगे यह तो हमारा खाना नहीं है। आपने पूछा आप लोगों का खाना क्या है? कहने लगे वस सब्ज़ी ही है। आपने उन्हें सब्ज़ी पेश करदी और खुद गोश्त तनावुल फ़रमाया। वह लोग रात भर इवादत में मसरूफ़ रहे और हज़रत पूरी रात पीठ के वल सोते रहे। सुवह की नमाज़ उनके साथ पढ़ी। फिर फ़रमाया हज़रात! आइए ज़रा सैर व तफ़रीह कर आएं। सब एक तालाव पर पहुंचे। आपने अपनी चादर पानी पर बिछाई और उस पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर चादर उठाई, उसे पानी नहीं लगा था। फिर फ़रमाया यह तो गोश्त का अमल है बताइए सब्ज़ी का अमल कहाँ तक है।

(जामेए करामाते औलिया स0: 481)

और लिखते हैं कि एक औरत अपने बच्चे को ले कर समन्दर की तरफ़ गई हब्शी कश्ती में सवार हो कर वहां आए,

बच्चे को पकड़ कर अपनी कश्ती में बैठाया और समन्दर में कश्ती ले कर चल दिये। हज़रत शैख़ मुहम्मद विन यूसुफ़ बवारकी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अपने इबादतखाने से बाहर तशरीफ़ ला रहे थे कि वह औरत आप के दामन से चिपट गई और कहने लगी हब्शी लड़का लेकर चलते बने हैं और अब वह उस कश्ती में हैं। हज़रत शैख़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि समन्दर की तरफ बढ़े। और फ़रमाया ऐ हवा! थम जा, अल्लाह तआला की कुदरत से हवा रूक गई। फिर आपने कश्ती वालों को पूकारा कि बच्चा उसकी माँ को दे दो। लेकिन वह न माने और आगे बढ़ते रहे। आपने फ़रमाया ऐ कश्ती ठहर जा। कश्ती खड़ी हो गई। आप पानी पर चल कर गए और बच्चे को कश्ती से ले कर माँ के पास पहुंचा दिया। (जामेए करामाते औलिया स0: 485)

और ज़िक्र फ़रमाते हैं कि बादशाह ज़ाहिर के पास औलिया के दुश्मन गिरोह के कुछ लोग हज़रत शैख़ मिसक़ार रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के खिलाफ़ शिकायतें कीं, बादशाह ने बतौरे मज़ाक़ आप के पास अपने हाथ से दो बर्तन शराब से भर कर हदिया भेजे। हज़रत शैख़ ने बर्तन देख कर अहलन व सहलन (खुशी खुशी) ले कर फ़क़ीरों को बर्तनों का मुंह खोलने का हुक्म फरमाय। बादशाह का एलची कहने लगा हुज़ूर! यह आस्ताना ख़राब हो जाएगा। (यानी शराब से गंदा हो जाएगा) आपने फ़रमाया खोल दो कोई हर्ज नहीं। फ़क़ीरों ने बर्तनों का मूंह खोल दिया मगर कोई चीज़ बाहर न निकली। फरमाया ज़रा झुकाओ और दबाओ। जब बर्तन झुकाया तो एक से शहद और दूसरे से बेहतरीन क़िस्म का घी निकला। बादशाह का एलची यह देख कर बेहोश हो गया। हज़रत शैख़ ने फ़क़ीरों के हाथ उस में से थोड़ा सा बादशाह ज़ाहिर को तबर्रूकन भेजा। उस ने तौबा की और उस के दिल

की दुनिया बदल गई। (जामेए करामाते औलिया स0: 560)

और लिखते हैं कि हज़रत शैख़ सालेह व आबिद मुहम्मद बिन नासिर शहीदी कहते हैं कि मैं हज़रत मुर्शिद मुहम्मद बिन उमर अबू बक्र बिन क़िवाम अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान (इन्तिक़ाल 658 हि0) के पास था। आपने उसी मस्जिद में नमाज़े अस्र पढ़ी जहाँ आम तौर पर पढ़ा करते थे। बहुत बड़े हुजूम ने भी आप के साथ नमाज़ पढ़ी। हाज़िरीन में से एक कहने लगा हुज़ूर! मर्दे कामिल (मौमिन) की निशानी क्या है जिसे तसर्रुफ़ (इख़्तियार) हासिल हो? मस्जिद का खम्बा सामने था। फरमाया मर्दे कामिल व मौमिन कामिल की निशानी यह है कि वह उस खम्बे की तरफ़ इशारा करे तो खम्बा रोशनी से जगमगाने लगे। लोगों ने खम्बे को देखा तो वह आप के इरशाद के मुताबिक जगमगा रहा था।

(जामेए करामाते औलिया स0: 567)

और आप लिखते है कि हज़रत अबू बक्र बिन क़िवाम रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया अल्लाह की इज़्ज़त की क़सम! मुझे वह हाल अता हुआ है। कि अगर बग़दाद को कहूं कि मराकश की जगह चला जा। या मराकश को कहूँ बग़दाद बन जा तो ऐसा ही हो। और आपने एक जमाअत की मौजूदगी में इरशाद फ़रमाया कि मैं इसी तरह अर्श का पाया देख रहा हूँ जिस तरह तुम्हारे चेहरे मुलाहज़ा कर रहा हूँ।

(जामेए करामाते औलिया स0: 579)

और बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन ईसा ज़ेलई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का एक जवान लड़का था। देहाती अरबों की आदत के मुताबिक एक दावत में तलवार हाथ में लिए हुए लोगों के साथ खेल कूद में मशगूल था इत्तिफ़ाक़ से तलवार एक शख़्स की आँख में लग गई और उस की आँख

बाहर निकल आई। हज़रत को इल्म हुआ तो उसे बुलाया। आँख को फिर उस की जगह पर रखा और उस पर थूका आँख बिलकुल ठीक हो गई। इसी तरह एक बार अपने गाँव वाली मस्जिद की आप तामीर करा रहे थे कि एक आदमी ऊपर से नीचे गिरा और उस की गर्दन टूट गई। उसे आप की ख़िदमत में उठा लाए, आपने हाथ फेर कर उस पर थूक लगा दिया तो उस की गर्दन सीधी हो गई। और ऐसा मालूम होता था कि उसे कुछ हुआ ही नहीं, फिर वह उसी वक्त उठ कर काम करने लग गया।

(जामेए करामाते औलिया स0: 620)

और अल्लामा निबहानी लिखते हैं कि अबु बक्र मुकदिश से रवायत है वह कहते हैं कि मैं ने हज़रत फ़क़ीह मुहम्मद बिन अली यूसुफ़ अशकल यमनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से कहा मैं चाहता हूँ कि आप मुझे कोई करामत दिखाएं, आपने फ़रमाया देखिए। मैं ने आप की तरफ़ देखा तो आप शहादत की उंगली और दर्मियानी उंगली को आगे बढ़ा कर फैलाए हुए थे। उन में एक से आग निकल रही थी और दूसरी से पानी उबल रहा था। फ़रमाने लगे अबू बक्र तुम ने करामत देख ली? मैं ने कहा जी हाँ, शुरजी के कौल के मुताबिक़ फिर आपने उंगलियाँ बन्द कर लीं।

(जामेए करामाते औलिया स0: 655)

अल्लामा निबहानी और बयान फरमाते हैं कि हज़रत शैख़ मुहम्मद शर्वीनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के साहिबज़ादे हज़रत अहमद फ़रमाते हैं कि हज़रत अपनी लाठी को हुक्म दिया करते थे कि एक बहादुर इन्सान की शक्ल धारले। वह उसी वक्त इन्सानी शक्ल में आजाती है। आप उसे हाजतें पूरी करने के लिए भेज देते उस के बाद में फिर वह लाठी बन जाती।

(जामेए करामाते औलिया स0: 737)

और लिखते हैं कि हज़रत इमाम शीरानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि जब आप का लड़का अहमद मर्ज़ की ज़्यादती से कमज़ोर हो गया। मौत के दरवाज़े पर पहुंचा और हज़रत इज़राइल अलैहिस्सलाम उस की रूह कब्ज़ करने आ गए तो हज़रत ने उन से फ़रमाया कि उस की मौत का मुआमला मन्सूख़ (निरस्त) हो गया है आप वापस जा कर अल्लाह तआला से पूछ लें। हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम वापस तशरीफ़ ले गए और अहमद उस बीमारी के बाद तीस साल तक ज़िन्दा रहे।

(जामेए करामाते औलिया स0: 737)

और ज़िक्र फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद बिन अबुल हसन बिकरी मिस्री रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 994 हि0) एक दिन सैर के लिए निकले। साथियों में से एक को फ़रमाया जाओ और हमारे लिए खाना खरीद कर लाओ। उस ने कहा हुज़ूर जिस शख़्स के पास रक़म है वह अभी नहीं आया है। हज़रत ने फ़रमाया हमारा खर्च अल्लाह तआला के अलावह किसी के जिम्मे नहीं फिर आप ने हाथ बढ़ा कर दरख़्त का एक पत्ता तोड़ा और उस आदमी को पकड़ा दिया। उस ने देखा तो वह दीनार था फरमाया जाओ और हमारा खाना खरीद लाओ। हाज़िरीन यह सब कुछ देख रहे थे।

(बहवाला कौकबुद्दुर्री जामेए करामाते औलिया स0: 783)

हज़रत अल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने इन वाक़िआत को लिख कर अपना यह अक़ीदा साफ़ तौर पर साबित कर दिया कि खुदा-ए-तआला ने औलिया-ए-किराम को काएनात में तरह-तरह के तसर्रूफ़ात (अमल-दख़ल) का इख़्तियार अता फ़रमाया है। यहाँ तक कि जब वह चाहते हैं दरख़्त के पत्ते को सोने का सिक्का बना लेते हैं और असा (लाठी) को आदमी

बना लेते हैं। अगर हज़रत निबहानी का ऐसा अक़ीदा न होता तो वह इस किस्म के वाक़िआत को अपनी किताब मे हर्गिज़ न लिखते।

★★★

अल्लामा तादनी का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान)

आप हज़रत शैख़ मुहय्युद्दीन अबुल अब्बास सैय्यद अहमद रिफ़ाई रहमतुल्लाहे तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 578 हि0) के बारे में बयान फ़रमाते हैं कि आप उन चार हस्तियों में से हैं जो अल्लाह के हुक्म से अंधों को बीना, (अंखयारा) कोढ़ियों को तन्दरूस्त और मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे। (क़लाएदुलजवाहिर स0: 289)

और हज़रत शैख़ अली बिन हैती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 564 हि0) के बारे में लिखते हैं कि आप उन बुज़ुर्गों में एक हैं जो अंधों और कोढ़ियों को अच्छा कर देते थे।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 313)

और हज़रत शैख़ अबू नअ़मा मुस्लिमा बिन नअ़मा सुरूदी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 466 हि0) के बारे में बयान फरमाते हैं कि आप उन हस्तियों में से एक थे जिन के तसर्रूफ़ (क़ब्ज़े) में अल्लाह तआला तकवीनी (दुनियवी) निज़ाम देता है।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 323)

और हज़रत शैख़ रूसलान दमिश्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के बारे में लिखते हैं कि आप का तसर्रूफ़ सब पर जारी था। (क़लाएदुलजवाहिर स0: 339)

और हज़रत शैख़ अबू मुहम्मद कासिम बिन अब्दुलबसरी

रहमतुल्लाहि तआ़ल अ़लैहि (इन्तिक़ाल 580 हि0) जो इराक़ के आरिफीन व मुक़र्रिबीन (औलिया) में बहुत बुलन्द मक़ाम पर जलवागर (ब्राजमान) हुए उन के बारे में ज़िक्र फ़रमाते हैं कि आप उन हस्तियों में से थे जिन्हें अल्लाह तआ़ला ज़ाहिर करके आलमे तकवीनी (दुनिया) के निज़ाम में तसर्रुफ़ इख़्तियार का फ़र्ज़ सुपुर्द कर देता है। (क़लाएदुलजवाहिर स0: 349)

और हज़रत शैख़ अबुल हसन जोसक़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि जो हज़रत गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में इराक़ के मशहूर बुज़ुर्ग गुजरे हैं उन के बारे में बयान फ़रमाते हैं कि आप उन बरगुज़ीदा (नेक) हस्तियों में से एक थे जिन को अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ के लिए ज़ाहिर फ़रमाकर मख़्लूक़ (बन्दों) के वुजूद में तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़ल) का हक़ अदा कर देता है।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 357)

और हज़रत शैख़ अब्दुल रहमान तफसून्जी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि जो हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में ईराक़ के मशहूर बुज़ुर्गों में से थे उन के बारे में लिखते हैं कि आप जो बात भी कह देते वह ज़रूर पूरी होती ख़्वाह बरसों के बाद ही क्यों न हो।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 364)

और हज़रत शैख़ बक़ा बिन बतू रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि जो हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में इराक़ के साहिबे करामत बुज़ुर्ग गुज़रे हैं उन के बारे में लिखते हैं कि आप उन चार हस्तियों में से एक हैं जो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से अंधों को अच्छा और मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 369)

और हज़रत मतर बाज़रानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि जो

हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में इराक़ के जलीलुलक़द्र (महान) और साहिबे करामत बुज़ुर्गों में से हुए हैं उनके मुतअल्लिक़ बयान फरमाते हैं कि आप के तसर्रूफ़ात (इख़्तियार) सूरज से ज़्यदा ज़ाहिर थे।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 374)

और हज़रत शैख़ अबू मदयन शुऐब मग़रिबी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि के बारे में लिखते हैं कि आप को तसर्रूफ़ात में कमाल और अहकामे वलायत में मलका हासिल था। आप उन हस्तियों में से एक थे जिन को अल्लाह तआ़ला ने काएनात में तसर्रूफ की कुव्वत (ताक़त) अता फ़रमांई थी। और जिन के मुबारक हाथ में हुकूमते रूहानी की लगाम थी।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 378)

और हज़रत शैख़ अबुल मफ़ाख़िर अदी बिन अबुल बरकात रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि जो इराक़ के मश्हूर मशाइख़ में से थे उन के बारे में बयान फरमाते हैं कि आपको तसर्रूफ़ में कमाल और अहकामे विलायत में मलका हासिल था।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 387)

और हज़रत शैख़ ज़ाकिर करवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि जो इराक़ के मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं उन के मुतअल्लिक़ लिखते हैं कि आप उन हस्तियों में से थे जिन के तसर्रूफ में लोगों के दिल दे दिये जाते हैं। (क़लाएदुलजवाहिर स0: 394)

और शैख़ उसमान बिन मरज़ूक़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 564 हि0) जो मिस्र के बुज़ुर्गों में से थे, उन के बारे में ज़िक्र करते हैं कि आप उन हस्तियों में से थे जिन को अल्लाह तआ़ला तसर्रूफ़ात (इख़्तियार) की ताकत अता फ़रमा देता है। (क़लाएदुलजवाहिर स0: 397)

और हज़रत शैख़ सोवैद सन्जारी रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि जो पूरब के बुजुर्गों के सरदार और आरिफ़ीन व कामेलीन के पशवा में से थे। और हज़रत सय्यदेना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जिन के बेहद आशिक़ थे उन के मुतअल्लिक लिखते हैं कि आप उन हस्तियों में से थे जिन को अल्लाह तआ़ला अपनी मख़लूक़ पर पूरा तसर्रूफ़ (क़ब्ज़ा) अता फरमा देता है। **(क़लाएदुलजवाहिर स0: 400)**

और हज़रत शैख़ हयात बिन कैस हरानी रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 581 हि0) के बारे में ज़िक्र फ़रमातें हैं कि आप उन बरगुज़ीदा हस्तियों में से थे जिन को अल्लाह तआ़ला मौजूदात में तसर्रूफ़ का हक़ अता फ़रमाता है।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 403)

और हज़रत शैख़ क़ुज़ैब अलबयान मूसली रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 507) के मुतअल्लक़ लिखते हैं कि आप का शुमार उन बुजुर्ग हस्तियों में होता है जिन को अल्लाह तआ़ला मुकम्मल कुबूलियत अता कर देता है। और तकवीनी निज़ाम उन के सपुर्द कर देता है। **(क़लाएदुलजवाहिर स0: 414)**

और हज़रत शैख़ इदरीस बिन मकारिम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि जो हज़रत सय्यदेंना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में इराक़ के मशहूर बुजुर्गों और आरिफ़ीन के पेशवा वुजुर्गों में से थे। उन के बारे में फ़रमाते हैं कि आप उन हस्तियों में से थे जिन को अल्लाह रब्बुलआलमीन आलम में तसर्रूफ़ात (अ़मल-दख़ल) के इख़्तियार अता कर देता है।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 422)

और हज़रत शैख़ सालिह अबु अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 599 हि0) जो मिस्र के

मशहूर बुजुर्गों में से हुए हैं उनके मुतअल्लिक़ लिखते हैं कि आप उन हस्तियों में से थे जिन को अल्लाह तआ़ला मौजूदात में तसर्रूफ़े ताम (पूरा अ़मल-दख़ल) अता फ़रमा देता है।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 432)

और हज़रत शैख़ अबू इस्हाक़ बिन अ़ली मशहूर बनाम आअ़रब से प्रसिद्ध हैं रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 609 हि0) जो इराक़ में बताइह के मशाइख़ (बुज़ुर्ग) में बहुत बड़े कामिल और आरिफ़ हुए हैं उन के बारे में फरमाते हैं कि आप उन बरगुज़ीदा हस्तियों में से थे जिन को अल्लाह तआ़ला आलमे ज़ाहिरी तकवीनी (मौजूदा) निज़ाम सुपुर्द फरमा देता है।

(क़लाएदुलजवाहिर स0: 441)

और हज़रत शैख़ अबुल हसन अली बिन हमीद मशहूर बनाम सब्बाग़ से मशहूर हैं रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 612 हि0) जो मिस्र के मशहूर मशाइख़ (बुज़ुर्ग) और कामेलीन व आरिफ़ीन में से हुए हैं। उन के बारे में लिखते हैं कि आप उन हस्तियों में से थे जिन की शख़्सियत को आलम (संसार) में तसर्रूफ़े ताम अता किया गया था। **(क़लाएदुलजवाहिर स0: 454)**

हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद यहया तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की ऊपर जिक्र की गई दलीलों से रोज़े रोशन की तरह उन का यह अक़ीदा ज़ाहिर हो गया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला बहुत से औलिया-ए-किराम को कायनात में पूरा तसर्रूफ़ (अ़मल-दख़ल) अता फ़रमा देता हैं।

और फ़रमाते हैं क़ि पश्चिम (यानी मराकश के इलाक़े) का एक शख़्स अब्दुर्रहमान नामी हज़रत शैख़ अ़ली बिन वहब रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और एक चाँदी का टुकड़ा आप के सामने पेश किया और कहा कि इसको मैं

ने फ़क़ीरों के लिए तैयार किया है। यह सुन कर आपने हाज़िरीन में से एक शख़्स से फ़रमाया। तुम्हारे और दूसरों के पास ताँबे के जितने बर्तन हों ले आओ। और जब लोग बहुत से बर्तन ले आए तो शैख़ ने बर्तनों को बीच ख़ानक़ाह में रख कर उन पर चलना शुरू कर दिया, कुछ देर बाद उन में से बाज़ ने सोने की शक्ल इख़्तियार करली और बाज़ ने चाँदी की। फिर शैख़ ने बर्तन लाने वालों से फ़रमाया कि यह सब ले जाओ। चुनाँचे उनहोंने वह सब सोना चाँदी उठा लिया। फिर आपने चाँदी का टुकड़ा पेश करने वाले से मुख़ातब होकर फ़रमाया ऐ अब्दुर्रहमान! खुदा ने मुझे सब कुछ अता फ़रमाया है। लेकिन मैं ने इस लिए छोड़ दिया कि मुझ को उस की हाजत नहीं। लिहाज़ा अपना चाँदी का टुकड़ा उठा लो।

अब्दुर्रहमान ने उन बर्तनों के मुख़तलिफ़ शक्ल इख़्तियार करने का सबब पूछा तो आपने जवाब दिया कि "जो शख़्स बिला किसी ग़र्ज़ के तांबा लाया था वह तो सोना बन गया और जिस की कोई ज़ाती ग़र्ज़ वाबस्ता थी उसने चाँदी की शक्ल इख़्तियार करली।" (क़लाएदुलजवाहिर स0: 335)

अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने इस वाक़िए को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि हज़रत शैख़ बिन वहब अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान को हक़ीक़त बदलने का इख़्तियार अता फरमाया।

और लिखते हैं कि शैख़ जोफ़ी बयान करते हैं कि मैं एक मर्तबा हज़रत शैख़ अबु याक़ूब यूसुफ़ बिन अय्यूब हमदानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 353 हि0) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप लोगों को नसीहत फ़रमा रहे थे, लेकिन हाज़िरीन में दो आलिमों ने आप को बद-मज़हब कह कर ख़ामोश होने के लिए कहा तो आप ने फ़रमाया "तुम दोनों ख़ामोश रहो

खुदा तुम्हें ज़िन्दा न रखे।" तो वह दोनों उसी मजलिस में ख़त्म हो गए। (क़लाएदुलजवाहिर स0 388)

और बयान फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा किसी औरत ने हज़रत शैख़ अबू याक़ूब यूसुफ़ बिन अय्यूब हमदानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि से अर्ज़ किया कि मेरे लड़के को फरंगियों ने क़ैद कर लिया है। मैं सब्र की दुआ करती हूँ लेकिन अपनी मुहब्बत की वजह से जज़्बात पर क़ाबू नहीं पाती हूँ, आप मेरा लड़का मिलने के लिए दुआ फ़रमाएं। जब औरत ने बहुत इसरार किया तो शैख़ ने फ़रमाया "कि जाओ इन्शाअल्लाह अपने लड़के को घर में पाओगी" चुनाँचे जब वह अपने घर पहुंची तो वाकई उसका लड़का मकान में मौजूद था। माँ ने जब हैरत ज़दह हो कर उस से हालत पूछी तो उसने बताया कि मैं इस वक़्त क़स्तुनतुनिया में क़ैद था। आचानक एक शख़्स जिस से मैं वाक़िफ़ नहीं आया और मुझ को उठा कर पलक झपकने में यहाँ पहुंचा दिया । फिर जब उस की माँ ने उस वाक़िए की इत्तिला शैख़ को दी तो आपने फरमाया कि "तुम्हें अल्लाह के मामलात में हैरत क्यों है? वह अपने ख़ास और बाअ़मल बन्दों को इख़्तियारात अता करता है और उनका हर इरादा पूरा हो जाता है। (क़लाएदुलजवाहिर स0: 390)

हज़रत अल्लामा तादनी अ़लैहिर्रहमह ने इन वाक़िआत को कलाइदुलजवाहिर में दर्ज फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि शैख़ अबू याक़ूब यूसुफ़ हमदानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि को सिर्फ ज़बान हिलाकर किसी की ज़िन्दगी का चिराग़ बुझाने की कुदरत ख़ुदा-ए-तआ़ला ने अता फ़रमाई थी। और उमूरे तकवीनी में उन को तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़ल) का इख़्तियार बख़्शा था। अगर अल्लामा तादनी का ऐसा अक़ीदा न होता तो वह इन वाक़िआत को अपनी किताब में दर्ज न फ़रमाते। और साथ ही

हज़रत यूसुफ़ हमदानी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि का भी अक़ीदा उन के इस फ़रमान से मालूम हो गया कि अल्लाह तआ़ला अपने ख़ास और बाअ़मल बन्दों को तसर्रूफ़ात अता करता है और उन का हर इरादा पूरा हो जाता है।

और अ़ल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि इरशाद फ़रमाते हैं कि शैख़ अब्दुल्लतीफ़ बिन अहमद करशी बयान करते हैं कि एक मर्तबा सात शिकारी हज़रत शैख़ अबू उमर व उसमान बताइही अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के वतन बतीहा में पहुंच गए और बहुत से परिन्दों का शिकार किया लेकिन जो चिड़िया भी ज़मीन पर गिरती वह मरी हुई होती। उन लोगों से शैख़ ने फ़रमाया इन परिन्दों का खाना तुम्हारे लिए हराम है। क्योंकि यह सब मुर्दे हैं।" उन शिकारियों ने मज़ाक़ के तौर पर कहा कि फिर आप ही उनको जिन्दा कर दें। तो आपने बिस्मिल्लाह पढ़ कर कहा। (यानी ऐ मुर्दों को ज़िन्दा करने वाले और ऐ कमज़ोर हड्डियों को ज़िन्दा करने वाले)

यह पढ़ते ही तमाम परिन्दे ज़िन्दा हो कर हवा में परवाज़ करके नज़रों से ओझल हो गए और वह शिकारी देखते के देखते रह गए। और सब तौबा कर केआप की ख़िदमत में रहने लगे।

और एक मरतबा बताइह के दो शख़्स जिन में एक नाबीना था और दूसरा कोढ़ी। आपकी ख़िदमत में दुआ कराने के लिए रवाना हुए। रास्ते में एक भला चंगा शख़्स मिल गया। और जब दोनों ने अपना ख़्याल ज़ाहिर किया तो उस ने कहा क्या शैख़ उसमान ईसा बिन मरियम हैं? जो अंधों और कोढ़ियों को तन्दुरूस्त कर देंगे। यह कह कर वह शख्स भी उन दोनों के हमराह आप की खिदमत में हाज़िर हुआ आप ने फरमाया, ऐ अंधे और कोढ़ी! अपना मर्ज़ उस शख़्स के अंदर मुन्तक़िल

(ट्रांस्फर) कर दो, यह कहते ही वह दोनों तन्दुरूस्त हो गए और वह शख़्स उसी वक़्त अंधा और कोढ़ी हो गया। शैख़ ने उस से फ़रमाया। "अब चाहे तसदीक़ (इक़रार) कर या तकज़ीब (इनकार) कर" फिर यह तीनों आप के पास से वापस आकर ज़िन्दगी भर अपनी अपनी हालत पर क़ायम रहे। और उसी हालत में दुनिया से रूख़सत हुए। (क़लाएदुलजवाहिर स0 412)

और बयान फ़रमाते हैं कि शरीफ़ मुहम्मद बिन ख़िज़्र हुस्मैनी बयान करते हैं कि मैं ने अपने वालिद से सुना है कि मूसल के क़ाज़ी यह कहा करते थे कि शैख़ क़ुज़ैब अलबान (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) की मुबालग़ा आमेज़ (हद से ज़्यादा) करामात व मुकाशेफ़ात की वजह से मुझ को उन से चिढ़ हो गई थी। और मैंने बादशाह से शिकायत करने का इरादा कर लिया था कि उनको मूसल से निकाल दिया जाए। लेकिन मेरे इस इरादे का इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं था।

एक दिन मैं एक गली से गुज़र रहा थ कि शैख़ क़ुज़ैब अलबान रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि सामने आ गये उस वक़्त गली में हम दोनों के सिवा कोई और नहीं था, उस वक़्त मेरे दिल मे ख़्याल आया कि अगर इस वक़्त यहाँ कोई दूसरा मौजूद होता तो मैं उन की गिरफ़्तारी का हुक्म देता। इस ख़्याल के आते ही चन्द क़दम चलने के बाद देखा तो शैख़ क़ुज़ैब अलबान ने कुरदियों जैसी शक्ल इख़्तियार कर ली थी। फिर चन्द क़दम चल कर बदवियों जैसी सूरत तबदील करली। फिर चन्द क़दम चल कर फ़क़ीहों (मुफ़्ती) जैसी सूरत हो गई। इसके बाद अपनी असली शक्ल इख़्तियार करके पूछा कि "ऐ क़ाज़ी! उन चार सूरतों में से क़ुज़ैब अलबान की कौनसी सूरत है। जिस को शहर बदर करने के लिए बादशाह से कहना चाहते हो? क़ाज़ी साहिब का बयान है कि

यह हालत देख कर मैं ने अदब के साथ झुक कर शैख़ के हाथों को बोसा दिया और अल्लाह से अपनी बद-गुमानी पर तौबा किया। (क़लाएदुलजवाहिर स0: 418)

औलिया-ए-किराम के इख़्तियारात व तसर्रूफ़ात के बारे में हज़रत अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि का अक़ीदा क़लाइदुलजवाहिर के ऊपर ज़िक्र किए गए वाक़िआत से भी रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है।

★★★

नमाज़ का महत्व

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जिसने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी उसने दीन को ढ़ाह दिया।

इमामों के अक़ीदे

इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ालः 333 हि0)

आप बुज़ुर्ग पेशवाओं में बहुत बड़े मुहक्किक़ और मुतकल्लिमीन (फलसफ़ियों) के इमाम हैं। मुसलमानों के अक़ाइद की आपने इस्लाह फ़रमाई और बातिल अक़ीदे वालों के रद में "किताबुत्तौहीद, किताबुलमक़ालात, किताब औहामुलमोतज़िला और किताबुर्रद करामिता वग़ैरा किताबें लिखीं। इनके अलावह तावीलाते क़ुरआन" आप की ऐसी किताब है जो अपना जवाब नहीं रखती। आप का मज़ारे मुबारक समर-क़न्द में है जो

ज़्यारतगाहे ख़ास व आम है।

साहिबे हदाइक़ुलहन्फ़िया मौलाना फ़क़ीर मुहम्मद जेलमी फिर लाहौरी लिखते हैं कि हज़रत अबू मन्सूर मातुरीदी (अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान) के ज़माने में एक बादशाह बड़ा ज़ालिम था कि लोग उस से तंग आ चुके थे। यहाँ तक कि ज़मीनदारों का एक गिरोह उस के हाथ से तंग आकर शिकायत करने के लिए आप के पास आया। आप उस वक़्त घर में न थे। आपकी बीवी निहायत बदअख़लाक़ थी वह ज़मीनदारों को मेहमान समझ कर बहुत सख़्ती से पेश आई, ज़मीनदार यह मालूम करके कि आप बाग़ में हैं, बाग़ में पहुंचे। देखा कि आप बाग़ की ज़मीन दुरूस्त कर रहे हैं।

आप ने उन को देखते ही फ़रमाया कि शायद आप को हमारे घर के कुत्ते ने काटा होगा। फिर आप बाग़ में गए और वहाँ से ज़र्दालू का तबाक़ भर लाए और ज़मीनदारों के सामने रख दिया। चूँकि जाड़े का मौसम था। ज़मीनदार ग़ैर मौसम में ज़र्दालू देख कर हैरान हो गए और आप से दर्याफ़्त किया। आपने फ़रमाया कि मैं ने अपने हाथों से कोई गुनाह नहीं किया है इस लिये जो चीज़ मैं उस के ज़रीए चाहता हूँ वह हासिल हो जाती है। फिर आपने घास से कमान और तिन्के से तीर बनाकर उस ज़ालिम बादशाह की तरफ़ फेंका। ज़मीनदारों ने वह तारीख़ लिख ली और चले गए। मालूम हुआ कि वह बादशाह उसी रोज़ क़त्ल हो गया। (हदाइक़ुलहन्फ़िया स0 168)

ग़ैर मौसम में बाग़ से ज़र्दालू ला कर यह फरमाना कि मैं उन हाथों के ज़रिए जो चीज़ चाहता हूँ हसिल हो जाती है और फिर तिन्का व घास के तीर व कमान से दूर दराज़ मक़ाम पर मौजूद ज़ालिम बादशाह को क़त्ल फरमा कर हज़रत अबू मन्सूर मातुरीदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना यह अक़ीदा साबित

कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने मुझे दुनिया में तसर्रूफ़ (अ़मल-दख़ल) की बेपनाह ताक़त अता फ़रमाई।

★★★

अ़ल्लामा फख़रूद्दीन राज़ी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 606 हि0)

आप बयान फ़रमाते हैं कि "जब कोई बन्दा नेकियों पर हमेशगी इख़्तियार करता है तो वह उस बुलन्द मक़ाम तक पहुँच जाता है जिस के मुतअल्लिक़ अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है तो जब अल्लाह तआ़ला के जलाल का नूर उसकी समअ़ (कान) हो जाता है तो वह दूर व नज़दीक की आवाज़ को सुन लेता है। और जब वही नूर उसकी बसर (निगाह) हो जाता है तो वह दूर व नज़दीक की चीज़ों को देख लेता है। और जब वहीं नूरे जलाल उसका हाथ हो जाता है। तो वह बन्दा आसान व मुश्किल और नज़दीक दूर की चीज़ों में तसर्रूफ़ (अ़मल-दख़ल) करने पर कादिर हो जाता है।(तफ़सीरे कबीर जि0: 5 स0: 480)

हज़रत अ़ल्लामा इमाम राज़ी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने इस वाक़ेए से अपना अक़ीदा साफ़ लफ़्ज़ों में बयान फ़रमा दिया कि जब बन्दा अल्लाह का महबूब हो जाता है तो ख़ुदा-ए-तआ़ला के जलाल का नूर उसका हाथ हो जाता है। तो फिर वह बन्दा आसान व सख़्त हर परेशानी में और नज़दीक व दूर हर जगह की चीज़ों में तसर्रूफ़ करने पर कादिर हो जाता है। और अलहम्दु लिल्लाह हम एहले सुन्नत व जमाअत का भी यही अक़ीदा है।

★★★

अ़ल्लामा अब्दुल वह्हाब का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 849 हि0)

हज़रत अ़ल्लामा निबहानी ने लिखा कि हज़रत इमाम शेरानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि बयान फ़रमाते हैं कि जब सुलतान हक़ीक़ ने एक फौजी जमाअत को मिस्र के अमीर इब्ने उमर की गिरफ़्तारी के लिए भेजा। तो उन लोगों ने उसे गिरफ़्तार कर लिया और लोहे की बेड़ियाँ पहना कर उसे ले चले। रास्ते में हज़रत मुहम्मद बिन उमर वासिती ग़मरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल .849 हि0) के एक गुलाम जो मूलियाँ बेचा करता था। उसका गधा फिसल गया। उसने पुकारा ऐ मेरे आक़ा मुहम्मद ग़मरी! इब्ने उमर ने जब यह सुना तो उससे पूछा कि यह मुहम्मद ग़मरी जिन्हें तुम बुला रहे हो कौन हैं? उसने कहा यह मेरे पीरो मुर्शिद हैं। इब्ने उमर कहने लगा अब मैं उन्हें मदद के लिए पुकारता हूँ और कहता हूँ ऐ मेरे आक़ा मुहम्मद ग़मरी! मुझे निगाह में रखें हज़रत मुहम्मद ग़मरी ने अपने मुहल्ले में यह पुकार सुन ली।

हज़रत इमाम शेरानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि वाक़िआ़ बयान करने वाले शैख़ शहाबुद्दीन इब्ने नख़ाल ने मुझे बताया कि हज़रत मुहम्मद ग़मरी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने तीन गधे मंगाए और फ़रमाया उन पर सवार हो जाओ। हम हज़रत शैख़ के साथ सवार हो कर क़ाहिरा (मिस्र) पहुंचे। हज़रत शैख़ सुलतान हसन के कुब्बा (गुंबद) के नीचे चन्द मिनट बैठे। यकायक देखा कि इब्ने उमर को लोग बेड़ियाँ पहनाए हुए क़िले की तरफ ले जा रहे हैं। हज़रत ने इब्नुल नख़ात (रावी वाक़िआ़) को फ़रमाया। इस आदमी (यानी इब्ने उमर) के पीछे-पीछे जा। जब तू देखे कि

सुलतान इस के साथ सख़्ती कर रहा है और उसे हलाक करने का हुक्म दे रहा है तो अपनी शहादत की उंगली अपने अंगूठे पर रख कर दबाना। उस महफिल में सब लोगों की जानों पर बन आएगी और सुलतान समेत सब के गले बन्द होने लगेंगे।

जब इब्ने नख़ाल पीछे गए तो देखा कि सुलतान ने इब्ने उमर पर सख़्ती करना शुरू करदी है। उन्हों ने हज़रत के फ़रमाने के मुताबिक़ अमल किया। सुलतान चिल्लाया उसे छोड़ दो। उसे ख़िलअत (शाही जोड़ा) पहनाओ। उन के साथियों पर ज़ाफरान डाला (यह खुशी और रज़ामन्दी की अलामत थी) इब्ने नख़ात वापस आए और हज़रत को इत्तिला दी। आपने फ़रमाया अब सवार हो जाओ। वापस चलें काम हो गया। इब्ने उमर को इस वाक़िए की कोई ख़बर न थी और न हज़रत की आमद का उसे पता था। आप मुहल्ले में वापस तशरीफ़ लाए और फरमाया मआमला अल्लाह तआला के साथ है। आप में से किसी को इजाज़त नहीं कि मेरी मौत से पहले यह वाक़िआ बयान करें। इमाम शेरानी फरमाते हैं कि इब्ने नख़ात ने मुझे बताया कि आपसे पहले मैं ने किसी से यह वाक़िआ नहीं ज़िक्र किया।

(जामेए करामाते औलिया स0: 682)

और हज़रत इमाम शेरानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद बिन मुहम्मद वफ़ा सिकनदरी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान को वफ़ा इस लिए कहते हैं कि दरया-ए-नील का बहाव रुक गया और हज़रत वफ़ा के दौर तक यही हाल रहा मिस्र वाले मुल्क छोड़ कर जाना चाहते थे। आप दरया पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया अल्लाह के हुक्म से बढ़ जा। उसी दिन सत्तर गज़ पानी दरया में चड़ आया और दरया ने आप की बात पुरी कर दी इस लिए लोग आप को वफ़ा कहने लगे।

(जामेए करामाते औलिया स० 615)

और हज़रत इमाम शेरानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अल्लामा तबनोफ़ी के हवाले से बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद हनफ़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि मिस्र से रौज़ा तक अपने साथियों समेत पानी पर चलते जाते थे और आप लोगों के दिलों के भेदों पर बाख़बर होते थे। (जामेए करामाते औलिया स0: 664)

हज़रत इमाम शेरानी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के इन बयानात से औलिया-ए-किराम के तसर्रूफ़ात के बारे में उन का अक़ीदा बिलकुल रौशन है।

★★★

अल्लामा इब्ने आबिदीन शामीका अक़ीदा

(*अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1253 हि0*)

साहिबे हदायकुल हन्फ़िया आपके ज़िक्र की इब्तिदा इस तरह करते हैं। सय्यद मुहम्मद अमीन बिन अमर अश्शहीर बिन अलआबेदीन। अपने ज़माने के महान आलिम, फक़ीह, (मुफ़्ती) मुहद्दिस, मुहक्क़िक़, मुदक़्क़िक़ (रिसर्चस्कॉलर) और जामेए उलूमे अक़लिया व नक़लिया थे। यानी मन्तिक़ व फ़लसफ़ा और कुरआन व हदीस के माहिर थे।

आपने कई अहम किताबें लिखी हैं, जिन में "रद्दुलमुहतार हाशिया दुर्रे मुख़्तार" जो शामी के नाम से मशहूर है ऐसी मक़बूले आम हुई कि पांच मोटी जिल्दों में होने के बावजूद थोड़े ही ज़माने में कई बार छप कर सारी दुनिया के हनफ़ी दारूल इफ़्ता की ज़ीनत बन गई, कि वह फिक़्ह के बेशुमार जुज़इयात पर मुश्तमिल है और मुफ़्तियाने किराम के लिए अज़ीम सरमाया है।

आप अपनी इसी मायानाज़ (महान) किताव में फ़रमाते है। "हज़रत इमाम आज़म अवू हनीफा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मुत्तबेईन (मानने वाले) में से ख़त्मे दायरतुलवलायत कुतवुलवुजूद सय्यदी मुहम्मद शाज़िली विकरी हनफ़ी फ़िक़ह वाइज़ हैं। आप उन बुजुर्गों में से हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने कायनात में तसर्रूफ़, हालात पर कुदरत और ग़ैव की वातों के वयान करने की ताक़त अता फ़रमाई।" (रद्दुलमुहतार जिल्दः 1 स0: 41)

हज़रत अ़ल्लामा विन आविदीन शामी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने ऊपर ज़िक्र की गई दलीलों में अपना यह अक़ीदा खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला अपने महवूव वन्दे औलिया अल्लाह को कायनाते आलम में तसर्रूफ़ की कुदरत अता फ़रमाता है।

औलिया-ए-किराम के अक़ीदे

हज़रत ग़ौसे पाक का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु इन्तिक़ाल 561हि0)

हज़रत अल्लामा शतनौफी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि हदीस की सनद व दलील के साथ वयान फ़रमाते हैं कि एक औ़रत हज़रत ग़ौसे आज़म अव्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िदमत में अपना एक लड़का ले कर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि मेरे इस वच्चे को आप से दिली लगाव है इस लिए मैं उसके हक़ से आज़ाद हो कर उस को अल्लाह तआ़ला की और फिर आपकी सुपुर्दगी में देती हूं। हज़रत ग़ौसे पाक

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उसकी अर्ज़ क़ुवूल फरमाली और उस वच्चे को वुज़ुर्गों के तरीक़े पर मुजाहदात और रियाज़तें (सख़्त इवादत) करने का हुक्म फरमाया, कुछ दिनों वाद उस की माँ अपने वच्चे से मिलने के लिए आई देखा कि उसका वच्चा वहुत कमज़ोर और ज़र्द (पीला) हो गया है। और देखा कि जौ की रोटी का टुकड़ा खा रहा है फिर जव वह हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा कि आपके सामने वर्तन में पूरी मुर्ग़ी की हड्डियाँ रखी हुई हैं जिसको आप खा चुके हैं। उस ने कहा ऐ मेरे सरदार! आप खुद तो मुर्गी खाते हैं और मेरे वेटे को जौ की रोटी खिलाते हैं उस वक़्त हज़रत ने उन हड्डियों पर अपना मुवारक हाथ रखा और फ़रमाया "यानी उस अल्लाह के हुक्म से खड़ी हो जा जो कमज़ोर हड्डियों को जिन्दा फ़रमाएगा।" आपके इस हुक्म पर फ़ौरन वह मुर्ग़ी ज़िन्दा हो कर खड़ी हो गई और चिल्लाई, फिर आपने उस औरत से मुख़ातव हो कर फ़रमाया।"यानी जव तेरा वेटा इस दर्जा को पहुंच जाएगा तो फिर जो जी चाहेगा खाएगा।"

(वहजतुलअसरार स0: 65)

इस वाक़ेए से हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपना यह अक़ीदा सावित कर दिया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे खाई हुई मुर्ग़ी को दोवारा ज़िन्दा कर देने का इख़्तियार अता फ़रमाया है।

हज़रत अल्लामा शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि और वयान फ़रमाते हैं कई मुअ़्तवर हज़रात का वयान है कि एक मरतवा हम लोग हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के पास वैठे हुए थे कि आप की मज्लिस के ऊपर से एक चील चीख़ती चिल्लाती उड़ती हुई गुज़री, जिस से मज्लिस के लोगों को उलझन हुई आपने फ़रमाया। "यानी ऐ हवा इस चील का सरकाट

ले। यह कहते ही चील मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिर पड़ी। एक तरफ उस का सर और दूसरी तरफ उस का धड़ गिरा। आपने कुर्सी से उतर कर उस को एक हाथ से उठा कर दूसरा हाथ उस पर फेरा और"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ा और अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा हो कर उड़ गई और सब लोग देखते रहे।"

(बहजतुलअसरार पृ० 65)

इस वाक़ेए से मालूम हुआ कि हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का यह अक़ीदा था कि खुदा-ए-तआ़ला ने उनको हवा पर हुकूमत बख़्शी है इसी लिए उन्हों ने हवा को हुक्म दे कर चील का सर कटवा दिया।

हज़रत अ़ल्लामा शतनोफी रहमतुल्लाहे तआ़ला अ़लैहि और ज़िक्र फ़रमाते हैं कि अबुल हसन अली बिन अबू बक्र अबहरी ने हम से बयान किया कि मैंने क़ाज़ीयुल क़ोज़ात (प्रधान क़ाज़ी) अबू सालिह नस्र से सुना, उन्होंने कहा कि मैं ने अपने बाप अब्दुलरज़्ज़ाक़ से सुना। वह कहते थे कि मेरे वालिदे गिरामी यानी हज़रत शैख़ मुहय्युद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु एक दिन जुमे की नमाज़ के लिए निकले। मैं और मेरे दो भाई अब्दुलवहाब और ईसा आपके साथ थे। रास्ते में हम को शराब के तीन मटके मिले जो बादशाह के थे और जिन की बू बहुत तेज़ थी। उनके साथ कोतवाल और कचहरी के कुछ दूसरे लोग थे। हज़रत ने उन लोगों से फ़रमाय कि ठहर जाओ। वह नहीं ठहरे। और जानवरों के चलाने में उन्होंने जल्दी की। तो हज़रत ने जानवरों से फ़रमाया। "ठहर जाओ तो वह ऐसे ठहर गए गोया कि वह जमादात हैं" यानी बेजान चीज़ें पत्थर और पहाड़ वग़ैरा की तरह अपनी जगह पर ठहर गए। वह लोग जानवरों को बहुतेरा मारते थे मगर वह अपनी जगह से नहीं

हिलते थे। और उन लोगों को क़ौलन्ज यानी पसली का दर्द शुरू हो गया। और सख्त दर्द की वजह से सब के सब दाएं बाएं ज़मीन पर लोटने लगे। फिर वह लोग खुदा-ए-तआ़ला को याद करने लगे और एलानिया तौबा व इस्तिग़फार करने लगे तो उनका दर्द जाता रहा। और शराब की बू सिर्को से बदल गई। उन्हों ने बर्तनों को खोला तो देखा वह सब सिर्का हो गया था।

(बहजतुलअसरार पे0: 41)

हज़रत ग़ौसे आज़ाम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इस वाक़ेए से अपना यह अक़ीदा अच्छी तरह ज़ाहिर कर दिया कि चलते हुए जानवरों को सिर्फ़ ज़बान से हुक्म दे कर बेजान चीज़ों की तरह ठहरा देने, लोगों को दर्दे क़ौलन्ज में मुबतला कर देने और बयक निगाह शराब को सिर्का बना देने की कुदरत अल्लाह तआ़ला ने मुझे अता फ़रमाई।

हज़रत अ़ल्लामा शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि और ज़िक्र फ़रमाते हैं कि अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन शैख़ अबुलअब्बास ख़िज़्र बिन अब्दुल्लाह बिन यहया मूसली ने मुझ से क़ाहिरा में बयान किया कि। 623 हि0 में मुझ को मेरे बाप ने शहरे मूसल में ख़बर दी कि हम एक रात अपने शैख़ हज़रत मुहय्युद्दीन अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मदर्सा बग़दाद में थे कि आप की ख़िदमत में बादशाह मुसतनजिद बिल्लाह अबुल मुज़फ़्फ़र यूसुफ़ हाज़िर हुआ। उस ने आप से सलाम अर्ज़ किया और नसीहत तलब करते हुए आपके सामने दस थैलियां रख दीं जिन्हें दस गुलाम उठा कर लाए थे। आप ने फ़रमाया कि मुझे इनकी हाजत नहीं। और कुबूल करने से इनकार कर दिया। बादशाह ने बड़ी आजिज़ी की तो आपने एक थैली अपने हाथ में ली और दूसरी बाएं हाथ में। और दोनों को हाथ में दबाया तो वह

ख़ून हो कर वह गई।

आप ने फ़रमाया ऐ अवुलमुज़फ़्फ़र! क्या तुम ख़ुदा-ए-तआला से नहीं डरते कि लोगों का ख़ून चूसते हो और मेरे सामने लाते हो। वादशाह वेहोश हो गया। आप ने फ़रमाया।"यानी अल्लाह की इज़्ज़त की क़सम। अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम से इस के रिशते का लिहाज़ न होता तो मैं ख़ून को ज़रूर छोड़ता कि वह उस के मकान तक वहता।"

(वहजतुलअसरार पे0: 61)

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस वाक़ेए से अपना यह अक़ीदा सावित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने हमें इख़्तियार की वह कुव्वत अता फरमाई है कि मैं चाँदी और सोने के सिक्के दिरहमो दीनार को खून वना कर उसे दूर तक वहा सकता हूँ।

हज़रत अल्लामा शतनोफी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि इरशाद फ़रमाते हैं कि मुझ से अवू अव्दूल्लाह मुहम्मद विन शैख़ अवुलअव्वास ख़िज़्र विन अव्दुल्लाह यहया मूसली ने वयान किया कि मुझे मेरे वाप ने ख़वर दी कि मैंने ख़लीफा मुसतनजिद विल्लाह अवुलमुज़फ़्फ़र यूसुफ को हज़रत शैख़ सय्यदना अव्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में देखा उस ने अर्ज़ किया मैं आप की कोई करामत देखना चाहता हूँ ताकि मुझे तसल्ली हो जाए। आपने फरमाया तुम क्या चाहते हो? उसने कहा मैं गैव से सेव चाहत हूँ और पूरे मुल्के इराक़ में वह ज़माना सेव का नहीं था।

हज़रत ने हवा में हाथ वढ़ाया तो दो सेव आपके हाथ में आ गए। तो एक सेव आप ने ख़लीफ़ा को दिया। हज़रत ने अपने हाथ के सेव को काटा तो निहायत सफेद ख़ुश्वूदार था, जिस से

मुश्क की ख़ुशवू आ रही थी और ख़लीफ़ा मुसतनजिद ने अपने हाथ का सेव काटा तो उसमें कीड़े थे।

उस ने तअ़ज्जुव से कहा यह क्या वात है कि आपके हाथ का सेव तो मैं वहुत अच्छा और उमदा देख रहा हूँ। आपने फ़रमाया ऐ अवुलमुज़फ़्फ़र! यानी तुम्हारे सेव को जुल्म के हाथ लगे तो उस में कीड़े पड़ गए। (वहजतुलअसरार स0: 61)

हज़रत ग़ौस आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस वाक़ेए से अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर फ़रमा दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे वह कुदरत अता फ़रमाई है कि मैं जिस मौसम में भी चाहूँ वग़ैर ज़ाहिरी असवाव के सिर्फ हाथ वढ़ा कर सेव हासिल कर सकता हूँ।

हज़रत अल्लामा शतनोफी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि और वयान फ़रमाते हैं कि 671 हि0 में अवु मुहम्मद रजव विन अवू मन्सूर दारी और अवू ज़ैद अव्दुर्रहमान विन सालिम क़रशी और अवू अव्दुल्लाह मुहम्मद विन उ़वादा अन्सारी ने काहिरा में हम से वयान किया कि उन लोगों से वरगुज़ीदा शैख़ हज़रत अवुल हसन क़रशी रहमतुल्लाहि तआला अलैह. ने क़ासियून पहाड़ पर 618 हि0 में वयान किया कि मैं और हज़रत शैख़ अवुल हसन अ़ली विन हैती अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान 549 हि0 में हज़रत शैख़ मुहय्युद्दीन अव्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में उन के मदर्से में मौजूद थे कि इज़ज के दर्वाज़ा में था मौजूद थे कि हज़रत के पास सौदागर अवू ग़ालिव फज़्लुल्लाह विन इसमाईल वग़दादी अज़जी हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया"ऐ हज़रत! आप के मुहतरम व मुकर्रम नाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिस शख़्स की दावत की तो उस को चाहिए कि वह उस को कुवूल करे और मैं आप

को अपने मकान पर दावत की ज़हमत देने के लिए हाज़िर हुआ हूँ" आप ने फ़रमाया अगर मुझे इजाज़त मिली तो आऊंगा आपने कुछ देर मुराक़बा फ़रमाया और फ़रमाया कि अच्छा मैं आऊंगा। मुक़र्ररह वक़्त पर आप सवार हुए शैख़ हैती ने आपकी दाइं रकाब पकड़ी और मैं ने बाइं थामी इस तरह उस शख़्स के मकान पर पहुंचे, वहाँ देखा तो बग़दाद के बहुत से उलमा व मशाइख़ (बुजुर्ग) और बहुत से वज़ीर मौजूद हैं।

आप के पहुंचने के बाद दस्तरख़्वान लगाया गया और बहुत क़िस्म के खाने दस्तरख़्वान पर रखे गए उसके बाद दो शख़्स एक बहुत बड़ा टोकरा उठा कर लाए जिसका सर ढका हुआ था यह टोकरा दस्तरख़्वान के एक तरफ़ ला कर रख दिया गया। मेज़बान ने शैख़ से अर्ज़ किया कि इजाज़त है, खाना शुरू किया जाए? शैख़ ने कुछ नहीं फ़रमाया अपना सर झुकाए रहे। न ख़ुद खाना शुरू किया और खाने की इजाज़त भी मरहमत नहीं फ़रमाई, चुनाँचे किसी ने भी खाना शुरू नहीं किया, अहले मजलिस पर आप की हैबत इस तरह तारी थी गोया उनके सरों पर परिन्दे बैठे हैं। (यानी बेहिस व बे हरकत तमाम हाज़िरीने मजलिस बैठे हुए थे) फिर आपने मुझे और शैख़ अ़ली हैती को इशारा किया कि इस टोकरे को उठा कर यहाँ लाओ चुनाँचे वह टोकरा हमने उठा कर शैख़ के सामने रख दिया, टोकरा बहुत वज़नी था शैख़ ने हम को हुक्म दिया कि इस टोकरे को खोलो जब हमने उसको खोला तो उसमें उस अमीर का फरज़न्द था जो लुन्जा, मादरज़ाद (जनम से) अंधा और मफलूज (अपाहिज) था, जुज़ामी (कोढ़ी) भी था। शैख़ ने उस को देख कर फ़रमाया"अल्लाह के हुक्म से तन्दुरूस्त हो कर खड़ा होजा।" शैख़ के यह फ़रमाते ही वह लड़का तनदुरूस्त शख़्स की तरह खड़ा हो गया और कोई बीमारी उस में मौजूद नहीं

थी। हाज़िरीने मजलिस में एक जोश पैदा हुआ और नारे लगाने लगे। हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु बग़ैर कुछ खाए पिए उस हुजूम में से उठ कर बाहर आऐ।

कुछ वक़्त के बाद हम शैख़ अबु सईद कैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि की ख़िदमत में गए और उनको यह किस्सा सुनाया उन्होंने फ़रमाया, "हाँ शैख़ अब्दुल क़ादिर अल्लाह तआ़ला के हुक्म से मादरज़ाद अंधों और कोढ़ वालों को अच्छा करते और मुर्दों को जिलाते हैं।" (बहजतुलअसरार पृ0: 63)

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इस वाक़ेए से अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि एक शख़्स जो लुन्जा, मादरज़ाद अंधा, फालिजज़दा और जुज़ामी (कोढ़ी) हो उसे भी बयक ज़बान तन्दुरूस्त करने का ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे इख़्तियार अ़ता फ़रमाया है।

हज़रत अबू सईद कैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 557 हि0) के तआरूफ़ (परिचय) में हज़रत अ़ल्लामा तादनी कुद्दिस सिर्रूहू बयान फ़रमाते हैं कि आप बड़े साहिबे हाल व करामत बुजुर्ग हुए हैं। आपका शुमार उन चार हस्तियों में होता है जिन की दुआएं हमेशा क़ुबूल हुई हैं। अगर किसी मरीज़ के लिए दुआ करते तो वह तन्दुरूस्त हो जाता। आप मुअ़तबर फुक़हा व मुफ़्तियाने शरीअ़त में से थे। आपकी सुहबत से अकाबिरे औलिया व उलमा फ़ैज़याब हुए। एक मर्तबा आपने कैलबिया की बस्ती में एक चट्टान पर खड़े हो कर आज़ान पढ़ी तो वह फट कर पांच हिस्सों में तकसीम हो गई और ज़मीन भी हैबते तकबीर से फट गई और एक मर्तबा किसी मुरीद ने कज़ा-ए-हाजत के लिए आपके हाथ से लोटा लिया लेकिन वह इत्तिफाक़ से गिर कर टूट गया और जब आपने उस लोटे को हाथ लगाया तो वह सही

व सालिम हो गया और उस में पहले की तरह पानी भरा हुआ था।

(क़लाइदुलजवाहिर पृ0: 371)

ऐसे बुलन्दपाया बुज़ुर्ग का अक़ीदा भी तसर्रूफ़ के बारे में मालूम हो गया कि वह हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं कि शैख़ अब्दुल क़ादिर अल्लाह तआला के हुक्म से मादरज़ाद अंधों और कोढ़ वालों को अच्छा करते और मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं।

और हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बयान फ़रमाते हैं कि एक रोज़ अबुलमआली नामी दुर्वेश हज़रत ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मजलिस में हाज़िर हुए। मजलिस के दौरान उन को पाखाने की हाजत हुई जिस ने इस क़द्र तेज़ी इख़्तियार करली कि यह अपनी जगह से जुम्बिश (हिल) नहीं कर सकते थे। यह बिलकुल बेताक़त हो गए। उन्होंने शैख की तरफ़ मदद के तौर पर देखा। हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिम्बर से एक ज़ीना नीचे उतर आए। उस वक्त पहले ज़ीने पर आदमी के सर की तरह एक सर ज़ाहिर हुआ। जब दूसरी सीढ़ी पर हज़रत उतरे तो उस सर के दूसरे आज़ा (अंग) कंधा और सीना ज़ाहिर हुए। इस तरह हज़रत ज़ीना ब-ज़ीना उतरते थे और वह शक्ले इन्सानी मुकम्मल होती जाती थी। यहाँ तक कि वह हज़रत की शक्ल में तब्दील हो गई और आवाज़ भी बिलकुल हज़रत जैसी शक्ल से आती थी। कलाम भी बिलकुल हज़रत के कलाम की तरह था। इस शक्ल को सिवाए उस हाजतमन्द के और कोई नहीं देख सकता था। उस वक्त हज़रत उस शख़्स के क़रीब आकर खड़े हो गए और अपनी आस्तीन उस शख़्स के सर पर डाल दी।

आस्तीन का पड़ना था कि अबुलमआली ने अपने को एक वीरान मैदान में पाया जहाँ एक नहर जारी थी और नहर के किनारे एक घना दरख़्त था अबुलमआली ने अपनी कुन्जियों का गुच्छा उस दरख़्त की शाख़ से लटका दिया और क़ज़ा-ए-हाजत (पेट ख़ाली करने) में मशगूल हो गए। फ़राग़त के बाद नहर से वुज़ू किया और दो रकअत नमाज़ अदा की। सलाम फेरने के बाद हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वह आस्तीन उस के सर से उठाई तो उन्होंने अपने आपको फिर उसी मजलिस में मौजूद पाया। अबुलमआली के आज़ाए (अंग) वुज़ू अभी तक पानी से तर थे। और पाख़ाना की हाजत दूर हो चुकी थी और हज़रत इसी तरह मेम्बर पर नसीहत में मसरूफ़ थे गोया नीचे तशरीफ़ ही नहीं लाए थे। अबुलमआली भी ख़ामोश बैठे रहे और किसी से कुछ न कहा लेकिन जब कुन्जियों का गुच्छा अपने पास मौजूद नहीं पाया तो सख़्त परेशान हुआ।

एक मुद्दते दराज़ के बाद अबुलमआली को सफर करने का इत्तिफ़ाक़ हुआ बग़दाद शरीफ़ से चौदह दिन का रास्ता था। सफर के दौरान एक मैदान से गुजरे जहाँ नहर जारी थी। अबुलमआली वुज़ू करने के लिए नहर पर गए तो यह वही नहर थी जहाँ क़ज़ा-ए-हाजत (पेशाब-पाख़ाने)के बाद उस रोज़ वुज़ू किया था। वहाँ उन्होंने उस दरख़्त को भी पहचान लिया। उन की कुन्जियों का गुच्छा उसी तरह दरख़्त की शाख़ से लटका हुआ था। अबुलमआली कहते हैं कि जब मैं बग़दाद शरीफ़ वापस आया तो हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाजिर हो कर यह क़िस्सा बयान किया। शैख़ ने मेरा कान पकड़ कर फ़रमाया ऐ अबुलमआली! जब तक हम ज़िन्दा हैं यह बात किसी से न कहना। (नफ़्हातुल उन्स पे0: 767)

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इस वाक़ेए से अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर तौर पर सावित कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने मुझे तसर्रूफ़ व इख़्तियार की वह कुदरत अता फरमाई है कि जिन्हें सुन कर इन्सानी अक़्ल हैरान हो जाए।

और हज़रत अल्लामा मुहम्मद यह्या तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि बयान फ़रमाते हैं कि एक मर्तवा दरिया-ए-दजला में ऐसा सैलाब आया कि पानी बग़दाद शरीफ़ की आवादी तक पहुंच गया और तमाम लोगों को अपने डूब जाने का यक़ीन हो गया तो वह लोग हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दुआ के लिए दरख्वास्त की। आप अपना असा-ए-मुबारक ले कर दरिया-ए-दजला पर पहुंच गए और असा को दरिया की अस्ल हद पर गाड़ कर फ़रमाया। "इसी जगह ठहर जाओ" चुनाँचे फ़ौरन ही पानी घटना शुरू हुआ और अपनी अस्ली हद पर आ गया। (कलाइदुलजवाहिर पृ0: 92)

इस वाक़ेए से हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने दरिया के पानी पर भी हुकूमत अता फ़रमाई है।

हज़रत अ़ल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ अबू सालिह अ़ब्बास बयान करते हैं। एक मरतबा हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मन्सूरा की जामा मस्जिद में तशरीफ़ लाए और वहाँ से अपने मदर्से की तरफ वापस हुए तो अपने चेहरे पर से रूमाल हटाया और एक विच्छू पेशानी पर से हाथ में पकड़ कर ज़मीन पर फेंक दिया और जब वह भागने लगा तो फ़रमाया कि "खुदा के हुक्म से मर जा" चुनाँचे उसी वक़्त वह मर गया। फिर आपने

फ़रमाया कि इस ने जामा मस्जिद से ले कर यहाँ तक मुझे साठ मरतवा डंक मारा है। (क़लाइदुलजवाहिर पे0: 111)

हज़रत अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह और ज़िक्र फ़रमाते हैं कि शैख़ मुअम्मर जर्रादा बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मकान पर हाज़िर हुआ तो आप कुछ लिख रहे थे। अचानक छत में से तीन मरतवा मिट्टी गिरी और आपने उसको झाड़ दिया। लेकिन चौथी मरतवा ऐसा हुआ तो आपने नज़र उठा कर देखा तो वहां एक चूहा मिट्टी गिरा रहा था। आपने फ़रमाया "तेरा सर उड़ जाए" यह कहते ही उसका जिस्म एक जानिव गिरा और सर दूसरी जानिव। यह देख कर हज़रत शैख़ लिखना छोड़ कर रोने लगे और जव मैं ने रोने का सवव पूछा तो फ़रमाया।

"मुझे यह ख़तरा है कि कहीं मेरे दिल को तकलीफ़ पहुंचाने के सवव से किसी मुसलमान को इसी तरह की तकलीफ़ न पहुंच जाए जैसी की चूहे को पहुंची है।"

और शैख़ उमर विन मसऊद बज़्ज़ाज़ बयान करते हैं कि एक दिन हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मदर्से में वुज़ू फ़रमा रहे थे कि अचानक एक चिड़िया ने आप के कपड़ों पर बीट करदी और जब आपने ऊपर नज़र उठा कर देखा तो चिड़िया मुर्दा हो कर नीचे गिर पड़ी।

(क़लाइदुलजवाहिर पे0: 128)

ऊपर ज़िक्र किए गए वाक़िआ़त और अपने कलिमात से हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपना यह अक़ीदा साफ़ तौर पर ज़ाहिर कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने मुझे तसर्रूफ़ की वह कुव्वत अता फरमाई है कि जो मेरी ज़बान से निकल जाएगा या जो मैं दिल से चाहूँगा वही हो जाएगा।

हज़रत तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि और फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ अबुल हसन अली बिन मलाइबुलकवास (जिनकी सच्चाई मशहूरे ज़माना है।) फ़रमाते हैं कि मैं एक जमाअत के हमराह हज़रत शैख़ अबदुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ। उस जमाअ़त ने अपने हालात के मुताबिक दुआ कराने का इरादा किया। लेकिन हमारी इस बड़ी जमाअ़त में एक बेग़ैर दाढ़ी मूंछ का नई उमर का लड़का भी शामिल था जिसके बारे में हम सब लोगों को मालूम था कि उस कीं आदतें बहुत बुरी हैं। क्यों वह न तो पेशाब पाख़ाना करके इस्तिन्जा करता था और न ग़ुस्ले जनावत (नापाकी) करता था।

चुनाँचे लोगों ने अपनी हाजतें बयान करने के बाद हज़रत शैख़ से दुआ़ के लिए दरख़्वास्त की। और जब मैं ने आगे बढ़ कर आप के हाथ को बोसा दिया तो पूरी जमाअ़त बोसा देने के लिए टूट पड़ी मगर जब वह नौ उम्र लड़का बढ़ा तो आपने अपना हाथ मुबारक खींच कर आस्तीन में छुपा लिया और उस लड़के पर ऐसी नज़र डाली कि वह बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो उसकी दाढ़ी और मूंछें निकल आई थीं। उसके बाद उस ने तौबा की और फिर आपने उस से मुसाफ़ा किया।

(बहजतुलअसरार पृ०: 118)

हुज़ूर सय्यदेना गौसे आज़म रजियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इस वाक़ेए से अपना यह अक़ीदा सावित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने तसर्रूफ़ पर मुझे ऐसी क़ुदरत अ़ता की है कि मैं बयक निगाह नौ उम्र लड़के को दाढ़ी मूंछ वाला बना सकता हूँ।

और आप ख़ुद बयान फ़रमाते हैं कि "और यही फ़ना की हालत है जो औलिया व अबदाल के हालतों की इन्तिहा है। फिर

उनको तकवीन (यानी कुन (हो जा) कहना) अता किया जाता है तो फिर उनको जिस चीज़ की भी हाजत होती है वह सब कुछ अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हो जाता है। चुनाँचे हक़ सुबहानहू का इरशाद इसकी बाज़ किताबों में है कि ऐ औलादे आदम! मैं अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य योग) नहीं है। मैं वह हूँ कि किसी चीज़ को कहता हूँ हो जा तो वह हो जाती है। तू भी मेरी इताअ़त कर मैं तुझे भी ऐसा करदूँगा कि तू भी किसी चीज़ को कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगी।"

(फ़ुतूहुलग़ैब मअ बहजतुलअसरार पे०: 109)

इसी इबारत (लेख) से हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने तसर्रूफ़ इख़्तियार के बारे में अपना अक़ीदा ख़ुद ही ज़ाहिरी लफ्ज़ों में बयान फरमा दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला अपने फ़रमाँबरदार बन्दों को मरतब-ए-तकवीन (होजा) अता फरमा देता है कि वह किसी चीज़ को कहते हैं कि हो जा तो वह हो जाती है।

और हुज़ूर सय्यदेना शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने क़सीद-ए-गौसिया में ख़ुद अपनी ज़बाने मुबारक से इरशाद फ़रमाया है कि "मुझे अल्लाह तआ़ला ने तमाम क़ुतुबों पर वाली व हाकिम बना दिया तो मेरा हुक्म हर हाल में जारी है तो अगर मैं अपनी मुहब्बत का भेद दरियाओं पर ज़ाहिर करदूँ तो उनका कुल पानी ज़मीन की तह में धंस जाए यानी सारे दरिया ख़ुश्क हो जाएँ और अगर मैं अपनी मुहब्बत का राज़ पहाड़ों पर ज़ाहिर करदूँ तो वह रेज़ा रेज़ा हो कर रेत में छुप जाएँ। और अगर मैं अपनी मुहब्बत की हक़ीक़त आग पर जाहिर कर दूँ तो वह बुझ जाए और अपनी रौशनी से महरूम हो जाएं। और अगर मैं अपनी मुहब्बत का राज़ किसी मुर्दो पर जाहिर करदूँ तो वह अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से जिन्दा हो कर खड़ा हो

जाए। अल्लाह तआला के शहर मेरा मुल्क और मेरे हुक्म के तख़्त हैं और मेरा वक्त मेरी जान से पहले मेरे लिए साफ़ हो चुका है।"

इन अशआर से भी हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अक़ीदा खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर है।

★★★

शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 632 हि0)

हज़रत अल्लामा जामी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम याफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि हज़रत अमीरूलमोमिनीन ख़लीफ़तुर्रसूल अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की औलाद में से हैं। तसव्वुफ़ व तरीक़त में आपकी निसबत आपके चचा मुहतरम हज़रत शैख़ अबुन्नजीब अब्दुल क़ाहिर सुहरवर्दी (अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान इन्तिक़ाल 563 हि0) से है। आप हज़रत शैख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी क़ुद्दिस सिर्रूहू की सुहबत (संगति) में भी रहे हैं, उन दो हज़रात के अलावह और बहुत से मशाइख़ (बुज़ुर्ग) के साथ आपकी सुहबत रही है।

आप अपने वक्त में बग़दाद के शैख़ुश्शुयूख़ थे, एहले तरीक़त दूरो नज़दीक के शहरों से मसाइल दर्याफ़्त करने के लिए आपके पास आते और आप उन का हल फ़रमाया करते। रिसाला "इक़बालिया" में ज़िक्र किया है कि शैख़ रूकनुद्दौला रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि लोगों ने हज़रत शैख़ सादुद्दीन उमूमी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान से दर्याफ़्त किया कि आपने हज़रत शैख़ मुहय्युद्दीन इब्ने अरबी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को क्या

पाया? तो उन्होंने जवाब में कहा कि "यानी वह एक अथाह पुरजोश समन्दर है" "फिर दर्याफ़्त किया कि हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान) के बारे में आप का क्या ख़्याल है? उन्हों ने फ़रमाया "हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान) की पेशानी में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की फ़रमांबरदारी का नूर कुछ और ही चीज़।" (नफ़हतुलउन्स पे0: 713.714)

और हज़रत अल्लामा मुहम्मद यह्या तादनी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि ज़िक्र फ़रमाते हैं आप इराक़ के उन बुज़ुर्गों में से हैं जिन पर हुकूमते रूहानी का ख़ातमा हो जाता है। आप आलिम व फ़ाज़िल थे और बहुत फ़सीह व बलीग़ (उम्दा) कलाम फ़रमाते थे। न सिर्फ आप को इल्मे रूहानी हासिल था बल्कि आप ग़ैब के हालात भी बता दिया करते थे। अक्सर ख़िलाफ़े आदात करामात का आप से ज़ुहूर होता रहता था। क़ुरआन व सुन्नत पर शिद्दत के साथ अमल पैरा थे और शरीअत व तरीक़त में इजतिहाद (शरीअ़त के इमाम) का दर्जा रखते थे।

आप उन हस्तियों में से थे जिन के पास हज़रत ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) बज़ाते ख़ुद तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि "ऐ शहाबुद्दीन! तुम मश्हूर बुज़ुर्गों के आख़िरी शख़्स हो।" (क़लाइदुलजवाहिर स0: 391)

औलिया-ए-किराम के तसर्रूफ़ात व इख़्तियारात के बारे में ऐसी अज़ीमुल मरतबत शख़्सियत का अक़ीदा मुलाहज़ा हो। हज़रत अल्लामा जामी लिखते हैं कि हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान) फ़रमाते हैं कि जवानी के ज़माने में मुझे इल्मे कलाम से लगाव हो गया और मैं ने इल्मे कलाम की चन्द किताबें हिफ़्ज़ कर डालीं। मेरे चचा (हज़रत शैख़ अबुन्नजीब

अब्दुल क़ाहिर सुहरवर्दी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) मुझे इस बात से रोकते थे। एक दिन चचा हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) की ज़ियारत के लिए गए और मैं भी उनके साथ गया। चचा ने मुझ से फ़रमाया कि हुज़ूरे क़ल्ब (दिली तवज्जुह) का ख़्याल रखना कि तुम एक ऐसे बुज़ुर्ग के पास चल रहे हो जिन का दिले मुबारक अ़ल्लाह तआ़ला की ख़बर देता है। (क़ल्बे वे अज़ हक़ तआ़ला ख़बर दिहद) और उसकी बरकत का मुन्तज़िर रहना।

जब हम वहाँ हाज़िर हुए तो चचा ने अर्ज़ किया ऐ सय्यदी! मेरा यह भतीजा उमर इल्मे कलाम से बड़ी दिलचस्पी रखता है। मैं हर चन्द उस को रोकता हूँ लेकिन बाज़ नहीं आता। शैख़ ने मुझ से दर्याफ़्त किया कि ऐ उमर! तुम ने कौन-कौन सी किताबें ज़बानी याद की है? मैं ने अर्ज़ किया फलाँ-फलाँ किताब। तब शैख़ ने अपने हाथ मुबारक मेरे सीने पर फेरा। ख़ुदा की क़सम उसी वक़्त उन किताबों से एक लफ़्ज़ भी याद नहीं रहा। (सब भूल गया) अल्लाह तआ़ला ने उन तमाम मसाइल को मेरे दिल से भुला दिया। (लेकिन उनके हाथ मुबारक की बरकत से) मेरे सीने को इलमे लदुन्नी (रूहानी) से भर दिया। जब मैं आप के पास से उठा तो आपने बड़ी नर्मी और शीरीं बयानी (मिठास) के साथ फ़रमाया "ऐ उमर! तुम इराक़ के आख़िरी मशाहीर (मश्हूर बुज़ुर्ग) में से हो।" (तरजुमा नफ़हातुलउन्स पे० 765)

हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने इस वाक़ेए को बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा रोज़े रोशन की तरह साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने सय्यदेना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को किसी के दिल पर क़ब्ज़ा करके उस के इल्म को छीन कर लेने का भी इख़्तियार अता

फ़रमाया है। बल्कि आपने अपने इस अक़ीदे का साफ़ लफ़्ज़ों में भी बयान फ़रमा दिया है जैसा कि हज़रत अल्लामा नूरुद्दीन शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फ़रमाया। "बे शक हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हक़ीक़त के और वुजूद में तसर्रुफ़ करने के बादशाह थे।"

(बहजतुलइसरार पृ० ३३)

और हज़रत अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के साथी शैख़ नज्मुद्दीन नक़तीसी फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत शैख़ सुहरवर्दी के इबादत वाले हुजरे में दाख़िल हुआ वह उनके चिल्ला का दिन था। उस दिन मैं ने देखा कि शैख़ एक बहुत बुलन्द पहाड़ पर हैं और आपके सामने जवाहिरात का अंबार लगा हुआ है और आप मुट्ठियाँ भर. भर कर लोगों की जानिब फेंकते जाते हैं और लोग दौड़ दौड़ कर उठा रहे हैं। जब मोती कम होते तो वह ख़ुद-बख़ुद बढ़ जाते।

जब आप चिल्ला से बाहर आ गये तो मैं इस वाक़ेए से ज़ेहन को ख़ाली करके एकदम सो गया। दूसरे दिन जब मैं ने आप से इस वाक़िए के बारे में तफ़सील मालूम करनी चाही तो आपने मेरे कुछ कहने से पहले ही फ़रमाया कि "साहिबज़ादे तुम ने जो कुछ देखा वह दुरुस्त है। और यह सब कुछ हज़रत शैख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) का फ़ैज़ और उनकी तालीम का नतीजा है।(तरजुमा क़लादुलजवाहिर स0: 391)

इस वाक़ेए से हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपना यह अक़ीदा साबित किया कि ख़ुदा-ए- तआ़ला ने मुझे तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़ल) की क़ुदरत अ़ता फ़रमाई है।

★★★

शैख़ अ़ली बिन हैती का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 564)

आप वह बुज़ुर्ग हैं जो हुज़ूर सय्यदेना ग़ौस आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के विसाले अक़दस (इन्तिक़ाल) के बाद क़ुतुब हुए। और हज़रत अल्लामा शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के इरशाद के मुताबिक़ आप उन शुयूख़ (रूहानी पेशवा) में से एक हैं जो मादरज़ाद अंधों और कोढ़ियों को अच्छा कर दते थे।

(बहजतुलअसरार स0: 153)

और हज़रत अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत सय्यदेना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) आपकी बहुत तारीफ़ करते और निहायत मुहब्बत व एहतिराम के साथ पेश आते और अकसर फ़रमाया करते कि "बग़दाद में जो औलिया-ए-किराम दाख़िल होते हैं वह हमारे ही मेहमान होते हैं लेकिन हम शैख़ अ़ली बिन हैती के मेहमान रहते हैं। (क़लाइदुलजवाहिर स0: 313)

अब तसर्रूफ़ व इख़्तियार के बारे में ऐसी बर गुज़ीदा (महान) हस्ती का अक़ीदा मुलाहज़ा हो। हज़रत अल्लामा शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अबू मुहम्मद हसन बिन यहया बिन नजीम हुरानी और अबू हफ़्स उमर बिन मुज़ाहिम देनसरी ने हम को ख़बर दी उन लोगों ने कहा कि मैं ने शैख़ अ़ली बिन इदरीस याक़ूबी से सुना। और अबू मुहम्मद सालिम बिन अ़ली दमयाई सूफ़ी ने हम से बयान किया कि मैं ने शैख़ आरिफ़ अबु हफ़्स उमर यज़ीदी से सुना वह दोनों कहते थे कि हम हज़रत शैख़ अ़ली बिन हैती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के

साथ एक दफ़ा नहरूलमुल्क में गए तो हम ने दो बस्ती वालों को देखा कि तलवारें निकाले हुए लड़ने को तैयार हैं और उनके दर्मियान एक क़त्ल किया हुआ (मुर्दा) पड़ा है और दोनों लोग एक दूसरे पर क़त्ल का इलज़ाम लगा रहे हैं। शैख़ कुछ देर मक़तूल के सरहाने खड़े रहे फिर उस के सर के बालों को पकड़ कर कहने लगे। यानी ऐ अल्लाह के बन्दे! तुझको किस ने क़त्ल किया? आपके इतना फ़रमाते ही वह सीधा खड़ा हो कर बैठ गया और आँखें खोल दीं और साफ़ लफ़्ज़ों में कहने लगा जिस को तमाम हाज़िरीन ने सुन लिया कि मुझ को फलाँ बिन फलाँ ने क़त्ल किया है। फिर वह ठंडा हो गया। जैसा कि पहले था।

(बहजतुलअसरार स0: 154)

इस वाक़ेए से हज़रत शैख़ अ़ली बिन हैती अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मुर्दा को ज़िन्दा कर देने का इख़्तियार अ़ता फ़रमाया है।

★★★

सय्यद अहमद कबीर रिफ़ाई का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 578 हि0)

आप इराक़ के मशहूर मशाइख़ (बुज़ुर्ग) में से हैं और अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के फ़रमान के मुताबिक़ आप उन चार हस्तियों में से हैं जो हुक्मे इलाही से अंधों को बीना, (अंख्यारा) कोढ़ियों को तन्दुरूस्त और मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे। (क़लाइदुलजवाहिर स0: 289)

तसर्रूफ़ व इख़्तियार के बारे में उस बुज़ुर्ग का अक़ीदा

मुलाहज़ा हो। हज़रत के भांजे अबुल फरह अब्दुर्रहमान बिन अ़ली रिफ़ाई फ़रमाते हैं कि एक दिन जब शैख़ तन्हा बैठे थे तो मैं आप के मलफ़ूज़ात (फ़रमान) सुनने की नियत से क़रीब बैठ गया तो उसी वक़्त एक शख़्स और आसमान से उतर कर आपके सामने बैठ गया। और आपने मरहबा कहा। उसके बाद इस शख़्स ने कहा कि मैं ने बीस रोज़ से कुछ खाया पिया नहीं है लेकिन मैं चाहता हूँ कि अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ खाँऊ पियूँ। शैख़ ने पूछा तुम्हारी ख्वाहिश क्या है? उसने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई तो देखा कि पांच मुर्ग़ाबियां उड़ती हुई जा रही हैं। उसने कहा ऐ काश! उन में से एक भुनी हुई मुझे मिल जाती जिसके साथ गेहूँ की रोटियाँ ठंडे पानी का एक कूज़ा (प्याला) भी होता।

शैख़ ने यह सुन कर फ़रमाया "यह मुर्ग़ाबियां तो तेरे ही लिए हैं।" फिर आपने उड़ती हुई मुर्ग़ाबियों की तरफ़ देख कर फ़रमाया"इस शख़्स की ख्वाहिश जल्द पूरी करदो।" अभी आपका यह जुमला पूरा भी नहीं हुआ था कि उन मुर्ग़ाबियों में से एक भुनी हुई आपके सामने आकर गिरी। और आपने अपने पहलू में रखे हुए दो पत्थरों को अपने हाथ से खींचा तो वह बेहतरीन क़िस्म की गेहूँ की गर्म रोटियों में बदल गए। फिर जब आपने अपना हाथ फ़ज़ा में बुलन्द किया तो एक सुर्ख़ रंग का कूज़ा (प्याला) आपके हाथ में आ गया जिसमें पानी भरा हुआ था जब वह शख़्स खा पी कर हवा में उड़ गया तो शैख़ ने मुर्ग़ाबी की हड्डियों को बाएँ हाथ में ले कर उस पर अपना दाहिना हाथ फेरा और फ़रमाया "कि ऐ हड्डियो और पट्ठो! ख़ुदा-ए-तआ़ला के हुक्म से आपस में जुड़ जाओ। फिर आपने जब "बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ी तो वह मुर्ग़ाबी ज़िन्दा हो गई और हवा में उड़ती हुई नज़रों से ओझल हो गई। (क़लाइदुलजवाहिर स0: 921)

और हज़रत अल्लामा शतंनोफी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह मुहद्दिसाना (हदीसी)सनदों के साथ फ़रमाते हैं कि खबर दी हम को शैख़ अबू यूसुफ़ याकूब बिन बदरान बिन मन्सूर अन्सारी ने उन्होंने कहा कि मैं ने अपने शैख़ इमाम आलम तक़ीयुद्दीन अली बिन मुबारक बिन हसन बिन अहमद बिन नासवियह वास्ती से सुना वह कहते थे कि मेरे सरदार हज़रत शैख़ अहमद रिफ़ाई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक दिन दरिया-ए-दजला के किनारे बैठे हुए थे और आपके मुरीदीन आपको चारों तरफ़ से घेरे हुए थे। उस वक़्त आपने फ़रमाया कि "आज हम भुनी हुई मछली खाना चाहते हैं।" अभी आपका यह कलाम पूरा भी न हुआ था कि दरिया का किनारा तरह-तरह की मछलियों से भर गया और उन में से बहुत सी मछलियां ख़ुश्की की तरफ़ कूद पड़ीं और इमाम उबैदा के किनारे इस कदर मछलियां जमा हुईं कि कभी इतनी देखी नहीं गई थीं।

शैख़ ने फ़रमाया यह तमाम मछलियां मुझ से कहती हैं कि आप को अल्लाह तआ़ला के हक़ की क़सम है कि हम में से आप खाएं। तब आपके मुरीदों ने उन में से बहुत सी मछलियों को पकड़ कर भूना और एक बड़ा दस्तरख़्वान शैख़ के सामने बिछा कर उसके पूरे हिस्से पर मछलियों को रख दिया। फिर सब ने खाया यहाँ तक कि आसूदा हो गए और दस्तरख़्वान पर भुनी हुई मछलियों में से किसी का सर और किसी की दुम वग़ैरा बाक़ी रह गई।

फिर एक मुरीद ने शैख़ से अर्ज़ किया कि ऐ मेरे सरदार! जो शख़्स कि कामिल और क़ादिर हो उसकी सिफ़त (ख़ूबी)क्या है? फ़रमाया। "तमाम मख़्लूक़ में उसको आम तसर्रुफ़ (अधिकार) दिया जाता है।" मुरीदों ने कहा उसकी अलामत क्या है? शैख़ ने फ़रमाया कि "अगर इन मछलियों के बाक़ी हिस्सों से कहे तुम उठ

कर दौड़ने लगो तो वह दौड़ने लगें। फिर शैख़ ने उन भुनी हुई मछलियों की तरफ़ अपने हाथ से इशारा किया और फ़रमाया"ऐ भुनी हुई मछलियो! जो इस दस्तरख़्वान पर हो ख़ुदा-ए-तआला के हुक्म से उठ कर चलने लगो।" अभी आप का यह कलाम पूरा भी नहीं हुआ था कि वह वाक़ी हिस्से ज़िन्दा मछलियाँ सही सालिम हो कर दरिया में कूद पड़ीं और जहाँ से आई थी वहीं चली गईं।

(वहजतुलअसरार स0: 237)

हज़रत सय्यद अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपने इन वाक़िआत व कलिमात से यह अक़ीदा साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने मुझे तमाम मख़्लूक में पूरा तसर्रूफ़ अता फ़रमाया है।

हज़रत अल्लामा शतनोफी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि और फ़रमाते हैं कि हम को अबुलक़ासिम मुहम्मद बिन उबादा अन्सारी हल्बी ने ख़बर दी कि मैं ने शैख़ आरिफ़ अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन महमूद बालबकी मक़री से सुना वह कहते थे कि मैं ने अपने शैख़ इमाम अबू अब्दुल्लाह बताइही से सुना कि मैं सय्यदी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की (ज़ाहिरी) ज़िन्दगी में उम्मे उबैदा की तरफ़ गया और शैख़ अहमद रिफ़ाई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सहन में चन्द रोज़ ठहरा। एक दिन शैख़ अहमद रिफ़ाई ने मुझ से फ़रमाया कि मेरे शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब (कमालात) बयान करो, मैं ने कुछ बयान किया। गुफ़्तगू के दर्मियान एक आदमी आया। और कहने लगा कि उस को छोड़। और इशारा शैख़ अहमद रिफ़ाई के मनाक़िब (कमाल) का किया। उस वक़्त शैख़ ने उस की तरफ़ गुस्सा से देखा वह शख़्स उसी वक़्त शैख़ के सामने गिरा और उसकी जान निकल गई।

(वहजतुलअसरार स0: 238)

इस वाक़ेए से हज़रत सय्यद अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपना यह अक़ीदा साफ़ कर दिया कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मुझे बयक निगाह जिन्दा को मुर्दा करने का भी इख़्तियार अता फ़रमाया है।

★★★

शैख़ अदी मुसाफ़िर उमवी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 555)

आप पश्चिमी मुल्कों के मशाइख़ (बुज़ुर्गों) में अज़ीमुल मरतबत (महान) शख़्सियत के हामिल हुए। आप उलमा-ए-एहले तरीक़त के उन सरदारों में से हैं जिन्हों ने इब्तिदा ही से मुजाहदात (इबादत-ज़िक्र) में बड़ी परेशानियाँ उठाई हैं हमारे हुज़ूर सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी आप का ज़िक्र एहतिराम के साथ किया करते थे आपके सुलतानुलऔलिया होने की गवाही देते और यह फ़रमाते"मुजाहदा के ज़रिए नुबुव्वत हासिल होती तो वह अदी बिन मुसाफ़िर को ज़रूर हासिल हो जाती।" (वहजतुलअसरार स0: 150)

तसर्रूफ़ (अमल-दख़ल) के बारे में एक अज़ीमुल मरतबत (महान) शख़्सियत का अक़ीदा मुलाहजा हो। हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि इमाम याफ़ई अपनी तारीख़ में आपके बारे में लिखते हैं कि आपके मुरीदों में से एक मुरीद के दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि लोगों से क़तए तअल्लुक़ करके (अलग-थलग) रहा जाए।

उस ने शैख़ अदी से दरख़्वासत की कि ऐ शैख़! मैं चाहता हूँ कि मैं अलग थलग इस जंगल में रहूँ। क्या अच्छा होता कि यहाँ जंगल में पानी होता और कुछ खाने को भी मिल जाया करता

ताकि मेरे जिस्म की ताक़त बाक़ी रहे। शैख़ उठे और वहाँ जो दो बड़े-बड़े पत्थर पड़े हुए थे उन में से एक पर अपना पाँव मारा उसी दम पानी का चश्मा (सोता) जारी हो गया। फिर दूसरे पर पाँव मारा तो अनार का दरख़्त नमूदार हो गया। आपने दरख़्त से मुख़ातब हो कर फ़रमाया कि "ऐ दरख़्त! हर रोज़ खुदा-ए- तआला के हुक्म से एक दिन मीठा अनार और एक दिन खट्टा अनार उस को दे दिया करना" चुनाँचे ऐसा ही हुआ। उस दरख़्त के अनार दुनिया के बेहतरीन अनारों में थे।

(नफहातुलउन्स स0: 784)

और तादनी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि फ़रमारते हैं। अबू इस्राईल बयान करते हैं कि मैं ने एक मरतबा शैख़ अदी से उवादान की तरफ़ सफ़र करने की इजाज़त तलब की तो आपने फ़रमाया कि "अगर तुम्हें रास्ते में शेर मिल जाए या और कोई मुसीबत दरपेश हो और तुम ख़ौफ़ज़दा हो जाओ तो उस से कहना कि अदी बिन मुसाफ़िर का हुक्म है कि तू मेरे लिए मुसीबत का सबब न हो" चुनाँचे जब मैं सफ़र पर रवाना हुआ तो दरिया में ज़बर्दस्त तूफ़ान आ गया। उस वक़्त मैं ने कहा ऐ मौजों! ठहर जाओ क्यों कि शैख़ अदी ने तुम्हें ठहर जाने का हुक्म दिया है। यह कहते ही तूफ़ान ख़त्म हो गया।

फिर जब मुझे सांपों और दरिन्दों ने घेर लिया तो मैं ने उन से भी यही क़ोल कहा। और वह मेरा जुमला (बात) सुन कर भाग गए। फिर जब मैं दरिया-ए-बसरा से गुज़रने लगा तो इतनी तेज़ हवाएं चलने लगीं कि मौजों के थपेड़ों ने मुझे हलाकत के क़रीब पहुंचा दिया तो फिर मैं ने कहा। ऐ हवाओं! रूक जाओ। चुनान्चि हवा रूक गई और दरिया का पानी ठहर गया।

(क़लाइदुलजवाहिर स0: 299)

अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि और बयान फ़रमाते हैं कि क़िला जरामिया का कोतवाल अमीर इब्राहीम नामक तमाम दुरवेशों से उमुमन और शैख़ अदी से ख़ुसूसी मुहब्बत रखता था। और उस अमीर के पास जितने सूफ़िया आए वह उन से शैख़ अदी की बेहद तारीफ़ें किया करता था। एक मरतबा उन सूफ़िया ने कहा कि चलो हम भी हाज़िर हो कर इम्तिहान के तौर पर उन से कुछ मसाइल दर्याफ़्त करेंगे। चुनाँचे जब सब लोग सलाम कर के शैख़ के पास बैठ गए तो उन में से एक ने आप से गुफ़्तगू शुरू की लेकिन आप ख़ामोश रहे। जिस को उस दुरवेश ने आपकी आजिज़ी पर गुमान किया लेकिन शैख़ ने अपनी रूहानियत से उनके सवालात को महसूस करके जमाअत से मुतवज्जह हो कर फ़रमाया। "कि अल्लाह तआला ने ऐसे बन्दें भी पैदा किए हैं जो अगर दो पहाड़ों से कहदें कि बाहम मिल जाओ तो वह आपस में मिल जाऐं।"

इधर शैख़ की ज़ुबान से यह जुमला अदा हुआ, उधर जब सूफ़िया की नज़र दोनों पहाड़ों पर पड़ी तो देखा कि वह आपस में मिल चुके थे। जिन लोगों ने यह करामत देखी वह आपके क़दमों में गिर पड़े। बाद में आपने अपने हाथ से दोनों पहाड़ों की तरफ़ इशारा किया तो वह दोनों फिर अपनी-अपनी जगह पहुंच गए। जिस को देख कर सूफ़िया-ए-किराम बहुत खुश हुए और तौबा कर के आपके हाथ पर बैअत (मुरीद) हो कर वापस हुए।

(कलाइदुलजवाहिर स0: 301)

अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि और फ़रमाते हैं शैख़ उमर का बयान है कि मैं एक मरतबा हज़रत शैख़ अदी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान की ख़िदमत में हाज़िर था कि बुज़ुर्गाने दीन का ज़िक्र छिड़ गया। उस पर हज़रत शैख़ अदी ने फ़रमाया कि

"यहाँ एक ऐसा मुसाफ़िर भी मौजूद है जो अंधों, कोढ़ियों को अच्छा कर देने के बावजूद नुबुव्वत (पैग़म्बरी) का दावा नहीं करता।" तो आपका यह क़ौल मुझे नागवार महसूस हुआ और मैं उस मजलिस से उठ कर चला आया। फ़िर चन्द दिनों के बाद हाज़िर हुआ तो उस वक्त भी मेरे दिल पर उस क़ौल का असर था। और मेरे सलाम करने पर आपने फ़रमाया।

ऐ उमर! तुम मेरे साथ इस शर्त पर कि किसी सिलसिले में मुझ से बात नहीं करोगे। मेरे साथ चलो।" मैं ने आपकी शर्त मंजूर कर ली और हम एक मक़ाम की तरफ़ चल पड़े। मैं आप के पीछे चलता रहा यहाँ तक कि हम एक बहुत घने जंगल में पहुंच गए और उस वक़्त मुझे बहुत ज़्यादा भूक लगी हुई थी। लिहाज़ा मैं आप से अलग हो गया तो आपने मेरी जानिब मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया कि "तुम मुझ से अलग हो कर रूक क्यों गए?"

मैं ने जवाब दिया कि मुझे बहुत ज़ोरों की भूक लगी है। यह सुन कर आपने ज़मीन पर से एक घास उठाई जो बबूल की तरह ख़ुश्क थी और उसको मेरे मुंह में रख दिया और जब मैं ने उसको चबाया तो वह खजूर की तरह मीठी थी। वह मेरी ताक़त के लिए काफ़ी हो गई। उस के बाद आप फिर चल पड़े। और मैं ने अपने दिल में यह ख़्याल करके कि यह ताक़त मुझे इस घास से हासिल हुई। लिहाज़ा फिर मैं ने वही घास ज़मीन से उठा कर अपने मुंह में रख ली। लेकिन अब की मरतबा उस की कड़वाहट से मेरे मुंह का मज़ा ख़राब हो गया। और मैं ने मुंह से निकाल कर उसे फेंक दिया। उस वक़्त आपने फ़रमाया कि ऐ उमर! मैं ने कहा जी हाँ।

फिर हम बहुत देर तक चलने के बाद एक गाँव में पहुंच

गए जिस के क़रीब एक चश्मा (पानी का सोता) था और वहाँ एक कोढ़ी बैठा हुआ था। उस को देखते ही मुझे शैख़ का क़ौल याद आया। और मैं ने सोचा कि अगर आप की बात सच्ची थी तो यह कोढ़ी ज़रूर अच्छा हो जाएगा। उसी वक़्त शैख़ ने मुझ से पूछा कि "तुम्हारे दिल में क्या ख़्याल आया?" मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला की बारगाह में शैख़ मन्ज़ी और शैख़ मुस्लिहा के वसीले से मैं ने दुआ की है कि इस नौजवान को तनदुरूस्त कर दे। यह सुन कर आपने फ़रमाया कि ऐ उमर! किसी पर हमारा भेद ज़ाहिर न करना। और जब मैं ने भेद न जाहिर करने की क़सम खाई तो आपने चश्मा पर पहुंच कर वुज़ू किया और क़िब्ला रूख़ हो कर दो रकअत नमाज़ अदा की फिर मुझ से फ़रमाया कि "जब मैं दुआ करूं तो मेरी दुआ पर आमीन कहना।"

चुनाँचे जब आपने दुआ की तो मैं ने आमीन कहा। फिर आपने अपना मुबारक हाथ उस कोढ़ी पर फेर कर फ़रमाया। "अल्लाह के हुक्म से खड़े हो जा।" यह कहते ही वह फ़ौरन खड़ा हो गया और ख़ुशी में इस तरह दौड़ने लगा जैसे उस को कोई मज़ा ही नहीं था। और अपने गाँव वालों से जा कर कहा कि मेरे पास दो आदमी आए। उन में से एक ने मेरे ऊपर हाथ फेरा जिस के बाद मैं बिलकुल तंदुरूस्त हो गया। यह सुन कर गाँव वाले हमारे पास पहुंच गए। उस वक़्त आपने मुझे अपने कपड़े से ढांप लिया यहाँ तक कि किसी ने मुझे नहीं देखा फिर सिर्फ़ थोड़ी दूर चल कर आप अपनी खानक़ाह पर पहुंच गए।

(कलाइदुलजवाहिर सः 303)

और हज़रत अल्लामा शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि शैख़ अदी बिन मुसाफिर अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के ख़ादिम का बयान है कि एक दिन मैं वुज़ू कर रहा था कि हज़रत

शैख़ ने मुझ से फ़रमाया कि क्या करता है। मैं ने अर्ज़ किया कि कुरआन मजीद की तिलावत करने का इरादा करता हूँ, इस लिए कि मुझे इस में से सूरह फ़ातिहा और सूरह अख़लास के अलावह और कोई सूरत याद नहीं इसका ज़बानी याद करना मुझ पर बहुत मुश्किल है। मेरे इस तरह अर्ज़ करने पर शैख़ ने अपना हाथ मेरे सीने पर मारा तो उसी वक़्त मुझे पूरा कुरआन हिफ़्ज़ हो गया। और मैं उनके पास से निकला तो उसको पूरा पढ़ता था, मैं उसकी किसी आयत में भूलता नहीं था और अब भी मैं उसके पढ़ने में दूसरे लोगों से उमदा पढ़ता हूँ और उसके पढ़ाने पर दूसरे लोगों से ज्यादा क़ादिर हूँ। (बहजतुलअसरार स0: 151)

हज़रत शैख़ अदी बिन मुसाफ़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऊपर ज़िक्र किए गए वाक़िआत और कलिमात से अपना यह अक़ीदा बिलकुल ज़ाहिर कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला कायनात को औलिया के ज़ेरे फ़रमान (मातहत) कर देता है। उसके हुक्म से वह लोग उस में पूरा तसर्रुफ़ (हुक्म) करते हैं।

★★★

शैख़ माजिद कुर्दी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 564 हि0)

आंप इराक़ के मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं जो हुज़ूर सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ़ करने वालों में से हैं और हुज़ूर सय्यदना ग़ौसे आज़म भी आप की बहुत तारीफ़ किया करते थे। औलिया-ए-किराम के तसर्रुफ़ (अ़मल-दख़ल) व इख़्तियार के बारे में अब उस अज़ीमुलमरतबत (महान) शख़्सियत का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

हज़रत अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि आप के साहबज़ादे शैख़ सुलैमान का बयान है कि एक मरतबा मैं तन्हा अपने वालिद के पास था और उस वक़्त हमारे पास खाने की कोई चीज़ नहीं थी उसी दौरान बीस मेहमान आ गए, उस वक़्त वालिद साहब ने मुझे हुक्म दिया कि घर में जा कर खाना ले आओ तो मुझ में यह अर्ज़ करने की हिम्मत न हुई कि इस वक़्त खाने की कोई चीज़ मौजूद नहीं। मैं सिर्फ़ आपके हुक्म की पैरवी की ख़ातिर बावर्ची ख़ाने में गया तो वहाँ क़िस्म-क़िस्म के खाने मौजूद थे। चुनाँचे मैं यह खाना उठा कर ले आया और बावर्ची ख़ाने में कुछ नहीं छोड़ा। अभी सब लोग खाने से फ़ारिग़ ही हुए थे कि तीस मेहमान और आ गए, उन्हें देख कर वालिद साहब ने फिर खाना लाने का हुक्म दिया। पहले की तरह जब मैं बावर्ची ख़ाने में पहुंचा तो वहाँ खाना मौजूद था। उस वक़्त आपने दो ख़ादिमों पर इस अंदाज़ से नज़र डाली कि वह बेहोश हो कर गिर पड़े और आपने उन्हें लकड़ी की तरह उठवाकर बाहर करवा दिया। उनके घर वाले आकर उन्हें ले गए। फ़िर छः माह बाद वह दोनों तौबा करते हुए हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि वाक़ई हमारे दिल में यह वसवसा पैदा हुआ था कि यह सब कुछ जादूगरी है।

(क़लाइदुलजवाहिर स0: 376)

और हज़रत अल्लामा शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि रावी का बयान है कि हमारे साथियों में से एक शख़्स हज़रत माजिद कुर्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जो हज का इरादा रखता था, उसने शैख़ से अर्ज़ किया कि मैं ने तजरीद (अल्लाह भरोसे बिना सामान) और वहदत के क़दम पर हज का इरादा किया है यानी न मैं ने तोशा लिया है और न किसी शख़्स को अपने हमराह लिया है। तो हज़रत शैख़

माजिद ने एक छोटी कश्ती (डोंगा) दी और फ़रमाया अगर तू वुज़ू का इरादा करेगा तो इस में पानी पाएगा, अगर तुझे प्यास लगे गी तो इस में दूध पाएगा और अगर तुझे भूक मालूम होगी तो इस में सत्तू पाएगा।

उस शख़्स का हाल यह था कि हमदीन पहाड़ से ले कर मक्का मुअ़ज़्ज़मा तक के सफ़र में और जितना ज़माना कि वह अरब में रहा और हिजाज़ से इराक़ तक लौटने के वक़्त तक वह जब भी वुज़ू का इरादा करता तो उसी डोंगा के उमदा पानी से वुज़ू कर लेता और जब पानी पीने का इरादा करता तो उसी में कभी फ़ुरात से उमदा पानी पाता और ख़्वाहिश के मुताबिक़ उस में कभी दूध और शहद होता जो दुनिया के दूध और शहद से कहीं उमदा होता। और जब खाने का इरादा करता तो उस में शकर मिला हुआ बेहतरीन सत्तू पा लेता। (बहजतुलअसरार स0: 167)

हज़रत अल्लामा शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि और बयान फ़रमाते हैं कि आप के साहिबज़ादे का बयान है। एक दिन मुझ से मेरे वालिद ने फ़रमाया कि ऐ सुलैमान! फ़ुलाँ पहाड़ी के आख़िरी हिस्से की तरफ़ चले जाओ वहाँ पर तीन शख़्स हैं उन से मेरा सलाम कहो और यह कहो कि जो आप लोग ख़्वाहिश करें वही मिलेगा। मैं ने उनके पास आकर अपने वालिद का पैग़ाम पहुँचाया तो उन में से एक ने कहा मैं अनार चाहता हूँ दूसरे ने कहा सेब। और तीसरे ने कहा मैं अंगूर चाहता हूँ, मैं ने अपने वालिद की ख़िदमत में आकर हर एक की ख़्वाहिशों के बारे में बताया। तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया कि तुम फलाँ दरख़्त की तरफ़ चले जाओ और उस में से जो वह माँगते हैं तोड़ लो। मैं उस दरख़्त को पहचानता था कि बहुत दिनों से ख़ुश्क था और हम से थोड़ी ही दूर पर था मगर मैं ने उन का कलाम रद न किया और जब मैं उस दरख़्त की तरफ़ गया तो देखा कि वह सर

सब्ज़ और ख़ुशबूदार था कि कभी देखने में न आए थे, मैं उन सब को तोड़ कर वालिद के पास लाया उन्हों ने मुझ से फ़रमाया कि उन तीनों की तरफ़ ले जाओ। जब मैं उन लोगों की तरफ़ आया तो अनार वाले ने अनार और अंगूर वाले ने अंगूर रखवा लिया मगर सेब वाले ने यह कह कर वापस कर दिया कि यह सेब मैं तुम को देता हूँ फिर वह थोड़ी दूर चले और मैं भी उनके साथ था। वह हवा पर उड़ने लगे लेकिन सेब वाला एक बालिश्त भी ऊपर न चढ़ सका तो उस के साथी हवा से नीचे उतर आए और उस से कहने लगे कि ऐ शख़्स! यह बात इस लिए हुई कि तुम ने सेब के लेने से इन्कार किया। फिर वह नंगे सर हो कर मेरे वालिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने उस शख़्स से फ़रमाया।"ऐ मेरे बेटे! तुम को किस चीज़ ने मेरा तोहफ़ा लेने और अपने साथियों की तरह कुबूल करने से रोका?" तो वह कुछ जवाब देने की बजाए मेरे वालिद के क़दमों पर गिर कर उन्हें चूमने लगा। आपने फ़रमाया कोई हर्ज नहीं। फिर मुझ से फरमाया ऐ सुलैमान! वह सेब कहाँ है? मैं ने उसे पेश किया। आपने उस के टूकड़े किए। उन में से एक टुकड़ा आपने ख़ूद खाया और एक टुकड़ा मुझे खिलाया और उन में से हर एक को एक-एक टुकड़ा दिया। फिर उस शख़्स के कंधों में अपने हाथ से धक्का दिया तो वह भी अपने साथियों के हमराह तीर की तरह हवा में उड़ गया। मैं ने अपने वालिद से उन के बारे में पूछा तो फ़रमाया कि यह रिजालुल ग़ैब (रूहानी हज़रात) हैं जो चलते रहते हैं। (बहजतुलअसरार स0: 167)

हज़रत माजिद कुर्दी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने इन वाक़िआ़त से अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे कायनात में तसर्रुफ़ (दुनिया में अ़मल-दख़ल) का इख़्तियार अ़ता फ़रमाया है।

★★★

शैख़ मुहीयुद्दीन का अक़ीदा

(रज़ियल्लहु अन्हु, इन्तिक़ाल 638 हि0)

आप के (रूहानी सिलसिले) की निस्वत एक वास्ते से हुज़ूर सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रिज़यल्लाहु तआला अन्हु तक पहुंचती है। ढाई सौ से ज़्यादा आपकी किताबें हैं। हज़रत सय्यदना शैख़ श्हाबुद्दीन सुहरवर्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से आपके बारे में पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया "वह हक़ाइक़ (रूहानी इल्म) के समन्दर हैं।" (तर्जमा नफ़हातुलउन्स स0: 801)

हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि फ़ुतूहाते मक्किया में शैख़ अकबर बयान फ़रमाते हैं कि 536 हि0 का साल था, हमारी मजलिस में एक आलिम आया जो फ़लसफ़ियों के मसलक का पैरोकार था और नुबूव्वत को साबित जिस तरह मुसलमान करते हैं वह नहीं करता था। ख़्वारिके आदात (आदात के खिलाफ़ काम) और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के मुअ्जिज़ात का मुन्किर था। इत्तिफ़ाक़न वह जाड़े का मौसम था। और हमारी मजलिस में अंगीठी जल रही थी। आग को देख कर उस फलसफी ने कहा अवाम कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहिमुस्सलाम को आग में डाल दिया गया था मगर वह जलने से महफ़ूज़ रहे। लेकिन यह एक अमरे मुहाल (कठिन कार्य) है क्योंकि आग का काम तबई (स्वभाविक) तौर पर जलाना है। यानी उन चीज़ों को जलादे जिन में जलने की सलाहियत मौजूद हो। फिर बतौरे तावील (ग़लत ब्यानी) कहने लगा कि कुरआने पाक में जो आग का जिक्र है उस से मुराद नमरूद के आतिशे ग़ज़ब की आग है और हज़रत इब्राहीम अलैहिमुस्सलाम को आग में डालने

से वही गज़ब व गुस्से की आग मुराद है जो नमरूद ने उन पर ग़ज़ब व गुस्सा किया और उन के न जलने से मक़सूद यह है कि उसके ग़ज़ब का उन पर कुछ असर न हुआ क्योंकि इब्राहीम अलैहिमुस्सलाम दलील व हुज्जत से उस पर ग़ालिब आ गए थे।

जब फ़लसफ़ी यह तक़रीर करके ख़ामोश हुआ तो मज्लिस के बाज़ हाज़रीन ने ख़्याल कि मैं उन (शैख़ अकबर) से ज़रूर कुछ कहूंगा। चुनाँचे यह सुन कर मैं ने उस फलसफी से कहा कि तुम इस कुरआनी किस्से का इनकार करते हो। मैं तुम को दिखाता हूँ और इस से मेरा मक़सूद यह है कि मोअ्जिज़े का इन्कार खत्म करा दिया जाए न कि मैं अपनी बुजुर्गी दिखाऊँ। उसने कहा इसके खिलाफ हो नहीं सकता। यह सुन कर मैंने कहा उस अंगेठी में वही आग है जिस के बारे में तुम कहते हो कि यह कुदरती तौर पर जलाने वाली है? उसने कहा हाँ, यह वही आग है, बस मैंने उस अंगेठी को उठा कर उस के दामन में उलट दिया और एक अर्सा तक उसी तरह उसके दामन में रहने दी। और उस के दामन में उसको अपने हाथ से उलट पलट करता रहा मगर उस के कपड़े पर उस आग का बिलकुल असर नहीं हुआ। मैं ने फ़लसफ़ी से कहा अपना हाथ उसमें डालो। जब वह अपना हाथ उस आग के क़रीब ले गया तो उस का हाथ जलने लगा। तब मैं ने उस से कहा अब तो यह बात ज़ाहिर हो गई कि आग का जलाना या न जलाना खुदा-ए-तअ़ला के हुक्म से है, न यह कि उस की तबीअ़त का ख़ास्सा है। फ़लसफ़ी ने इस बात का इक़रार किया और ईमान ले आया। (तर्जमा नफ़हातुलउन्स स0: 810)

हज़रत शैख़ अकबर अ़लैहिर्रमतु वर्रिज़वान ने फ़ुतूहाते मक्किया में इस वाक़िये को बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा सारी दुनिया वालों के सामने ज़ाहिर कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला

ने मुझे तसर्रूफ़ (अ़मल-दख़ल) की वह कुदरत अ़ता फ़रमाई है कि आग भी हमारे क़ाबू में है।

हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि फ़ुतूहाते मक्किया में शैख़ इब्नुलअरबी ने यह भी फ़रमाया है कि मेरे एक मामू तिलमसान के बादशाह थे। उन का नाम यह्या था। उन के ज़माने में एक शैख़ अब्दुल्लाह तोन्सी बादिया नशीन (दुनिया से दूर) थे। लोगों से तअल्लुक़ ख़त्म करके जंगल में रहने लगे थे और अपना तमाम वक़्त इबादत में गुज़ारते थे। एक दिन यह्या बादशाह तिलमसान से अपने लश्कर के साथ बाहर निकले रास्ते में शैख़ अबू अब्दुल्लाह से मुलाक़ात हुई लश्करियों ने उनको बताया कि यह शैख़ अबू अब्दुल्लाह तोन्सी हैं उन्होंने अपना घोड़ा लौटाया और उन को सलाम किया। और शैख़ से कहा इन कपड़ों में कि जिन्हें मैं पहने हुए हूँ नमाज़ जाइज़ है या नहीं? (यह्या उस वक़्त लिबासे शाहाना पहने हुए थे) शैख़ यह सवाल सुन कर हंसने लगे, यह्या ने कहा यह हंसने का क्या मौक़ा है।

शैख़ अबू अब्दुल्लाह ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारी सादगी और बेअक़्ली पर हंस रहा हूँ। क्योंकि तुम्हारी हालत उस कुत्ते की तरह है कि पड़े मुर्दार से पेट भर कर खाया है। सर से पावँ तक नापाकी में ग़र्क़ है, लेकिन जब पेशाब करता है तो टांग उठा लेता है कि कहीं उस पर पेशाब के छींटे न पड़ जाएं। तुम्हारा पेट हराम से भरा हुआ है और लोगों की गर्दनों पर तुम्हारे बेशुमार ज़ुलम हैं। और अब तुम पूछते हो कि इन कपड़ों में नमाज़ जाइज़ है या नहीं?

यहया यह बात सुन कर रोने लगे, घोड़े से उतर आए और उसी वक़्त सलतनत छोड़ दी और शैख़ के ख़ादिमों में शामिल हो गए। जब यहया को उन के पास रहते हुए तीन दिन गुजर गए तो

शैख़ एक रस्सी लाए और फ़रमाया कि मेहमानी की मुद्दत पूरी हो चुकी उठो और लकड़ियां लाओ और बेचो। उन्होंने रस्सी ली और लकड़ियों का गट्ठर बांध लाए और बेचने लगे, उन की रिआ़या ने सलतनत व हुक्मरानी के बाद जब उनको इस हाल में देखा तो रोने लगी। यह लकड़ियों को बेचते थे और अपने खाने की क़ीमत निकाल कर बाक़ी सदक़ा कर देते थे वह हमेशा अपने ही शहर में रहे यहाँ तक की उसी हालत में उनका इन्तिक़ाल हो गया।

(तर्जमा नफ़हतुलउन्स स0: 812)

शैख़ अकबर हज़रत मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने इस वाक़िये को फ़ुतूहाते मक्किया में लिख कर अपना यह अक़ीदा बयान कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने अपने महबूब बन्दों की ज़बान में तसर्रूफ़ व इख़्तियार की वह ताक़त अ़ता फ़रमाई है कि वह बादशाह को लकड़हारा बना देते हैं।

और हज़रत अ़ल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ज़िक्र फ़रमाते हैं। अल्लामा सिराज बयान करते हुए कहते हैं कि हमें यह वाक़िआ़ शैख़ सालिह हैदर बिन अबुल हुसैन बिन हैदर जईरी बग़दादी ने बताया। उन्हें सय्यद ज़ैनुद्दीन हुसैनी बग़दादी ने और उन्हें सय्यद ज़ैनुद्दीन रशीद हलबी ने और उन्हें शैख़ इज़्ज़ुद्दीन दामग़ानी ख़ुरासानी ने बताया जो आलिमे बाअ़मल और बुज़ुर्ग थे। फ़रमाते हैं ख़ुरासान में एक शख़्स था जो हज़रत इब्ने अरबी (अलैहिर्रमतु वर्रिज़वान) की बुराई किया करता था। वह न सिर्फ़ आपकी बल्कि आप से तअल्लुक रखने वाले हर आदमी को भी ईज़ा (तकलीफ़) देता और इस मआ़मले में सारी हदें तोड़ देता लोगों ने हज़रत शैख़ के सामने उसकी शिकायतें रखीं। आख़िरकार कहने लगे हुज़ूर! अब तो सब्र भी नामुम्किन हो गया है। अब वह मरहला आ गया है कि उस की कज़ा व कद्र (मौत व तक़दीर)

का फ़रमान जारी हो। अलग़र्ज़ मसअला शैख़ के हवाले हो गया।

आपने एक आदमी से फ़रमाया कि ऐसा और ऐसा ख़न्जर मुझे ला दें हालांकि ऐसे ख़न्जर का उसे इल्म न था। (जब वह खन्जर लाया) तो आपने एक कागज़ लिया जो शक्ले इन्सानी के मुताविक़ कटा हुआ था। उस कागज़ के पुतले को ख़न्जर से ज़िवह कर दिया और फ़रमाया ऐ साथियो! मैं ने अभी-अभी उस खुरासानी को ज़िवह कर दिया जो हम पर ज्यादतियां किया करता था। और मैं ने उस के घर की छत के नीचे एक दीवार से भारी पुल नुमा छत उठा कर ख़न्जर उसके नीचे रख दिया है। वह वोझ वीस से कम आदमी अपनी जगह से नहीं उठा सकते हैं। और मैं ने ख़न्जर पर उस के ख़ून से लिख दिंया है उसे शैख़ मुहीयुद्दीन इब्ने अरवी ने ज़िवह किया है।

हाज़िरीन में जिन लोगों को शक था वह खुरासान चले गए वहाँ जा कर मालूम किया तो लोगों ने वताया कि वह आदमी फलाँ दिन फलाँ वक़्त ज़िवह हो गया। और वह बिलकुल वही वक़्त और वही दिन था जिस दिन हज़रत शैख़ ने उसे ज़िवह किया था। उन जाने वाले लोगों नें वहाँ सारा वाक़िआ वयान कर दिया तो वहुत से लोग जिन पर उस के क़त्ल की तुहमत लग रही थी, वच गए। और जव उस पुलनुमा छत को उठाया गया तो वहाँ हज़रत की वताई हुई तहरीर (लेख) के साथ ख़न्जर मौजूद था।

(जागिएकरागते औलिया स0: 546)

ऊपर ज़िक्र किए गए तरीक़े पर सैकड़ों किलोमीटर की दूरी से गुस्ताख़ खुरासानी को ज़िवह फ़रमा कर हज़रत शैख़ मुहीयुद्दीन इब्ने अरवी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने अपना यह अक़ीदा सावित कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने मुझे कायनाते आलम में तसर्रूफ की वह ताक़त अ़ता फ़रमाई है कि जिसे सुन

कर अक़्ल हैरान हो जाए।

और हज़रत अल्लामा निवहानी रहमुतल्लाहि तआ़ला अलैहि लिखते हैं कि हज़रत इमाम शेरानी अ़लैहिर्रमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे भाई शैख़ सालिह अलहाज अहमद हलवी ने वताया कि उन का घर हज़रत मुहीयुद्दीन इब्ने अरवी के मज़ारे अक़्दस के विलकुल क़रीव था और मज़ार शरीफ़ सामने नज़र आता था। इशा की नमाज़ के वाद एक शख़्स आग ले कर हुज़ूर के मज़ार के तावूत को जलाने के लिए निकला। अभी वह क़ब्र से आठ नौ मीटर दूर ही था कि ज़मीन में धंसने लगा यहाँ तक कि वह मेरी निगाहों के सामने ज़मीन में ग़ायव हो गया। रात जव वह अपने घर वालों को न मिला तो वह उसे तलाश करने लगे मैं ने उन्हें सारा वाक़िआ वताया तो वह लोग उस के धंसने की जगह पर आए और जव ज़मीन खोदी तो उस का सर ज़ाहिर हुआ मगर वह जितना खोदते जाते उतनाही वह नीचे धंसता जाता आखिर थक हार कर उन लोगों ने उस के ऊपर मिट्टी डाल दी।

(तर्जमा जामिए करामाते औलिया स0: 546)

इस वाक़िए से हज़रत शैख़ मुहीयुद्दीन इब्ने अरवी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने यह सावित कर दिया कि इन्तिक़ाल के वाद भी मेरा तसर्रूफ़ (इख़्तियार) जारी है।

★★★

अ़ल्लामा अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ का अक़ीदा
(रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

आप औलिया-ए-किराम के बारे में इरशाद फ़रमाते हैं "उन्हें सारे जहाने सिफ़ली और उलवी (ज़मीनी व आसमानी) में तसर्रूफ़ हासिल होता है यहाँ तक कि सत्तर (पर्दे) और उनके ऊपर भी। यही वह हज़रात हैं जिन्हें दुनिया, दुनिया वाले और उनके ख़्यालात में तसर्रूफ़ हासिल होता है और जो किसी के दिल में ख़्याल गुजरता है तो वह इख़्तियार वालों की इजाज़त ही से गुजरता है" (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम अजमईन।)

(अबरेज़ शरीफ़ स0: 328)

और अ़ल्लामा अहमद सलजमासी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने शैख़ ग़ौसे ज़माना हज़रत सय्यदी अब्दुलअज़ीज़ दब्बाग़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से पूछा "कि उलमाए ज़ाहिर मुहद्दिसीन वग़ैरा उलूमे ख़मसा 5 के बारे में आपस में इख़्तिलाफ़ रखते हैं। आलिमों का एक गिरोह कहता है कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को उन का इल्म था और दूसरा गिरोह इनकार करता है। उस में हक़ क्या है? फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से यह ग़ैब कैसे पोशीदा रह सकते हैं। जब कि आपकी उम्मते शरीफ़ा में जो अहले तसर्रूफ़ व इख़्तियार हैं। (कि दुनिया में हुकूमत करते हैं) वह तसर्रूफ कर ही नहीं सकते जब तक उन पांच ग़ैबों को न जान लें।" (अबरेज़ शरीफ़ स0: 283)

ऊपर ज़िक्र किए गए ह़वाले में ग़ौसे ज़माना हज़रत अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने अपना यह अक़ीदा

साफ़ तौर पर बयान फ़रमा दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने औलिया-ए-किराम को सिफ़ली और अलवी (दुनियावी-रूहानी) सारे जहान में तसर्रूफ़ का इख़्तियार बख़्शा है, यहाँ तक कि इन्सानों के ख़्यालात में भी उन को तसर्रूफ़ (अमल-दख़ल) हासिल होता है। और आख़री इरशाद से आपका यह अक़ीदा भी साबित हुआ कि अल्लाह के महबूब बन्दे जो संसार में तसर्रूफ़ करते हैं उनको गुयूबे ख़मसा (पांच चीज़ों का इल्म) का भी इल्म होता है। अगर ऐसा न हो तो वह तसर्रूफ़ कर ही नहीं सकते।

और हज़रत अल्लामा निबहानी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के शागिर्द अ़ल्लामा इब्ने मुबारक रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने लिखा कि फ़क़ीह सय्यद अ़ली बिन अब्दुल्लाह सब्बाग़ी ने बयान फ़रमाया कि मुझे पहली मरतबा क़ुतुबे वक़्त हज़रत अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ अलैहिर्रहमतु वरिज़वान की ज़ियारत माहे रमज़ान शरीफ़ में हासिल हुई, अलविदाई मुसाफहा के मौक़े पर हज़रत ने फ़रमाय कि तुम एक दुंबा लाना। ईद उसी से होगी। मैं ने कहा बहुत अच्छा और फिर रूख़्सत हो गया। जब ईद क़रीब आई तो मैं ने दो दुंबे ख़रीदे। जिस दिन मैं ने दुंबों को ख़रीदा था उसी दिन मेरा एक दोस्त हज़रत की ख़िदमत में मौजूद था। मेरे दोस्त का मकान मेरे घर से दो दिन की दूरी पर था। और वहाँ से दो दिन की मुसाफत पर हज़रत की ख़ानक़ाह शरीफ़ थी। हज़रत ने मेरे दोस्त से फ़रमाया कि अ़ली बिन अब्दुल्लाह तुम्हारे पास दो दुंबे ले कर आयेंगे। उस में से एक तुम ले लेना और उस से ईद मनाना और दूसरा दुंबा मेरे पास लाना।

जब मैं उस दोस्त के पास पहुंचा तो उसने हज़रत की बात मुझ से ब्यान की। चूँकि हज़रत की बारगाह में उस की रसाई और

हज़रत से उसका कुर्बे ख़ास (निकटता) मुझे मालूम था इस लिए मुझे उसकी वात मानने में कोई शक न हुआ। मैंने उससे कहा कि दोनों में से जो चाहो लेंलो। एक दुंवा उसके हवाले कर दिया और दूसरा दुंवा हज़रत की ख़िदमत में पेश करने के लिए हम ले कर चल पड़े। चूँकि हम सवारी पर थे इस लिए यह फ़िक्र दामनगीर हुई कि किस तरह दुंवा हज़रत की बारगाह में पहुंचाया जाए। हमराहियों में पैदल चलने वाला सिर्फ़ मेरा एक सौतेला भाई था। दुंवा उसी की तहवील (क़ब्ज़ा) में करके हम आगे बढ़ गए और हज़रत की बारगाह में हाज़िर हो गए। एक दिन वाद दुंवा ले कर मेरा सौतेला भाई पहुंच गया। जव हज़रत ने उसे देखा तो फ़रमाया। "तू हमारे पास दुंवा लाया और हमने तुझे फ़रज़न्द अता किया।" हज़रत सय्यदी अली विन अब्दुल्लाह फरमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया हुज़ूर! उसे फरज़न्द की ज़रूरत भी है।

हज़रत अ़ली विन अब्दुल्लाह कहते हैं कि मेरे भाई को औलाद की वड़ी तमन्ना थी, क्योंकि उस की छोटी वीवी जो पन्द्रह वरसों से उस के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रही थी उस से लम्बे अर्से में क़ोई औलाद नहीं हुई, यहाँ तक कि वह बच्चों से मायूस हो चुकी थी और अपने शौहर को वे औलाद कहने लगी थी।

फिर दुंवा एक जगह वांध दिया गया और हज़रत सय्यदी अब्दुलअज़ीज़ दब्बाग़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि हम लोगों को अपने मख़सूस कमरे में ले गए। रात का वक़्त था। चिराग़ की रोशनी में हज़रत ने जब मेरे भाई को देखा तो फ़रमाया। "मेरे क़रीब आओ।" भाई हज़रत के क़रीब हो गया। आपने उसकी पेशानी को ग़ौर से देख कर फ़रमाय "तेरे पास मोटा ताज़ा फ़रज़न्द है।" और इस वात को तीन बार फ़रमाया कुछ वक़्त गुज़रने के वाद फिर हज़रत ने मेरे भाई को मुख़ातव (संवोधित)

किया और फ़रमाया कि पैदा होने वाले लड़के का नाम क्या रखेगा? भाई ने अर्ज़ किया हुज़ूर जो चाहें नाम रखदें। हज़रत ने थोड़ी देर की ख़ामोशी के वाद फ़रमाया उसका नाम "रिहाल" (कूच करने वाला) रखना।

सय्यदी अ़ली विन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि "रिहाल" नाम हमारे लिए विलकुल ग़ैर मशहूर और अजनबी था। वाप दादों में किसी का नाम रिहाल नहीं था। हाज़िरीन में से कुछ लोगों ने अर्ज़ किया हुज़ूर! ऐसा नाम क्यों तजवीज़ (मुक़र्रर) फ़रमा रहे हैं जो उनके ख़ानदान वालों के लिए ग़ैर मारूफ़ है। हज़रत ने फ़रमाया कि मेरी समझ में यही नाम आ रहा है।

हज़रत सय्यदी अ़ली विन अब्दुल्लाह सव्वाग़ी फ़रमाते हैं कि जव हम अपने घर वापस आए तो देखा कि भाई कि वीवी को हमल (गर्भ) के आसार ज़ाहिर हैं हालाँकि उस से पहले पूरे ख़ानदान में किसी को उसके गर्भवती होने का इल्म न था। जव लड़के की पैदाइश हुई तो हज़रत के इरशाद के मुताविक़ घर वालों ने उसका नाम "रिहाल" रखा। लोगों को रिहाल नाम सुन कर वड़ी हैरत हुई। वजह दर्याफ़्त करते। मैं कहता कि हज़रत सय्यदी अब्दुल अज़ीज़ ने इसका नाम रिहाल सिर्फ़ इस लिए रखा है कि यह वच्चा ज़्यादा दिनों तक ज़िन्दा नहीं रहेगा। वल्कि जल्द ही दुनिया से कूच कर जाएगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ और तक़रीवन तीन साल की मुख़्तसर सी ज़िन्दगी पाकर लड़का मर गया।

हज़रत सय्यदी अ़ली विन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि वच्चे के इन्तिक़ाल कर जाने के वाद सय्यदी शैख़ अब्दुलअज़ीज़ अलैहिर्रहमतु वरिजवान ने मेरे भाई को मुख़ातव करके फ़रमाया। "पहले सफ़र में हम ने तुम को रिहाल दिया था और इस सफ़र में तुम को ऐसा लड़का देंगे जो तुम्हारे पास रहेगा और तुम्हे रन्जो

ग़म (तकलीफ़) देकर कूच नहीं करेगा।"

(जामिए करामाते औलिया जि0: 2 अरबी स0: 182.183)

ग़ौसे ज़माना हज़रत सय्यद अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ने इस वाक़ियें में दुंवा पहुंचाने पर यह फ़रमा कर कि हम ने तुझे फरज़न्द अ़ता किया। और फिर दूसरी मुलाक़ात पर यह फ़रमा कर कि पहले सफ़र में हम ने तुम को रिहाल दिया था और इस सफ़र में हम तुम को ऐसा लड़का देंगे जो तुम्हारे पास रहेगा अपना यह अक़ीदा साफ़ तौर पर साबित कर दिया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे लड़का अता करने की ताक़त बख़्शी है। अगर हज़रत का ऐसा अक़ीदा न होता तो आप इस तरह की बात हर्गिज़ न फ़रमाते।

और हज़रत अ़ल्लामा इब्ने मुबारक व हज़रत अ़ल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिमा ने इस वाक़ियें को अपनी किताबों में बिला रद्दो बदल लिखा तो मालूम हुआ कि उन हज़रात का भी यही अक़ीदा था कि खुदा-ए-तआ़ला अपने महबूब बन्दों को लड़का देने की ताक़त अ़ता कर देता है। और अलहम्दु लिल्लाहि हम अहले सुन्नत व जमाअ़त का भी यही अक़ीदा है।

★★★

ख़्वाजा उसमान हारूनी का अक़ीदा
(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 617 हि0)

आप सुलतानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान के पीर व मुर्शिद हैं। शरीअ़त व तरीक़त के इल्मों में अपने वक्त के बहुत बड़े आ़लिम और औलिया और अबदाल सादिर थे। हारून एक मौज़ा (ग्राम) है जो

नीशापुर के इलाक़े में है, चूँकि आप वहाँ के रहने वाले थे इस लिए उसी निस्बत से आप हारूनी मशहूर हुए। आप का मज़ारे मुबारक मक्का शरीफ़ में मस्जिद जिन्न के क़रीब था जिस को नज्दी हुकुमत ने तोड़ कर रोड में ले लिया।

हज़रत ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किर्मानी निज़ामी फ़रमाते हैं कि शैख़ुल इस्लाम हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते थे कि मैं एक ज़माने तक मुसलसल हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी के साथ सफ़र में था। एक बार हम दरिया-ए-दजला के किनारे पहुंचे। इत्तिफ़ाक़ से वहाँ कोई कश्ती नहीं थी। ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने मुझ से फ़रमाया कि आँखें बन्द करो। मैं ने आँखें बन्द कर लीं। जब मैं ने आँख खोली तो हज़रत ख़्वाजा उसमान को और ख़ुद को दरिया-ए-दजला के दूसरे किनारे पर पाया।

(सियरूल औलिया स0: 107)

और हज़रत ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किर्मानी फ़रमाते हैं कि एक दिन एक बूढ़ा आप की खिदमत में निहायत परेशान हाज़िर हुआ। हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने उस से पूछा क्या हाल है, कि तुम इस क़द्र परेशान हो? उस बूढ़े ने कहा कि चालीस साल से मेरा एक बेटा ग़ायब है। मुझे उसकी ख़बर नहीं कि वह ज़िन्दा है या मर गया। मैं आपकी ख़िदमत में आया हूँ कि आप से फ़ातिहा की दरख़्वास्त करूँ कि मेरा बेटा मिल जाए। हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि मुराक़िब हुए (आँख बन्द करके गर्दन झुकाकर ख़ुदा से लौ लगाना) जब देर हो गई तो मुराक़बे से सर उठा कर हाज़िरीने मज्लिस से फ़रमाया कि आओ हम सब मिल कर इस नीयत से फ़ातिहा पढ़ें कि इस बूढ़े का बेटा इसको मिल जाए। सब लोग जब

फ़ातिहा पढ़ चुके तो आपने उस बूढ़े से फ़रमाया जाओ तुम्हारा बेटा तुम्हारे घर आ चुका होगा।

बूढ़ा अपने घर आया तो घर के हर आने जाने वाले ने उसे उसके बेटे के आने की मुबारकबाद दी कि मुबारक हो तुम्हारा बेटा आ गया। बूढ़े की अपने बेटे से मुलाक़ात हुई फिर बाप और बेटे दोनों ने हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हो कर क़दमबोसी की सआदत हासिल की। ख़्वाजा ने उसके बेटे से पूछा कि अब तक तुम कहां थे? उस ने जवाब दिया कि मैं दरिया-ए-दीवान के जज़ीरों (टापू) के एक जज़ीरे में क़ैद था और मुझे ज़न्जीरें डाली गईं थीं। मैं आज भी उसी मक़ाम पर था कि एक दुर्वेश ने जो बिलकुल आपकी हमशक्ल था, ज़न्जीर पर हाथ डाला। ज़ंजीर फ़ौरन टूट गई फिर उस दुर्वेश ने मुझे अपने पास खड़ा कर के कहा कि मेरे क़दम ब-क़दम आओ। चुनाँचे मैं ने ऐसा ही किया (चन्द क़दम चलने के बाद) उस दुर्वेश ने मुझ से फ़रमाया कि आँखें बन्द कर लो मैं ने आँखें बन्द करलीं। जब मैं ने आँखें खोलीं तो अपने आपको घर के दरवाज़े पर पाया। (तर्जमा सियरुल औलिया पे0: 108)

और हज़रत मीर अब्दुलवाहिद बिलगिरामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 1017 हि0) फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि आधी रात के वक़्त घर में तशरीफ़ फ़रमा थे कि उनासी (79) काफ़िरों ने मशवरा किया कि आधी रात को ख़्वाजा उसमान हारूनी के पास चलें और कहें कि हम भूखे हैं। हर एक को नए तबाक़ में अलग-अलग खाना दीजिए और हर एक जुदागाना क़िस्म का। इस बाहमी मशवरा के बाद जब वह आप की ख़िदमत में आए तो ख़्वाजा ने फ़रमाया कि ऐ आदम व हव्वा के बेटो! बैठ जाओ

और हांथ धोलो और ख़ुद "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ कर आसमान की जानिब हाथ उठाए। और हर जिन्स के मुख़्तलिफ़ खानों के भरे हुए तबाक़ जैसा कि वह लोग सोच कर आए थे ग़ैब से लेते और उनके सामने रख देते। वह काफ़िर भी मुसलसल नज़रें जमाए देखते रहे कि तबाक़ ग़ैब से आरहे हैं, ख़ैर जब वह खाने से फ़ारिग़ हुए तो आपने फ़रमाया ख़ुदा-ए-तआ़ला की नेअ़मत खाओ और उस पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा कि अगर हम तुम्हारे ख़ुदा व रसूल पर ईमान ले आएं और मुसलमान हो जाएं तो क्या ख़ुदा-ए-तआ़ला हमें भी तमु जैसा कर देगा। फ़रमाया कि "मैं ग़रीब किस गिन्ती में हूँ। ख़ुदा-ए-तआ़ला तो इस पर क़ादिर है कि मुझ से हज़ार दर्जा तुम्हें बुलन्द फ़रमाए।" वह सब ईमान ले आए। मुसलमान हो गए। और हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की मुबारक सुहबत में रहे। उन में हर एक अल्लाह का वली हो गया कि उनकी नज़रों में अर्श से ले कर तहतुस्सरा (पाताल) तक सब ज़ाहिर हो गया।

(सबए सनाबिल शरीफ़ पृ0: 431)

हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ने उन वाक़िआत से अपना यह अक़ीदा खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने हमें दुनिया में तसर्रुफ़ (अमल-दख़ल) का इख़्तियार बख़्शा है।

★★★

ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल: 633 हि0)

आप एशिया-ए-हिन्द व पाकिस्तान में बड़े-बड़े औलिया-ए-किराम के सरदार और चिश्तिया सिलसिले के बानी (संस्थापक) हैं, आप हनफ़ी मज़हब के थे खुरासान में 14 रजब 527 हि0 में पैदा हुए। आपके अब्बाजान का नाम ग़्यासुद्दीन है जो हुसैनी सय्यद थे। आपकी वालिदा मुहतरमा का नाम ''माहे नूर'' है जो हसनी सय्यदा थीं। (रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहिमा) 9 साल की उम्र में आपने कुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया। और 14 साल की उम्र में तफ़सीरो हदीस और फ़िक़ह की तालीम से फ़ारिग़ हो गए। और बाज़ रवायतों में है कि 20 साल की उम्र तक तालीम हासिल की।

हुकूमत के इन्क़िलाब की वजह से आपके वालिद अहलो अयाल के साथ खुरासान से इराक़ चले आए थे वहीं उनका इन्तिक़ाल हुआ जब कि हज़रत ख़्वाजा की उम्र पन्द्रह साल थी। वालिदे गिरामी (पिता श्री) के इन्तिक़ाल फ़रमाने के बाद आप अपनी वालिदा मुहतरमा (माता) के साथ खुरासान गए। जायदाद में आपको एक बाग़ और पनचक्की मिली जिस की आमदनी से आपके ख़र्च चलते थे।

एक दिन आप अपने बाग़ में थे कि अचानक हज़रत ख़्वाजा इब्राहीम मजज़ूब वहाँ गए। आपने बड़े अदब से अंगूर का खोशा उनकी ख़िदमत में पेश किया। मजज़ूब ने बड़ी रग़बत से उनको खाया फिर अपनी ज़ंबील (झोली) से खली का टुकड़ा निकाला और दाँत से काट कर आपको खाने के लिए दिया। उस के खाते

ही आपका दिल दुनिया से सर्द हो गया। बाग़ व पनचक्की बेच कर फ़ुक़रा में तक़सीम (बाँट) कर दिया और सफ़र के लिए निकल पड़े, बुख़ारा वग़ैरह होते हुए बग़दाद शरीफ़ पहुंचे, वहाँ सुलतानुलमुर्शिदीन हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान से शर्फे बैअत (मुरीद होना) हासिल किया। और बीस साल तक सफ़र व हज़र में अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में रहे और उनके बर्तन व बिस्तर ले कर साथ में चलते रहे उसके बाद हज़रत ने आपको नेअ़मते ख़िलाफ़त (जानशीनी) से सरफ़राज़ फ़रमाया।

7 मुहर्रम 561 हि0 में आप अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ लाए और 6 रजब 633 हि0 106 साल की उम्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया। मशहूर है कि हज़रत की मौत के बाद आपकी पेशानी पर यह नक़्श ज़ाहिर हुआ। ''अल्लाह का हबीब अल्लाह की मुहब्बत में दुनिया से रूख़्सत हुआ।''

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि आप पिथौरा राय के दौरे हुकुमत में अजमेर तशरीफ़ लाए और इबादते इलाही में मशग़ूल हो गए पिथौरा राय उस ज़मानें में अजमेर में ही नीवासी था। एक रोज़ उसने आपके एक मुसलमान अक़ीदतमन्द को किसी वजह से सताया। वह बेचारा आपके पास फ़रियाद ले कर पहुंचा। आपने उसकी सिफारिश में पिथौरा राय के पास एक पैग़ाम (क़ासिद) भेजा लेकिन उसने आपकी सिफ़ारिश क़ुबूल न की और कहने लगा कि यह शख़्स यहाँ आकर बैठ गया है और ग़ैब की बातें करता है।

जब ख़्वाजा अजमेरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि को यह बात मालूम हुई तो फ़रमाया कि हम ने पिथौरा को ज़िन्दा गिरफ़्तार करके हवाले कर दिया। उसी ज़माने में सुलतान मुइज़्ज़ुद्दीन उर्फ़

शहाबुद्दीन ग़ौरी की फ़ौज ग़ज़नी से पहुंची। पिथौरा लश्करे ग़ौरी से मुक़ाबिले के लिए निकला और सुलतान शहाबुद्दीन के हाथों गिरफ़्तार हो गया। (अखबारूलअख़्यार उर्दू पे0: 56)

और अहले तारीख़ ने लिखा है कि हज़रत ख़्वाजा अलैहिर्रहमतु वरिज़वान जब अजमेर शरीफ़ में रौनक़े अफरोज़ (विराजमान) हुए और एक दरख़्त के नीचे आपने आराम फ़रमाना चाहा तो एक शख़्स ने आवाज़ दी कि यहाँ न ठहरो क्योंकि यहाँ राजा के ऊँट बांधे जाते हैं। वहाँ से उठ कर हज़रत ख़्वाजा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि एक तालाब के किनारे जा कर ठहर गए। ऊँटवानों ने रात हस्बे क़ायदा उसी दरख़्त के नीचे ऊँट बांध दिए और जब सुबह हुई और ऊँटों को उठाने लगे तो ऊँट ज़मीन से न उठ सके और उनके सीने ज़मीन से चिपके रह गए। यह माजरा देख कर ऊँटवान हैरान रह गए और ग़ौर करने से इस मुसीबत के आने की वजह उनके ज़ेहन में यही आई कि कल जो हमने एक फ़क़ीर को सताया और यहाँ न बैठने दिया उसी की बद्दुआ (शराप) लगी है।

आख़िरकार हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अलैहिर्रहमतु वरिज़वान की ख़िदमत में हाज़िर हुए और माफ़ी चाही। आपने फ़रमाया जाओ तुम्हारे ऊँट खड़े हो जाएंगे, चुनाँचे वह लोग जब वापस हुए और ऊँटों को उठाया तो सारे के सारे ऊँट खड़े हो गए। जब यह वाक़िआ शहर में मशहूर हो गया तो शहर के हिन्दू बाशिन्दों ने राजा से कहा कि प्रदेसी ग़ैर मज़हब का आदमी हमारे मन्दिरों के क़रीब ठहरा हुआ है जो तालाब के किनारे पर है यहाँ उस का ठहरना मुनासिब नहीं है। यह सुन कर राजा ने हुक्म दिया उस शख़्स को वहाँ से उठा दो और हमारी हुकूमत से निकाल दो।

चुनाँचे बहुत बड़ा मजमा ख़्वाजा अजमेरी के पास पहुंचा

और आपको तकलीफ़ पहुंचाने का इरादा कर ही रहे थे कि ख़्वाजा अजमेरी ने एक मुट्ठी ख़ाक ज़मीन से उठाई और उस पर आयतुलकुर्सी पढ़ कर दुश्मनों के हुजूम की तरफ़ फेंक दी और जिस पर भी उस मिट्टी के कुछ ज़र्रे गिरे, उस वक़्त उस का जिस्म ख़ुश्क हो कर बेहिस व हरकत हो गया, बाक़ी लोग भाग कर शहर में आए।

ख़्वाजा के इन कमालात को देख कर अजमेर के लोगों ने समझा कि यह कोई बहुत बड़ा जादूगर है। उस का मुक़ाबला हर शख़्स के बस का नहीं है। कोई बड़ा ही जादूगर उस से जीत सकता है। चुनाँच उन्हों ने हिन्दुस्तान के मशहूर जोगी जैपाल को ख़्वाजा अजमेरी के मुक़ाबले के लिए बुलाया। जैपाल जोगी जो हिन्दुस्तान में अपना जवाब न रखता था अपने डेढ़ हज़ार चेलों के साथ अजमेर पहुंचा और उस तालाब की तरफ बढ़ा जहाँ हज़रत ख़्वाजा अलैहिर्रहमतु वरिज़वान तशरीफ़ फ़रमा थे। जब ख़्वाजा अजमेरी को उसके आने की ख़बर हुई तो आपने वुज़ू फ़रमाया और अपने असाए मुबारक (लाठी) से एक हिसार (घेरा) खींच दिया और अपने साथियों के हमराह उसी हिसार (घेरा) में तशरीफ़ फ़रमा रहे। हिसार खींच कर फ़रमाया कि इन्शाअल्लाहु तआला दुश्मन इसके अंदर न आसकेंगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ और जैपाल के साथियों में से जिस का भी पावँ उसके अंदर पड़ा बेहोश हो कर गिर गया। (बरकातुस्सालिहीन हिस्सा: 2 स0: 67)

और रवायत किया गया है जैपाल जोगी को बुलाने के साथ शहर वालों ने आपको सताने की एक तरकीब की और वह यह कि जिस तालाब के पास हज़रत ख़्वाजा अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ठहरे थे उस पर पहरा लगा दिया, ताकि हज़रत ख़्वाजा अजमेरी के साथी उस में से पानी न ले सकें। जब आपको उनकी इस

हरकत का पता चला तो आपने एक मुरीद से फ़रमाया कि तुम किसी तरीक़े से उस तालाब से एक प्याला भर लो। चुनाँचे मुरीद ने हुक्म के मुताबिक़ उस तालाब से एक प्याला भर लिया। प्याले के भरते ही तालाब का तमाम पानी ख़ुश्क हो गया। और ऐसा ख़ुश्क हुआ कि गोया उसमें कभी पानी मौजूद ही न था। ख़्वाजा अजमेरी और उनके साथी उसी एक प्याले पानी को प्रयोग (इस्तेमाल) करते रहे। और जिस क़द्र उस में ख़र्च करते रहे उसी क़द्र उस में पानी बढ़ जाता था।

जब शहरवालों को तालाब का पानी ख़ुश्क हो जाने से तकलीफ़ पहुंची तो जैपाल जोगी ने हिसार (घेरे) के क़रीब आवाज़ दे कर ख़्वाजा अजमेरी से कहा कि लोग प्यास से मरे जाते हैं, फ़क़ीर का काम मख़लूक़ को आराम पहुंचाना है। जब आप अपने को फ़क़ीर कहते हैं तो मख़लूक़ को सताना आप की शान के ख़िलाफ़ है। फ़क़ीर को चाहिए कि मख़लूक़ को नफ़ा पहुंचाए।

जैपाल की बात सुन कर आपने पानी से भरा हुआ वह प्याला उसी तालाब में डलवादिया। जिसकी वजह से यकायक तालाब पानी से भर कर लहरें मारने लगा।

(बरकातुस्सालिहीन हिस्साः 2 स0: 68)

और रवायत किया गया है कि जादूगरों ने जब अपना जादू शरू किया तो हज़रत ख़्वाजा अजमेरी का कुछ बिगाड़ न सके। जैपाल और उसके चेलों के जादू के असर से पहाड़ की तरफ़ से हज़ारों काले सांप निकल निकल कर हज़रत ख़्वाजा अजमेरी की तरफ़ बढ़े मगर जो सांप हिसार (घेरे की लकीर) के क़रीब आया लकीर पर सर रख कर रह गया। जब यह अमल कारगर न हुआ तो जादूगरों ने दूसरा अमल किया जिसके सबब आसमान से आग बरसनी शुरू हुई यहाँ तक कि आग के ढ़ेर लग गए और

हज़ारों दरख़्त जल कर राख हो गए मगर अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से हज़रत ख़्वाजा अजमेरी के हिसार में कुछ असर न पहुंचा।

अब जैपाल हिरन की खाल पर बैठ कर आसमान की तरफ उड़ा यहाँ तक कि नज़रों से गायब हो गया। हज़रत ने अपनी खड़ाउं हवा में फेंक दी वह आसमान में गई और जैपाल जोगी के सर पर पड़ने लगी यहाँ तक कि उसे मार-मार कर ज़मीन पर नीचे ले आई। जैपाल अपने हाल पर रोने लगा फिर ख़्वाजा अजमेरी के क़दमों पर गिर पड़ा और सच्चे दिल से मुसलमान हो गया। (बरकातुस्सालिहीन हिस्साः 2 स0: 69)

हज़रत ख़्वाजा अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह फ़रमाया कि हमने पिथौरा को ज़िन्दा गिरफ़्तार करके हवाले कर दिया। और ऊँटों के पेट ज़मीन से चिपक गए फिर आपके हुक्म देने पर ही वह खड़े हुए और आपके फेंके हुए मिट्टी के ज़र्रों से दुश्मनों के जिस्म बेहिस व हरकत हो गए। और पूरे तालाब का पानी एक प्याले में ले लिया। और अपनी खड़ाउं बग़ैर किसी मशीन के हवा में उड़ा दी जो जैपाल को मार कर नीचे ले आई। इन सारे वाक़िआत से हज़रत ख़्वाजा अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने मुझे कायनात में तसर्रुफ़ की बे-पनाह ताक़त अ़ता फ़रमाई है।

नोटः- हज़रत ख़्वाजा अजमेरी के ऊपर ज़िक्र किए गए वाक़िआत बड़ी कोशिश के बावजूद अहम किताबों में नहीं मिल सके इस लिए मजबूरंन मामूली किताब के हवाले से दर्ज किए गए हैं।

★★★

ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्दी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ालः 791 हि0)

आप खुद बयान फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन मुहम्मद ज़ाहिद को अपने हमराह ले कर जंगल की तरफ निकल गया मुहम्मद ज़ाहिद मेरा बड़ा पक्का और सच्चा मुरीद था। हम लोग मारिफ़त (रूहानियत) के मौज़ू (विषाय) पर गुफ़्तगू करने लगे। बात चलते-चलते इस नुक़्ते (बिन्दु) पर आ पहुंची कि उबूदियत क्या होती है? मैं ने अपने मुरीदे सादिक़ से कहा उबूदियत की इन्तिहा यह है कि जब उबूदियत का ताज पहनने वाला किसी से कह देता है कि मर जा, तो फ़ौरन मर जाता है। फिर हुआ यूँ कि मुहम्मद ज़ाहिद से चूँकि यह बात कही थी कि मर जा। लिहाज़ा वह उसी वक़्त मर गया। चाश्त (नाशता का समय) से ले कर दो पहर तक पड़ा रहा। मौसम गर्म था, मुझे बड़ा दुख हुआ और हैरानी की इन्तिहा न रही। वहाँ उस के करीब ही एक साया दार दरख़्त के नीचे आलमे हैरानी में डूबा हुआ आ कर बैठ गया।

जब दोबारा उसके पास आया तो देखा सख़्त गर्मी की वजह से उसके जिस्म में कुछ तबदीली पैदा हो चुकी है। मुझे बहुत दुख हुआ। उस वक़्त मेरे दिल में इलक़ा (कुदरती इल्म) हुआ कि उसे कह दें ऐ मुहम्मद! अब ज़िन्दा होजा। मैं ने यह बात तीन बार कही तो उसके बदन में ज़िन्दगी आहिस्ता-आहिस्ता रेंगने लगी और मैं यह मन्ज़र देख रहा था, यहाँ तक कि वह बिलकुल अपने पहले हाल पर आ गया। जब मैं जंगल से वापस आया तो हज़रत सय्यद कलाल रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि से सारा वाक़िआ बयान किया। जब मैं ने कहा कि वह मर गया और मैं हैरत ज़दह हो

गया तो हज़रत ने मुझ से फरमाया मेरे बेटे! तुम ने यह क्यों नहीं कह दिया कि जिन्दा हो जा? मैं ने अर्ज़ किया हुज़ूर! जब मुझे यह कहने का इलहाम (ख़ुदाई इल्म) हुआ तो मैं ने कह दिया और वह फिर ज़िन्दा हो गया। (जामिएकरामाते औलिया उर्दू स0: 629)

अ़ल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि आपके एक मुरीद बयान करते हैं कि हज़रत शैख़ नक़्शबन्दी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि हमारे ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ लाए तो मैं बहुत शर्मिन्दा हुआ कि मेरे पास आटा नहीं था। मैं किसी तरह इन्तिज़ाम करके आटे का एक थैला ले आया तो मुझ से फ़रमाया उस में से आटा निकाल कर गूंधते रहो। और किसी को उसकी कमी-बेशी की ख़बर न दो। फिर आप दस महीने तक हमारे यहाँ ठहरे रहे और दोस्त व मुरीद आपकी ज़ियारत के लिए मेरे घर मुसलसल आते रहे। और हम उसी थैले से आटा ले कर उन्हें रोटी खिलाते रहे मगर वह बदस्तूर भरा का भरा रहा। फिर मैं ने यह राज़ हज़रत के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए अपने घर वालों को बता दिया तो वह बरकत जाती रही और थोड़े ही दिनों में थैले का सारा आटा ख़त्म हो गया।

(जामिएकरामाते औलिया स0: 640)

फिर फ़रमाते हैं शैख़ अलाउद्दीन रहमतुल्लाहे तआ़ला अलैहि का बयान है कि हज़रत सय्यदेना बहाउद्दीन नक़्शबन्दी रजियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक बार ख़्वारज़म के सफ़र पर निकले तो साथ में शैख़ शादी भी थे जब दरिया-ए-हराम पर पहुंचे तो आप ने शैख़ शादी को हुक्म दिया कि वह पानी पर चलें, शैख़ शादी डर गए। आपने कई बार हुक्म दिया मगर वह तामील (अमल) न कर सके। आपने उनके ऊपर एक निगाह डाली जिस से वह कुछ देर के लिए बेखुद हो गए। फिर जब होश में आए तो अपना क़दम पानी पर

रख दिया और उस पर चलने लगे। जब दोनों दरिया को पार कर गए तो हज़रत ने फ़रमाया देखिए आपके मोज़े का कोई हिस्सा तर हुआ है? शैख़ शादी ने देखा तो कुदरते खुदावन्दी से उस में ज़रा भी नमी नहीं थी। (जामिएकरामाते औलिया स0: 641)

और फ़रमाते हैं। आपके एक मुरीद का बयान है कि मेरी मुहब्वत का सबब हज़रत से यह हुआ कि मैं एक दिन बुख़ारा के एक बाज़ार में अपनी दुकान पर बैठा था कि आप वहाँ तशरीफ़ लाए और दुकान पर बैठ गए। हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के कुछ मनाक़िब (कमालात) बयान करते हुए फ़रमाया कि बायज़ीद बुस्तामी खुद अपनी एक मन्क़बत यूँ बयान करते हैं कि अगर मेरे कपड़े का किनारा किसी को लग जाता है तो वह मेरा मुहिब (चाहने वाला) और दिलदादा बन जाता है और मेरे पीछे-पीछे चलने लग जाता है। मैं (यानी हज़रत नक़्शबन्दी) कहता हूँ कि अगर मैं अपनी आस्तीन हिलादूँ तो बुख़ारा के रहने वाले बिला फ़र्क़ छोटे-बड़े सब को अपना शैदा बना लूँ। वह घर बार और दुकानें छोड़ कर मेरे पीछे चलने लगें। आपने अपना मुबारक हाथ अपनी आस्तीन पर रखा और इस हालत में मेरी निगाह आप की आस्तीन पर पड़ गई, फिर क्या था हाल व वज्द (इश्क़े खुदा) ने मुझे आ लिया और खुद फ़रामोशी (रूहानी मस्ती) तारी हो गई। अर्स-ए-दराज़ तक यही हाल रहा। जब आराम हुआ तो आपकी मुहब्बत पूरी ताक़त के साथ मुझ पर छा गई। मैं ने घर बार और मकान को छोड़ कर आपकी ख़िदमत अपना ली।(जामिएकरामाते औलिया स0: 642)

आप के एक और गुलाम का बयान है कि वह कहते हैं कि मैं ने एक दिन हज़रत से दरख़्वास्त की कि अल्लाह तआला से दुआ करें कि मुझे लड़का अता हो. आपने दुआ फ़रमाई, आपकी

दुआ की बरकत से लड़का हुआ मगर वह मर गया। मैं ने आप से ज़िक्र किया। फ़रमाने लगे तुम ने हम से दरख़्वास्त की थी कि लड़का हो। खुदावन्दे करीम ने लड़का अता किया और फिर वह ले भी गया। लेकिन हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि वह फ़क़ीर की दुआ से तुम्हें दो और लड़के देगा और लम्बी उमर पायेंगे, कुछ अर्सा बाद मेरे दो लड़के हुए। एक उनमें से बीमार हो गया तो मैं ने हज़रत को ख़बर दी। आपने फ़रमाया तुम को क्या है। वह मेरे लड़के हैं, बीमार हो कर अच्छे होते रहेंगे। फिर जैसे हुज़ूर ने फ़रमाया वैसे ही होता रहा। (जामिएकरामाते औलिया स0: 442)

हज़रत अल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं शैख़ शादी कुद्दिस सिर्रूहू कहते हैं कि एक दिन हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ने मुझ से फ़रमाया कि अगर मैं चाहुँ तो अल्लाह तआला की कुव्वत से पहाड़ तुम्हारे लिए सोना बनादूँ, लेकिन हमारे लिए इस फ़ानी दुनिया में उन चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जह होना मुनासिब नहीं है क्योंकि हमारी जमाअत (गिरोह) की नज़रें इस दुनिया से बाहर लगी हुई हैं। (जामिएकरामाते औलिया स0: 644)

शैखुश्शयूख़ हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ने इन वाक़िआत व हालात से अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि खुदा-ए-तअला ने अपने फ़ज़्ल से मुझे ज़िन्दा को मुर्दा, मुर्दा को ज़िन्दा करने, पानी पर चलने, यहाँ तक कि पहाड़ को सोना बना देने की कुदरत बख़्शी है। और बिहम्दिही तआला ऐसी बरगुज़ीदा हस्ती के अक़ीदे के मुताबिक़ अम्बिया व औलिया के बारे में हम अहले सुन्नत व जमाअत का भी यही अक़ीदा (आस्था) है।

★★★

अल्लामा जलालुद्दीन रूमी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 672)

आप मसनवी शरीफ़ के तीसरे दफ़्तर (अध्याय) में फ़रमाते हैं कि "अरब के एक गिरोह का पानी ख़ुश्क सालों के सबब एक जंगल में ख़त्म हो गया। इत्तिफ़ाक़न वहाँ दोनों जहाँ की मदद फ़रमाने वाले यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मदद के लिए नमूदार हुए तो एक बहुत बड़ा क़ाफ़िला देखा जो दूर चल कर आया था। उन लोगों के ऊँट प्यास की शिद्दत से ज़बान लटकाए हुए और लोग रेत के अंदर इधर-उधर फैले हुए थे। क़ाफ़िला वालों की यह परीशान हाली देख कर रहमतुल लिलआ़लमीन का दरिया-ए-रहमत जोश में आ गया। आपने लोगों से फ़रमाया, टीले के उस तरफ जाओ। एक हब्शी गुलाम पानी की मश्क ऊँट पर लिए हुए अपने मालिक की तरफ तेज़ी से जा रहा है। उस हब्शी को ऊँट और पानी के साथ मेरे पास लाओ। लोग टीले के उस तरफ गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ एक हब्शी को ऊँट पर पानी ले जाते हुए देखा। तो लोगों ने उस से कहा कि तुझे रसूलुल्ला सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम बुला रहे हैं। हब्शी ने कहा मैं उन्हें नहीं जानता। लोगों ने हुज़ूर के औसाफ़ (कमालात) बयान किए तो उसने कहा वह तो जादूगर हैं। (अल्लाह की पनाह) मैं एक क़दम उनकी तरफ़ न जाऊँगा। लोग हब्शी को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की तरफ़ ज़बरदस्ती खींच लाए। वह चिल्लाता था और बुरा भला कहता था। जब उसको खींच कर हुज़ूर के पास लाए तो आपने फ़रमाया कि हब्शी के

मश्कीज़े (पानी की मश्क) से सब लोग पानी पिये और जिस क़दर तबीअत चाहे ले भी जाओ।"

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का एलान सुनते ही हर तरफ़ से लोग टूट पड़े, ख़ुद भी पिया और अपना-अपना मश्कीज़ा भी भर लिया और सब ऊँट भी सैराब हो गए।

अब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हब्शी से फ़रमाया।

"ऐ गुलाम! अब भी तेरा मश्कीज़ा भरा हुआ है देख ले ताकि बाद में शिकायत करते हुए तू बुरा भला न कहे। वह हब्शी हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इस मुअ्जज़े (अंहोनी कार्य) से हैरान हो गया और उस का ईमान लामकाँ से तुलूअ् (ज़ाहिर) हुआ। यानी वह मुसलमान हो गया।

उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपना नूरानी हाथ उस हब्शी के चेहरे पर फेर दिया जिस से उस हब्शी का रंग बदल गया। यानी वह हसीनो ख़ूबसूरत हो गया।

वह काला हब्शी सफ़ेद हो गया और उसका चेहरा रोज़े रोशन और चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकने लगा।"

हज़रत मौलाना रूमी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने इस वाक़ेए को मसनवी शरीफ़ में लिख कर अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को ख़ुदा-ए-तआ़ला ने तसर्रूफ़ की वह ताक़त अ़ता फ़रमाई है कि बदशक्ल आदमी के चेहरे पर सिर्फ़ अपना हाथ मुबारक फेर कर उसको हसीन व ख़ुबसूरत बनादें।

आप मसनवी शरीफ़ के तीसरे दफ़्तर (पाठ) में और ज़िक्र फ़रमाते हैं।

"हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि

के बारे में बयान किया गया है कि वह एक दिन रास्ता चलते हुए एक दरिया के किनारे बैठ गए। यह वाक़िआ आपके ज़मान-ए-फ़क़ीरी का है। हज़रत अपना लिबासे फ़क़ीरी खुद सिल रहे थे कि अचानक एक हाकिम जो पहले आपका गुलाम था आया और आपकी यह हालत देख कर बहुत तअज्जुब किया और दिल में सोचने लगा। हफ्त अकलीम (सात मुल्क) की सलतनत को छोड़ कर, अब फ़क़ीरों की तरह गुदड़ी सिल रहे हैं। अफ़सोस हज़ार अफ़सोस, हाकिम के इस ख़्याल से हज़रत आगाह हो गए क्योंकि हज़रत शेर के मानिन्द हैं और लोगों का दिल उनका जंगल है। हज़रत ने सूई को दरिया में फेंक दी फिर बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि सूई ले आओ। अल्लाह वाली लाखों मछलियां सोने की सूईयां अपने मुंह में लिए हुए निकलीं और उन्हें हज़रत के सामने पेश किया। आपने कहा इलाही! मैं ने तो अपनी सूई चाही थी। मुझे तूने अपने फ़ज़्ल से सच्चाई का निशान दिया। लिहाज़ा मछलियों से वही सूई मंगवा दे जो मेरी है। एक दूसरी मछली उसी वक़्त हज़रत की सूई को मुंह में लिए हुए निकली। आपने हाकिम से फ़रमाया ऐ अमीर! दिलों पर हुकूमत बेहतर है जिसका मैं बादशाह हूं या ऐसे मुल्के हक़ीर की जिसके तुम मालिक हो।"

और मसनवी शरीफ़ के दूसरे दफ़्तर (पाठ) में आप फ़रमाते हैं कि "एक फ़क़ीर एक कश्ती में सफर कर रहे थे। कश्ती के मुसाफिर अपने-अपने सामान से टेक लगाए हुए थे। एक शख़्स सोया हुआ था उसके सोने की थैली गुम हो गई। लोगों की तलाशी ली गई। किसी ने फ़क़ीर की तरफ़ इशारा किया। उसने फ़क़ीर की फटी हुई गुदड़ी की तरफ़ एक नज़र डाली और कहा कि इस कश्ती में हमारे रुपियों की थैली गुम हो गई है। हम सब की तलाशी ले चुके हैं आप हर्गिज़ नहीं छूट सकते। आप गुदड़ी

उतार दीजिए ताकि लोगों के शुबहात आपकी तरफ़ से ख़त्म हो जाएं। आपने बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर दुआ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! कमीनों ने तेरे बन्दे पर झूटा इलज़ाम लगाया है। तू अपना फ़रमान भेज दे। जब इस वाक़ेए से फ़क़ीर के दिल को तकलीफ़ पहुंची तो यकायक मछलियां पानी के ऊपर तैरने लगीं। लाखों मछलियां अपने-अपने मुंह में मोतियों को ले कर निकल पड़ीं और हर एक मोती बड़ा क़ीमती था। मछलियों के मुंह से चन्द मोती ले कर कश्ती में डाल दिया और एक जस्त लगाकर ऊपर चले गए और हवा को कुर्सी बना कर उस पर बैठ गए। फिर कश्ती वालों से फ़रमाया अल्लाह मुझे काफ़ी है, वह कश्ती तुम्हीं को मुबारक हो ताकि चोरी करने वाला फ़क़ीर तुम्हारे साथ न रहे।"

हज़रत मौलाना रूमी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ने इन वाक़िआत को मसनवी शरीफ़ में लिख कर अपना यह अक़ीदा खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने औलिया-ए-किराम को तसर्रूफ़ (अमल-दख़ल) का पूरा इख़्तियार अता फ़रमाया है।

★★★

अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 898 हि०)

आप उन बरगुज़ीदा (महान) हस्तियों में से एक हैं जिन को अल्लाह तआला ने उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी दोनों से मालामाल फ़रमाया। आपने बहुत से उलमा व बुज़ुर्गों से इल्म व फ़ैज़ हासिल किया मगर आपके मुर्शिदे ख़िर्क़ा (पीर) शैख़े तरीक़त हज़रत सअ्दुद्दीन काशग़री नक़्शबन्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हैं। चार वास्तों से आपके ख़िर्क़ा (रूहानी सिलसिले) की निस्बत

ख़्वाज-ए-ख़्वाजगान हज़रत शैख़ बहाउद्दीन बुख़ारी नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान तक पहुंचती है।

आपने अरबी व फ़ारसी में मुख़्तलिफ़ इल्म व फ़न की बहुत सी किताबें लिखीं हैं जिन की तादाद 45 तक पहुंचती' है(1) जो आपके तख़ल्लुस (उपनाम) "जामी" के अदद (अंक) हैं उन में इल्मे नह्व की किताब "अलफ़वाएदुज़्ज़ियाइया फी शर्हिल काफ़िया" जो शरह मुल्ला जामी के नाम से याद की जाती है, काफ़िया की शरहों में निहायत ही बुलन्द मक़ाम और सबसे ज़्यादा मशहूर और अहम शरह है। और तमाम अ़रबी मदरसों में दाख़िले कोर्स है।

आप फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हज़रत हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि के पास मुर्दा तूती ले कर आया। शैख़ ने फ़रमाया कि तुम यह चाहते हो कि तुम्हारी तूती ज़िन्दा हो जाए? उसने कहा जी हाँ मैं इसी लिए आपके पास आया हूँ। शैख़ हल्लाज ने उंगुली से इशारा फ़रमाया तूती उसी दम ज़िन्दा हो गई। (तर्जमा नफ़्हतुलउन्स पृ0: 347)

और फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत शैख़ अबुल हसन क़राफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 380 हि0) ने कश्ती में इहतिसाब किया (यानी लोगों को शरीअ़त में मना बातों से रोका) तो उन्होने ग़ुस्से में आकर शैख़ के हाथ पावँ बांध कर उनको दरिया में डाल दिया। जब नमाज़ का वक़्त आया तो कश्ती वालों ने आप को सफ़े अव्वल में पाया और आप का दामन भी तर नहीं हुआ था। (तर्जमा नफ़्हतुलउन्स, पे0: 450)

(1) बुख़ारी शरीफ़ जि0 2 पे0 963 की मशहूर हदीसे क़ुदसी यानी जब कोई मेरा महबूब हो जाता है तो मैं उसकी क़ुव्वते समाअ़त (सुनने की ताक़त) हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है की तरफ़ इशारा है।

और फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ अमू से यह रवायत मशहूर है कि एक दिन मैं हज़रत शैख़ बाब फ़रग़ानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की ख़िदमत में बैठा हुआ था तो एक शख़्स आया और कहने लगा कि आप दुआ़ फ़रमाएं अमीर सरकब ज़ुल्म से बाज़ आ जाए (सरकब एक अमीर था जो अकसर फ़रग़ाना पर चढ़ाई कर देता था) हज़रत शैख़ बाब उस वक़्त चूल्हे के पास बैठे हुए थे, पावँ में जुराबें पहने हुए थे और एक लोटा आपके क़रीब रखा हुआ था। आपने लोटे पर एक पावँ मारा और फ़रमाया कि मैं ने सरकब को गिरा दिया। सरकब उस वक़्त शहर फ़रग़ाना के दरवाज़े पर था, उसी दम घोड़े से गिर गया और उस की गर्दन टूट गई।

और हज़रत शैख़ उमू क़ुद्दि-स सिर्रूहू फ़रमाते हैं कि एक शख़्स आपकी ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया कि दुआ फ़रमाइए बारिश हो जाए। आपने दुआ़ मांगी खुब बारिश हुई और कई रोज़ तक जारी रही। फिर बस्ती के बहुत से लोग आए और अर्ज़ किया कि दुआ फ़रमाइए कि बारिश ठहर जाए इस लिए कि हमारे बहुत से मकान बारिश से गिर रहें हैं। आपने उनके कहने पर दुआ़ की तो बारिश ठहर गई। (तर्जमा नफ़्हतुलउन्स प0: 513)

और फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ मुहम्मद माशूक़ तूसी अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान अक्सर क़ुबा (आलिमाना लिबास) पहनते थे। एक क़ुबा पहने हुए तूस की जामा मस्जिद में आ गए। हज़रत शैख़ अबू सईद अबुलख़ैर रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि नसीहत कर रहे थे। शैख़ मुहम्मद माशूक़ ने अपनी क़ुबा में बन्द लगा लिया। बन्द बांधते ही शैख़ अबू सईद ख़ामोश हो गए। उनका ज़ोरे तक़रीर ख़त्म हो गया। कुछ देर के बाद शैख़ अबू सईद ने कहा कि ऐ सुलताने ज़माना (अपने वक़्त के बादशाह) अपनी क़ुबा

के बन्द खोल दीजिए क्योंकि आपने बन्द लगा कर ज़मीन व आसमान के सातों तबक़ पर बन्द लगा दिए हैं। (और मेरी ज़वान भी बन्द करदी है।) (तर्जमा नफ़हतुलउन्स, पृ0: 543)

और फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़्वाजा अबू अवदाल चिश्ती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ालः 355 हि0) के वालिद (वाप) का शरावख़ाना था। एक दिन मौका पाकर आप उस शरावख़ाने में पहुंच गए और अंदर से दरवाज़े बन्द करके शराव के मटके तोड़ना शुरू कर दिए। उनके वाप को ख़वर मिली तो वह शरावख़ाने की छत पर चढ़ गए और वड़े गुस्से में एक भारी पत्थर उठा कर उनको मारने के लिए फेंका तो वह पत्थर हवा में मुअल्लक़ जैसे हो गया जैसे किसी ने बीच में रोक लिया हो और उनको किसी तरह की तकलीफ़ नहीं पहुंच सकी। जव उनके वालिद ने यह हाल देखा तो उनके ही हाथ पर गुनाहों से तौवा की।

(नफ़हतुलउन्स, पृ0: 559)

और फ़रमाते हैं कि जिस ज़माने में सुलतान महमूद ग़ज़नवी सोमनात की लड़ाई के लिए (हिन्दुस्तान) गए हुए थे उस ज़माने में हज़रत ख़्वाजा अवू मुहम्मद विन अवू अहमद चिश्ती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि को ख़्वाब में दिखाई दिया कि तुमको सुलतान मुजाहिद की मदद के लिए जाना चाहिए। चुनाँचे आप सत्तर साल की उम्र में चन्द दुर्वीशों के साथ सोमनात के लिए रवाना हुए। जब वहाँ पहुंचे तो उस बुढ़ापे के आलम में खुद मुश्रिकों और बुतप्रस्तों से जिहाद किया।

एक दिन मुश्रिकों का जंग में कुछ पल्ला भारी हुआ यहाँ तक कि इस्लामी फ़ौज जंगल में पनाह लेने पर मजबूर हो गई। ख़्वाजा अबू मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि का एक चक्की वाला मुरीद था। मुहम्मद काकू उसका नाम था। ख़्वाजा ने मैदाने

कारज़ार से उसको आवाज़ दी। ऐ काकू! पहुंच। लोगों ने देखा कि काकू झपटे हुआ पहुंचा और वड़ी वे जिगरी के साथ लड़ने लगा यहाँ तक कि काफ़िरों का लश्कर उसके मुक़ावले की ताव न लाकर भाग खड़ा हुआ और लश्करे इस्लाम को फ़तह नसीव हुई। उधर ठीक उसी वक़्त लोगों ने मुहम्मद काकू को चिश्त में देखा कि यकायक चक्की के पाट को दीवार से मारना शुरू कर दिया। लोगों ने जव उस का सवव पूछा तो वही वात बयान की जो सोमनात की जंग में लश्करे इस्लाम को पेश आई थी।

(नफ़हतुलउन्स पृ0: 560)

और फ़रमाते हैं कि इमाम याफ़ई रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ ईसा विन हन्नार यमनी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान एक दिन एक वाज़ारी औरत के पास गए और उस से कहा कि मैं इशा के वाद तुम्हारे पास आउंगा। वह औरत यह सुन कर वहुत ख़ुश हुई और इशा के वक़्त ख़ुव बनाव सिंगार करके बैठ गई। इशा के वाद आप उसके पास आए और उसके घर में दो रकअ़त नमाज़ अदा की और फिर वाहर निकल आए। उसी वक़्त उस औरत की हालत में इन्क़िलाव वर्पा हो गया, उसने अपने पेशा से तौवा की और जो कुछ माल व सामान उसके पास था सव से हाथ उठा लिया। शैख़ ने एक दुर्वेश के साथ उस का निकाह करा दिया और कहा कि वलीमा के लिए असीदा तैयार कराओ लेकिन उसके लिए घी न खरीदना।

वह तवाइफ़ औरत जिस अमीर की रखेल थी उस को लोगों ने ख़बर की कि तेरी रखेल का निकाह एक दुर्वेश से हो गया है। और वलीमा के खाने में असीदा बनवाया गया है मगर उन लोगों के पास घी नहीं है। अमीर ने अज़ राहे शरारत शराव की दो वोतलें भर कर शैख़ के पास भिजवाई और कहलवाया कि हम

उस काम से बहुत खुश हुए। सुना है कि असीदा के लिए आपके पास घी नहीं है, लिहाज़ा यह जो कुछ मैं भेज रहा हूँ उसको असीदा में मिला कर खाइए।

अमीर का भेजा हुआ जब शैख़ के पास पहुंचा तो शैख़ ने उस से फ़रमाया कि तुमने आने में देर करदी असीदा तौयार हो गया। फिर उन बोतलों में से एक को उसके हाथ से ले लिया और उसको असीदा पर उंडेल दिया। फिर दूसरी बोतल भी उस पर उंडेल दी फिर उस आने वाले से फ़रमाया कि बैठ जाओ तुम भी असीदा खाकर जाना। जब उस आदमी ने असीदा खाया तो ऐसा घी खाने में आया कि उस से बेहतर उस ने कभी नहीं खाया था। असीदा खा कर वह शख्स अमीर के पास गया और यह किस्सा बयान किया। तब अमीर भी शैख़ की ख़िदमत में आया और आपके हाथ पर तौबा की। (तर्जमा नफ़हतुलउन्स, पे0: 824)

और फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ अबुलग़ौस यमनी रजियल्लहु तआला अन्हु (इन्तिक़ाल 651 हि0) एक दिन इस इरादे से जंगल गए कि वहाँ से लकड़ियां काट कर लाएं। अपने साथ अपने गधे को भी ले गए और लकड़ियां जमा करने लगे। उसी दर्मियान में शेर ने उनके गधे को फाड़ डाला। जब यह लकड़ियां जमा कर के लाए तो देखा कि शेर गधे को फाड़ कर खा गया तो अब मैं अपनी लकड़ियां तुम्हारी पीठ पर लादूँगा। और खुदा की कसम यह करके रहूँगा। पस उन्होंने लकड़ियों को शेर की पीठ पर लादा और शहर को चल दिए। जब शहर के पास पहुंच गए तो उस की पीठ से लकड़ियां उतार ली और शेर से कहा। अब जहाँ तेरा जी चाहे वहां चलाजा।

और एक दिन उनके घर वालों ने उन से इत्र की फ़रमाइश की। यह इत्र फरोश की दुकान पर गए और उस से इत्र तलब किया। उसने कहा मेरे पास इत्र नहीं है। आपने फ़रमाया हाँ तेरे

पास इत्र नहीं रहेगा। उसी वक़्त अ़त्तार की दुकान से सारा इत्र ग़ायब हो गया। (नफ़ह़तुलउन्स, पे0: 825)

और फ़रमाते हैं कि एक बार एक शख़्स समन्दर के किनारे पर था। काफ़ी रात हो गई और वह शहरे अदन में दाख़िल न हो सका। इस लिए रात को समन्दर के किनारे ही पर रहा। उस वक्त उस के पास खाने के लिए कुछ न था। यकायक उसने देखा कि समन्दर के किनारे हज़रत शैख़ रेहान रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि खड़े हैं। यह शख़्स उनकी ख़िदमत में पहुंचा और कहने लगा हज़रत! शहर के दरवाज़े बन्द हैं और मेरे पास खाने के लए कुछ नहीं है, आपसे गुज़ारिश है कि मुझे हरीरा अता फामारएं। शैख़ रेहान ने फ़रमाया तुम्हारा अजीव हाल है कि मुझ से रात में खाना मांग रहे हो और वह भी हरीरा गोया तुम ने यह समझ रखा है कि मैं हरीरा पकाता रहता हूँ।

यह सुन कर उसने कहा हज़रत मुझे तो बस हरीरा ही चाहिए। मैं आप से हरीरा ले कर रहूँगा। यकायक उसने देखा कि गर्म हरीरा का एक प्याला मौजूद है लेकिन उस में घी नहीं था। उसने कहा हज़रत उस के लिए घी चाहिए, शैख़ ने फ़रमाया तू अजीब आदमी है कि बग़ैर घी के हरीरा नहीं खा सकता। क्या मैं घी फ़रोश हूँ जो हरीरा के लिए घी भी दूँ, उस ने कहा मैं तो बग़ैर घी के हरीरा नहीं खाऊँगा। तो आपने उस शख्स को पानी का बर्तन दिया और फ़रमाया जाओ समन्दर से पानी ले आओ ताकि मैं वुज़ू करलूँ। जब वह शख़्स पानी ले कर आया तो बर्तन उसके हाथ से ले लिया और उस में से कुछ पानी हरीरा में डाल दिया। हरीरा खाने के बाद उस ने कहा कि ऐसा उमदा घी मैं ने कभी नहीं खाया। (नफ़हतुलउन्स, पृ0: 844)

हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने

"नफ़हतुलउन्स" में इन तमाम वाक़िआत को लिख कर अपना यह अक़ीदा खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआला ने औलिया अल्लाह को दुनिया में तसर्रुफ़ (अमल-दख़ल) का इख़्तियार अता फ़रमाया है।

★★★

ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 633 हि0)

आप सुलतानुलहिन्द हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जलीलुल क़द्र ख़लीफ़ा (महान) और हिन्दुस्तान के अज़ीमुल क़द्र सूफ़िया में थे। और बड़े मक़बूल बुज़ुर्ग थे। दुनिया से बेनियाज़ी और फ़ाक़ाकशी में मुम्ताज़ थे और यादे इलाही में बड़े डूबे हुए थे। अगर कोई आपसे मिलने के लिए आता तो थोड़ी देर के बाद आपको इफ़ाक़ा होता और आप अपने आप में आते। उसके बाद आने वाले की तरफ़ मुतवज्जह होते। अपनी या आने वाले की बात कह सुनकर फ़रमाते कि अब मुझे माफ़ करो और फिर यादे इलाही में मशग़ूल हो जाते। अगर आप की कोई औलाद होती तो उस वक़्त आपको ख़बर न होती थोड़ी देर के बाद आप को ख़बर होती। (अख़बारूलअख़्यार, पे0: 59)

कहा गया है कि हज़रत सिकज़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के मकान पर सुहबते अहबाब (दोस्तों की महफ़िल) गर्म थी। हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि भी वहाँ मौजूद थे कि उस महफ़िल में एक पढ़ने वाले ने हज़रत शैख़ अहमद जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का यह शेर पढ़ा। "ख़ंजरे तस्लीमो रज़ा के शहीदों को हर घड़ी गैब से एक नई ज़िन्दगी अता होती है।"

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि पर उस शेर से एक वज्द (जोश व मस्ती) तारी हुआ और चार दिन रात उसी शेर से हैरतज़दा रहे। और पाँचवें दिन रबि उलअव्वल शरीफ़ की चौदहवीं रात 633 हि0 में आपने इन्तिक़ाल फ़रमाय। (अख़बारूलअख़्यार, पृ0: 61)

हज़रत शैख़ अब्दुलहक़ देहलवी बुख़ारी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान फ़रमाते हैं कि आपके पड़ोस में एक बनिया रहता था। शुरू-शुरू में आप उस से क़र्ज़ लेते थे और उस से फ़रमा देते कि जब तुम्हारा कर्ज़ तीस दिर्हम तक हो जाए तो उस से ज़्यादा न देना। जब अपको जीत हासिल होतीं तो आप क़र्ज़ अदा फ़रमादेते। उसके बाद आप ने पक्का इरादा कर लिया कि कभी कर्ज़ न लूँगा। उसके बाद अल्लाह के फ़ज़्लो करम से एक रोटी आप के मुसल्ला के नीचे से निकल आती उसी पर तमाम घर वाले गुज़ारा कर लेते। और इसी लिए आपको "काकी" कहते हैं कि "काक" अफ़ग़ानी ज़बान में रोटी को कहा जाता है। (अख़बारूलअख़्यार, पृ0: 60)

और ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किर्मानी लिखते हैं कि सुलतानुल मशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते थे एक ज़माने में हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी और हज़रत जलालुदीन तबरेज़ी कुद्दीस सिर्रूहुम मुलतान में तशरीफ़ फ़रमा थे कि अचानक काफ़िरों का लश्कर मुलतान के क़िले की दीवार के नीचे पहुंच गया। मुलतान का वाली नासिरूद्दीन कुबाचा उन बुज़ुर्गों की खिदमत में आया और उन मलऊनों से हिफ़ाज़त के लिए अर्ज़ किया। हज़रत शैख़ कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुललाहि तआला अलैहि ने एक तीर कुबाचा के हाथ में दे कर फ़रमाया कि उसे दुश्मन के लश्कर की जानिब रात में अंधादुंध फेंक देना।

चुनाँचे कुबाचा ने ऐसा ही किया। जब दिन निकला तो एक भी काफ़िर वहाँ न रहा था। (सियरूलऔलिया, पृ0: 117)

ख़्वाजा ख़ुर्द किर्मानी और फ़रमाते हैं कि मलिक इख़्तियारूद्दीन ऐबक हाजिब ने कुछ नक़द रक़म नज़राने के तौर पर कुतबुलअक़ताब हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हो कर पेश की लेकिन हज़रत ने कुबूल नहीं फ़रमाया। इसके बाद आपने उस बोरिए को जिस पर आप बैठे हुए थे उठाया और मलिक इख़्तियारूद्दीन को दिखाया कि बोरिए के नीचे एक नदी चाँदी की बह रही है। फिर फ़रमाया अब तुम्हें अंदाज़ा हो गया कि मैं तुम्हारी इस लाई हुई रक़म की हाजत नहीं रखता। (सियरूलऔलिया, पृ0: 120)

और हज़रत मीर अब्दुलवाहिद बिलगिरामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि सुलतान शम्सुद्दीन अल्तमश शाहाना शान व शौकत के साथ काज़ी हमीदुद्दीन और हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहिमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए। यह दोनों हज़रात वुज़ू से फ़ारिग़ हो कर तहिय्यतुल वुज़ू (नफ़्ल नमाज़) अदा कर रहे थे। जब सुलतान शम्सुद्दीन ने कदमबोसी की सआ़दत हासिल कर ली और अदब से बैठ गए तो बोले कि बन्दा भूखा है, काज़ी हमीदुद्दीन ने ख़ादिम से फ़रमाया कि खाना अगर मौजूद हो तो ले आओ। सुलतान ने कहा कि बन्दे को ग़ैब से खाना दीजिए। काज़ी साहिब मुसकुराए और हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन ने आस्तीन में हाथ डाल कर दो सफ़ेद गर्म रोग़नी रोटियां निकालीं। और सुलतान शम्सुद्दीन के हाथ पर रख दीं। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने उस जगह से कहा कि जहाँ वुज़ू किया था कुछ कीचड़ उठाली तो वह हलवा हो गई और बादशाह को दे दी गई।

उसके बाद क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने शैख़ सादुद्दीन से फ़रमाया कि

पान भी होना चाहिए। शैख़ सादुद्दीन ने अस्तीन में हाथ डाला और छालिया, कत्था, चूना लगा हुआ पान सुलतान के हाथ पर रख दिया। यह पान भी आलमे ग़ैब से था। सुलतान शमसुद्दीन ने कहा कि आपकी बारगाह का कुत्ता हूँ। अगर तमाम लश्करी यह रोटी और हलवा और पान खालें तो बड़ा अच्छा हो। ख्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी ने फ़रमाया कि अपने लश्करियों से कहो कि अपने-अपने हाथ आसमान की तरफ़ करलें। बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ पूरे लश्कर ने आसमान की तरफ़ कर लिए। ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन ने अपनी दोनों अस्तीन झाड़ीं तो हर शख़्स के हाथ पर दो-दो रोटियां पहुंच गईं। और उस कीचड़ से हलवा पैदा हुआ। शैख सादुद्दीन ने भी अपने हाथ झाड़े तो हर एक के हाथ पर छालिया कत्था और चूना लगा हुआ पान पहुंचा। शैख़ सादुद्दीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि को इसी वजह से तम्बूली कहते हैं।

(सब–ए–सनाबिल शरीफ़, पृ0: 446)

इन वाक़िआ़त से हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने अमली तौर पर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे तरह-तरह के तसर्रूफ़ात (अमल-दख़ल) व इख़्तियारात की कुव्वत बख़्शी है। यहां तक कि मैं असतीन झाड़ कर लोगों के हाथों में ग़ैब से रोटियां पहुंचा देने की ताक़त रखता हूँ. और आख़िरी वाक़िए से मालूम हुआ कि हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी (इन्तिक़ाल 625 हि0) का यह अक़ीदा था कि मुझे कीचड़ को हलवा बनाने पर कुदरत है। और शैख़ सादुद्दीन तंबूली का यह अक़ीदा था कि मैं छालिया के साथ चूना और कत्था लगा हुआ पान ग़ैब से लाने की ताक़त रखता हूँ।

★★★

सूफ़ी हमीदुद्दीन नागौरी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल: 677)

आप ख़्वाज-ए-ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के मुम्ताज़ ख़ुलफ़ा (जानशीन) में से हैं। आप की पैदाइश की सही तारीख़ व सन् में तहक़ीक़ के साथ मालूम न हो सके। अलबत्ता आपने फ़रमाया है कि "दिल्ली की जीत के बाद पहला बच्चा जो मुसलमानों के घर में पैदा हुआ वह मैं हूँ।" और सुलतान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने 571 हि0 में दिल्ली फ़तह की। तो आपके इस फ़रमान के मुताबिक़ आपकी पैदाइश 571 या 572 हि0 में हुई।

आप के नसब (ख़ानदान) का सिलसिला पन्द्रह वास्तों से अमीरूलमोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु तक पहुंचता है। आपके वालिदे गिरामी (पिता) का नाम शैख़ अहमद सूफ़ी था जो अपने ज़माने के बहुत बड़े आलिम और कामिल दुर्वेश थे। और आपकी वालिदा मुहतरमा (माता) भी अपने ज़माने की राबिया (वलिय्या) थीं। हज़रत सूफ़ी हमीदुद्दीन नागौरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाया करते थे कि अगर कोई औरत उस ज़माने में मेरी वालिदा से बेहतर और बुज़ुर्ग होती तो मैं उसी के पेट से पैदा होता यानी आपकी वालिदा माजिदा अपने ज़माने की बेहतरीन और बुज़ुर्गतरीन बीबी थीं

आप दुनिया से बेनियाज़ी और मुम्ताज़ थे और कामिल वली होने के साथ अपने ज़माने के फ़ाज़िले अजल और बेमिसाल आलिम भी थे। अ़रबी, फ़ारसी और हिन्दी तीनों ज़बानों पर आप को बड़ी क़ुदरत हासिल थी। क़ुरआन व आहादीस पर बड़ी गहरी

नज़र रखते थे और बुज़ुर्गों की किताबों पर आपको पूरी क़ुदरत थी। अपनी किताबों में आप जगह-जगह क़ुरआनी आयात, अहादीसे मुबारका और मशाइख़ के अक़्वाल नक़ल करते हैं। आप की किताबें "उसूलुत्तरीक़ा, रिसालतुस्सुलूक" और चेहार मन्ज़िल इस बात की गवाह हैं जिनके पढ़ने से नाज़िरीन आपके बे पनाह इल्म से मुतअस्सिर हुए बेग़ैर नहीं रह सकते।.

27 रबीउलआख़िर 277 हि0 यानी अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा अजमेरी अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान के विसाल फ़रमाने के 44 साल बाद आपने इन्तिक़ाल फ़रमाया। मज़ार मुबारक नागौर शरीफ़ (राजस्थान) में है जो ज़ियारत-गाहे ख़ास व आ़म है।

(माख़ूज़ सुलतानुत्तारिकीन)

सुहरवर्दी सिलसिला के मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी और हज़रत शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी रहमतुललाहि तआ़ला अलैहिमा के बीच एक मसअले पर ख़तो किताबत हो रही थी उसी ज़माने में हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि का एक बेटा नागौर आया और शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि से एक मसअले में उलझ गया और देर तक आप से बहस करता रहा। आख़िर आपने उसे शरई दलीलों से ख़ामोश कर दिया मगर चूँकि उस ने आपको नाराज़ कर दिया था और फ़ुज़ूल बातों से आपके वक़्त को बर्बाद किया था इस लिए आपने उस से फ़रमाय हमने तुझ को क़ैद में कर दिया।

चुनाँचे शैख़ हमीदुद्दीन और शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहिमा की इन्तिक़ाल के बाद शैख़ बहाउद्दीन का यह बेटा सफ़र के दौरान एक सरकश के हाथों गिरफ़्तार हुआ। उस सरकश ने उन के बेटे से कहा कि शैख़ बहाउद्दीन की मीरास का माल तुम्हें बहुत मिला है। अगर वह

तमाम माल तुम मुझे दोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। चुनान्चि शैख़ बहाउद्दीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि के बेटे को कैद कर दिया उसने शैख़ सदरूद्दीन को कैद करने का सारा वाकिआ लिखा और मीरास से अपना हिस्सा तलब किया। जब शैख़ सदरूद्दीन को लिखा कि वह अपने हिस्से में से भी कुछ माल मुझे दें तो उस वक़्त मैं तुम्हें छोडूँगा। शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया के बेटे ने मजबूरन शैख़ सदरूद्दीन को लिखा। शैख़ सदरूद्दीन ने अपने माल का भी कुछ हिस्सा उसको भेजा। एक मुद्दत के बाद उनका यह बेटा कैद से छूटा। (सयरूलऔलिय, पृ0: 267)

और कहा गया है कि आप अपने पीरो मुर्शिद ख़्वाज-ए-ख़्वाजगाँ हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अलैहिर्रहमतु वरिज़वान की मस्जिद अजमेर शरीफ़ में इमामत फ़रमाते थे। जब आप तकबीरे तहरीमा कहते तो हर मुक़तदी को अर्शे आज़म नज़र आता था। हर मुक़तदी बुज़ुर्ग उसको अपनी खुद की करामत समझता था। एक रोज़ आप मस्जिद में मौजूद न थे इस लिए किसी दूसरे बुज़ुर्ग को इमामत करनी पड़ी। उस रोज़ किसी को अर्शे आज़म नज़र न आया तो यह राज़ खुला कि अर्शे मुअ़ल्ला का जलवा सिर्फ़ आपकी बदौलत नज़र आता था।

इमामत की गर्ज़ से आप नागौर से रोज़ाना अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुआ करते थे। मामूल यह था कि सुबह की नमाज़ पढ़ा कर बेग़ैर किसी सवारी के नागौर चले जाते फिर ज़ुहर के वक़्त उसी तरह अजमेर शरीफ़ आकर नमाज़ पढ़ाते। और बाद नमाज़े इशा फिर नागौर वापस जाकर रात को अपनी इबादत व रियाज़त में मशगूल हो जाते। (सुलतानुत्तारिकीन, पृ0: 127)

नोटः- अजमेर शरीफ़ से नागौर शरीफ़ का फासिला 165 किलो मीटर है।

इन वाक़िआ़त से हज़रत सूफ़ी हमीदुद्दीन नागौरी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ने अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि खुदा-ए-तआ़ला ने मुझे तसर्रूफ़ (अमल-दख़ल) की बेपनाह कुव्वत अ़ता फ़रमाई है।

★★★

शैख़ फ़रीदुद्दीन गंज शकर का अक़ीदा

(*अलैहिर्रह्मा, इन्तिक़ाल 670 हि0*)

रवायत किया गया है कि हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर के ज़माने में एक "हसन" क़व्वाल था जिसे अपनी लड़की की शादी करने के लिए रक़म की ज़रूरत थी। उस ने हज़रत से अर्ज़ किया कि मेरी लड़की की शादी है कुछ इनायत फ़रमाइए। यह सुन कर हज़रत ने फरमाय कि मैं तुझे क्या दूँ? मेरे पास क्या है? हसन कव्वाल ने अर्ज़ किया कि अगर आपके पास कुछ नहीं है तो यह कह दीजिए कि यह ईंट उठाले। यह सुन कर हज़रत ख़ामोश रहे और फिर फ़रमाया कि उठाले। हसन ने वहाँ की पड़ी हुई एक ईंट को हाथ लगाया तो वह उसी वक़्त सोने की बन गई।

उसके बाद उसने अर्ज़ किया क्या दूसरी भी उठालूँ? आपने फ़रमाया यही काफी है। वह उस पर भी न माना और फिर दूसरी ईंट का मुतालबा किया, उस का इसरार देख कर हज़रत ने फ़रमया उसे भी उठाले मगर फिर कुछ न कहना उस ने कहा बेहतर है और दूसरी ईंट भी जैसे उठाई वह उसी वक़्त सोने की बन गई। उसने फ़िर कहा हज़रत तीसरी भी उठालूँ? फ़रमाया अभी तो तूने इक़रार किया था कि फिर कुछ न कहूँगा और फिर भी सवाल करता है? हसन ने अर्ज़ किया कि ज़रासा कह देने में

आप का क्या हर्ज है? उस पर आप ने हंस कर फ़रमाया कि अच्छा एक और उठाले। लिहाज़ा उसने तीसरी ईंट भी उठाली जो हाथ लगाते ही सोने की वन गई और वह तीनों ईंटें ले गया और बड़ी धूम से अपनी लड़की की शादी की।

(बरकातुस्सालिहीन, हिस्सा 2 पृ० 81)

और रवायत है कि यही "हसन" क़व्वाल जिस का ज़िक्र ऊपर की हिकायत में गुज़रा उसने एक रोज़ हज़रत गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से अर्ज़ किया कि मैं ने हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की वहुत तारीफ़ सुनी है। जी चाहता है कि उनकी ज़ियारत करूँ। हज़रत गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फ़रमाया कि जा उनकी ज़ियारत कर मगर कुछ वेअदवी न करना। उसके वाद हसन क़व्वाल मुलतान को रवाना हो गया। (हज़रत बहाउद्दीन जहाँ तशरीफ़ रखते थे) जव हज़रत वहाउद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो देखा कि हज़रत एक आलीशान मकान में तशरीफ़ फ़रमा हैं जहाँ उमदा-उमदा फ़र्श बिछे हुए हैं और एक जड़ाऊ पलंग भी विछा हुआ है जो मख़्मली विछौना और वेहतरीन तकिया से आरास्ता है। हज़रत शैख़ उसी पर जलवा अफरोज़ हैं। यह देख कर हसन क़व्वाल के दिल में ख़्याल गुज़रा कि यह क्या तसव्वुफ़ (तरीक़त) है कि ऐश व इशरत का सामान मौजूद है। फ़क़ीरी तो गंज शकर के यहाँ है, जहाँ एक बोरिया के सिवा कुछ नहीं है।

शैख़ बहाउद्दीन ने अपने नूरे बातिन से हसन के दिल की बात मालूम कर ली और फ़रमाया कि ओ वेअदब! क्या भाई फ़रीदुद्दीन ने तुझ से यह न कहा था कि बेअदबी न करना और तू फिर भी न माना। फिर शैख़ ने चाहा कि उसे उठा कर फेंक दें

लेकिन उसी वक़्त मैदाने ग़ैब से हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का हाथ ज़ाहिर हो गया। लिहाज़ा शैख़ ने दरगुजर से काम लिया। दूसरी वार फिर उसे चाहा कि सज़ा दें तो इस वार भी वही हाथ आड़े आ गया। उसके बाद तीसरी मरतवा फिर शैख़ ने उसे ज़क (सज़ा) देने का इरादा किया तो वह हाथ फिर दर्मियान में आ गया। फिर उसी हाथ से अवाज़ आई कि ऐ हसन! तू इस हाथ को पहचानता है? हसन ने कहा उस हाथ के कुर्वान अगर यह हाथ न होता तो मैं आज ज़िन्दा न बचता।

(बरकातुस्सलाम, हिस्सा 2, पृ० 83)

और "ख़ज़ीनतुल असफिया" के मुसन्निफ़ (लेखक) फ़रमाते हैं कि एक टुकड़ा ज़मीन हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का ज़ाती ज़रख़रीद था। किसी शख़्स ने हाकिम रिपाल पुर की अदालत में मुक़द्दमा दायर किया और झूटा दावा किया कि वह ज़मीन मेरी है। हाकिम ने हज़रत गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि को जवाव-देही के लिए तलव किया तो हज़रत ने कहला भेजा कि इस वारे में शहर वालों से मालूमात कर लो। शहर वाले खूव जानते हैं कि यह ज़मीन किस की मिल्कियत (जाएदाद) है, हाकिम ने जवाव दिया कि इस मुक़द्दमा का इस तरह लापरवाही से फैसला नहीं हो सकता। आप खुद आएं या अपना वकील भेज कर मुक़द्दमा की पैरवी कराएं। और यह भी समझ लें कि वेग़ैर सनद और गवाह के यह मुआमला हल न हो सकेगा।

हज़रत गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि उस शिकस्ता सर (गर्दन टूटे हुए) से कह दो कि न हमारे पास सनद है और न गवाह हैं, हमारे कहने का एतेबार नहीं है तो खुद उस ज़मीन से पूछ लिया जाए, वह खुद बतादेगी। यह

सुन कर हाकिम हैरान हुआ और हज़रत की बात का इम्तिहान करने के लिए उस ज़मीन पर पहुंचा और उसके साथ पाक पटन के बाशिन्दों का ज़बरदस्त हुजूम भी था। हाकिम ने मुद्दई से कहा कि ज़मीन से पूछ तो किस की मिल्कियत (जाएदाद) है? जब मुद्दई ने ज़मीन से पुछा कि तेरा मालिक कौन है? तो कुछ जवाब न आया। फिर हज़रत के एक खादिम ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि ऐ ज़मीन! फ़रीरूद्दीन गंज शकर का हुक्म है कि सच बता कि तू किस की मिल्क है? उसी वक़्त ज़मीन से आवाज़ आई कि मैं ख़्वाजा फ़रीरूद्दीन की मिल्कियत हूँ। यह सुन कर मुद्दई शर्मिंदा हुआ और हाकिम भी हैरत में पड़ गया। वापस होते हुए हाकिम की घोड़ी का क़दम उलझ गया जिस की वजह से वह मुंह के बल गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई और हज़रत गंज शकर का इरशाद शिकस्ता सर सही हुआ। (बरकातुस्सलाम, हिस्सा 2, पृ0: 84)

और रवायत है कि हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि एक लम्बे सफर से वापस हो कर मुलतान पहुंचे तो हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने आपसे दर्याफ़्त फ़रमाया कहाँ तक तरक्क़ी कर ली? जवाब दिया कि अगर आपकी कुर्सी को इशारा करदूँ तो वह आपके साथ हवा में उड़ने लगे। यह कहना था कि कुर्सी ने बुलन्द होना शुरू किया तो हज़रत ज़करिया उसे हाथ से दबा कर नीचे ले आए।

(सवानिह हज़रत बाब फ़रीदुद्दीन, पृ0: 52)

और "ख़ज़ीनतुलअसफिया" के मुअल्लिफ़ (सम्पादक) लिखते हैं कि हज़रत ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के गंज शकर मशहूर होने की वजह यह है कि एक सौदागर ऊँटों पर शकर लाद कर मुलतान से दिल्ली जा रहा था। रास्ते में जब पाक

पटन पहुंचा तो हज़रत ख़्वाजा साहिब ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि ऊँटों पर क्या है? सौदागर ने मज़ाक के तौर पर जवाब दिया नमक है। यह सुन कर हज़रत ख़्वाजा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फ़रमाया कि बेहतर है नमक ही होगा। जब सौदागर मन्ज़िले मक़सूद पर पहुंचा तो ऊँटों पर शकर की बजाए नमक ही मिला। चुनाँचे उसी वक़्त वापस हुआ और ख़्वाजा अलैहिर्रहमह से माफ़ी मांगने लगा। ख़्वाजा साहिब ने फरमाया कि शकर थी तो शकर ही हो जाएगी। चुनाँचे वह नमक फिर शकर बन गया। बेरम ख़ाँ ने इस वाक़िए को नज़्म (कविता में) भी किया था जिसका तर्जमा यह है: "हज़रत ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन नमक की कान, शकर का जहान और ख़ुश्की व तरी के शैख़ हैं जो शकर से नमक बना देते हैं और नमक से शकर।" (बरकातुस्सलाम, हिस्सा 1, पृ0: 85)

हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने इन वाक़िआत से अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि खुदा-ए-तआला ने मुझे दुनिया में तसर्रूफ़ की बेपनाह ताक़त अता फ़रमाई है।

★★★

शैख़ मख़्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अलैहि 808)

आप हिन्दुस्तान के प्रसिध बुज़ुर्गों में से हैं। आप पहले सिमनान के बादशाह थे जो अब मामूली क़स्बे की हैसियत से ईरान की हुकूमत में शामिल है। आपने दस साल हुकूमत करने के बाद तख़्त व ताज को छोड़ दिया। और हिन्दुस्तान के बंगाल इलाके में आकर लखनौती (पण्डवा बंगाल) हज़रत शैख़

अलाउलहक़ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की बैअ़त व ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुए। और फिर पीरो मुर्शिद के हुक्म से किछौछा शरीफ़ को अपनी मुस्तक़िल क़यामगाह (निवास स्थान) क़रार दिया जो यू0 पी0 के राज्य मशहूर ज़िला फैज़ाबाद (अब अम्बेडकर नगर) में है। वहीं आप का मज़ारे मुबारक है जहाँ हमेशा ज़ाइरीन का हुजूम रहता है और आसेब ज़दा शिफ़ायाब होते हैं।

हज़रत मौलाना सय्यद नईम अशरफ साहिब जाएसी हज़रत के हालात में लिखते हैं कि एक मरतबा आप जुमा की नमाज़ के लिए संझौली तशरीफ़ ले गए जो ख़ानक़ाह से तक़रीबन बीस किलो मीटर की दूरी पर आज भी एक वीरान गाँव की शक्ल में है। जुमा की नमाज़ के बाद एक मुल्ला ने आपसे मसल-ए-जब्रो क़द्र पर बात-चीत की। और कहा कि इन्सान अपने फेल (काम) पर मुख़्तार है कि नहीं? अगर मुख़्तार माना जाए तो यह अक़ीद-ए-क़दरिया है। और अगर वह अपने फेल (काम) का मुख़्तार नहीं है तो यह मज़हब फिरक़-ए-जबरिया का है। और यह दोनों नज़रिए अहले सुन्नत व जमाअ़त के नज़दीक ग़लत हैं तो मुल्ला ने कहा कि अब उन दोनों के दर्मियान वह कौन सी राह है जिस पर हम अपने अक़ीदा की बुनियाद रखें?

हज़रत ने फ़रमाया कि मसअला बहुत नाज़ुक है और अइम्मए मुतकल्लिमीन (विद्वान) ने उस में बड़ी-बड़ी मोशिगाफ़ियाँ (खोज बीन) की हैं। चुनाँचे इमाम फ़ख्रूलइस्लाम ने किताब "बज़ोरी" में जो कुछ लिखा है उस का खुलासा यह है कि ज़ाहिर के एतेबार से (सूरतन) इख़्तियार है और हक़ीक़त के एतेबार से (मानना) जब्र है। मुल्ला के गुरूरे इल्म ने इस जवाब को तस्लीम न किया। हालाँकि हक़ीक़त तो यह है कि हज़रत ने उस मुख़्तसर जुमले (वाक्यों में दरिया कूज़े (प्याले) में भर दिया था।

बहस लम्बी हो गई। मुल्लाजी हज़रत की बात सुनने और समझने की बजाए अपना ज़ोरे इल्म दिखाने लगे और अपनी इल्मी बरतरी की हाँक लगाने लगे और बात-चीत के दौरान एक बेअदबी का कलिमा भी कह पड़े। हज़रत ख़ामोश हो गए। मुल्ला भी चुप हो जाता तो ख़ैर थी मगर उन्होंने फिर बोलना चाहा जिस से हज़रत को जलाल आ गया और फ़रमाया "मुल्ला अभी तक तेरी ज़बान चलती है।" अभी हज़रत ने पूरा जुमला भी अदा नहीं फरमाया था कि उनकी ज़बान बाहर निकल पड़ी। पूरी की पूरी महफ़िल जलाले जहाँगीरी को देख कर लरज़ गई और आपके रोअ़ब ने उनकी ज़बानें बन्द करदीं। और मुल्लाजी शिद्दते तकलीफ़ से तड़पने लगे। यह ख़बर उनके घर पहुंची तो उनकी बूढ़ी माँ गिरती पड़ती मस्जिद में पहुंचीं। और हज़रत के क़दमे मुबारक पर लोटने लगीं और इस क़दर रोईं कि तमाम लोग उसके हाल पर अफ़सोस करने लगे। मगर किसी को यह हिम्मत न हुई कि हज़रत से सिफ़ारिश करता। इस लिए कि जलाल की यह शिद्दत आपके साथियों ने कभी भी नहीं देखी थी।

बुढ़िया रोती थी और कहती थी सरकार यही एक औलाद मेरे बुढ़ापे का सहारा और मेरी उम्मीदों का मरकज़ (केन्द्र) है। हुज़ूर मआफ़ फ़रमादें और दुआ़ दें कि इस की ज़बान दुरूस्त हो जाए। और शिद्दत बे इख़्तियारी में उस ने कहा कि "ऐ मीरे पूत भीक दे" उसके इस जुमले ने रहम की अपील की और आपको उसके हाल पर रहम आ गया और फ़रमाया खुदावन्दा! इसकी ज़ुबान दुरूस्त हो जाए। मगर लुक़नत (हकलापन) बाक़ी रहे। चुनाँच मुल्ला की ज़बान दुरूस्त हो गई मगर ज़िन्दगी भर के लिए हकले हो गए। (महबूबे यज़दानी,पृ0: 61)

और लिखते हैं कि हज़रत का एक मुरीद जौहर खुरासानी

था जो हुजूर के साथ सफ़र व हज़र (घर एवं बाहर) में रहता था। उसे ख़ून ख़राब होन की शिकायत हो गई और सारा जिस्म ख़राब हो गया। उसने ख़्याल किया कि ख़ानक़ाह में मेरी मौजूदगी अहले खानक़ाह की तकलीफ़ का सबब होगी और कहीं मेरे क़रीब होने का ख़राब असर ब्रादराने तरीक़त (रूहानी भाई) के सेहत पर न पड़े। यह सोच कर उसने इरादा कर लिया कि मैं कहीं बाहर चला जाऊँ। और उसने सामाने सफ़र दुरूस्त कर लिया, लेकिन ख़ानक़ाह की जुदाई और हज़रत के फ़ैज़े सुहबत से महरूमी का उसे बड़ा रंज हुआ और रोने लगा। लोगों ने हज़रत से जाकर उसके हाल और बेचैनी का ज़िक्र किया। आपने मरीज़ को बुलाया और उसे तसल्ली व तशफ़्फ़ी दी। फिर एक प्याला पानी मंगा कर उस में अपना लुआबे देहन (थूक) डाल दिया और फ़रमाया कि इस पानी को अपने जिस्म पर लगाना। थोड़े दिन भी न गुज़रे थे कि जौहर ने शिफ़ा पाई और तन्दुरूस्त हो गया।

(महबूबे यज़दानी, पृ0: 64)

और फ़रमाते हैं कि एक मरतबा ख़ानक़ाह में अ़ली क़लन्दर नाम का एक फ़क़ीर क़लन्दरों की बड़ी जमाअ़त ले कर आया और हज़रत से पूछा कि आप अपने को जहाँगीर क्यों कहते हैं? हज़रत ने फरमाया कि मैं नहीं कहता, लोग कहते हैं। क्यों कहते हैं? अली क़लन्दर ने फिर पूछा। आपने फ़रमाया कि मुझे मेरे पीर ने इस ख़िताब से सरफ़राज़ फ़रमाया। वह खुद कहते थे, उनके कहने से दुनिया कहने लगी। आपके जहाँगीर होने का सुबूत क्या है? क़लन्दर ने एक और सवाल किया। हज़रत को जलाल आ गया। फ़रमाया सुबूत यही है कि मैं जहाँगीर भी हूँ और जांगीर भी। हज़रत के ऐसा फ़रमाते ही क़लन्दर ज़मीन पर गिरा और उस की रूह निकल गई। (महबूबे यज़दानी, पृ0: 72)

और लिखते हैं कि हज़रत ब़ल्ख़ की एक मस्जिद में ठहरे हुए थे। आपके असहाब (साथी) व ख़ुद्दाम और दुसरे बहुत से दुर्वेश व फ़ुक़रा भी मौजूद थे। बात-चीत के दौरान् अचानक आपने अपना मुबारक असा उठाया और बड़े गुस्से से मस्जिद की दीवार पर मारने लगे। लोग सख़्त हैरान हुए कि यह क्या माजरा है? थोड़ी देर के बाद हज़रत नूरूलऐन रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने इस अजीब वाक़िए के मुतअल्लिक़ आपसे पूछा, पहले तो आप ख़ामोश रहे फिर चन्द मिनट के बाद फ़रमाया कि मूसल में हमारा एक रूमी मुरीद मैदाने जंग में मसरूफ़ था। उसने मुझ से मदद चाही और मुझे याद किया। मैं उसकी दस्तगीरी कर रहा था। चुनाँचे हक़ तबारक व तआ़ला ने जिस लश्कर के साथ वह था उसको कामयाबी अ़ता फ़रमाई। कुछ लोगों ने वह तारीख़ लिख ली। थोड़े दिनों में एक ज़ख़्मी सिपाही उसी तरफ से आया उस से मालूम हुआ कि ठीक उसी तारीख़ पर जंग हुई थी और वलायते जहाँगीरी के तसर्रूफ से उसी लश्कर को फ़तह नसीब हुई।

(महबूबे यज़दानी, पृ0: 84)

इन वाक़िआत से हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर तौर पर साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे आलम में तसर्रूफ़ (अमल-दख़ल) की बेपनाह कुदरत बख़्शी है।

★★★

ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1013 हि0)

आप हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शैख़ अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के पीरो मुर्शिद हैं आप काबुल में 917 हि0 में पैदा हुए, आपके वालिदे माजिद (पिता) क़ाज़ी अब्दुस्सलाम भी जलीलुलक़द्र (बड़े) आलिम और बुज़ुर्ग थे। यूँ तो आप उवैसी मशरब (तरीक़े) के थे। आपकी रूहानी तरबियत बराहे रास्त सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम और ख़्वाज-ए-ख़्वाजगाँ हज़रत बहाउद्दीन नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान की रूहानियत से हुई। लेकिन ब ज़ाहिर आपने 'मावराउन्नहर' और हिन्दुस्तान के सैकड़ों मशाइख़ (बुज़ुर्गों) से फ़ैज़ हासिल किया। आख़िर में हज़रत ख़्वाजा अमकन्गी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि से फ़ैज़याबे तरीक़त हुए। आप शरीअ़त व तरीक़त के चाँद थे। आपका मज़ारे मुबारक दिल्ली में ज़ियारत-गाहे अवाम है। (माख़ूज़ अज़ हाशिया अन्फ़ासुलआरिफ़ीन उर्दू पृ0: 58)

हज़रत शाह अब्दुलअज़ीज़ साहिब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह के यहाँ चन्द मेहमान आए और आपकी ख़ानक़ाह में खाने की कोई चीज़ नहीं थी। हज़रत मेहमानों की मेहमान नवाज़ी के लिए फ़िक्र-मन्द हुए और ख़ादिम से खाने की चीज़ तलाश करवाने लगे। इत्तिफ़ाक़न एक नानबाई जिस की दुकान आपकी ख़ानक़ाह के क़रीब थी वह आपकी ज़रूरत पर बाख़बर हुआ तो फ़ौरन बेहतरीन क़िस्म की रोटियां और पुरतकल्लुफ़ तरीक़े से मुरग़्ग़न नहारी बना कर हज़रत की ख़िदमत

में पेश किया। ऐसे वक़्त में नानबाई की इस पेशकश पर आप बहुत खुश हुए और उस से फ़रमाया! "जो कुछ मांगना हो मांग ले" नानबाई ने अर्ज़ किया कि 'मुरा मिस्ले ख़ुद साज़ेद' यानी मुझ को अपनी तरह बना दें आपने फ़रमाया तू इस हालत को बरदाश्त नहीं कर सकता। कोई और चीज़ मांग ले। मगर नानबाई इसी बात का इसरार करता रहा, नहीं हुज़ूर! बस मुझे अपनी तरह बनाबें।

जब उसने बहुत ज़्यादा आजिज़ी की तो आख़िर हज़रत ख़्वाजा मजबूर हो कर उसको अपने हुजरे में ले गए और अपने जैसा होने का असर उसके ऊपर डाला। और जब हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाए तो हज़रत ख़्वाजा और नानबाई की शक्ल व सूरत, लिबास व क़द और आ़दत व तरीक़े में बाल बराबर फ़र्क़ नहीं था। लोगों को फ़र्क़ करना बहुत मुश्किल हो गया कि उस में ख़्वाजा कौन हैं और नानबाई कौन है? अलबत्ता इस क़द्र फ़र्क़ था कि हज़रत ख़्वाजा होश में थे। और नानबाई मदहोश व बेख़ुद था। (इस अजीब व ग़रीब वाक़िए की शुहरत हुई तो दूर व नज़दीक से देखने के लिए आने वालों का ताँता बंध गया।) यहाँ तक कि तीन रोज़ के बाद नानबाई का इन्तिक़ाल हो गया। (और हज़रत ख़्वाजा ने नानबाई से जो पहले फ़रमाया था कि तू मेरी हालत का बर्दाश्त करने वाला नहीं हो सकता वह हर्फ बहर्फ सही हुआ।

(तफ़सीरे अज़ीज़ी पार–ए–अम, पृ0: 245)

नानबाई को शक्ल व सूरत और वज़अ़ क़तअ़ (रहन-सहन) में अपनी तरह बना कर हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने अपना यह अक़ीदा अमलन साबित कर दिया ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे तसर्रुफ़ की ज़बरदस्त कुव्वत अ़ता फ़रमाई है।(तफ़सीरे अज़ीज़ी पाराएअम, पृ0: 245)

और हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि

तआला अलैहि लिखते हैं कि मेरे वालिदे माजिद (पिता) हज़रत शाह अब्दुर्रहीम ने फ़रमाया कि मुजद्दिद अल्फेसानी हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी से उनके पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की निस्वत एक नागवार बात सरज़द हुई। कहने वाले ने वह बात जूँ कि तूँ हज़रत ख़्वाजा की ख़िदमत में बयान कर डाली। यह सुनते ही उनके माथे पर बल पड़ गए और गुस्से के आलम में क़रीब पड़े हुए एक धागे को उठा कर ताक़त के साथ उस में गिरह लगादी। शैख़ रफ़ीउद्दीन मुहम्मद जो हज़रत ख़्वाजा की ख़िदमत में रहते थे और उन के मिज़ाज से आगाह थे। उन्हों ने उस धागे को उठा कर अपने पास रख लिया। चन्द रोज़ बाद शैख़ अहमद सरहिन्द क़ब्ज़ में मुबतला हो गए। और उसका सबब तलाश करने लगे।

जब अस्ल हक़ीक़त उन पर ज़ाहिर हुई तो वह दिल्ली तशरीफ़ लाए। और हज़रत ख़्वाजा के अहबाब (नज़दीकीयों) से उस बारे में शिफ़ारिश की दरख़्वास्त की मगर उनमें से कोई भी इस बात पर राज़ी न हुआ और उन लोगों ने कहा हम ख़्वाजा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किसी सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं कर सकते। अलबत्ता हज़रत ख़्वाजा के महबूब शैख़ रफ़ीउद्दीन ने इस बात को बड़ी ख़ुशउसलोबी (अच्छे तरीक़े) के साथ ख़लवत (तनहाई) में हज़रत ख़्वाजा की ख़िदमत में पेश किया और काफ़ी बातचीत करने के बाद उनकी नफ़रत व ग़ज़ब को दूर करने में कामयाब हो गए। हज़रत ख़्वाजा ने फ़रमाया क्या करूँ। वह धागा ही गुम हो गया है। शैख़ रफ़ीउद्दीन ने उसी लम्हा वही धागा पेशे ख़िदमत कर दिया। हज़रत ख़्वाजा ने उस की गिरह खोली तो उसी वक़्त शैख़ सरहिन्दी की बंधी क़ब्ज़ बदल गई और गौहरे मक़सूद (मक़सद) हासिल हो गया। (अन्फ़ासुलआरिफ़ीन, पृ0: 355)

इस वाक़िए से भी हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का अक़ीदा अपने तसर्रुफ़ के बारे में साफ़ वाज़िह है।

★★★

ख़्वाजा ख़ुर्द शैख़ अब्दुल्लाह का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान)

आपका असल नाम ख़्वाजा अब्दुल्लाह है चूँकि आप हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के छोटे साहबज़ादे हैं इस लिए ख़्वाजा ख़ुर्द के नाम से मशहूर हुए। आप जाहिरी और बातिनी उलूम (ज्ञान) के ख़ज़ाना थे और अपने वालिदे गिरामी (पिता) क़िबला के नक़्शे क़दम पर कारबन्द (चलते) रहे।

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि हज़रत वालिदे माजिद (पिता) फ़रमाया करते थे कि एक बार हम दोनों भाई हज़रत ख़्वाजा ख़ुर्द की ख़िदमत में हाज़िर थे कि उन पर भूक का ग़लबा हुआ जिस के सबब वह सबक़ पढ़ाने के क़ाबिल न रहे। अपने घर वालों से पूछा, कोई खाने की चीज़ मौजूद है? उन्होंने कहा हाँ बच्चों में से किसी बच्चे के लिए थोड़ा सा खाना पकाया है। फ़रमाया उस में से थोड़ा सा ले आओ। चुनाँचे प्याली में बहुत थोड़ा खाना लाया गया। आपने हाथ धोए और हाज़िरीन से कहा आइए मिल कर खाएं। सब को काफ़ी है। सब लोग तअज्जुब में आ गए। हम लोगों को दुसरे अंदाज़ में दोबारा इशारा किया। हम चले गए और हम तीनों ने मिल कर खाया, यहाँ तक कि सब सेर (पेट भरा) हो गए और प्याली में फिर भी कुछ बच रहा जो बच्चे के लिए भेज दिया गया।

(अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पृ0: 61)

और लिखते हैं कि हज़रत वालिदे माजिद ने फ़रमाया कि एक शख़्स हज़रत ख़्वाजा ख़ुर्द रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि बादशाह मुझे एक मुहिम पर भेज रहा है। दुश्मन की तादाद ज़्यादा है और मैं जंग के सामान से खाली हूँ मगर जाने से इनकार भी करने की गुन्जाइश नहीं। आप तवज्जह फ़रमाइए कि यह मुसीबत टल जाए। आपने मज़ाक़ के तौर पर फ़रमाया कुछ नक़्दी पेश करो ताकि हमारा दिल तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह हो जाए। इत्तिफ़ाक़न उस वक़्त उस के पास कुछ न था। दोस्तों से भी उसे कुछ न मिल सका। कमर से लटका हुआ ख़नजर गिरवी रख कर दस रूपए हज़रत की ख़िदमत में पेश किए।

आपने वक़्त मुक़र्रर फ़रमा दिया और फरमाया कि फलाँ दिन जंग लड़ो दुश्मन की ज़्यादती और दोस्तों की कमी से ख़ौफ़ मत खाओ, अपनी जगह पर मज़बूत रहो। और फिर मुझे फ़रमाया कि जब मुक़र्रर की गई तारीख़ आए तो मुझे ख़बर करना। जब वह वक़्त आया मैं ने याद दिलाया। हुजरे में अकेले बैठ गए और मुझे दरवाज़े पर बिठा दिया कि कोई शख़्स ख़लल अंदाज़ न हो। कुछ देर खुश हो कर बाहर निकले और फ़रमाया कि दुश्मन की तादाद बहुत ज़्यादा थी और दोस्त बहुत ही कम। पहले हमले में दोस्तों को शिकस्त (हार) का मुंह देखना पड़ा मगर वह अज़ीज़ (प्यारा) शिकस्त से घबराया नहीं। न ही अपनी जगह से उखड़ा। हम भी उसी हालत में वहाँ पहुंच गए। अलहम्दु लिल्लाह फ़तह नसीब हुई। दुश्मन काफ़ी तादाद में क़त्ल हुए और बचे हुए लश्कर नें शिकस्त (पराजय) को ग़नीमत जाना। काफ़ी अरसा बाद उस अज़ीज़ का ख़त पहुंचा जिस में यह किस्सा पूरी तफ़सील के साथ लिखा हुआ था। नज़राने के तौर पर उसने बहुत

सा माल भेजा लेकिन आपने क़ुबूल न फ़रमाया। (तर्जमा अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पृ0: 61)

इन वाक़िआत से हज़रत ख़्वाजा ख़ुर्द रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपना यह अक़ीदा अमली तौर पर साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला हमें तसर्रूफ़ व इख़्तियार की क़ुदरत बख़्शी है।

★★★

शैख़ इब्न मुजद्दिदे अल्फ़े सानी का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान)

आप नक़्शबन्दी सिलसिले के इमाम हैं। अपने वालिदे गिरामी हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़ेसानी शैख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी से इल्मी फ़ैज़ और रूहानी सिलसिला हासिल किया।

आप पैदाइशी वली थे। माह रमज़ान में दूध नहीं पिया करते थे। तीन साल की उमर में कलम-ए-तौहीद बयान किया करते थे, सिर्फ़ तीन माह में कुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया था और सतरा साल की उम्र में ज़ाहिरी और बातिनी (दुनियावी व दीनी और रूहानी) तालीम मुकम्मल फ़रमाली थी।

(जामिए करामात औलिया पृ0: 814)

हज़रत अ़ल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि आप के एक ख़लीफ़ा ख़्वाजा मुहम्मद सिद्दीक़ घोड़े पर सवार सफ़र कर रहे थे। घोड़ा बिदका तो आप गिर गए मगर पाँव रकाब में फंस गया। घोड़ा दौड़ने लगा। उन्हें हलाकत का यक़ीन हो गया तो अपने मुर्शिद से इमदाद मांगी, कहते हैं मैं ने देखा कि हज़रत मुहम्मद मासूम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि तशरीफ़ ले आए हैं, घोड़े को रोक लिया है और मुझे उस पर

सवार कर दिया है। और यही शैख़ मुहम्मद सिद्दीक़ दरिया में गिर गए तैरना नहीं जानते थे। डूबने लग गए। आप को मदद के लिए पुकारा। आप तशरीफ़ लाए हाथ पकड़ा और डूबने से बचा लिया।

और एक दिन आप अपने साथियों के हमराह अपनी सराए में तशरीफ़ फ़रमा थे आप का हाथ मुबारक और आस्तीन वग़ल तक तर हो गए। हाज़िरीन हैरान हुए और आप से सबब पूछा। हज़रत ने फ़रमाया एक मुरीद ताजिर कश्ती में सवार था वह डूबने लग गई तो उसने मदद के लिए पुकारा। मैं ने उसे डूबने से बचाया है। इस लिए यह आस्तीन और हाथ तर हो गए हैं। यह ताजिर (व्यापारी) एक मुद्दत के बाद सरहिन्द पहुंचा और इस वाक़िए की हज़रत के इरशाद के मुताबिक़ ख़बर दी।

और आपके दौर में एक जादूगर मजूसी का बड़ा चर्चा हुआ कि वह आग जला कर खुद और अपने अक़ीदतमन्दों को आग में ले जाता है। आग उन्हें नहीं जलाती। लोग उस की वजह से फ़ितने में मुबतला हो गए। हज़रत ने बहुत ज़्यादा आग जलाने का हुक्म दिया फिर एक मुरीद को उस में दाख़िल होने का हुक्म फ़रमाया। वह ज़िक्र करते हुए आग में दाख़िल हो गया। आग गुलज़ार हो गई और काफ़िर मजूसी हैरान हो गया।

(जामिए करामाते औलिया उर्दू पृ0: 814)

हज़रत अल्लामा निवहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि और इरशाद फ़रमाते हैं कि आप की ख़िदमत में एक नाबीना हाज़िर हो कर दुआ़ का तलबगार हुआ ताकि उसकी नज़र वापस मिल जाए। आपने अपना थूके मुबारक ले कर उस की आँखों पर लगाया और फ़रमाया घर जा कर आँखें खोलना। उसने आपके फ़रमाने के मुताबिक़ किया तो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उन में रौशनी आगई।

और आपकी मजलिस में ज़िक्र हुआ कि फ़ुलाँ राफ़ज़ी खुल्लम खुल्ला हज़रात शैख़ैन करीमैन (यानी सिद्दीके अकबर व उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा) को गाली बकता है। हज़रत यह सुनते ही गज़बनाक हो गए। आप के सामने एक तरबूज़ पड़ा हुआ था। आपने छुरी ले कर फ़रमाया इस ख़बीस को ज़िबह करदे। आप ने जिस वक़्त छुरी उस तरबूज़ पर चलाई उसी वक़्त वह राफ़ज़ी मर गया। (जामिए करामाते औलिया उर्दू पृ0: 815)

हज़रत मुहम्मद मासूम रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने इन वाक़िआत से अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया ख़ुदा-ए-तआ़ला ने हमें काएनात (संसार) में तरह तरह के तसर्रूफ़ात (हुकूमत) का इख़्तियार अता फ़रमाया है।

★★★

शैख़ वारिस अ़ली शाह का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1323 हि0)

आप हिन्दुस्तान के मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं। आपके आबा व अजदाद (पूर्वज) नीशापूर के इज़्ज़तदार और साहिबे कमाल सय्यदों में से थे। सय्यद अशरफ़ अबूतालिब नीशापुर से हिन्दुस्तान आ कर किन्तौर ज़िला बाराबन्की में आबाद हुए। आप की आठवीं पुश्त में सय्यद अब्दुल अहद अलैहिर्रहमह 1127 हि0 में किन्तौर से देवा शरीफ़ चले आए। यहीं हज़रत हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि 1234 हि0 में पैदा हुए। आपके वालिदे गिरामी (पिता) का नाम सय्यद क़ुर्बान अ़ली था और वालिदा (माँ) मुहतरमा का नाम सय्यदा बीबी सकीना उर्फ़ चांदन बीबी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहा।

आपकी उम्र दो साल से कुछ ज़्यादा थी कि शफ़ीक़ बाप का साया सर से उठ गया और फिर तीन साल की उम्र में जब वालिदा का भी इन्तिक़ाल हो गया तो आपकी दादी ने आपकी परवरिश फ़रमाई, पांच साल की उम्र में आपकी तालीम शुरू हुई। हज़रत अमीन अली शाह से दो साल में हिफ़्ज़े कुरआन मुकम्मल किया। और मौलवी इमाम अली निवासी सतरख से दर्से निज़ामिया (आलिम-फ़ाज़िल) की इब्तिदाई किताबें आप पढ़ रहे थे कि सात आठ या दस साल की उम्र में आप की दादी साहिबा का इन्तिक़ाल हो गया तो आपके बहनोई हज़रत हाजी सय्यद ख़ादिम अली शाह क़ादरी चिश्ती (जो बाद में आपके पीर व मुर्शिद भी हुए) देवा शरीफ़ से आप को लखनऊ ले आए और तालीम का सिलसिला बदस्तूर जारी रखा। बाज़ किताबें आपने हज़रत शाह साहिब से पढ़ीं और ख़ुद हज़रत सय्यद ख़ादिम अली शाह जो हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के होनहार शागिर्द थे आपको निहायत दिलजोई से पढ़ाया।

लेकिन किसी यक़ीनी रवायत से तफ़सील के साथ यह नहीं मालूम हो सका कि तालीम का आख़िरी नतीजा क्या हुआ और बज़ाहिर आपने कहाँ तक पढ़ा। क्योंकि बाज़ हज़रात कहते हैं कि आपने मुकम्मल इल्म हासिल किया। बाज़ का क़ौल (कहना) है कि दर्सी (कोर्स वाली) किताबें ख़त्म होने के क़रीब थीं कि जोशे इश्क़ ने बेक़रार किया तो सिलसिल-ए-तालीम ख़त्म फ़रमा कर आपने मुल्के अरब की सियाहत (सैर) का क़स्द किया बल्कि बाज़ हज़रात का यह भी ख़याल है कि आपने सिर्फ़ चन्द इब्तिदाई किताबें पढ़ कर तअल्लुक़ाते दुनिया से परहेज़ (दूरी) फ़रमाया और 1253 हि0 में हरमैन तय्यबेन (मक्का-मदीना) की हाज़िरी के शौक़ में वहाँ का पैदल सफ़र किया। लेकिन बाज़ हालात और अक्सर इरशादात से

ज़ाहिर होता है कि आप को इल्मे अदब (साहित्य) में कमाल और तफ़सीर व हदीस में काफ़ी महारत थी।

आपने हिजाज़े मुक़द्दस (मक्का-मदीना) का तीन बार सफ़र किया और हर मरतबा के सफ़र में कई-कई साल के बाद वापस आए। इस तरह आपने कुल सात या ग्यारह हज किए। ज़िन्दगी भर मुजर्रद (कुंवारे) रहे कभी निकाह नहीं किया और हज के पहले ही सफ़र में आपने आम लिबास को छोड़ दिया फिर हमेशा एहरामपोश (बेसिला कपड़ा पहनना) रहे। ज़र्दरंग (पीले रंग) की बेग़ैर सिली हुई एक लुंगी पहनते रहे और उसी रंग की एक दूसरी लुंगी ओढ़ते, निहायत ही सादा फ़क़ीराना ज़िन्दगी गुज़ारी। 1323 हि0 में दुनिया से रुख़्सती हुई। देवा शरीफ़ ज़िला बारा बन्की (यू0 पी0) में आप का मज़ारे मुबारक ज़ियारत गाहे ख़ास व आम है। (माख़ूज़ अज़ सईयुलहारिस फ़ी रियाहीनुलवारिस)

हज़रत हाजी वारिस अली शाह रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने ख़ुद बयान फ़रमाया कि एक रोज़ मक्का मुअज़्ज़मा में हम "ग़ारे सौर" की तरफ़ गए तो देखा कि एक बूढ़ी औरत निहायत दर्दनाक आवाज़ से रो रही है। पूछा तो मालूम हुआ कि अभी उस का जवान बेटा मर गया है। हमने उसको सब्र की हिदायत की तो उसने कहा हकीम साहिब सब्र इस वीराने में कहाँ मिलेगा और न मेरे पास पैसा है जो मैं ख़रीदूँ। आपके पास अगर कोई दवा हो तो अल्लाह की राह पर इसको खिलादो कि ज़िन्दा हो जाए यही मेरा एक लड़का है, हम ने लड़के के मुंह पर से कपड़ हटा कर ठन्डा पानी छिड़क दिया तो उस ने आँखें खोल दीं और बात करने लगा। बुढ़िया तो जोशे मुहब्बत में उस से लिपट गई और हम वहाँ से आगे बढ़ गए। शायद उस को सकता (क़ौमा) था।

(रियाहीनुलवारिस पृ0: 72)

और भरोसा मंद हज़रात का बयान है कि मौलवी मुहम्मद यह्या साहब वारसी वकील व रईस अज़ीमाबाद (पटना) जो हज़रत हाजी साहिब क़िबला रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि के बड़े मुख़लिस मुरीद थे। हज़रत ने उन को वजअ़दार का ख़िताब (पदवी नाम) अ़ता फ़रमाया था इस लिए कि मौलवी साहब क़िब्ला जो तरीक़ा इख़्तियार करते उस पर बहरहाल बड़ी सख़्ती के साथ अ़मल करते। यहां तक कि कार्तिक मेला में जिस तारीख़ को वह पहली मरतबा आए थे उसी तारीख़ को वह हमेशा हाज़िर होते थे। एक मरतबा ऐसा हुआ कि उनकी लड़की हैज़े की बीमारी में मुबतला थी और हाज़िरी की तारीख़ आ गई तो मौलवी साहिब लड़की को उसी बीमारी की हालत में छोड़ कर देवा शरीफ़ चले आए। जिस के दूसरे रोज़ मरीज़ा के डा0 असद अ़ली ख़ाँ का तार आया कि लड़की का इन्तिक़ाल हो गया। जब यह ख़बर हज़रत को पहुँची तो मौलवी साहब को बुलाकर फ़रमाया। "मौलवी साहब! तुम ने तो अपनी वज़अदारी दिखा दी लेकिन अक्सर मरीज़ को सक्ता (क़ौमा) हो जाता है और तीमारदार समझते हैं कि वह मर गया है।" उस वक़्त हाज़िरीन ने उस का ख़्याल नहीं किया कि इस इरशाद के पर्दे में हज़रत ने क्या तसर्रूफ़ फ़रमाया। मगर तीसरे रोज़ मौलवी साहब के निसबती (संबन्धी) भाई का ख़त आया कि छः घन्टे के बाद लड़की ज़िन्दा हो गई और अब अच्छी है।

(रियाहीनुलवारिस पृ0: 109)

इन वाक़िआ़त से हज़रत हाजि वारिस अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने अ़मली तौर पर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने मुझे मुर्दे को ज़िन्दा करने की ताक़त बख़्शी है। रही सक्ता (क़ौमा) की बात तो वह आपने आ़जज़ी व ख़ाकसारी के तौर पर फ़रमाई है। जैसा कि ज़ाहिर है।

★★★

इल्मे ग़ैब

(गुप्त बातें)

इल्मे ग़ैब उन बातों के जानने को कहते हैं जिनको बन्दे आ़दतन अपनी अक़्ल और अपने हवास से न मालूम कर सकें। अल्लामा राज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि बयान फ़रमाते हैं "जमहूर (अक्सर) मुफ़स्सिरीन का क़ौल (कहना) है कि जो हवास से छुपा हुआ हो" वह ग़ैब है।

अंम्बिया-ए-किराम के अक़ीदे

हुज़ूर सय्यदे आलम का अक़ीदा

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम, इन्तिक़ाल: 11 हि0 मुताबिक़ 632 ई0)

हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का इल्मेग़ैब के बारे में क्या अक़ीदा था उसे जानने के लिए नीचे दी गई हदीसें मुलाहज़ा हों।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रजियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि "एक बार हुज़ूर सल्लल्लाह

शरह अक़ाइद नस्फ़ी में है कि "वली अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात के आरिफ़ (ज्ञानी) होते हैं और जहाँ तक मुम्किन हो सके ऐसी इबादतों पर हमेशगी बरतते हैं जो गुनाहों से महफ़ूज़ रखे और लज़्ज़ात व शहवात (घटया ख़्वाहिश) में इन्हिमाक (लगाव) नहीं रखते।"

तआला अलैहि वसल्लम हम लोगों (मजमे) में खड़े हुए तो आपने हमें मख़लूक़ की पैदाइश से बताना शुरू किया यहां तक कि जन्नती अपनी मन्ज़िलों पर जन्नत में दाखिल हो गए और जहन्नमी अपने ठिकानों में पहुंच गए, जिस ने इस बयान को याद रखा उस ने याद रखा और जो भूल गया वह भूल गया।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि० 1 पृ० 453)

और सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि"अल्लाह तआला ने मेरे लिए ज़मीन समेट दी तो मैं ने पूरब से पश्चिम तक ज़मीन का तमाम हिस्सा देख लिया। और वहुत जल्द मेरी उम्मत की हुकूमत वहा तक पहुंचेगी जहाँ तक कि ज़मीन मेरे लिए समेटी गई।" (मुस्लिम शरीफ़ पृ० 390)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है उन्हों ने फ़रमाया कि"नवी-ए-करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम, हज़रत अवू वक्र, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान"उहुद पहाड़" पर चढ़े तो वह उनके साथ हिला। हुज़ूर ने ठोकर मार कर फ़रमाया उहुद ठहर जा इस लिए कि तेरे ऊपर एक नवी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।" (बुख़ारी शरीफ़ जि० 1 पृ० 519)

और हज़रत अवू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मक्का जीतने के दिन मदीना शरीफ़ के अन्सार से मक्का मुअज़्ज़मा में फ़रमाया कि"मेरी ज़िन्दगी वहाँ है जहाँ तुम लोगें गो की ज़िन्दगी है और मेरी वफ़ात (इन्तिक़ाल) वहाँ है जहाँ तुम्हें इन्तिक़ाल करना है।" (मुस्लिम, मिश्कात पृ० 577)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जंग के लिए

जब मैदाने बद्र में उतरे तो फ़रमाया कि"यह फलाँ के ढ़ेर होने की जगह है और दस्ते मुवारक ज़मीन पर रखते हुए बताया कि यहाँ और यहाँ। हज़रत अनस ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दस्ते मुवारक रखने की जगह से कोई इधर उधर न हुआ।" (मुस्लिम, मिशकात पृ० 531)

और हज़रत सहल विन साअ्द रज़ियल्लाह तआला अन्हु से रवायत है कि"हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जंगे ख़ैबर के मौक़ा पर फ़रमाया कि कल यह झन्डा मैं एक शख़्स को दूँगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआला जीत अता फ़रमाएगा।

(बुख़ारी शरीफ़ जि० 2 पे० 605, मिश्कात पे० 563)

और हज़रत इब्ने अव्वास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रवायत है उन्होंने फ़रमाया कि मुझ से मेरी वालिदा (माता) हज़रत उम्मुलफ़ज़ल रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने हदीस बयान की कि"मैं नवी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने हो कर गुज़री। हुज़ूर ने फ़रमाया तू हामिला (गर्भवती) है और तेरे पेट में लड़का है जव वह पैदा हो तो उसे मेरे पास लाना। उम्मुलफ़ज़्ल ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे हमल कहाँ से आया? हालाँकि कुरैश ने कस्में खाली हैं कि वह औरतों के पास नहीं जाऐंगे। फ़रमाया वात वही है जो हम ने तुम से इरशाद फ़रमाई। उम्मुलफ़ज़्ल ने कहा जव लड़का पैदा हुआ मैं ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुई हुज़ूर ने बच्चे के दाहिने कान में आज़ान और वाएं में इक़ामत व तकवीर फ़रमाई और अपना थूके मुवारक उस के मुंह में डाला और उसका नाम अव्दुल्लाह रखा और फ़रमाया खुलफ़ा के वाप को ले जा। मैं ने हज़रत अव्वास से हुज़ूर का इरशाद वयान किया वह ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि उम्मुलफ़ज़्ल ने ऐसा कहा। फ़रमाया वात वही है जो हमने उन

से कही। यह ख़लीफों का बाप है यहाँ तक कि उन में से सफ़्फ़ाह होगा। यहाँ तक कि उनमें से मेहदी होगा।"

(दलाइलुन्नुबुव्वत, अद्दौलतुलमक्किया पे0: 153)

इन अहादीसे करीमा में जनम से ही जन्नतियों के जन्नत में दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में दाखिल होने तक की ख़वर देना, पूरव से पश्चिम तक ज़मीन के सारे हिस्से को देखना पहले हज़रत उमर और हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के शहीद होने की खबर देना, फ़रमाना कि मेरी वफ़ात वहीं होगी, मदीना तय्यवा में जहाँ अन्सार की मौत होगी, मैदान बद्र में एक दिन पहले वता देना कि यहाँ फलाँ पछाड़ा जाएगा और यहाँ ढेर होगा, ख़ैवर में यह फ़रमाना कि मैं कल जिस को झंडा दूँगा उस के हाथ पर फ़तह होगी और उम्मुलफ़ज़्ल के हामिला (गर्भवती) होने फिर उस बच्चे के अबुल खुलफ़ा (ख़लीफ़ाओं के बाप) होने यहाँ तक कि उस की नस्ल से सफ़्फ़ाह और मेहदी के होने की ख़वर देना सव ग़ैब की ख़वरें हैं जिन से हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सब को आगाह (वा ख़वर) फ़रमाया। साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह अक़ीदा था कि हम को इल्मे ग़ैव हासिल है वरना इन वातों को वह अपनी ज़वान पर हर्गिज़ नहीं लाते।

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि अल्लाह के महबूब दाना-ए-गुयूव सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "खुदा की क़सम तुम्हारा रूकू और खुशू मुझ से पोशीदा नहीं। मैं पीठ के पीछे भी देखता हूँ।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि0: 1 पे0: 59, 102)

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह अक़ीदा है कि खुशू जो

दिल की एक कैफ़ियत का नाम है वह भी उन से पोशीदा (गुप्त) नहीं आप उसे जानते हैं। और यह इल्मे ग़ैब है फिर इस हदीस शरीफ़ से हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का यह अक़ीदा भी साबित हुआ कि वह पीठ पीछे भी देखते हैं।

अगर कोई यह ख्याल करे कि हालते नमाज़ में आँख के कोने से हुज़ूर ने देख लिया तो फ़रमाया कि मैं पीठ के पीछे भी देखता हूँ। तो यह ख़्याल ग़लत है। इस लिए कि सफ़ों के आख़िर में ग़लती करने वाले को हुज़ूर ने देखा और तन्वीह फ़रमाई जैसा कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस शरीफ़ रवायत है कि "रसुलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हम लोगों को जुहर की नमाज़ पढ़ाई। और सफ़ों के आख़िर में एक शख़्स था उस ने नमाज़ बुरी तरह पढ़ी। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि सल्लम नें सलाम फेरा तो उसे आवाज़ दी कि ऐ फलाँ! क्या अल्लाह से नहीं डरता। क्या तू नहीं देखता कि कैसा नमाज़ पढ़ता है? तुम यह समझते हो कि मुझ पर तुम्हारा कोई अमल छुपा रहता है। खुदा की क़सम में पीछे ऐसे ही देखता हूँ जैसे कि अपने आगे देखता हूँ।" (मिश्कात शरीफ़ पृ0: 77)

ग़ौर कीजिए। हदीस शरीफ़ में अहले सफ़ का ज़िक्र नहीं कि पहली सफ़ के आख़िर में यह इन्सान था तो हुज़ूर ने आँख के कोने से उस को देख लिया बल्कि आख़री सफ़ का वयान है यानी वह शख़्स आख़िरी सफ़ में था लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि सल्लम ने अपनी पीठ के पीछे से उस को देख लिया। दर्मियान की सफ़ें भी हुज़ूर के देखने में रुकावट नहीं पैदा कर सकीं।

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूत व मुल्क में कोई शै नहीं वह जो तुझ पे अयाँ नहीं

★★★

हज़रत ईसा का अक़ीदा

(अलैहिस्सलातु वस्सलाम)

सुर-ए-आले-इमरान में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने वनी इस्राईल से फ़रमाया कि "और मैं तुम्हें वताता हूँ जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जमा करके रखते हो।"

(पा0: 3 रूकू 13)

हज़रत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादावादी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान इस आयाते करीमा की तफ़सीर में लिखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आदमी को वता देते थे जो वह कल खा चुका और आज खाएगा। और जो अगले वक़्त के लिए वना कर रखा है। आपके पास वच्चे वहुत से जमा हो जाते थे आप उन्हें वताते थे कि तुम्हारे घर वालों ने फ़लाँ-फ़लाँ चीज़ खाई है। फलाँ चीज़ तुम्हारे लिए उठा रखी है। वच्चे घर जाते रोते और घर वालों से वह चीज़ मांगते। घर वाले वह चीज़ देते और उन से कहते कि तुम्हें किस ने वताया? वच्चे कहते हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने, तो लोगों ने अपने वच्चों को आप के पास आने से रोका और कहा वह जादूगर हैं, उनके पास न वैठो। और एक मकान में वच्चों को जमा कर दिया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वच्चों को तलाश करते हुए तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा वह यहाँ नहीं हैं। आपने फ़रमाया कि फिर उस मकान में कौन है? उन्होंने कहा सूवर हैं। फ़रमाया ऐसा ही होगा। अव जो दरवाज़ा खोलते हैं तो सूवर ही सूवर थे।

आयते मुवारका और ज़िक्र किए गए वाकिए से मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का यह अक़ीदा था कि अल्लाह तआला ने मुझे इल्मे ग़ैब की नेअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाया है।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा और उम्महातुल मोमिनीन का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़नहुन्न)

हज़रत विन अव्वास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रवयात है कि जव सूर-ए-मुवारका "इज़ा जाअ नसरूल्लाहि" नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को वुलाया और उनसे फ़रमाया कि "मुझे मेरी वफ़ात की ख़वर दी गई है तो वह रोने लगीं। हुज़ूर ने फ़रमाया न रोओ। इस लिए कि मेरे घर वालों में से सव से पहले तुम मुझ से मिलोगी। तो वह हंस पड़ीं।"

(मिश्मात शरीफ़- पृ0: 549)

और हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रवायत हैं कि "उम्महातुल मोमिनीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हम में कौन सी वीवी की आप से आख़िरत में सव से पहले मुलाक़ात होगी? हुज़ूर ने फ़रमाया जिस के हाथ सव से लम्वे हैं। यह सुन कर उम्महातुलमोमिनीन ने एक दूसरे के हाथ नापे तो पता चला कि हज़रत सौदा के हाथ सव से लम्वे हैं लेकिन वाद के वाक़िआ़त ने वताया कि लम्वे हाथ होने से मुराद सदक़ा देने में ज़्यादती थी और हम में सव से पहले इन्तिक़ाल करने वाली हज़रत ज़ैनव थीं जो सदक़ा देने को वहुत महवूव रखती थीं।"

(वुख़ारी जि0: 1 पृ0: 191 मिश्कात पृ0: 165)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इस ख़बर पर कि "मेरे घर वालों में से तुम सब से पहले मुझ से मिलोगी" हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का खुश हो कर हंसना। और उम्महातुल मोमिनीन का हुज़ूर से दर्याफ़्त करना कि हम बीवियों में से कौन आख़िरत में सब से पहले आप से मुलाक़ात करेगी? और फिर हुज़ूर सललल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशाद पर एक दूसरे के हाथ का नापना इन सारे वाक़िआत से खुल्लम खुल्ला साबित है कि हज़रत फ़ातिमा ज़हरा और (मुसलमानों की माएं) रज़ियल्लाहु तआला अनहुन्न का यह अक़ीदा था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ग़ैब (गुप्त) का इल्म है और जो उन्हों ने फ़रमाया है वही हो कर रहेगा।

★★★

सहाब-ए-किराम का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हुम)

जिन हदीसों में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब का बयान है सहाबा ने उनको ज़िक्र किया जिस से साबित हुआ कि सहाब-ए-किराम का भी यही अक़ीदा है कि हुज़ूर को इल्मेग़ैब है। उस के अलावह खुद सहाबा के वाक़िआत से भी ज़ाहिर होता है कि उनके नज़दीक यह अक़ीदा सही है कि अल्लाह के महबूब बन्दों को ग़ैब का इल्म हुआ करता है।

★★★

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, विसालः 13 हि0)

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रवायत है उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने मर्जे मौत में मुझे वसियत करते हुए इरशाद फ़रमाया कि मेरी प्यारी बेटी मेरे पास जो कुछ माल था आज वह माल वारिसों का हो चुका है। मेरी औलाद में तुम्हारे दो भाई अब्दुर्रहमान व मुहम्मद हैं और तुम्हारी दो बहनें हैं। लिहाज़ा मेरे माल को तुम लोग कुरआन मजीद के फ़रमान के मुताबिक़ तक़सीम करके अपना अपना हिस्सा ले लेना। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि अब्बा जान मेरी तो एक ही बहन असमा है, यह मेरी दूसरी बहन

कौन है? आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी सौतेली माँ हवीबा बिन्ते खारज़ा जो हामिला (गर्भवती) है उसके पेट में लड़की है, वही तुम्हारी दूसरी बहन है। चुनाँचे आपके विसाल फ़रमाने के बाद आपके फ़रमान के मुताबिक़ हवीबा बिन्त खारज़ा के पेट से लड़की (उम्मेकुलसूम) ही पैदा हुई।

(मुअत्ता इमाम मुहम्मद बावुन्नहली पृ०: 348)

इस हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि हज़रत अबु वक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस बात का इल्म था कि मैं इसी मर्ज़ में इन्तिक़ाल कर जाऊँगा, इसी लिए आपने फ़रमाया कि आज मेरा माल मेरे वारिसों का हो चुका है। और आप यह बात यक़ीन के साथ जानते थे कि उन की बीवी हवीबा के पेट में लड़का नहीं है लड़की है। और उन दोनों बातों का जानना यक़ीनन इलमे ग़ैब है जिन को बयान फरमा कर उन्हों ने अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के अलावा दूसरे ख़ास बन्दों को भी ग़ैब का इल्म होता है। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

★★★

हज़रत फ़ारूक़े आज़म का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु 23 हि०)

अल्लामा नईम ने दलाइलुन्नुबूव्वत में हज़रत उमर बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत किया है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत की है कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जुमा का खुतवा फरमा रहे थे। यकायक आपने दर्मियान में खुतवा छोड़ कर

तीन बार यह फ़रमाया।"ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ़ जाओ। ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ़ जाओ। ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ़ जाओ। इस तरह हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पुकार कर पहाड़ की तरफ़ जाने का हुक्म दिया और उसके बाद फिर खुतबा शुरू फ़रमाया।"

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बाद नमाज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दर्याफ़्त किया कि आप तो खुतबा फ़रमा रहे थे फिर यकायक बुलन्द आवाज़ से कहने लगे। ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ। तो यह क्या मुआमला था? हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया क़सम है खुदा-ए-तआला की मैं ऐसा कहने पर मजबूर हो गया था कि"मैं ने मुसलमानों को देखा कि वह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और कुफ़्फ़ार उन को आगे और पीछे से घेरे हुए हैं, यह देख कर मुझ से ज़ब्त न हो सका और मैं ने कह दिया ऐ सारयि! पहाड़ की तरफ़ जाओ।"

इस वाक़िए के कुछ रोज़ बाद हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ासिद एक ख़त ले कर आया जिस में लिखा था कि हम लोग जुमा के दिन कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे और क़रीब था कि हम शिकस्त खा जाते कि ठीक जुमा की नमाज़ के वक़्त हम ने किसी की अवाज़ सुनी "ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ हट जाओ।"उस आवाज़ को सुन कर हम पहाड़ की तरफ़ चले गए तो खुदा-ए-तआला ने काफ़िरों को शिकस्त दी, हम ने उन्हे क़त्ल कर डाला। इस तरह हम को फ़तह (विजय) हासिल हो गई।

(तारीख़ुलख़ुलफ़ा पृ०: 86 और मिश्कात शरीफ़ पृ०: 546 पर यही वाक़िआ इख़्तिसार के साथ है)

और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

मुल्के रूम में एक लश्कर भेजा। उस के बाद एक दिन अचानक मदीना तय्यबा में बुलन्द आवाज़ से दो मरतबा फ़रमाया"ऐ शख़्स! मैं तेरी पुकार पर हाज़िर हूँ।" कुछ दिनों बाद वह लश्कर मदीना तय्यबा वापस आया। आपने उस लश्कर के सिपह सालार (कमान्डर) से फ़रमाया कि जिस सिपाही को तुम ने ज़बरदस्ती दरिया में उतारा था और उस ने या उमराहु या उमराहु! पुकारा था उस का क्या वाक़िआ था? सिपह सालार ने अर्ज किया मुझे अपनी फ़ौज को दरिया के पार उतारना था इस लिए मैं ने उस को पानी की गहराई का अंदाज़ा करने के लिए दरिया में उतरने का हुक्म दिया था मगर मौसम बहुत सर्द था और ज़ोरदार हवा चल रही थी इस लिए उसको सर्दी लग गई और उस ने दो मरतबा बुलन्द आवाज़ से "या उमराहु! या उमराहु!" कहा और इन्तिक़ाल कर गया। खुदा गवाह है कि मैं ने हर्गिज़ उस को हलाक करने की नियत से दरिया में उतरने का हुक्म नहीं दिया था। आपने फ़रमाया ऐसे मौसम में उस सिपाही का दरिया की गहराई में उतारना क़त्ले ख़ता के हुक्म में है। लिहाज़ा अपने माल से तुम उस के वारिसों को उस का ख़ून बहा (जान का बदला) अदा करो।

(इज़ालतुलखिफ़ा पृ0: 172)

इन वाक़िआत से मालूम हुआ कि निहाबन्द जो मुल्के ईरान में है वहाँ पर लड़ाई करने वाले मुजाहिदीने इस्लाम को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना मुनव्वरा से देखा। और मुल्के रूम में सिपाही को ज़बरदस्ती दरिया में उतारे जाने को वहीं से मुलाहज़ा फ़रमाया। और यह इल्मे ग़ैब है जिसे आपने लोगों पर जाहिर फरमा कर साबित कर दिया कि ग़ैरुल्लाह के लिए इल्मे ग़ैब का अक़ीदा हक़ है, इसे शिर्क व कुफ़्र समझना बद-मजहबी है।

★★★

हज़रत उसमान ग़नी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, विसाल 35 हि0)

हज़रत इमाम मालिक अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने फ़रमाया कि एक दिन हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तय्यबा के क़ब्रिस्तान"जन्नतुल बक़ी" के उस हिस्से में तशरीफ़ ले गए जिस को "हिश कौकब" कहा जाता है। आपने वहां खड़े हो कर एक जगह की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाय कि "बहुत जल्द यहां एक नेक मर्द दफ़न किया जाएगा।"

इस वाक़िए के कुछ ही रोज़ बाद आप की शहादत हो गई। बुलवाइयों ने इस क़द्र हंगामा किया कि आपका जनाज़ा मुबारक न तो हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौज़ए अक़दस के क़रीब में दफ़न किया जा सका और न जन्नतुल बक़ी के उस हिस्से में कि जहां बड़े-बड़े सहाब-ए-किराम दफ़्न किए गए थे बल्कि सब से दूर अलग-थलग "हिश कौकब" में जिस जगह की जानिब आपने इशारा फ़रमाया था वहीं दफ़्न किया गया। (इज़ालतुलखिफ़ा पृ0: 227)

हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में यह फ़रमाना कि "यहां एक मर्दे सालिह यानी मैं दफ़्न किया जाऊँगा" अपने इल्मे ग़ैब का ज़ाहिर करना है जिस से साबित हुआ कि उन का भी यही अक़ीदा था कि अल्लाह के नेक बन्दों को ग़ैब का इल्म होता है। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

★★★

हज़रत अली मुर्तज़ा का अक़ीदा

(कर्रमल्लाहु तआला वजहू, विसाल 40 हि0)

हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान फ़रमाते हैं कि कूफ़ा में एक रोज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़जर की नमाज़ के बाद एक शख़्स से फ़रमाया फलाँ मकाम पर मस्जिद के पहलू में एक मकान है। उस में एक मर्द और एक औरत तुम्हें लड़ते हुए मिलेंगे। जाओ उन्हें हमारे पास ले आओ। वह शख़्स वहाँ पहुंचा तो देखा वाक़ई वह दोनों आपस में झगड़ा कर रहे हैं। वह उन दोनों को साथ ले आया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि आज रात तुम दोनों में बहुत लड़ाई हुई। नौजवान ने कहा ऐ अमीरूलमोमिनीन! मैं ने उस औरत से निकाह किया मगर जब मैं उस के पास आया तो उस की सूरत से मुझे सख़्त नफ़रत हो गई अगर मेरा बस चलता तो उस औरत को मैं उसी वक़्त अपने पास से दूर कर देता। उस ने मुझ से झगड़ना शुरू कर दिया और सुबह तक लड़ाई होती रही यहाँ तक कि आप का भेजा हुआ आदमी हमें बुलाने के लिए पहुंचा।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िरीन को जाने का इशारा फ़रमाया वह चले गए। इस के बाद आपने उस औरत से पूछा तू इस जवान को पहचानती है? उस ने कहा नहीं। सिर्फ इतना जानती हूँ कि कल से यह मेरा शैहर है। आपने फ़रमाया अब तू अच्छी तरह जान लेगी मगर सच सच कहना झूट हर्गिज़ नहीं बोलना। उसने कहा मैं वादा करती हूँ झूट कतई नहीं बोलूंगी। आपने फ़रमाया तुम फलाँ की बेटी हो? उस ने कहा हाँ

हुज़ूर! मैं वही हूँ। फिर आपने फ़रमाया तुम्हारा चचाज़ाद भाई था जो तुम पर आशिक़ था और तू भी उस से बहुत मुहब्बत करती थी। उस ने इस बात का भी इक़रार किया। फिर आपने फ़रमाया तू एक दिन किसी ज़रूरत से रात के वक़्त घर से बाहर निकली तो उस ने तुझे पकड़ कर तुझ से ज़िना (हराम काम) किया और तू हामिला (गर्भ वती)हो गई। इस बात को तूने अपने बाप से छुपा रखा। उस ने कहा बेशक ऐसा ही हुआ था।

आपने फ़रमाया तेरी माँ सारा वाक़िआ जानती थी। जब बच्चा पैदा होने का वक़्त आया तो रात को तेरी माँ तुझे घर से बाहर ले गई लड़का पैदा हुआ, तूने उसे एक कपड़े में लपेट कर दीवार के पीछे डाल दिया इत्तिफ़ाक़ से वहाँ एक कुत्ता पहुंच गया जिस ने उसे सूंघा, तूने उस कुत्ते को एक पत्थर मारा जो बच्चे के सर पर लगा जिस से वह ज़ख़्मी हो गया। तेरी माँ ने अपने इज़ारबन्द (शलवार) से कुछ कपड़े फाड़ कर उस के सर को बाँध दिया फिर तुम दोनों वापस चली आई। और फिर तुम्हें उस लड़के का कोई पता न चला। उस औरत ने जवाब दिया हाँ हुज़ूर ऐसा ही हुआ था। मगर ऐ अमीरूलमोमिनीन! उस वाक़िए को मेरे और मेरी माँ के अलावह कोई तीसरा नहीं जानता था।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया जब सुबह हुई तो फलाँ क़बीला उस लड़के को उठा कर ले गया। और उस की परवरिश की यहाँ तक कि वह जवान हो गया कूफ़ा शहर में आया और अब तुझ से शादी करली। फिर आपने इस नौजवान से फ़रमाया अपना सर खोलो। उसने अपना सर खोला तो ज़ख़्म का असर ज़ाहिर था। आपने फ़रमाया यह तुम्हारा लड़का है खुदा-ए-तआला ने इसे हराम चीज़ से महफ़ूज़ रखा। फ़रमाया ले इसे अपने साथ ले जा। तू इस की बीवी नही माँ है

और यह तेरा शैहर नहीं बल्कि बेटा है। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पृ0: 282)

और हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक़ाम यंबा में सख़्त बीमार हो गए। लोगों ने अर्ज़ किया हुज़ूर! आप यहाँ क्यों ठहरे हुऐ है? अगर यहां आप की वफ़ात हो गई तो (कफ़न-दफ़्न) कौन करेगा? बेहतर है कि आप मदीना तय्यबा चलें ताकि आप के अज़ीज़ व अकारिब कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम करें और अन्सार व मुहाजिरीन वग़ैरा सहाब-ए-किराम आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ें, हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मैं अभी नहीं इन्तिक़ाल करूंगा, इस लिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया है कि तुम उस वक्त तक नहीं मरोगे जब तक कि अमीरूलमोमिनीन नहीं हो जाओगे और यहां तक कि तलवार मार कर तुम्हारी पेशानी और दाढ़ी खून से रंगीन न करदी जाए।

(शवाहिदुन्नुबूव्वत पृ0: 247)

ऊपर ज़िक्र की गई औरत के सारे पोशीदा (गुप्त) हालात हज़रत अली क़र्रमल्लाहु तआला वजहु ने बता दिये जिस से साफ़ तौर पर साबित हुआ कि अपने बारे में उन का यह अक़ीदा था कि मैं ग़ैब जानता हूँ। और दूसरे वाक़िए से यह मालूम हुआ कि उनका अक़ीदा था कि रसुले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब है उन्हों ने मेरी मौत के मुतअल्लिक़ जो फ़रमाया वही हो कर रहेगा। उस में कुछ फ़र्क़ नहीं हो सकता।

★★★

मुफ़स्सिरीन का अक़ीदा

हज़रत इमाम फख्रूद्दीन अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान (इन्तिक़ाल 606 हि0) पा0 15 रूकू 13 की आयते करीमा "अम हसिबता अन्ना असहाबल कहफ़" के तेहत "तफ़सीरे कबीर" में फ़रमाते हैं कि "जब कोई बन्दा नेकियों पर हमेशगी इख़्तियार करता है तो उस मक़ाम तक पहुंच जाता है कि जिस के मुतअल्लिक अल्लाह तआला ने "कुल्तु लहू समअ व बसरन" फरमाया है;1द्ध तो जब अल्लाह के जलाल का नूर उस की समा (सुन्ने की ताक़त) हो जाती है तो वह दूर व नज़दीक की आवाज़ को सुन लेता है। और जब यही नूर उस की बसर (निगाह) हो जाता है तो वह दूर व नज़दीक की चीज़ों को देख लेता है। और जब यही नूरे जलाल उस का हाथ हो जाता है तो वह बन्दा आसान व मुश्किल और दूर व नज़दीक की चीज़ों में तसर्रूफ (अ़मल-दख़ल) करने पर क़ादिर हो जाता है।"

और हज़रत अल्लामा क़ाज़ी नासिरूद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 685 हि0) पा0 4 रूकू 9 की आयते मुबारका "व माकानल्लाहु लियुतलिअकुम" के तेहत "तफ़सीरे बैज़ावी" में इरशाद फ़रमाते हैं कि "और अल्लाह की यह शान नहीं कि ऐ आम लोगो! तुम में से किसी को इल्मे ग़ैब अता फ़रमादे और दिलों के कुफ़्र व ईमान से बाख़बर करदें। हाँ उस मन्सब और अपनी पैग़ाम्बरी के लिए अल्लाह जिस को चाहता है चुन लेता है तो उस की तरफ वही (अपना हुक्म) फ़रमाता है और बाज़ ग़ैबो की उसको ख़बर देता है।"

और हज़रत अल्लामा इसमाईल हक्की रहमतुल्लाहि तआला

अलैहि (इन्तिकाल 1137 हि0) पा0 21 रूकू 13 की आयते करीमा "इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअति" के तहत तफ़सीरे "रूहुलबयान" में ज़िक्र फ़रमाते हैं कि "और जो अंबिया व औलिया से ग़ैब की ख़बरें रवायत की गई हैं। तो वह अल्लाह तआला की तालीम से है। या बतरीके वही (पैग़ाम) या इलहाम या कश्फ़ के तरीके से यानी ख़ुदा की तरफ़ से वह चीज़ दिल में पैदा होने की वजह से।

और इसी तरह बाज़ औलिया ने बारिश होने की ख़बर दी और बाज़ ने पेट के बच्चा लड़का या लड़की की ख़बर दी तो वही हुआ जो उन्हों ने कहा था।"

और इस के बाद फिर बयान फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबुलअज़्म असफ़हानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि शीराज़ में बीमार हो गए तो उन्होने फ़रमाया अगर मैं शीराज़ में इन्तिकाल कर जाऊं तो मुझे यहूदियों ही के क़ब्रिस्तान में दफ़न करना। इस लिए कि मैं ने ख़ुदा-ए-तआला से दुआ की है कि मैं तरतूस में इन्तिकाल करूँ। फिर वह अच्छे हो कर तरतूस गए और वहीं विसाल हुआ। यानी उन्होने बताया था कि वह शीराज़ में नहीं इन्तिकाल करेंगे तो वही हुआ।"

और अल्लामा अलाउद्दीन ख़ाज़िन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिकाल 765 हि0) पा0 27 सूरह "अर्रहमान" की आयते मुबारका "ख़लक़ल इन्सान अल्लमहुल बयान" के तेहत "तफ़सीर ख़ाज़िन" में बयान फ़रमाते हैं कि "कहा गया इन्सान से मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मुराद लिया है। और बयान से मुराद जो कुछ होगा और जो कुछ हो चुका, सब अल्ला तआला ने उन को सिखा दिया। इस लिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अव्वलीन (अगले) व आख़िरीन (पिछले) और

क़यामत के दिन की ख़बर दे दी गई है।"

और अल्लामा अबू मुहम्मद बग़वी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (वफ़ात 516 हि0) इसी आयते करीमा के तहत तफ़सीरे "मुआलिमुत्तन्ज़ील" में इरशाद फ़रमाते हैं कि "अल्लाह ने इन्सान मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को पैदा फ़रमाया। और उनको बयान यानी जो कुछ हो चुका और जो कुछ होगा सब सिखा दिया।"

और हज़रत शैख़ अहमद सावी मालिकी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इसी आयते मुबारका के तेहत "तफ़सीरे सावी" में बयान फ़रमाते हैं कि "और कहा गया है कि वह इन्साने कामिल मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं। और बयान से मुराद वह इल्म है जो हो चुका और जो हो रहा है और जो होगा। वह उनको सिखा दिया।"

और सुर-ए-जिन्न की आयते करीमा "आलिमुलग़ैबि फ़लायुज़हिर" की तफ़सीर में ज़िक्र फ़रमाते हैं कि "अंबिया-ए-किराम को औलिया की बनिस्बत ग़ैब पर क़वी (ज़्यादा) इत्तिलाअ् (ख़बर) होती है।" (तफ़सीरे सावी जि0: 4 पृ0: 244)

इन तमाम तफ़सीरों की इबारतों से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि मुफ़स्सिरीने किराम का यह अक़ीदा है कि "जो कुछ हुआ और जो कुछ क़यामत तक होगा सारे उलूम को अल्लाह तआला ने अपने महबूब प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अता फ़रमा दिया है और दीगर अंबिया व औलिया भी ग़ैब पर बाख़बर होते हैं। और तफ़सीरे "कबीर" की इबारत (लेख) से इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी का यह भी अक़ीदा साबित हुआ कि जब बन्दा अल्लाह व रसूल (जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की हमेशा इताअत फ़रमाँबरदारी करता है तो

अल्लाह तआ़ाला अज़्मत व बुज़ुर्गी का नूर उसके सुन्ने व देखने की ताक़त बन जाता है जिन से वह दूर व नज़दीक की सारी वातों को और पूरे हालात को सुनता और देखता रहता है।

और हज़रत अबूलअज़्म असफ़हानी के वाक़िए से तफ़सीर रूहुलबयान के लेखक अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी का यह भी अक़ीदा मालूम हुआ कि अल्लाह के महबूब बन्दों को इस वात का भी इल्म होता है कि वह कहाँ मरेगा जो उलूमे ख़ामसा (यानी पाँच खुदाई इल्मों) में है।

★★★

मुहद्दिसीन का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम)

मुहद्दिसीने किराम जिन्होंने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की अहादीसे करीमा को जमा करने के लिए वड़ी-वड़ी मशक़्क़तों (परीशानियों) को वरदाश्त किया और उनको पढ़ने पढ़ाने और समझने समझाने के लिए अपनी ज़िन्दगी को वक़्फ़ किया। अव इल्मे गैव के वारे में इस मुकद्दस गिरोह का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

इमाम बुख़ारी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 256 हि0)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है, उन्हों ने फ़रमाया कि "नवी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद, हज़रत जाफ़र और हज़रत इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की शहादत की ख़वर आने से पहले उन लोगों के

शहीद हो जाने की इत्तिलाअ़ (ख़वर) देते हुए फ़रमाया कि ज़ैद ने झन्डा हाथ में लिया और शहीद किए गए फिर जाफ़र ने झंडा को संभाला और वह भी शहीद हुए फिर इब्ने रवाहा ने झंडा को लिया और वह भी शहीद किए गए आप यह वाक़िआ़ बयान फ़रमा रहे थे और आँखों से आँसू जारी थे। फिर आपने फ़रमाया अव झंडा को उस शख़्स ने लिया जो खुदा-ए-तआ़ला की तलवारों में से एक तलवार है। यानी ख़ालिद बिन वलीद नें, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को फ़तह अ़ता फ़रमाई।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि0: 2 पृ0: 611)

और हज़रत इब्ने अव्वास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रवायत है उन्हों ने फ़रमाया कि "नवी-ए-करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम मदीना या मक्का के बाग़ात (फुलवारीयों) में से किसी वाग़ में तशरीफ़ ले गए तो दो आदमियों की आवाज़ सुनी जिन पर उन की क़ब्रों में अज़ाव हो रहा था आपने फ़रमाया उन दोनों पर अजाव हो रहा है मगर किसी बड़ी बात पर नहीं। फिर फ़रमाया हाँ (खुदा-ए-तआ़ला के नज़दीक बड़ी बात है।) उन में से एक तो अपने पेशाव से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ली खाया करता था।" (बुख़ारी शरीफ़ जि0: 1 पृ0: 35)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जब किसरा हिलाक होगा तो उस के बाद कोई किसरा न होगा। और जब क़ैसर हिलाक होगा तो उसके बाद कोई क़ैसर न होगा। क़सम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़-ए-कुदरत में मुहम्मद की जान है ज़रूर-ज़रूर उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च किए जाएंगे।"

(बुख़री शरीफ़ जि0: 1 पृ0: 511)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि खुदा का इरशाद है कि"जब मैं बन्दे को अपना दोस्त बना लेता हूँ तो उसकी समाअत (कान) हो जाता हूँ जिस से वह सुनता है और उसकी बसारत (आँख) हो जाता हूँ जिस से वह देखता है और उस का हाथ हो जाता हूं जिस से वह पकड़ता है और उस का पाँव होजाता हूँ जिस से वह चलता है।"

(बुख़ारी शरीफ़ जि0: 2 पृ0: 963 मिश्कात पृ0: 197)

जंगे मौता जो मुल्के शाम में हो रही थी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मदीना तय्यवा में बैठे हुए उसके सारे हालात को बताना, ज़र्मीन के अंदर दो आदमियों पर होने वाले अजाब को ऊपर से देख लेना और फिर यह भी बताना कि उन पर अज़ाब क्यों हो रहा है, कैसर व किसरा के हुकूमत ख़त्म होने की ख़बर देना और ख़ुदा-ए-तआला की क़स्म के साथ फ़रमाना कि उन के ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएंगे यह सब ग़ैब की बातें हैं जिन को इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी किताब बुख़ारी शरीफ़ में लिखा। इस से साबित हुआ कि इमाम बुख़ारी का यह अक़ीदा था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब है वरना इस तरह की हदीसों को वह अपनी किताब बुख़ारी में हर्गिज़ न लिखते।

और आख़िरी हदीस कुदसी से इमाम बुख़ारी का यह अक़ीदा भी साबित हुआ कि अल्ला के महबूब दाना-ए-ग़यूब ज़नाबे अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ाते पाक तो बहुत बुलन्द व बाला (ऊँचा)है। अल्लाह तआला तो आम बन्दों में से जब किसी को अपना दोस्त बना लेता है तो उसकी समाअत (कान) व बसारत (निगाह) हो जाता है। दूर व

नज़दीक की बातों को सुनता है और दूर व नज़दीक की हालतों को देखता है। इस लिए कि जब उसे यह दर्जा हासिल हो जाएगा तो उस में सिफ़ाते खुदावन्दी का जलवा ज़रूर ज़ाहिर होगा।

★★★

इमाम मुस्लिम का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 261 हि0)

हज़रत अबू ज़ैद यानी अमर बिन अख़तब अनसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है उन्हों ने फ़रमाया कि"रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हमें फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और मेम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ (खड़े) हो कर हमारे सामने तक़रीर फ़रमाई यहाँ तक कि ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त आ गया फिर मिम्बर से तशरीफ़ ला कर नमाज़ पढ़ाई। उस के बाद फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और तक़रीर फ़रमाई यहाँ तक कि अस्र की नमाज़ का वक़्त आ गया। फिर मिम्बर से उतर कर नमाज़ पढ़ाई उस के बाद मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और तक़रीर फ़रमाई यहाँ तक कि सूरज डूब गया। तो उस तक़रीर में जो कुछ हुआ और जो कुछ होने वाला है सारे वाक़िआत की हुज़ूर ने हमें ख़बर दे दी। तो हम में सब से ज़्यादा जानने वाला वह शख़्स है जिसे हज़ूर की बताई हुई ख़बरें ज्यादा याद हैं।"

(मुस्लिम शरीफ़ जि0: 2 पृ0: 390)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है, उन्हों ने कहा कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जंगे बद्र से एक रोज़ पहले हम लोगों को वह तमाम

मक़ामात दिखा दिये थे जहाँ बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले मुशिरकीन क़त्ल हुए। आपने फ़रमाया कल इन्शाअल्लाह तआ़ला यहाँ फलाँ मुशिरक गिर कर मरेगा। और कल इन्शा अल्लाह तआ़ला यहाँ फ़लाँ शख़्स ढेर होगा।"

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया"क़सम है उस जात की जिस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को हक़ के साथ भेजा है कि जो मक़ामात हुज़ूर ने बता दिए थे उन से ज़रा भी अलग नहीं हुआ। यानी वह काफ़िर उसी जगह मारे गए जो जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने बतादी थी।" (मुस्लिम शरीफ़ जि0: 2 पृ0: 102)

और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्होंने फ़रमाया कि"नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम सफ़र से वापस आ रहे थे। जब मदीना शरीफ़ के क़रीब पहुंचे तो सख़्त आंधी आई करीब था कि वह मुसाफ़िर को दफ़न कर दे। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह आंधी एक मुनाफ़िक़ की मौत पर भेजी गई है जब मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो उस रोज़ एक बहुत बड़ा मुनाफ़िक़ मर गया था।" (मुस्लिम, मिश्कात पृ0: 536)

और हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ियल्लाहु तअ़ला अ़न्हु से रवायत है, उन्होंने फ़रमाया कि"मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि ज़रूर-ज़रूर मुसलमानों की एक जमाअ़त किसरा के ख़ज़ाने खोलेगी जो कि अबयज़ (उज्ला) मक़ाम पर होगा।" (मुस्लिम, मिश्कात पे0 466)

और हज़रत शैख़ अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि इस हदीस शरीफ़ की शरह में बयान फरमाते हैं कि"यह ख़ज़ाना अमीरूलमोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु के मुबारक ज़माने में निकाला गया।"(अशअतुललम्आत पृ0: 299)

और हज़रत अबू क़तादा रजियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रवायत है उन्होंने फ़रमाया कि"रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फ़रमाया जब कि वह ख़न्दक़ खोद रहे थे। हुज़ूर उन के सर पर मुबारक हाथ फेरते और फ़रमाते जाते थे। इब्ने सुमय्या की सख़्ती कि तुम्हें बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा।"(मुस्लिम, मिश्कात पृ0: 532)

हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ जंग सफ़्फ़ैन में हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहू के लश्कर के साथ हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु शहीद किए गए।

जो कुछ हुआ और जो कुछ होने वाला है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का सारे वाक़िआ़त की ख़बर देना, मैदाने बद्र में एक दिन पहले ही बता देना कि कौन काफ़िर किस जगह क़त्ल किया जाएगा।, मदीना मुनव्वरह पहुंचने से पहले उस आबादी में एक बड़े मुनाफ़िक़ के मरने की खबर देना, कई साल पहले इस बात से आगाह कर देना कि अबयज़ का ख़ज़ाना मुसलमान खोलेंगे और हज़रत अ़म्मार रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को तक़रीबन 32 साल पहले यह बता देना कि तुम को बाग़ी जमाअ़त क़त्ल करेगा। यह सब ग़ैब की ख़बरें हैं। जिन को हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपनी किताब"मुस्लिम शरीफ़" में लिख कर यह साबित कर दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब है, हमारा भी यही अक़ीदा है।

★★★

इमाम तिर्मिज़ी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 279 हि0)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है, उन्हों ने फ़रमाया कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हम लोगों को एक दिन अस्र की नमाज़ अव्वल वक़्त पढ़ाई, फिर खड़े हो कर तक़रीर फ़रमाई तो किसी बात को नहीं छोड़ा, क़यामत तक के सारे वाक़िआ़त की हमें ख़बर दी। जिस ने इस तक़रीर को याद रखा वह याद रखा और जो भूल गया वह भूल गया।"(तिर्मिज़ी जि0: 2 पृ0: 42)

और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हुमा से रवायत है उन्होंने फ़रमाया कि "रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक फ़ितना का ज़िक्र फ़रमाया तो हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के लिए फ़रमाया कि यह उस में मज़लूमाना (बेक़ुसूर) शहीद किए जाएंगे।"(तिर्मिज़ी जि0: 2 पृ0: 212)

मालूम हुआ कि इमाम तिर्मिज़ी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का भी यही अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब हासिल है वरना यह हदीसें कि जिन में क़यामत तक की बातें बताने और हज़रत उसमाने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के शहीद किए जाने की ख़बर देने का ज़िक्र है, इमाम तिर्मिज़ी उनको अपनी किताब में हर्गिज़ शामिल न करते।

★★★

इमाम दाऊद का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 275 हि0)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उनहों ने फ़रमाया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला की क़सम मैं नहीं कह सकता कि मेरे साथी भूल गए हैं या भूल जाना ज़ाहिर करते हैं। (आज से) दुनिया के ख़त्म होने तक जितने फ़ित्ना व फ़साद उठाने वाले पैदा होंगे जिन के साथियों की संख्या 300 से ज़्यादा होगी। हुज़ूर ने हमें उन का नाम, उनके बाप का नाम और उन के ख़ान्दान का नाम (सब कुछ) बता दिया। (अबूदाऊद, मिश्कात पृ0: 463)

और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "मेहदी मुझ से है। कुशादा (चौड़ी) पेशानी और बुलन्द नाक वाला। ज़मीन को अद्ल व इन्साफ़ से भर देगा। जैसे वह ज़ुल्म से भर गई होगी। सात साल हुकूमत करेगा।"

(अबूदाऊद; मिश्कात जि0 2 पे0 470)

इन अहादिसे करीमा से ज़ाहिर हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को कयामत तक के पैदा होने वाले तमाम फ़ितना अंगेज़ों (यानी फ़ित्ना पैदा करने वालों) का इल्म था और हज़रत इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बारे में सारी बातें जानते थे और यह सब ग़ैब का इल्म है। फिर हज़रत इमाम अबू दाऊद ने इन हदीसों को अपनी किताब "अबू दाऊद" शरीफ़ में लिखा तो साबित कर दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बारे में इल्मे ग़ैब का अक़ीदा बरहक़ है।

★★★

इमाम दारमी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिकाल 255 हि0)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन आइश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहू तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "मैं ने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को ऐसी अच्छी सूरत में देखा जो उस की शान के लायक़ है, रब तआला ने मुझ से पूछा मलए आला के फ़रिश्ते किस चीज़ के बारे में झगड़ा करते हैं? मैं ने कहा मेरा रब तो ख़ूब जानता है। तो रब तआला ने अपना दस्ते क़ुदरत मेरे कांधों के दर्मियान रखा तो फैज़ (रहमत) की ठंडक मैं ने अपने सीने में महसूस की तो मैं ने उन तमाम चीज़ों को जान लिया जो आसमानों और ज़मीनों में हैं।

(दारमी, मिश्कात पृ0: 70)

और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मर्ज़े विसाल (मौत की बीमारी) में मस्जिदे नबवी के मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ (खड़े) हुए और फ़रमाया कि "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में मेरी जान है कि मैं इस जगह से भी हौज़े कौसर को देख रहा हूँ।"(दारमी, मिश्कात पृ0: 548)

आसमानों और ज़मीनों की सारी बातों को जानना और मदीना मुनव्वरा से भी हौज़े कौसर को मुलाहज़ा फ़रमाना इल्म ग़ैब है। हज़रत इमाम दारमी रज़ियल्लाहु तअला अन्हु ने अपनी किताब दारमी शरीफ़ में उन हदीसों को शामिल फ़रमा कर साबित कर दिया कि हमारा भी यही अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ग़ैब का इल्म हासिल है।

★★★

अल्लामा ख़तीब तिबरेज़ी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान)

हज़रत उनैसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपने बाप हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्ह से रवायत करती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तअला वसल्लम उन के बाप हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मिज़ाजपुर्सी के लिए अन्दर तशरीफ़ लाए जब कि वह बीमार थे। तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि "इस बीमारी से तुम्हे कोई ख़तरा नहीं लेकिन उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब कि तुम हमारे बाद ज़िन्दा रहोगे और अंधे हो जाओगे। उन्होंने अर्ज़ किया, सवाब हासलि करूंगा और सब्र करूंगा। फ़रमाया फिर तो बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाओगे रवायत करने वाले का बयान है कि नबी-ए-करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम की वफ़ात के बाद वह अंधे हो गए। फिर अल्ला तआला ने उन के आँख की रौशनी वापस देदी और फिर इन्तिक़ाल किए।" (मिश्कात पृ0: 543)

और मेज़बान रसूल हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि "नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ ले गए और सूरज ग़ुरूब (डूबने) होने वाला था तो एक आवाज़ सुनी। फ़रमाया यहूद को उन की क़बरों में अज़ाब दिया जा रहा है।" (मिश्कात पृ0: 536)

और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है उन्होंने कहा कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि मुसल्ली यानी मोमिन जज़ीर-ए-अरब में उस की पैरवी व इबादत करें।

लेकिन आपस में उन्हें लड़ाने से मायूस नहीं हुआ है।"

(मुस्लिम, मिश्कात पृ0: 19)

हज़रत शैख़ अब्दुलहक़ देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि इस हदीस शरीफ़ की शरह में बयान फ़रमाते हैं कि "मुसल्लियों से मोमिनीन मुराद हैं और शैतान की इबादत से बुतों की पूजा मुराद है। और अगर्चे मुसैलमा के साथी और मुन्किरीने ज़कात मुर्तद (काफ़िर) हुए लेकिन उन लोगों ने बुतों की पूजा नहीं की।"(अशअतुल्लमआत जि0: 1 पृ0: 83)

इन अहादीसे करीमा से मालूम हुआ कि साहिबे मिश्कात हजरत अल्लामा ख़तीबे तिबरेज़ी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान का भी यही अक़ीदा था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब है। इस लिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला हअैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ख़बर दी कि तुम्हें इस बीमारी से ख़तरा नहीं। तुम हमारी वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा रहोगे और अंधे होगे। और ज़मीन के अंदर यहूदियों पर जो अज़ाब हो रहा था उसे बताया। और ख़बर दी कि मुल्के अ़रब में कभी शैतान की पूजा नहीं होगी। यानी अगरचे वहाँ कुछ लोग मुर्तद भी हो जाएं जैसे कि मुसैलमा के साथी और मुन्किरीने ज़कात मुर्तद हुए मगर कभी वहाँ बुतों की पूजा नहीं होगी।

और इन ग़ैबों के बयान वाली हदीसों को अल्लामा ख़तीब तिबरेज़ी ने अपनी किताब में लिखा। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बारे में इल्मे ग़ैब का अक़ीदा उन के नज़दीक हक़ न होता तो वह ऐसी हदीसों को मिश्कात शरीफ़ में हर्गिज़ दाख़िल न करते।

★★★

अ़ल्लामा क़ाज़ी अयाज़ का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 544 हि0)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने कुज़मान के बारे में फ़रमाया "जब कि वह मुसलमानों की तरफ़ से बड़ी बहादुरी के साथ लड़ रहा था कि वह दोज़ख़ियों में से है। आख़िर उस ने ख़ुदकुशी की। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक जमाअ़त के बारे में ख़बर दी जिन में हज़रत अबू हुरैरा, समुरा बिन जुन्दुब और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम थे कि तुम में का आख़री शख़्स आग में मरेगा। तो वह लोग एक दूसरे का हाल पूछते रहते थे। उन में सब के बाद हज़रत समुरा का इन्तिक़ाल हुआ, बहुत बुढ़े हो कर कम अक़्ल हो गए थे आग ताप रहे थे कि उसी में जल गए।" (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1 पृ0: 224)

और नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपनी मजलिस में कुछ लोगों से फ़रमाया कि "तुम में से जहन्नम में एक आदमी की दाढ़ उहुद से बड़ी होगी। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया तो सब का इन्तिक़ाल हो गया सिर्फ़ मैं बाकी बचा और एक दूसरा शख़्स तो वह मुर्तद होने के बाद जंग यमामा में क़त्ल किया गया।"(शिफ़ा शरीफ़ जि0:1 पृ0: 225)

और हज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उस माल की ख़बर दी जिस को उन के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी बीवी उम्मुलफ़ज़्ल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के पास छुपा के रखा था। हज़रत अब्बास ने कहा इस माल को मेरे और उम्मुलफ़ज़्ल के सिवा कोई नहीं जानता था। फिर वह ईमान ले आए और हुज़ूर ने बताया कि वह अनक़रीब

उबय बिन ख़ल्फ़ को कत्ल करेंगे। और उत्बा बिन अबू लहब के बारे में फ़रमाया कि उस को एक कुत्ता खाएगा। और बद्र में काफ़िरों के कत्ल होने की जगह पहले बतादी। तो जैसा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वैसा ही हुआ। और जल्द ही अल्लाह तआ़ला उस के ज़रिए दो गिरोहों के दर्मियान समझौता करा देगा। और जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को उकैदिर की तरफ़ भेजा तो उन से फ़रमाया कि तुम उसे गाए का शिकार करते हुए पाओगे। तो यह सारी बातें हुज़ूर की ज़ाहिरी ज़िन्दगी और विसाल (इन्तिक़ाल) के बाद उसी तरह हुईं जैसा कि आप ने फ़रमाया था। (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम।) (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1 पृ0: 226)

इन तमाम इबारतों (लेख) से अच्छी तरह ज़ाहिर हो गया कि हज़रत अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का भी यही अक़ीदा है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब हासिल है।

★★★

अल्लामा जलालुद्दीन सयूती का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 911 हि0)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहुलकरीम ने कहा कि रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया कि "तुम बहुत जल्द मारे जाओगे एक ज़ख़्म यहाँ और एक ज़ख़्म यहाँ और हुज़ूर ने अपनी कनपटियों की जानिब इशारा फ़रमाया तो इन जगहों से ख़ून बहेगा। यहाँ तक कि तुम्हारी दाढ़ी रंगीन हो जाएगी।" (ख़साइसुल कुबरा जि0: 2 पृ0: 124)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्होंने फ़रमाया कि नबी-ए-करम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के साथ में हज़रत अली के यहाँ गया। वह बीमार थे। और उन के पास हज़रत अबू बक्र व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा पहले से थे। उन में से एक साहब ने दूसरे से कहा कि मेरे ख़्याल में अब यह इन्तिक़ाल ही कर जाएंगे तो रसूलुल्लाहि वसल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "वह हर्गिज़ नहीं इन्तिक़ाल करेंगे जब तक कि कत्ल न किए जाएं।" (ख़साइसे कुबरा जि0: 2 पृ0: 124)

और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्होंने कहा कि रसूले कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जो शख़्स किसी शहीद को ज़मीन पर चलते हुए देखना चाहे तो वह तल्हा बिन उबैदुल्लाह को देखे।"

(ख़साइसुल कुबरा जि0: 2 पृ0: 124)

और बैहक़ी शरीफ़ में है कि जब हज़रत अबू यअ़ला बिन मुम्वा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जंगे मोता की ख़बर ले कर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप ने फ़रमाया कि जंग के हालात तुम मुझे बताओगे या मैं तुझे बताऊँ? उन्होंने अर्ज़ किया आप ही बताएं। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने वहाँ का पूरा हाल मुफ़स्सल (विस्तार से) बयान फ़रमा दिया तो हज़रत अबू यअ़ला ने कहा कि "क़सम है उस जात की जिस ने हक़ के साथा आप को मबऊस (विराजमान) फ़रमाया है, आपने हर्फ़ बहर्फ़ बता दिया, कुछ नहीं छोड़ा वहाँ का वाक़िआ़, ऐसा ही हुआ है जैसा कि आपने बयान फ़रमाया।" (ख़साइसुल कुबरा जि0: 1 पृ0: 259)

इन अहादीसे करीमा में सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम ने जिन बातों की ख़बर दी। यानी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु कन्पटी पर ज़ख़्म लगा कर शहीद किए जाएंगे। हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह भी शहदी होंगे। और जंगे मोता जो मुल्के शाम में हो रही थी उस के सारे हालात को मदीना मुनव्वरा से मुलाहज़ा फ़रमाना और तफ़सील के साथ हर्फ़ बहर्फ़ बयान करना सब ग़ैब की ख़बरें हैं जिन को हज़रत अ़ल्लामा जलालुद्दीन सयूती अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने अपनी किताब में लिख कर सावित कर दिया कि हमारा भी यही अक़ीदा है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ग़ैब जानने वाले हैं।

★★★

अल्लामा अस्क़लानी बुख़ारी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 852 हि0)

आप बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का सीन-ए-मुबारक चाक करने के बाद क़ल्बे अतहर (नूरानी दिल)को जब ज़मज़म के पानी से धोया तो फरमाया कि "मुबारक क़ल्ब (दिल) हर क़िस्म की कजी (नुक़्स) से पाक और बेऐब है। इस में दो आँखें हैं जो देखती हैं और दो कान हैं जो सुनते हैं।"

(फ़तहुलबारी शरहे बुख़ारी जि0: 13 पृ0: 410)

मालूम हुआ कि हज़रत अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी का भी यही अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब है। इस लिए कि मुबारक क़ल्ब की आँखें और कान ग़ैब की बातें देखने और सुनने के लिए हैं जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया है

कि "मैं वह चीज़ देखता हूँ जिस को तुम नहीं देखते हो और मैं वह सुनता हूँ जिस को तुम नहीं सुनते।" (मिश्कात पृ0: 457)

और बयान फ़रमाते हैं "कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के लिए एक ऐसी सिफ़त (गुण) है कि जिस से वह आइन्दा ग़ैब की बातें जान लेते हैं और उस से लौहे महफ़ूज़ की सारी बातें मुलाहिज़ा फरमाते हैं।" (फ़तहुलबारी जि0: 16 पृ0: 21)

★★★

हज़रत अल्लामा ज़रक़ानी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ालः 1122 हि0)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु एक अंधेरी रात में जब कि बारिश हो रही थी काफ़ी देर तक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर रहे। जब उन्हों ने जाने का इरादा किया तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उन को खजूर की एक शाख़ (टेहनी) अ़ता की और फरमाया कि "इस को ले जाओ। यह दस हाथ तुम्हारे आगे और दस हाथ तुम्हारे पीछे उजाला करेगी और जब तुम अपने घर में दाख़िल होगे तो एक स्याही (काली चीज़) देखोगे। उस को इतना मारना कि वह निकल जाए। इस लिए कि वह शैतान है जब हज़रत क़तादा वहाँ से चले तो वह शाख़ (टेहनी) उन के लिए रौशन हो गई यहाँ तक कि वह अपने घर में दाख़िल हुए और उन्हों ने उस स्याही (काली चीज़) को पालिया तो उसे इतना मारा कि वह निकल गई।"

(ज़रकानी अलल मवाहिब जि0: 5 पृ0: 195)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रवायत है। उन्हों ने कहा कि रसूले अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "अल्लाह ने मेरे लिए दुनिया के पर्दे उठा दिए हैं। तो मैं दुनिया को और जो कुछ भी उस में क़यामत तक होने वाला है सब को ऐसे देखता हूँ जैसे कि अपनी इस हथेली को।" (ज़रक़ानी अला मवाहिब जि0: 7 पृ0: 234)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का बरसात की अंधेरी रात में हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के घर जो शैतान था उस को अपने यहाँ से देखना। और यह इरशाद फ़रमाना कि मैं क़यामत तक होने वाले वाक़िआ़त को अपनी हथेली की तरह देखता हूँ। सब ग़ैब की बाते हैं। मालूम हुआ कि हज़रत अल्लामा ज़रक़ानी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान का भी यही अक़ीदा है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब है। इसी लिए एक दूसरे मक़ाम पर बयान फ़रमाते हैं कि "बिला शुबहा मुतवातिर (मुसलसल) हदीसे और उन के मआनी इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ग़ैब पर बाख़बर हैं।"

(ज़रक़ानी अल मवाहिब जि0: 7 पृ0: 198)

★★★

हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1014 हि0)

हज़रत इमाम दारमी के बयाने अक़ीदा में पहली हदीस जो लिखी गई है उस के तेहत हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि बयान फ़रमाते हैं कि "हज़रत अ़ल्लामा बिन हजर ने फ़रमाया यानी हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने आसमानों बल्कि उन से भी ऊपर की तमाम कायनात को जान लिया और ज़मीन जो जिन्स के मअने में है यानी वह तमाम चीज़ें जो सातों ज़मीनों बल्कि उन से भी नीचे हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को मालूम हो गई।" (मिरक़ात शरहे मिश्कात जि0: 1 पृ0: 463)

और फ़रमाते हैं कि "हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का इल्म कुल्ली (पूरा) और जुज़्ई (कुछ) तमाम वाक़िआ़त को घेरे हुए है।"

(मिरक़ात शरहे मिश्कात जि0: 5 पृ0: 162)

और हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी फ़रमाते हैं कि "पाक व साफ़ नफ्से वाले जब कि बदनी इलाक़ों से खाली हो जाते है। तो तरक़्क़ी करके बज़्म बाला (उपरी दुनिया) से मिल जाते हैं और उन के लिए कोई पर्दा बाकी नहीं रह जाता। तो वह तमाम चीज़ों को मिस्ल हाज़िर के ख़ुद देखते हैं या फ़रिश्ते के साथ इलहाम (बताने) से।" (मिरक़ात शरहे मिश्कात जि0: 2 पृ0: 7)

और इरशाद फ़रमाते हैं कि "जब मुबारक रूह रौशन हो जाती है और आलमे हिस (एहसास की दुनिया) की ज़ुलमत (अंधेर) से परहेज़ करने और दिल के आईने को तबीअ़त के ज़ंग से साफ़ करने, इल्म व अ़मल पर हमेशगी बरतने और फ़ैज़ाने अन्वारे इलाही की वजह से यह नूर और ज़्यादा ताक़तवर हो कर

दिल की दुनिया पर छा जाता है तो दिल में लौहे महफ़ूज़ के नुक़ूश (चित्र) मुरतसिम (छप जाना) हो जाते हैं और वह ग़ैब की बातों पर मुत्तला (बाख़बर) हो जाता है और आलमे सिफ़ली (दुनिया) के जिस्मों में तसर्रुफ़ करता है बल्कि उस के दिल पर खुदा-ए-तआ़ला की तजल्लियात (जलवे) नाज़िल होती हैं अल्लाह तआ़ला की इस मारेफ़त (पहचान) के सबब जो अनमोल नेअ़मत है तो उससे और कोई चीज़ कैसे पोशीदा रह सकती है।"

(मिर्क़ात शरहे मिश्कात जि0: 1 पृ0: 62)

इन रवायतों से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि का भी यही अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ग़ैब जानने वाले हैं, वह आसमानों और ज़मीनों की सारी बातें जानते हैं और उनका इल्म तमाम कुल्लियात व जुज़्इयात (सारी दुनिया) को घेरे हुए है बल्कि हर वह नुफ़ूसे कुदसिया (पाक हज़रात) जिन पर अन्वारे इलाही का फ़ैज़ान होता है उन लोगों के दिल में लौहे महफ़ूज़ की बातें मुनअक़िस (छुपी) होती हैं और वह भी ग़ैबदान (ग़ैब का इल्म रखने वाले) हो जाते हैं।

और हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी फ़रमाते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अ़ली असरून तमीमी शफ़िई बयान करते हैं कि मैं इल्म हासिल करने के लिए बग़दाद आया और मदर्सा निज़ामिया में दाख़िला लिया। इब्ने सक़ा मेरा हम जमाअ़त और हम सबक था। हम दोनों इबादत करते और अहलुल्लाह की ज़ियारत के लिए निकल जाते। बग़दाद में एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक मशहूर था कि वह ग़ौसे वक़्त है और जब चाहता है ज़ाहिर होता है और जब चाहता है ग़ायब हो जाता है। एक दिन मैं, इब्नुस्सक़ा नौउमरी के ज़माने में हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के साथ उस ग़ौस

की ज़ियारत को गए। रास्ते में इब्नुस्सक़ा ने कहा आज मैं उन से एक ऐसा इल्मी मसअ़ला पूछूंगा जिस का वह जवाब नहीं दे सकेंगे। मैं ने कहा मैं भी एक मसअ़ला पूछूंगा, देखिए इस का वह क्या जवाब देते हैं। और हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया, मआ़ज़ल्लाह (ख़ुदा की पनाह) मैं तो उन से कोई मसअ़ला नहीं पूछूंगा बल्की मजिलस में बैठ कर फ़ैज़े ज़ियारत और फ़ैज़े सुहबत ही हासिल करूंगा।

जब हम तीनों उन के मकान पर पहुंचे तो देखा कि वह अपनी जगह पर मौजूद नहीं हैं, फिर थोड़ी देर के बाद उन को वहाँ बैठे पाया। उन्होंने इब्नुस्सक़ा को क़हर आलूद ग़ज़ब निगाहों से देखा और गुस्से से फ़रमाया ऐ इब्नुस्सक़ा! ख़ुदा तेरा भला न करे। तू मुझ से वह मसअ़ला पूछेगा जिस का मुझे जवाब न आए। कान खोल कर सुन! तेरा मसअ़ला यह है और उस का जवाब यह है। बेशक मैं तुझ में कुफ़्र की भड़कती हुई आग देख रहा हूँ। उस के बाद उन्हों ने मेरी तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया ऐ अब्दुल्लाह! तुम मुझ से मसअ़ला पूछोगे कि देखो मैं क्या जवाब देता हूँ। तुम्हारा मसअ़ला यह है और उस का जवाब यह है। तुम्हारी बेअदबी के सबब दुनिया तुम पर इतना गोबर करेगी कि कान की लौ तक तुम उस में डूब जाओगे। फिर हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरफ़ मुतवज्जह हुए और अपने क़रीब बैठा कर बहुत एहतेराम किया और फ़रमाया ऐ अब्दुल क़ादिर! तुम ने अदब की वजह से अल्लाह व रसूल को राज़ी कर लिया। मैं देख रहा हूँ कि आप बग़दाद में नसीहत के लिए तशरीफ़ ले गए। और फरमा रहे हैं"मेरा यह पाँव तमाम वलीयुल्लाह की गर्दन पर" और मैं यह देख रहा हूँ कि उस वक़्त के तमाम वलीयुल्लाह आप की अज़मत (महानता) का इक़रार

करेंगे और अपनी गर्दनों को झुका देंगे। वह ग़ौस यह फ़रमा कर हमारी निगाहों से ग़ायब हो गए फिर हमने उनहें नहीं देखा।

इस वाक़िए के बाद हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में कुर्बे इलाही के आसार ज़ाहिर होने लगे और अवाम जोक़ दर जोक़ (गिरोह दर गिरोह) आपके पास आने लगे। और मैं ने आप का ऐलान अपनी ज़िन्दगी में सुना जब वक़्त के सारे वलियों ने गर्दनें झुकादी थीं। और इब्नुस्सक़ा मज़हबी उलूम में ऐसा मशग़ूल हुआ कि वक़्त के अक्सर फ़क़ीह और उलमा उस की क़ाबलियत का लोहा मानने लगे। वह इल्मे मुनाज़िरा में इस क़दर हावी था कि अपने मद्दे मुक़ाबिल को चुप कर देता। साथ ही साथ वह फ़साहत और वक़ार में मशहूरे ज़माना हो गया। अब्वासी ख़लीफ़ा ने उसे ख़ास अपने साथियों में दाख़िल कर लिया और शहनशाहे रूम की तरफ़ उसे सफ़ीर बना कर भेजा, जहां उसने शाही दरबार में ईसाइयों के पादरियों को एक मुनाज़िरा में चुप कर दिया। बादशाह के दिल में उस की क़दर और बढ़ गई, एक दिन वह रूम के बादशाह की जवान हसीन लड़की को देख कर दिल दे बैठा। बादशाह से निकाह की दरख़्वास्त की। उसने कहा अगर तुम इसाइयत कुबूल करलो तो मुझे कोई उज़्र नहीं। तो इब्नुस्सक़ा इस्लाम से दस्तबरदार हो कर ईसाई बन गया। अब उसे बग़दाद के ग़ौस का कलाम याद आया कि यह सारा किस्सा उन की बद दुआ का नतीजा है।

रवायत करने वाले का बयान है कि और मैं दमिश्क़ में आया। सुलतान नूरूद्दीन शहीद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने मुझे महकमए औक़ात का सरबराह मुक़र्रर कर दिया। और दुनिया मेरी तरफ़ बकसरत आई। (नुज़्हतुल खातिरिल फ़ातिर उर्दू पृ0: 82)

रास्ते में हर एक की कही हुई बात को बुज़ुर्ग का जान लेना और हर एक के बारे में आइन्दा की हालतों को वाज़ेह तौर पर बताना इल्मे ग़ैब है। तो हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी ने इस वाक़िए को अपनी किताब में लिखा कर साबित कर दिया कि औलियाअल्लाह को भी इल्मे ग़ैब होता है, हमारा यह अ़क़ीदह है।

★★★

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा इन्तिक़ाल 1052 हि0)

मिश्कात शरीफ़ पे0 70 पर एक हदीस में है कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "मैं ने उन तमाम ज़ीचों को जान लिया जो आसमानों और ज़मीनों में हैं।"

हज़रत शैख़ इस हदीस के तहत लिखते हैं कि "हुज़ूर के इस क़ौल का मतलब यह है कि आप को तमाम जुज़्ई व कुल्ली (आंशिक व पूर्ण) उलूम (ज्ञान) हासिल हो गए और आप ने उन का इहाता कर लिया।" (अशअतुललम्आत जि0: 1 पे0: 333)

और फ़रमाते हैं कि "प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तमाम चीज़ों के जानने वाले हैं। आपने अल्लाह की शान, उसकी सिफ़्तों के अहकाम, असमा, अफ़आ़ल (नाम व काम), आसार और तमाम उलूम अव्वल व आख़िर (प्रथम, अंतिम) और ज़ाहिर व बातिन (छूपे) को हासिल फ़रमा लिया है। और आप "फ़ौक़ कुल्लि ज़ी इल्मिन अ़लीम" के मिस्दाक़ (भांती) हुए।"

(मदारिजुन्नुबूव्वत जि0: 1 पे0: 3)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के ज़िक्र फ़ज़ाइल में बयान फ़रमाते हैं कि "हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से सूर फूंकने तक सब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर

ज़ाहिर फरमा दिया ताकि अव्वल से आख़िर (प्रथम, अंतिम)तक तमाम हालात आप को मालूम हो जाएं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम:ने बाज़ हालतों की ख़बर अपने सहाबा को भी दी। (मदारिजुन्नुबूव्वत जि0: 1 पे0: 144)

हज़रत शैख़ अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इन दलीलों से अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे ग़ैब जानने वाले हैं कि उन्हें जुज़्ई व कुल्ली तमाम इल्म हासिल हैं और वह अव्वल व आख़िर और ज़ाहिर व बातिन सारे इल्म हासिल फ़रमाए हुए हैं।

★★★

शाह वलीयुल्लाह देहलवी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1176 हि0)

हज़रत शाह साहिब ज़िक्र फ़रमाते हैं कि"मुझ पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की बारगाहे अक़दस से फ़ैज़ हासिल हुआ कि बन्दा कैसे अपनी जगह से तरक़्क़ी करता है कि हर चीज़ उस पर रोशन (ज़ाहिर) हो जाती है।"(फ़ुयूज़ुलहरमैन पे0: 59)

और यही शाह साहब लिखते हैं कि"आरिफ़ मक़ामे हक तक खींच कर बारगाहे क़ुर्ब में होता है। तो हर चीज़ उस पर रोशन (ज़ाहिर) हो जाती है।"(फ़ुयूज़ुलहरमैन पे0: 61)

इन हवालों से ज़ाहिर हुआ कि हज़रत शाह वालीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि का यह अक़ीदा है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़ात तो बहुत ही बुलन्द व बाला (इज़्ज़त, अ़ज़्मत वाले) है, आप लोगों में से जब कोई बन्दा अपनी जगह से तरक़्क़ी करके बारगाहे

ख़ुदावन्दी के क़रीब हो जाता है तो उस पर हर चीज़ रौशन हो जाती है। और वह ग़ैब जानने वाला हो जाता है।

इस किस्म की बहुत सी दलीलें उन की किताबों में पाई जाती हैं। उनके अलावह उन्होंने ऐसे बेशुमार वाक़िआत लिखे हैं जिन से साबित होता है कि औलियाए किराम ग़ैबदाँ (छुपी बातें जानने वाले) होते हैं और पोशीदा बातों को जानते हैं। उन में से चन्द वाक़िआत नीचे लिखे गए हैं।

आप लिखाते हैं कि मेरे वालिद माजिद हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब फ़रमाया करते थे कि एक दिन अस्र के वक़्त मैं मुराक़बे(1) में था कि ग़ैबत(2) की कैफ़ियत तारी हो गई मेरे लिए उस वक़्त को चालीस हज़ार बरस के बराबर लम्बा कर दिया गया और उस मुद्दत में इब्तिदा से क़यामत तक पैदा होने वाली मख़लूक़ के अहवाल व आसार को मुझ पर ज़ाहिर कर दिया गया।

(अन्फ़ासलुआरिफ़ीन उर्दू पे0: 95)

और शाह साहब ज़िक्र फ़रमाते कि हज़रत वालिद माजिद (पिता) एक बार शैख़ अब्दुलक़ुद्दूस के घर गए तो उन्हों ने अपने बेटे से कहा कि हज़रत की ख़िदमत में गुलाब की शरबत पेश करो। वहाँ दो बोतलें रखी थीं। लड़के ने बड़ी बोतल छोड़दी और छोटी ला कर पेश की। हज़रत वालिद माजिद ने हंसते हुए फ़रमाया कि बेटे! बड़ी बोतल क्यों छोड़ आए हो वह भी ले आओ। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन उर्दू पे0: 124)

और शाह साहब लिखते हैं कि वालिदे माजिद फ़रमाया करते थे। एक बार मेरे वालिद माजिद (यानी हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी के दादा) क्सिी दूर दराज़ सफ़र से आए हुए थे और इरादा यह था कि शहर से बाहर ही किसी दूसरे सफ़र पर चले जाएं, मुझे तलब फ़रमाया। मैं ज़ियारत के लिए चल पड़ा,

रास्ते में मेरा गुज़र एक बारौनक़ बाग़ (पार्क) से हुआ। मैं उस में सैर व तफ़रीह करने लगा। उस में एक दरख़्त था जिस की शाख़ें ज़मीन से लगी हुई थीं। उन शाख़ों के गुच्छों में एक मुग़लाई सूरत का मजज़ूब बैठा हुआ था। मुझे देखते ही आवाज़ दी कि दोस्त इधर आओ। कुछ देर हमारे साथ भी बैठो। मैं जा कर बैठ गया। उस ने अपने सुलूक व मुजाहिदात की बातें शरू करदीं। इन बातों में से एक यह भी बताई कि मैं आगाज़े सुलूक में एक बहर (समंदर)बल्कि उस से भी ज़्यादा हब्स दम (सांस रोक कर ज़िक्र) करता था।

यह मजज़ूब ज़ाहिरी तौर पर मौलाना क़ाज़ी कुद्दिस सिर्रूहू के सिलसिले से निसबत रखता था।

इसी दर्मियान में कहने लगा कि तुम्हारे साथ फलाँ खाना है उस में से थोड़ा मेरे लिए मंगवाओ। मैं ने मंगवा दिया तो उन्हों ने खाया। फिर कहने लगे तुम्हारी जेब में इस कदर पैसे हैं। मुझे उन में से एक सिक्के की ज़रूरत है ताकि हज्जाम को दे कर सर और दाढ़ी ख़ूबसूरत करा सकूँ मैं ने पैसे उन के सामने रख दिए और चल पड़ा। (अन्फ़ुल आरिफ़ीन उर्दू पे0: 84)

और फ़रमाते हैं कि हरमैन शरीफ़ैन में एक ऐसा शख़्स मुक़ीम (निवासी) था जिसे हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की टोपी मुबारक तबर्रुक के तौर पर सिलसिलेवार पुर्खों से मिली हुई थी। जिस की बरकत से वह शख़्स हरमैन शरीफ़ैन के इलाक़े में इज़्ज़त व एहतिराम की निगाह से देखा जाता था और शुहरत की बुलन्दियों पर पहुंचा हुआ था। एक रात हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह को (रूहानी तौर पर) अपने सामने मौजूद पाया जो फ़रमा रहे थे कि यह टोपी अबुल क़ासिम अकबर अबादी को देदो। हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लहु तआ़ला

अ़न्हु का यह फ़रमान सुन कर उस शख़्स के दिल में आया कि इस बुज़ुर्ग की ख़ुसूसियत यक़ीनन कोई सबब रखती है। चुनाँचे इम्तिहान की नीयत से टोपी मुबारक के साथ एक कीमती जुब्बा भी शामिल कर लिया और पूछ-गुछ करते करते हज़रत ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम की ख़िदमत में जा पहुंचा और उन से कहा यह दोनों तबर्रुक हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हैं और उन्होंने मुझे ख़्वाब में हुक्म दिया है कि यह अबुल क़ासिम अकबर आबादी को दे दो। यह कह कर तबर्रुकात उनके सामने रख दिए। ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम ने तबर्रुकात क़ुबूल फ़रमा कर इन्तिहाई मुसर्रत (ख़ुशी) का इज़हार किया। उस शख़्स ने कहा यह तबर्रुक बहुत बड़े बुज़ुर्ग की तरफ़ से अ़ता हुए हैं। लिहाज़ा इस के शुक्रिए में एक बड़ी दावत का इन्तिज़ाम करके शहर के रईसों को बुलाइये। हज़रत ख़लीफ़ा ने फ़रमाया। कल तशरीफ़ लाना। हम काफ़ी मिक़दार में सारा खाना तैयार कराएंगे। आप जिस जिस को चाहें बुला लीजिए।

दूसरे रोज़ सुबह वह दुर्वेश शहर के रईसों के साथ आया। दावत खाई और फ़ातिहा पढ़ी। फ़ारिग़ होने के बाद लोगों ने पूछा कि आप तो मुतवक्किल (अल्लाह पर भरोसा रखने वाले) हैं, ज़ाहिरी सामान कुछ भी नहीं रखते। इस क़दर खाना कहाँ से मुहय्या फ़रमाया? उन्होंने फ़रमाया कि इस क़ीमती जुब्बे को बेच कर ज़रूरी चीज़ें ख़रीदी हैं। यह सुन कर वह शख़्स चीख़ उठा कि मैं ने उस फ़क़ीर को अल्लाह का वली समझा था मगर यह तो मक्कार साबित हुआ ऐसे तबर्रुकात की उसने क़द्र नहीं की। आपने फ़रमाया चुप रहो। जो चीज़ तबर्रुक थी वह मैं ने महफ़ूज़ करली है, और जो सामाने इम्तिहान था हमने उसे बेच कर दावते शुकराना का इन्तिज़ाम कर डाला। यह सुन कर वह शख़्स

होशियार हो गया और उसने तमाम मज्लिस वालो पर सारी हक़ीक़ते हाल खोल दी। जिस पर सब ने कहा अल्हम्दु लिल्लाह तबर्रूक अपने हक़दार तक पहुंच गया। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन उर्दू पे0: 78)

और हज़रत शाह साहिब इरशाद फ़रमाते हैं कि मुहम्मद फ़ाज़िल की नेक लड़की ख़ातून कमसिनी के बावजूद हज़रत वाला (यानी हज़रत शाह अब्दुल रहीम) की नूरानियत का अक्स (साया) कुबूल कर चुकी थी। एक रात हज़रते वाला मुहम्मद फाज़िल के घर जा रहे थे कि रास्ते में आप के हाथ से तसबीह गिर गई। नेक लड़की ने कहा मैं देख रही हूं कि तसबीह फलाँ जगह गिरी हुई है। चिराग़ ले जा कर देखा तो तसबीह वहीं पड़ी थी।

और एक दिन शरीफ़ा अपने घर कहने लगी कि हज़रत वाला हमारे घर तशरीफ़ ला रहे हैं और फलाँ खाने की ख़्वाहिश रखते हैं। चुनाँचे वह खाना तैयार किया गया और हज़रते वाला से दर्याफ़्त किया गया तो आपने शरीफ़ा (वलिय्या) की बातों की तसदीक़ (पुश्टि) फ़रमाई। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन उर्दू पे0: 147)

और एक दिन शरीफ़ा अपने घर में थी। हज़रते वाला भी वहीं थे। कहने लगी फ़तह मुहम्मद हमारे घर का इरादा कर रहा है। फिर कहा अब रास्ते में खड़ा किसी से बात कर रहा है। वह खुद धूप में है और दूसरा आदमी साए में खड़ा है। फिर कहने लगी। अब उसने तीन नारंगियां ख़रीदी हैं। दो अपने दो बेटों के लिए और एक हज़रते वाला के लिए। फ़िर कहा अब उस की नियत बदल गई है। दो हज़रते वाला के लिए और एक दोनों बेटों के लिए तय कर दी हैं। फिर कहने लगी अब वह दरवाज़े पर खड़ा है, फ़तह मुहम्मद के पहुंचने पर शरीफ़ा (वलिय्या) की सारी बातों की तसदीक़ (पुश्टि) हो गई। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन उर्दू पे0: 148)

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम पर इब्तिदा से क़यामत तक पैदा होने

वाली मख़लूक (रचना) के हालात का ज़ाहिर होना, शैख़ अब्दुलक़ुद्दूस के लड़के से उनका यह फ़रमाना कि बड़ी बोतल क्यों छोड़ आए हो, मजज़ूब का उन से यह कहना कि तुम्हारे साथ फलाँ खाना है और तुम्हारी जेब में इस क़दर पैसे हैं, हज़रत अबुल क़ासिम का सामाने इम्तिहान को जान लेना और शरीफ़ा ख़ातून को घर में बैठे हुए बाहर की बातों का इल्म होना और दोनों के ख़्यालात से वाक़िफ़ (जानना) होना सब ग़ैब की बातें हैं। हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने उन सारे वाक़िआत को लिख कर अपना यह अक़ीदा रोज़े रौशन की तरह साबित कर दिया कि अंबिया तो अंबिया हैं औलिया अल्लाह भी ग़ैब जानते हैं।

और हज़रत शाह साहब ज़िक्र फ़रमाते हैं कि मेरे चचा हज़रत शैख अबुल रज़ा मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का एक ख़ादिम किसी बुरी आदत में मुब्तला था। आप ने उसें इशारों में कई बार तम्बिह (सावधान) फ़रमाई मगर वह अपनी हरकत से बाज़ नहीं आया। बिलआख़िर हज़रत शैख़ ने उसे तन्हाई में बुला कर कहा कि तुझे बार-बार इशारों में समझाया मगर तूने कोई परवाह नहीं की। तू शायद समझता है कि हम तेरे करतूतों से बेख़बर हैं, खुदा की क़सम! अगर ज़मीन के निचले तबक़े में रहने वाली किसी चींटी के दिल में भी सौ (99) ख़्यालात आएं तो उन में से निनानवे ख़्यालात को मैं जानता हूँ और अल्लाह तआला उस के सौ के सौ ख़्यालात से बाख़बर है। यह सुन कर ख़ादिम ने अपनी बुराई से तौबा की। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0: 205)

और हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि हाफ़िज़ इनायतुल्लाह ने बयान किया कि एक नौजवान आलिम बहस व तकरार से बहुत दिलचस्पी रखता था। एक दिन मुझ से कहने लगा कि मैं शहरे

देहली के तमाम फ़ाज़िल उलमा को मग़लूब (पराजित) कर चुका हूँ। मैं ने कहा कभी हज़रत शैख़ अबुर्रज़ा मुहम्मद की मज्लिस में हाजिर हो कर उन की ज़ियारत का भी शर्फ़ हासिल किया है? कहने लगा सुना है कि वह अवाम को तफ़सीरे हुसैनी पढ़ कर सुनाते और उसी से नसीहत करते हैं। वह कोई साहिबे फ़ज़ीलत (अहमियत के लाइक़) नहीं हैं। मैं ने कहा नहीं ऐसा मत कहो बल्कि उन की ज़ियारत करो ताकि उन का कमाले इल्म और सीरत तुम पर ज़ाहिर हो सके।

अगले जुमे को वह नसीहत की मज्लिस में आया और उस के दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि मुनाज़रा करे।। हज़रत शैख़ ने उस के ख़्यालात से बाख़बर हो कर तासीर के ज़रीए उस का इल्म छीन लिया। यहाँ तक कि सर्फ़ व नह्व का भी कोई काएदा उस के ज़ेहन में नहीं रह गया। और आप का कलाम समझने से आजिज़ हो गया। समझ गया कि यह हालत हज़रत शैख़ के तसर्रुफ़ व इख़्तियार से वाक़िअ् हुई है। शर्मिन्दा हुआ, तौबा की और खुलूसे दिल के साथ हज़रत की ख़िदमत में रोया।। हज़रत ने उसे सारा इल्म वापस कर दिया और पहली हालत बहाल कर दी। उसने इजहारे नियाज़मन्दी किया। आपने फ़रमाया मैं आलिम नहीं हूँ सिर्फ़ तफ़सीरे हूसैनी से अवाम को नसीहत करता हूँ।

(अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0: 206)

और हज़रत शाह साहब फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ अबुर्रज़ा मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के मुअ्तक़िदीन (अक़ीदतमन्दों) की एक जमाअ़त ने बयान किया कि हम लोग आप की ख़िदमत में तसव्वुफ़ व इरफ़ान के बारे में कसरत से ज़बान पर सवालात नहीं लाते थे बल्कि अपने अपने सवालात दिलों में ले कर बैठ जाते थे। जब भी किसी के दिल में कोई शक, सवाल या ख़्याल पैदा होता

तो आप उस से आगाह हो कर फ़ौरन जवाब देते फिर भी अग शक बाक़ी रहता तो दोबारा जवाब देते यहाँ तक कि सवार्ल मुतमइन हो जाता। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0: 207)

और हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि सय्यद उमर हिसार्र ने मुझ से बयान किया कि एक दिन हज़रत शैख़ अबुर्रज़ा मुहम्म अच्छे रंग की ख़ूबसूरत चादर ओढ़े हुए हिरन की ख़ुशनूमा खाल पर तशरीफ़ फ़रमा थे। वह चादर और खाल मेरे दिल में खप गई ऐसी चादर और खाल की तलाश का शौक़ मेरे दिल में पैदा हुआ इस ख़्याल को जिस क़दर झटकता दूर न होता। हज़रते वाला जब मज्लिस से उठे तो मुझे फ़रमाया कि बैठो तुम से एक काम है फिर उस खाल पर शीरीनी के कुछ धब्बे लगे हुए थें, उन्हें अपने हाथ से धोया और चादर व हिरन की खाल को तह करके अपने हाथ से मुझे दे दिया। और फ़रमाया औलिया की मज्लिसों में ऐसे ख़्यालात दिल में नहीं लाना चाहिए। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0: 203)

इन वाक़िआत से हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का यह अक़ीदा मालूम हुआ कि औलिया-ए-किराम दिल के ख़तरात, उस के ख़्यालात और उस की कैफ़ियात से भी आगाह होते हैं। अगर उन का यह अक़ीदा न होता तो इन वाक़िआत को अपनी किताब में वह हर्गिज़ शामिल न करते।

★★★

शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1239 हि0)

आप बयान फ़रमाते हैं कि "रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपने नूरे नुबूव्वत से हर दीनदार के दीन को जानते हैं कि दीन के किस दर्जे में है? और उस के ईमान की

हक़ीक़त क्या है? और कौन सा पर्दा उसकी तरक़्क़ी को रोकने वाला है, लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तुम्हारे गुनाहों को, तुम्हारे ईमानी दर्जात को, तुम्हारे नेक व बदआमाल को और तुम्हारे ख़ुलूस व निफ़ाक़ (मक्कारी) को जानते पहचानते हैं। इस लिए उनकी गवाही बहुक्मे शरीअत उम्मत के हक़ में कुबूल और वाजिबुल अमल (अनिवार्य) है।''(तफ़सीरे अज़ीज़ी जि0: 1 पे0: 636)

और हज़रत शाह साहब इर-ााद फ़रमाते हैं कि''लौहे महफ़ूज़ पर बाख़बर होना और उस में जो कुछ लिखा है उस का इल्म रखना भी बाज़ औलिया से दलीलों के साथ साबित है।''

(तफ़सीरे अज़ीज़ी सूरह जिन्न)

इन हवालों से मालूम हुआ कि हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का भी यही अक़ीदा है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब है, वह अपनी उम्मत के अच्छे बुरे आमाल को मुलाहज़ा फ़रमाते हैं। यहाँ तक कि उस के ख़ुलूस व निफ़ाक़ (मक्कारी) से आगाह हैं। बल्कि उन के नज़दीक औलिया-ए-किराम भी (ग़ैब जानने वाले) हैं इस लिए कि लौहे महफ़ूज़ उन की निगाहों के सामने है। और उस में जो कुछ हुआ और जो कुछ होगा सब लिखा हुआ है। (तफ़सीरे ख़ाज़िन)

★★★

अल्लामा निबहानी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1350 हि0)

आशिक़े रसूल हज़रत अल्लामा यूसुफ़ निबहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि जामेउल उलूम (इल्म का ख़ज़ाना) थे। उन को बयक वक़्त इमाम राज़ी, अल्लामा जामी, अल्लामा रूमी,

अल्लामा सयूती और शैख़ मुहद्दिस देहलवी का मजमूआ (संग्रह) कहा जा सकता है। आपने छोटी बड़ी पचास से ज्यादा किताबें लिखी हैं। अब इल्मे ग़ैब के मुतअल्लिक़ वाक़िआत की रौशनी में उन का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

आप इरशाद फ़रमाते हैं कि इलाक़-ए-हर्ज़'' के रहने वाले दो भाई''आवाजा'' गाँव में आए। गाँव के क़रीब पहुंचे तो हज़रत मुहम्मद बिन कबीर हकमी यमनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 617 हि0) की ख़ूबियों का चर्चा सुना मगर उन्हें सच न समझा। काफ़ी अर्सा आवाज़ में ठहरने के बाद उन्हें पता चला कि उन का बाप बीमार हो गया। उन लोगों ने वापसी का प्रोग्राम बनाया। अब हज़रत शैख़ की ख़िदमत में हाज़िरी दी ताकि उन की कैफ़ियत व हालत को भी मालूम कर सकें। हज़रत शैख़ के पास आकर वालिद की बीमारी और अपनी वापसी की ख़बर दी। हज़रत शैख़ ने उन की बात सुन कर इरशाद फ़रमाया कि जब तुम घर पहुंचोगे तो तुम्हारे बाप को आराम हो चुका होगा। तुम शहर में रात के आख़िरी हिस्से में पहुंचोगे। जब बाप की ख़िदमत में हाज़िरी दोगे तो सुबह की नमाज़ के लिए वुज़ू करता हुआ पाओगे। वह एक पाँव धो चुके होंगे। और दूसरा अभी नहीं धोया होगा। वह दोनों भाई जब घर गए तो ऐसा ही पाया जैसा कि हज़रत शैख़ ने बताया था और वुज़ू की वही हालत थी जो उन्हों ने इरशाद फ़रमाई थी। उन दोनों भाइयों ने हज़रत शैख़ की सारी इरशाद फ़रमाई हुई बात लोगों को बता दी तो उस इलाक़े में भी आप की बड़ी शोहरत हो गई। (जामेअ़ करामाते औलिया पे0: 538)

और इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद बिन हारून रहमतुल्लाहि तआला अलैहि जो मिस्र के शहर''सन्हूर'' के रहने वाले थे। जब आप के पास से हज़रत सय्यदी इब्राहीम बसक़ी

रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के वालिदे माजिद गुज़रते तो आप खड़े हो जाते और फ़रमाते कि उन के सुल्ब (पुश्त) में एक महान वली है जिस का शोहरा पूरब और पश्चिम में फैल जाएगा।

(जामेअ् करामाते औलिया पे0: 558)

और ज़िक्र फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद बिन अ़ली बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 653 हि0) ने बहुत से अजीब वाक़िआत बताए और वह इसी तरह ज़ाहिर हुए जिस तरह आपने बताए थे। आपने बग़दाद के ग़र्क़ होने की ख़बर दे दी थी तो हुआ यूँ कि दरिया-ए-दजला भर गया और शहर की फ़सील (बाउन्डरी-हद) से पानी अंदर आ गया।, वज़ीर (मन्त्री) का घर तबाह हो गया, ख़लीफ़ा (बादशाह) का स्टोर भी पानी की नज़्र हुआ, तीन सौ तीस घर दरिया की ज़द में आ गए, गिरने वाले मकानों ने लातादाद मख़लूक़ (इन्सानों) को पीस कर रख दिया और वे क़ाबू पानी ने बेशुमार लोगों को निगल लिया। यह जमादियुलउखरा 654 हि0 का वाक़िआ है आप ने यह भी बताया था कि मस्जिदे नबवी जल जाएगी। तो 654 हि0 माहे रमज़ान की पहली तारीखों में ऐसा हुआ। आपने तातारियों के हम्ले की ख़बर भी दे दी थी। यह वह हम्ला था जिस की मिसाल इस घूमने वाले आसमान ने कभी नहीं देखी थी। इस में सब कबाहतें (बुराइयाँ) और सारी ख़ुबासतें जमा हो गई थीं। ख़लीफ़ा (बादशाह) 565 हि0 में क़त्ल हो गए और हर तरफ तातारी छा गए। यह तीनों वाक़िआत हज़रत शैख़ की वफ़ात (मौत) के बाद हुए। आपने"हज़र मौत" में सख़्त सैलाब की भी ख़बर दी थी। यह सैलाब भी आया। वादियां उमड पड़ीं और बहुत से शहर तबाही से हलाक हुंए। तक़रीबन चार सौ लोग मौत की नींद सो गए।

(जामेअ् करामाते औलिया पे0: 565)

और बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ इब्राहीम बताइही रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि से रवायत है कि हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन अबू बक्र क़वाम अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान (इन्तिक़ाल 658 हि0) हल्ब में तशरीफ़ फ़रमा थे और हम भी आप के साथ थे। आप फ़रमाने लगे मैं यमनि वाले को शुमाल वाले (यानी जन्नतियों को दोज़खियों) में से जानता हूँ। अगर चाहूँ कि उन के नाम लूँ तो नाम ले सकता हूँ लेकिन हमें उस का हुक्म नहीं दिया गया और इस हक़ को हम लोगों में खोलना नहीं चाहते।

(जामेअ् करामाते औलिया पे0: 566)

और बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ मालिक इसमाईल कुरदी कहते हैं कि मेरे पास बकरियां थीं जिन का एक चरवाहा भी था। वह एक दिन सुबह उन्हें चराने निकला मगर आदत के मुताबिक़ शाम को वापस नहीं आया तो मैं उस की तलाश में निकला लेकिन न तो वह मिला और न ही उस की कोई ख़बर मिली, मैं हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन अबू बक्र क़वाम की तरफ़ गया। आप को अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा पाया। मुझे देखते ही फ़रमाने लगे बकरियां गुम हो गई हैं? मैं ने अर्ज़ किया हाँ, फ़रमाया बारह आदमियों ने उन्हें हांक लिया है और फलाँ वादी (घाटी) में चरवाहे को बांध गए हैं। मैं ने अल्लाह तआला से दुआ की है कि उन पर नींद जारी कर दे। मेरी दुआ क़ुबूल हो गई है। आप फलाँ जगह जाएं, वह सोए हुए हैं, बकरियां सब बैठी हैं, सिर्फ़ एक खड़ी है और बच्चे को दूध पिला रही है। आप ने जिस जगह निशानदेही फ़रमाई थी मैं वहां गया तो मामला आप के इरशाद के मुताबिक था एक बकरी खड़ी बच्चे को दूध पिला रही थी मैं सब बकरियों को अपने गावं हांक लाया।

(जामेअ् करामाते औलिया पे0: 574)

और इरशाद फ़रमाते हैं कि एक जनाज़ा आया और शहर के बुजुर्ग भी जनाज़े के साथ थे। जब सब लोग मैयत को दफ्न करने के लिए बैठ गये तो क़ाज़ी, ख़तीब और हाकिमे शाहर एक गोशे में बैठ गए। हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन अबू बक्र क़वाम रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि और आप के फ़क़ीर दूसरे गोशे में बैठे, उन की गुफ्तगू सुन रहे थे। क़ाज़ी और वाली-ए-शहर करामाते औलिया पर बात चीत करते हुए कहने लगे कि करामात की कोई हक़ीक़त नहीं है। ख़तीब नेक आदमी था। जब सब लोग मैयत के वारिसों की तरफ़ ताज़ियत के लिए जमा हुए तो कुछ लोग हज़रत शैख़ को सलाम करने के लिए बढ़े। हज़रत ने फ़रमाया ख़तीब साहब! मैं आप को सलाम नहीं कहता। वह कहने लगे हुजूर! क्यों? फरमाया इस लिए कि औलिया की जब गीबत की जा रही थी तो आप ने तरदीद फ़रमा कर औलिया की तरफ़ से वक़ालत नहीं किया। आप फिर क़ाज़ी और हाकिमे शहर की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाने लगे। आप लोग करामाते औलिया के मुनकिर हैं, बताएं कि आप लोगों के पांव के नीचे ज़मीन में क्या है? दोनों बोले हमें कुछ पता नहीं, फ़रमाया आप लोगों के पाँव के नीचे पांच सीढ़ियों वाला ग़ार है जिस में एक शख़्स अपनी बीवी समेत दफ़्न किया गया है। अब वह क़ब्र में खड़े हो कर मुझ से बात करते हुए कह रहा है कि तक़रीबन हज़ार साल पहले मैं इन शहरों का बादशाह था। वह गार में तख़्त पर है और उस की बीवी भी तख़्त पर है। हम यहाँ से जगह खोदे बग़ैर नहीं हटेंगे। मज़दूर बुलाया गया। और लोगों की मौजूदगी में जगह खोदी गई तो शैख़ के इरशाद के मुताबिक़ सब कुछ मौजूद था। ग़ार अब तक खुला हुआ है और हल्ब की एक तरफ़ देखा जा कसता है।

(जामेअ् करामाते औलिया पे० 576)

दो शख़्सों को यह बताना कि जब तुम लोग घर जाओगे तो अपने बाप को वुज़ू करता हुआ पाओगे इस हालत में कि एक पाँव धो चुका होगा दूसरा धोना बाकी होगा, बाप की सुल्ब (पुश्त) में अज़ीमुश्शान (महान) वली को देख लेना, बग़दाद के गर्क होने, मस्जिदे नबवी में आग लगने, तातारियों के हमला करने और"हज़र मौत" में सैलाब के आने की बहुत पहले खबर देना, जन्नती और दोज़खी का जनाज़ा, चरवाहा और बकरियों के बारे में ख़बर देना कि वह कहाँ पर किस हालत में हैं और यह बताना कि ज़मीन के नीचे क्या है? सब इल्मे गैब है। हज़रत अ़ल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने इन सारे वाक़िआ़त को अपनी किताब में लिख कर साबित कर दिया कि हमारा यह अक़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला औलिया-ए-किराम को भी इल्म गैब अता फ़रमाता है।

और फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ इमाम शम्सुद्दीन ख़ाबोरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि कहते हैं कि मैं हल्ब के मदर्सा सुलतानिया के आलिमों के पास हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन अबू बक्र क़वाम अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान का अक्सर ज़िक्रे ख़ैर किया करता था। वह कहने लगे हम आप के साथ हज़रत से मिलने चलेंगे और उन से फ़िक़्ह व तफ़सीर वग़ैरा के मसाइल पूछेंगे। हम सब आप की ज़ियारत का प्रोग्राम बना कर चलने ही वाले थे कि एक फ़क़ीर आया और कहा कि हज़रत शैख़ आप को तलब फरमा रहे हैं। मैं ने उस से पूछा आप कहाँ तशरीफ़ फ़रमा हैं? उस ने जवाब दिया हज़रत शैख़ अबुल फ़तह कतानी की ख़ानकाह में हैं जो आप के मुरीद हैं, मैं आ़लिमों की एक जमाअ़त के साथ ज़ियारत के लिए निकला। जब हम आप की ख़िदमत में पहुंचे तो शैख़ मुहम्मद अक़ीबी ने मुझ से कहा उन आ़लिमों का क्या

मुआमला है? मैं ने कहा हज़रत शैख़ की ज़ियारत और सलाम के लिए हाज़िर हुए हैं। वह कहने लगे यह अजीब वाकिया पेश आया है। मैं ने कहा क्या हुआ है? वह कहने लगे कि हज़रत शैख़ ने उन आलिमों को लगाम लगादी है और आप का पेट दरिन्दे की शक्ल में हो कर उन में से हर एक के चेहरे को घूर रहा है। (यानी हज़रत शैख़ ने उन की ज़बान बन्द करदी है अब वह बोल नहीं सकते और सामने शेर की शक्ल है। लिहाज़ा ख़ौफ़ ज़दा हैं, दर असल वह हज़रत का इल्मी इम्तिहान लेने आए थे यहाँ ख़ुद इम्तिहान में पड़ गए। शैख़ मुहम्मद अकबी ने कश्फ़ (रूहानी इल्म) से यह बात मुलाहज़ा फ़रमाई। मुतर्जिम)

जब महफ़िल लगे हुए बहुत देर गुज़र गई और उन हज़रात में से किसी ने बोलने की जसारत (हिम्मत) नहीं की तो हज़रत शैख़ यूँ गोया हुए, हज़रात! आप लोग क्यों नहीं बोलते और क्यों नहीं सवाल करते? फिर भी किसी को बोलने की हिम्मत न हुई अब हज़रत शैख़ ने अपनी दाहिनी तरफ़ वाले आलिम से फ़रमाया आप का सवाल यह है और उस का जवाब यह है। फिर उस से बाद वाले को और फिर उस से भी बाद वाले को यूँ ही फ़रमाया। सब के दिलों के सवालात को ख़ुद ही पेश फ़रमाते और ख़ुद ही उन के जवाबात देते। एक एक करके सब के सवालात के जवाबात उसी तरह दिए। अब सब आलिम हज़रात वहाँ से उठे और सब ने तौबा व इस्तिग़फ़ार की।(जामेअ् करामाते औलिया पे०: 573)

हज़रत अल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने इस वाकिये को लिख कर साबित कर दिया कि औलिया अल्लाह दिलों के ख़्यालात से वाकिफ़ हो जाते हैं यह भी हमारा अक़ीदा है। वरना इस वाकिए को बिला तरदीद (खण्डन) वह अपनी किताब में दर्ज ही न फ़रमाते।

औलिया अल्लाह के अक़ीदे

अल्लाह के वली वह मुसलमान और ख़ास बन्दे होते हैं जो इन्सानी ताकत के मुताबिक ख़ुदा-ए-तआला की ज़ात व सिफ़ात के आरिफ़ (ज्ञानी) होते हैं, अहकामे शरीअत के पाबन्द होते हैं और लज़्ज़तों व शहवात (जिस्मानी ख़्वाहिशों)से संबन्ध नहीं रखते(1) उन के मुख़्तलिफ़ दर्जे हैं मगर अल्लाह तआला के महबूब हैं और बड़ी अज़मत (महानता) व बुज़ुर्गी वाले हैं। अब इल्मे ग़ैब के बारे में उन के अक़ीदे मुलाहज़ा हों।

इमाम बाक़र का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 114 हि०)

आप नवासा-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साहिबज़ादे हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रज़न्द (बेटे) हैं। आप के बारे में हज़रत अल्लामा जामी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं।

एक मोतबर रवायत करने वाले का बयान है कि हम हज़रत इमाम बाकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह हिशाम बिन अब्दुल मलिक के घर के पास से उस वक़्त गुज़रे जब कि वह उस की बुनियाद रख रहा था। आप ने फ़रमाया ख़ुदा की कसम यह घर ख़राब व ख़स्ता हो जाएगा और लोग इस की मिट्टी तक खोद कर ले जाएंगे। यह पत्थर जिन से उन की बुनियाद रखी गई है खंडरात में बदल जाएंगे। रवायत करने वाले का बयान है कि मुझे आप की इस बात से तअज्जुब हुआ कि हिशाम के घर

को कौन तवाह व वर्वाद कर सकता है। मगर जव हिशाम का इन्तिक़ाल हो गया तो वलीद विन हिशाम के हुक्म पर उस मकान को गिरा दिया गया और मिट्टी को इस हद तक खोदा गया कि उस की बुनियाद के पत्थर नज़र आने लगे। मैं ने ख़ुद उसे अपनी आँखों से देखा। (शवाहिदुन्नुबुव्वत पे0: 318)

और इमाम जाफ़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुझ से फ़रमाया कि एक दिन मेरे वालिदे माजिद (पिता) हज़रत इमाम वाक़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुझ से फ़रमाया कि मेरी उम्र सिर्फ़ पांच साल और रह गई है। जव उन्होने वफ़ात (मौत) पाई तो हम ने माह व साल गिने तो वही मुद्दत निकली जितनी कि आपने वताई थी। (शवहिदुन्नुबूव्वत पे0: 319)

और बुज़ुर्गों में से एक शख़्स का बयान है कि मैं मक्का मुअज़्ज़मा में था कि मुझे हज़रत इमाम वाकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ियारत का शौक़ हुआ। मैं सिर्फ इसी ग़र्ज़ से मदीना तय्यवा गया। जिस रात मैं वहाँ पहुंचा सख़्त वारिश हुई जिस के सवव सरदी वहुत वढ़ गई आधी रात गुज़र गई तव में आपके घर पहुंचा। मैं अभी इसी फ़िक्र में था कि आप का दरवाज़ा इसी वक़्त खट खटाऊँ या सब्र से काम लूँ यहाँ तक कि सुवह के वक़्त वह ख़ुद ही वाहर तशरीफ़ ले आएं। अचानक आप की आवाज़ा सुनाई दी। आप ने फ़रमाया ऐ लौंडी! फलाँ शख़्स के लिए दरवाज़े खोल दे। इस लिए कि आज की रात इसे सख़्त सर्दी लग गई है। लौंडी ने आकर दरवाज़ा खोला। और मैं अंदर चला गया।

(शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 320)

एक और वुज़ुर्ग रवायत करते हैं कि मैं हज़रत वाक़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के यहाँ गया और दरवाज़ा खटखटाया। एक लौंडी वाहर आई। वह जवानी में क़दम रख रही थी। मुझे

वहुत अच्छी लगी। मैं ने उसके पिस्तानों को छूते हुए कहा। अपने आक़ा से कहो फलाँ शख़्स दरवाज़े पर हाज़िर है। अंदर से आवाज़ आई कि घर में आ जाओ हम तुम्हारे इन्तिज़ार में है। मैं अंदर गया तो अर्ज़ किया हुज़ूर! मेरा इरादा बुरा नहीं था। आपने फ़रमाया तुम सच कहते हो लेकिन कभी यह ख़्याल न करना कि यह दरवाज़ा और दीवार हमारी आँखों के सामने ऐसे ही पर्दे की हैसियत से होते हैं जैसे तुम्हारी आँखों के सामने। अगर ऐसा हो तो हमारे और तुम्हारे दर्मियान फ़र्क़ ही क्या रहा, आइन्दा कभी ऐसी हरकत नहीं करना। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 322)

और हज़रत अ़ल्लामा निवहानी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं। अबू बुसैर से रवायत है, वह कहते हैं कि मैं हज़रत इमाम मुहम्मद वाक़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ मस्जिदे नववी में मौजूद था कि मन्सूर और दाऊद विन सुलैमान मस्जिद शरीफ़ में आए, अभी तक अव्वासी ख़ानदान को हुकूमत नहीं मिली थी (जिस के ख़लीफ़ा वाद मैं मन्सूर वनने वाले थे) दाऊद हज़रत इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इमाम ने फ़रमाया मन्सूर को शर्फ़े हुज़ूर से कौन सी चीज़ रुकावट हुई? दाऊद ने जवाव दिया वह सख़्त मिज़ाज है इमाम ने फ़रमाया ज़रूर यह शख़्स एक दिन तख़्ते ख़िलाफ़त (हुकूमत) पर क़ब्ज़ा कर लेगा, लोगों की गर्दनों को रौंद डालेगा और पूरव व पश्चिम पर छा जाएगा। उस की लम्बी हुकूमत होगी और इतना माल जमा करेगा कि उस की मिसाल न होगी।

दाऊद ने मन्सूर को हज़रत की यह पेशेनगोई (भविश्यवाणी) जा कर वता दी। अव वह हाज़री के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हो कर माज़िरत (माफ़ी) करने लगा कि महज़ आप के दवदवा और शिकवा की वजह से पहले हाज़िर नहीं हो सका। फिर दाऊद ने

जो कुछ बताया था उस के मुतअ़ल्लिक़ हज़रत इमाम से पूछा। आपने फ़रमाया यह तो हो कर रहे गा। मन्सूर ने फ़रमाया जी हाँ ऐसा ही होगा। उसने पूछा क्या हमारी हुकूमत सय्यदों की हुकूमत से पहले होगी? आप ने फ़रमाया जी हाँ ऐसा होगा। उसने पूछा क्या मेरे बाद मेरा कोई लड़का भी हुक्मराँ होगा? फरमाया जी हाँ। पूछने लगा कि उमवी खानदान की हुकूमत का ज़माना ज़्यादा होगा या हमारी हुकूमत का? फ़रमाया तुम्हारी हुकूमत का ज़माना ज़्यादा है। इस मुल्क के साथ तुम्हारे नौ उम्र लड़के इस तरह खेलेंगे जैसे बच्चे गेंद से खेलते हैं। मेरे वालिदे गिरामी (हज़रत इमाम ज़ैनुलआबदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने मुझ से इसी तरह इरशाद फ़रमाया था। (जामेअ़ करामाते औलिया पे० 467)

बहुत पहले इस बात की ख़बर देना कि हिशाम का घर खोद कर गिरा दिया जाएगा, यह बताना कि मेरी उम्र सिर्फ़ पांच साल रह गई है, मक्का शरीफ़ से आने वाले को घर के अंदर से जान लेना फिर उसके बारे में ज़्यादा सर्दी लगने की ख़बर देना और लौंडी के साथ ग़लत हरकत को मकान के अंदर से आगाह हो जाना सब ग़ैब की बातें हैं।

मालूम हुआ कि हज़रत इमाम बाक़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह अक़ीदा था कि मुझे ग़ैब का इल्म है जैसा कि उन्होंने खुद फ़रमाया कि यह ख़्याल न करना कि दरो-दीवार हमारी आँखों के सामने पर्दा होते हैं और ख़लीफ़ा मन्सूर के वाक़िआ़ से ज़ाहिर हुआ कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बारे में उन का अक़ीदा था कि वह भी ग़ैब जानते थे।

★★★

इमाम जाफ़र का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 148 हि०)

आप हज़रत इमाम बाक़र रजियल्लाहु तआ़ला अन्हु के साहिबज़ादे (बेटे) हैं। उन के हालात में हज़रत अ़ल्लामा जामी अलैहिर्रमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं।

जनाब अबू बुसैर का बयान है कि मैं मदीना मुनव्वरा गया। मेरे साथ एक लोंडी भी थी मैं ने उस से हमविस्तरी की। उस के बाद हमाम (बाथरुम) में जाने के लिए बाहर आया मैं ने देखा कि बहुत से लोग हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़ियारत के लिए उन के मकान पर जा रहे हैं।मैं भी उनके साथ हो लिया। जब हम हज़रत इमाम के दौलतखाने (घर) पर हाज़िर हुए तो आप की नज़र मुझ पर पड़ी। आपने फ़रमाया ऐ अबू बुसैर! तुम्हें शायद मालूम नहीं कि पैग़म्बर और उन की आल व औलाद की क़यामगाहों (मकानों) पर जनाबत (नापाकी) की हालत में नहीं आना चाहिए। मैं ने कहा ऐ फ़रज़न्दे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! मैं ने लोगों को आप की तरफ़ आते देखा तो मुझे अंदेशा हुआ कि शायद आप की ज़ियारत की दौलत फिर नसीब न हो, इस लिए मैं आ गया। फिर मैं ने तौबा की और कहा आइन्दा ऐसा न करूंगा। उस के बाद बाहर आगया। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे०: 332)

एक और साहब का बयान है कि मेरा एक दोस्त था जिस को ख़लीफ़ा (बादशाह) मन्सूर ने कैद कर दिया था, मेरी मुलाकात हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हज के मौसम मैं मैदाने अरफ़ात में हुई। आपने मेरे उसी दोस्त के मुतअ़ल्लिक़ मुझ से पूछा। मैं ने कहा हुज़ूर! वह ऐसे ही कैद मे है।

आपने दुआ की फिर एक घंटा बाद फ़रमाया। खुदा की क़सम तुम्हारे दोस्त को बरी कर दिया गया है। रवायत करने वाले का बयान है कि जब मैं हज से फ़ारिग़ हो कर वांपस आया तो अपने उस दोस्त से पूछा कि तुम्हारी रिहाई किस दिन हुई? उस ने बताया कि नौ ज़िलहिज्जा के दिन अस्र की नमाज़ के बाद मुझे छोड़ दिया गया था। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 332)

और एक शख़्स का बयान है कि मैं ने मक्का मुअज़्ज़मा में एक चादर ख़रीदी और पक्का इरादा किया कि वह किसी को न दूँगा ताकि मौत के बाद मेरे कफ़न का काम दे मैं सुबह मुज़दल्फ़ा से मिना वापस आया तो मस्जिदे ख़ैफ़ में बैठ गया। अचानक एक शख़्स हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास से आकर कहने लगा कि तुझे हज़रत बुला रहे हैं। मैं फ़ौरन आप के पास गया और सलाम करके आप के सामने बैठ गया। आपने मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया। क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी चादर तुम्हें मिल जाए? मैं ने अर्ज़ किया हाँ हुज़ूर। आप ने अपने गुलाम को आवाज़ दी जो एक चादर ले कर आ गया मैं ने पहचान लिया वही चादर थी। आपने फ़रमाया उसे ले लो और खुदा-ए-तआला का शुक्र अदा करो।

(शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 333)

अबू बुसैर की हालते नापाकी को जान लेना, अरफ़ा (9ज़िलहिज्जा) के दिन क़ैदी को छोड़ दिए जाने को उसी रोज़ मैदाने अरफ़ात में आगाह होजाना, चादर किस की है? किस काम के लिए है? और चादर वाला कहाँ बैठा है? यह सब ग़ैब की बातें हैं जिन से हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों को आगाह फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे ग़ैब का इल्म अता फ़रमाया है।

इमाम मूसा काज़िम का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 186 हि0)

आप हज़रत इमाम सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साहिबज़दे (बेटे) हैं। आप के ज़िक्र में हज़रत अ़ल्लामा जामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं।

हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि से रवायत है। वह फ़रमाते हैं कि मैं सफ़रे हज में क़ादसिया पहुंचा। वहाँ मैं ने एक ख़ूबसूरत और बुलन्द क़द शख़्स को देखा जो पश्मीना के कपड़े पहने हुए था। वह एक जगह अकेला जा कर बैठ गया। मैं ने दिल में ख़्याल किया कि यह नौजवान तब्क़ए सुफ़िया से मालूम होता है। शायद चाहता है कि उस सफ़र में मुसलानों पर बोझ बने। ज़रूरी है कि मैं उस से कहूँ ऐसा न करे। जैसे ही मैं उस के पास पहुंचा। उस ने कहा ऐ शफ़ीक़!"ज़्यादा गुमान करने से बचो। इस लिए कि बाज़ गुमान गुनाह होते हैं।" (पा0 26 रू0: 14)

यह कह कर वह नौजवान चला गया। मैं ने अपने दिल में कहा। यह अजीब बात है कि उस ने मेरे दिल की बात जान ली। यह कोई अल्लाह का वली है। मुझे इस से माफ़ी मांगनी चाहिए। मैं ने बहुत तेज़ चलने की कोशिश की लेकिन उसे नहीं पा सका।

फिर जब मैं मक्का मुअज़्ज़मा गया तो देखा कि उस शख़्स के पास कई गुलाम व ख़ादिम थे लोग उन को चारों तरफ से घेरे हुए थे। और कह रहे थे। "अस्सलामु अ़लैक या इब्न रसूलल्लाह" मैं ने पूछा तो मालूम हुआ कि यह हज़रत मूसा काज़िम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। मेरे मुंह से बरजस्ता निकला। इस किस्म का वाक़िआ इन से कोई तअज्जुब की बात नहीं। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0 339)

एक और रवायत करने वाले का बयान है कि मैं मदीना मुनव्वरा में मुजाविर था। मैं ने एक मकान किराय पर ले रखा था। एक दिन सख़्त बारिश हुई मैं ने खिदमत में हाज़िर होने का लिबास पहना। जब आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो सलाम अर्ज़ किया। आपने सलाम का जवाब दे कर फ़रमाया ऐ फलाँ! अपने घर वापस जाओ। तुम्हारे घर की छत बह गई थी मैं ने चन्द मज़दूरों को बुलाया जिन्हों ने मेरा सामान नीचे से निकाला।

(शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 340)

हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी के दिल की बात से वाक़िफ़ हो कर उन की बदगुमानी दूर करने के लिए आयते करीमा तिलावत करना और मदीना मुनव्वरा के मुजाविर की छत गिरने को अपने घर से जान लेना इल्म ग़ैब है। जिन्हें आपने ज़ाहिर फ़रमाया। साबित हुआ कि हज़रत इमाम मूसा काज़िम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह अक़ीदा है कि मेरा गैब जानना हक़ है। अल्लाह तआला अपने दोस्तों को ग़ैब का इल्म अ़ता फ़रमाता है।

★★★

इमाम अ़ली रज़ा का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 202 हि0)

आप हज़रत इमाम मूसा काज़िम रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के साहिबज़ादे (बेटे) हैं। आपके हालात में हज़रत अ़ल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं।

एहले कूफ़ा में से एक शख़्स का बयान है कि जब मैं खुरासान जाने के लिए कूफ़ा से रवाना होने लगा तो मेरी लड़की ने एक बहुत अच्छा कपड़ा दिया और कहा कि उसे बेच कर मेरे

लिए फ़िरोज़ा ख़रीद लाना। जब मैं........पहुंचा तो हज़रत अ़ली रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के ग़ुलामों ने आकर मुझ से कहा कि हमारा एक साथी इन्तिक़ाल कर गया है। उस के कफ़न के लिए कपड़ा हमारे हाथ बेच दो। मैं ने कहा मेरे पास कोई कपड़ा नहीं। यह सुन कर वह सब चले गए मगर थोड़ी देर के बाद फिर आए और कहने लगे कि हमारे आक़ा ने तुझे सलाम कहा है और फ़रमाया है कि तुम्हारे पास एक कपड़ा है जो तुम्हारी लड़की ने दिया था कि उसे बेच कर उसके लिऐ फ़िरोज़ा ख़रीद लो। हम उस की क़ीमत लाए हैं।

मैं ने कपड़ा उन्हें दे दिया। उस के बाद दिल में कहा कि कुछ मसअले आप से पूछूं, देखू कया जवाब देते हैं। चुनाँचे चन्द मसअले मैं ने एक कागज़ पर लिख लिए और सुबह के वक्त आप के दौलतखाना पर हाज़िर हो गया। वहाँ पर लोगों का बहुत हुजूम था किसी को मजाल न थी कि वह उस भीड़ में आप से आसानी के साथ मिल सकें। मैं हैरत के आलम में खड़ा था कि आप का एक गुलाम बाहर आया और मेरा नाम ले कर एक लिखा हुआ कागज़ मुझे दिया और कहा ऐ फलाँ! यह तेरे सवालों के जवाबात हैं। मैं ने देखा तो वाक़ई मेरे सवालों के जवाबात उस में दर्ज थें। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 348)

और एक रवायत करने वाले का बयान है कि रिय्यान बिन सल्त ने मुझ से कहा मेरी ख़्वाहिश है कि तुम मेरे लिए हज़रत इमाम अली रज़ा से इजाज़त लो ताकि मैं आप को ख़िदमत मैं इस उम्मीद से हाज़िरी दूँ कि आप मुझे अपने कपड़ों में से कोई कपड़ा पहनाएं और अपने नाम के चन्द दिर्हम भी अता फ़रमाएं। रवायत करने वाले का बयान है कि जब मैं हज़रत अ़ली रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के यहाँ हाज़िर हुआ और अभी मैं ने कुछ भी नहीं

कहा था कि आप फ़रमाने लगे रय्यान सल्त चाहता है कि यहाँ उस उम्मीद से हाज़िर हो कि मैं उसे कपड़ा पहनाऊँ और वह दिरहम (रुपय) जो मेरे नाम से जारी हुए हैं उस में से कुछ उसे भी दूँ। रय्यान बिन सल्त को यहाँ ले आओ। रय्यान अंदर गए तो आप ने उन्हें दो कपड़े अ़ता फ़रमाए और तीस दिर्हम दिए।

(शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 349)

लड़की का फ़िरोज़ा ख़रीदने के लिए कपड़ा देने का वाक़िआ़ जो कूफ़ा में हुआ था शहर मुरू में वाक़िफ़ हो जाना फिर सवालात पेश किए गए बेग़ैर उन का जान लेना और रय्यान बिन सल्त की तमन्ना से वाक़िफ़ होना कि वह कपड़े और दिर्हम चाहता है। सब ग़ैब हैं जिन को आपने ज़ाहिर फ़रमाया। साबित हुआ कि हज़रत इमाम अ़ली रज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का भी यह अक़ीदा था कि मुझे इल्म ग़ैब हासिल है वरना वह इन बातों को ज़बान पर हरगिज़ नहीं लाते और न सवालों के जवाबात लिखते।

★★★

इमाम मुहम्मद तक़ी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 210 हि0)

आप हज़रत इमाम अ़ली रज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साहबज़ादे (बेटे) हैं आपके ज़िक्र में हज़रत अ़ल्लामा जामी अ़लैहिर्रहम फ़रमाते हैं। जब ख़लीफ़ा मामून रशीद का इन्तिक़ाल हुआ तो हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी रज़ियल्ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि मेरी वफ़ात (मौत) आप से तीस महीने बाद होगी। जब ख़लीफ़ा मामून रशीद के इन्तिक़ाल को तीस महीने गुज़र गए तब आप का विसाल हुआ। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 358)

और एक शख़्स का बयान है कि मैं हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया फलाँ नेक इन्सान ने आप को सलाम भेजा है और वह आप से कफ़न के लिए किसी कपड़े का ख़्वाहिशमन्द है। आप ने फ़रमाया वह इन बातों से बे परवा हो चुका है यह सुन कर मैं बाहर आ गया। लेकिन आप का इरशाद मेरी समझ में नहीं आया। आख़िर पता चला कि वह तेरह चौदा रोज़ पहले ही मर चुका था। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 358)

यह फ़रमाना कि मेरी वफ़ात आज से तीस माह बाद होगी और कफ़न का कपड़ा चाहने वाले के बारे में फरमाना कि वह इस से बे परवा हो चुका है। सब ग़ैब की ख़बरे हैं मालूम हुआ कि हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी रज़ियल्लाहु तअ़ला अ़न्हु का भी यही अक़ीदा था कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है।

★★★

इमाम अ़ली असकरी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 254 हि0)

आप हज़रत इममाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की औलाद में से हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साहबज़ादे (बेटे) है। आप के लहालत में हज़रत अ़ल्लामा जामी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं।

एक शख़्स के यहाँ शादी के मौक़ा पर दावते वलीमा थी जिस में शिरकत के लिए इस्लामी बादशाहों की औलाद आई हुई थी उन की ताज़ीम के लिए बहुत से लोग जमा थे उस मजलिस में

एक नौजवान ऐसा था जो बेअदब था। बेकार बातें करता था और हंसता था। हज़रत इमाम अली असकरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया ठट्ठे मार रहे हो और अल्लाह का ज़िक्र भूल गए हो और तुम्हें खबर नहीं कि तुम तीन दिन के बाद क़ब्र में रहोगे। यह बात सुन कर वह नौजवान वे अदबी से बाज़ आ गया और हज़रत के इरशाद के मुताबिक़ वह तीसरे दिन मर गया।(शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 363)

और एक दूसरे दिन का वाक़िआ़ है कि सामरा वाले के यहाँ दावते वलीमा थी। मज्लिस में एक लड़का ऐसा था जो बड़ा बेअदब था, बेहूदा बातें करता था। और आप का लिहाज़ नहीं करता था। आपने फ़रमाया यह शख़्स उस खाने से कुछ न खा सके गा। खाना सामने आया और वह शख़्स खाने की तरफ़ हाथ बढ़ाना ही चाहता था कि उस का गुलाम रोता हुआ आया और कहने लगा। आप की माँ कोठे से गिर कर मर गई, जल्दी चलिए। वह शख़्स खाना खाए बेग़ैर उठ कर चला गया। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 363)

एक शख़्स को इस बात की ख़बर देना कि तुम तीन दिन बाद क़ब्र में रहोगे और दूसरे के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि यह उस खाने में से कुछ न खा सकेगा। दोनों गैब की बातें हैं जिन की ख़बर दे कर हज़रत इमाम अ़ली अ़सकरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपना अक़ीदा साबित कर दिया कि मैं ग़ैब जानता हूँ।

★★★

इमाम हुसैन ज़की का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 260 हि0)

आप हज़रत इमाम हुसैन शहीदे करबला रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साहबज़ादे हैं। आप के बारे में हज़रत अ़ल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि लिखते हैं।

एक शख़्स का बयान है कि मैं जेलख़ाने में था। जेल की परेशानियों को लिख कर मैं ने हज़रत इमाम ज़की रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को भेजा। मैं कुछ पैसों के मुतअ़ल्लिक भी लिखना चाहता था मगर शर्म से नहीं लिखा। आपने जवाब में फ़रमाया कि तुम आज जुहर की नमाज़ अपने घर पढ़ोगे। अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से मैं जेल से छूट गया और जुहर की नमाज़ अपने घर पढ़ी। फिर अचानक मुझे आप का ख़ादिम आता हुआ दिखाई दिया जो मेरे लिए सौ दीनार ला रहा था। उस के साथ एक ख़त भी था जिस में लिखा हुआ था कि जिस वक़्त भी तुम्हें पैसों की ज़रूरत हो शर्म न करो हम से मांग लिया करो। (शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 365)

और एक शख़्स का बयान है कि मैं ने हज़रत इमाम ज़की रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कुछ मसाइल पूछने के लिए एक ख़त लिखा। और मैं चाहता था कि चौथिया बुख़ार के मुतअ़ल्लिक़ भी आप से पूछ लूँ लेकिन मैं यह लिखना भूल गया। आपने जवाब में फ़रमाया कि तुम्हारे सवालों के जवाबात यह हैं। और तुम यह भी चाहते थे कि चौथिया बुख़ार के मुतअ़ल्लिक़ भी पूछूँ लेकिन तुम भूल गए। देखो आयते करीमा "या नारु कूनी बरदंव व सलामन अला इब्राहीम" कागज पर लिख कर चौथिया बुख़ार वाले के गले में लटका दो। मैं ने ऐसा ही किया तो चौथिया बुख़ार दूर हो गया।

(शवाहिदुन्नुबूव्वत पे0: 365)

हज़रत इमाम ज़की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पहले शख़्स के बारे में जानना कि आज वह जेलख़ाने से छूट कर आएगा और जुहर की नमाज़ अपने घर पढ़ेगा और फिर इस बात से वाक़िफ़ होना कि उस को कुछ पैसों की ज़रूरत है। और दूसरे शख़्स के मुतअल्लिक इस बात से आगाह होना कि वह चौथिया बुख़ार के बारे में भी पूछना चाहता था। सब ग़ैब की बातें हैं जिन्हें आप ने ज़ाहिर फ़रमाया। मालूम हुआ कि आप का भी यह अक़ीदा है कि मैं गैब जानता हूँ वरना इन बातों के मुतअल्लिक़ वह ऐसा हरगिज़ न फ़रमाते।

★★★

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ा 561 हि0)

ग़ौसे आज़म हज़रत सय्यदेना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात मुहताजे तआरूफ़ (परिचय) नहीं। इल्मे ग़ैब के बारे में उन का अक़ीदा जानने के लिए नीचे आने वाली रवायतें (सुबूत) मुलाहज़ा हों।

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाह तआला अन्हु ने फ़रमाया"मेरी आँख लौहे महफ़ूज़ में रहती है और मैं अल्लाह के इल्मों के समुंद्ररों में गोता लगाता हूँ।"

(ज़ुबदतुल असरार पे0: 81)

और हज़रत अल्लामा मुहम्मद यहया तादनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फ़रमाया कि हज़रत अबुलख़िज़्र हुसैनी बयान

करते हैं कि हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक ख़ादिम को रात भर में कई बार एहतेलाम हुआ और उसे हर मरतबा ख़्वाब में नई सूरत नज़र आई जिन में से बाज़ से तो वह वाक़िफ़ था और बाज़ औरतों को वह बिलकुल नहीं जानता था। जब सुबह को हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अपनी हालत बयान करना चाही तो उसके कुछ कहने से पहले ही हज़रत ने फ़रमाया रात में तुम को कई बार एहतेलाम होना कोई बुरी बात नहीं थी। इस लिए कि जब मैं ने लौहे महफ़ूज़ में देखा तो उस में यह दर्ज था कि तू फ़लाँ फ़लाँ औरत से ज़िना करेगा। (यानी हज़रत ने उन औरतों के नाम भी बता दिए) तो मैं ने अल्लाह तआला से दुआ की तो उसने बेदारी के वाक़िए को ख़्वाब में बदल दिया। (क़लाइदुलजवाहिर पे0: 130)

और अबुल ख़िज़्र हुसैनी बयान करते हैं कि मुझ से हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 560 हि0 में फ़रमाया कि तुम मूसल शहर की तरफ़ चले जाओ वहाँ खुदा-ए-तआला तुम्हें औलाद अता फ़रमाएगा। पहले लड़का पैदा होगा उस का नाम मुहम्मद रखना। उस लड़के को एक अजमी (ग़ैर अरब) नाबीना हाफ़िज़े क़ुरआन मजीद पढ़ाए गा जिस का नाम अली होगा। और तेरा बच्चा सात साल की उम्र में सिर्फ़ सात माह में क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ करलेगा। और तेरी उम्र 94 साल 6 माह और सात दिन की होगी। और तेरी मौत तनदुरूस्ती की हालत में बारबल के मक़ाम पर होगी।

उन के साहबज़ादे अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद का बयान है कि 561 हि0 में मेरी पैदाइश शहरे मूसल में हुई। मेरे वालिद (बाप) ने मुझे क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ कराने के लिए एक नाबीना को मुक़र्रर फ़रमाया और जब उन का नाम और वतन (देश) दरयाफ़्त किया

गया तो उन्हों ने अपना नाम अ़ली और वतन बग़दाद बताया। उस वक़्त मेरे वालिद को हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाह तआ़ला अन्हु का फरमान याद आया। और उनकी वफ़ात भी हज़रत के इरशाद के मुताबिक़ तनदुरूस्ती की हालत में बारबल के मक़ाम ही पर हुई।

(क़लाइदुलजवाहिर पे0: 126)

और शैख़ ज़ैनुलआबदीन बयान करते हैं कि मैं और मेरे एक साथी हज से वापसी पर पहली बार बग़दाद शरीफ़ पहुंचें। लेकिन वहाँ हमारी किसी से जान पहचान नहीं थी हम लोगों ने खाना ख़रीदा लेकिन वह खाना निहायत बदमज़ा था इस लिए हम लोग पेट भर नहीं खा सके। उस के बाद हम हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हु की मज्लिस में हाज़िर हुए तो आपने नसीहत करना बन्द कर दिया और फ़रमाया कि दो ग़रीब व मिस्कीन हिजाज़ से यहाँ आए हैं जिन के पास एक छुरी के सिवा कुछ न थी। उन्होंने वह छुरी बेच कर खाना ख़रीदा मगर वह खाना उन को अच्छा नहीं मालूम हुआ इस लिए उन का पेट नहीं भर सका। यह सुन कर हम लोगों को बहुत तअ़ज्जुब हुआ और हम दोनों हैरत में पड़ गए। फिर हज़रत ने नसीहत ख़त्म फ़रमाने के बाद दस्तरख़्वान बिछाने का हुक्म दिया। उस वक़्त मैं ने अपने साथी से पूछा तुम क्या खाना चाहते हो? उस ने कहा मुर्ग़ की यख़नी। और मैं ने अपने दिल में कहा कि मैं शहद खाऊँगा। हज़रत ने चूज़े (मुर्ग़) की यख़नी और शहद लाने का हुक्म दिया यख़नी मेरे सामने रखी गई। यह देख कर हज़रत ने फ़रमाया दोनों चीज़ें बदल कर रखो। यह सुनते ही हम लोगों ने एक चीख़ मारी और कूद कर हज़रत के क़रीब पहुंच गए। उस वक़्त आपने मुझ से फ़रमाया ऐ इलाक़ए मिस्र के वाइज़ (रहबर)! मरहबा।

मैं ने अर्ज़ किया कि मैं तो सूरह फातिहा भी अच्छी तरह

नहीं पढ़ सकता। तो आपने फ़रमाया मुझे हुक्म हुआ है कि मैं यह ख़ुशख़बरी तुम्हें सुनाऊँ चुनाँचे हज़रत के फ़रमाने के मुताबिक़ मैं ने बग़दाद शरीफ़ ही में नसीहत का सिलसिला शुरू कर दिया। कुछ अर्सा बाद जब मैं ने हज़रत से मिस्र की वापसी की इजाज़त चाही तो आपने फ़रमाया।

जिस वक़्त तुम दमिश्क़ पहुँचेगे तो वहाँ ग़ाज़ियों (इस्लामी सिपाही) को मिस्र फ़तह करने के लिए जंग की तैयारी करते हुए पाओगे। लेकिन उन से कह देना अबकी बार तुम को कामयाबी नहीं हासिल होगी। अलबत्ता दूसरे हम्ले में कामयाब हो जाओगे।

हज़रत के इरशाद के मुताबिक़ मैंने ग़ाज़ियों से कहा कि इस मरतबा तुम कामयाब नहीं होगे मगर वह लोग नहीं माने और मिस्र पर हमला कर दिया। इधर जब मैं मिस्र पहुंचा तो वहाँ ख़लीफ़ा (बादशाह) को उन के मुकाबिले की तैयारियों में लगा हुआ देख कर मैं ने ख़लीफ़ा से कहा कि आप मुक़ाबले के लिए ज़रूर निकलें जंग में यक़ीनन कामयाबी आप ही को हासलि होगी।

दमिश्क़ वालों ने जब मिस्र पर हम्ला किया तो उन्हें बुरी तरह शिकस्त (हार) हुई। और मिस्र के ख़लीफ़ा ने मुझे अपना मुसाहिब (दोस्त-साथी) बना कर हुकूमत के तमाम राज़ बता दिए। और जब दूसरी मरतबा दमिश्क़ वालों ने मिस्र पर हम्ला किया तो वह कामयाब हो गए। और ख़लीफ़ा को शिकस्त हुई मेरे इस जुम्ले पर कि "तुम्हे इस मरतबा नहीं बल्कि दूसरी मरतबा फ़तह हासिल होगी।" दमिश्क़ वालों ने मुझे बहुत ही इनआ़म व इकराम (इज़्ज़त)से नवाज़ा। इस तरह हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की एक बात में मुझे दोनों तरफ़ से एक लाख दीनार हासिल हुए। (क़लाइदुलजवाहिर पे0: 123)

और अबुल फरह बिन हमामी का बयान है कि मैं हज़रत

ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की करामतों (वली द्वारा अंहोनी काम) को सुन कर यक़ीन नहीं करता था और उन के होने को नामुम्किन समझता था लेकिन हज़रत से मुलाक़ात करने का शौक़ रखता था। इत्तिफ़ाक़ से मुझे बाबुलअज़्ज जाना पड़ा। वापसी पर मुलाकात की ग़र्ज़ से मैं हज़रत के मदर्से में गया। उस वक्त मस्जिद में नमाज़ की इक़ामत (तकबीर) हो रही थी। मैं ने सोचा कि मैं भी अस्र की नमाज़ अदा करके हज़रत से शर्फ़े मुलाकात हासिल करता चलूं। लेकिन जल्दी में मुझे नहीं याद रहा कि मैं वुज़ू से नहीं हूँ। और जमाअ़त में शामिल होकर नमाज़ मैं ने पढ़ ली।

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हु नमाज़ और दुआ़ से फ़ारिग़ होने के बाद मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया साहबज़ादे! अगर मेरे पास तुम कोई हाजत ले कर आते तो मैं उसे ज़रूर पूरी करदेता लेकिन तुम्हारी ग़फ़लत का तो यह हाल है कि तुम ने बेग़ैर वुज़ू ही के नमाज़ पढ़ ली।

(क़लाइदुलजवाहिर पे0: 108)

आँखों का लौहे महफूज़ में रहना। ख़ादिम के कई बार एहतेलाम होने को जान लेना। अबुलख़िज़्र हुसैनी साहबे औलाद कहां होंगे? उन का लड़का किस से पढ़ेगा? कितने साल की उम्र में और कितने दिनों में कुरआन मजीद हिफ्ज़ करले गा? और अबुल ख़िज़्र कितने साल की उम्र में किस हालत में कहाँ मरेंगे? इन सारी बातों से आगाह और वाकिफ़ होना। दमिश्क़ वालों का पहले हम्ले में कामयाब न होने को जानना और बे वुज़ू नमाज़ पढ़ने को जान लेना। यह सब ग़ैब की बातें हैं जिन को हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि मुझे इल्मे ग़ैब हासिल है।

★★★

हज़रत जुनैद बग़दादी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाह अ़न्हु, वफ़ात 297 हि0)

आप हज़रत सिर्री सक़ती अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के भांजे और मुरीद थे। तमाम बुजुर्गों ने आप को सुफ़ियों का इमाम और पेशवा (अगुआ) तसलीम किया है। उन के हालात में हज़रत दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी, लाहौरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत सिर्री सकती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में लोगों ने हज़रत जुनैद रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि से ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि वह नसीहत फ़रमाएं मगर उन्हों ने कुबूल न किया और फ़रमाया कि जब तक मेरे शैख़े तरीक़त (पीर-मुर्शिद) मौजूद हैं मैं कलाम नहीं कर सकता।

एक रात ख़्वाब में हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को देखा। हुज़ूर ने फ़रमाया जूनैद! लोगों को अपना कलाम सुनाओ। बेदार हुए तो दिल में ख़्याल आया शायद अब मेरा मक़ाम शैख़े तरीक़त से ऊंचा हो गया है। इस लिए कि हुज़ूर सल्लल्लाह तआ़ला अलैहि वसल्लम ने मुझे हुक्म फ़रमाया है। सुबह हुई तो हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने एक मुरीद को भेजा और हुक्म दिया कि जब नमाज़ से जुनैद फ़ारिग़ हों तो उन से कहना कि मुरीदों की ख़्वाहिश पर नसीहत न किया। मशाइख़े बग़दाद की सिफ़ारिश भी रद करदी। मैं ने पैग़ाम दिया मगर राज़ी न हुए। अब तो हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु वसल्लम का हुक्म हो गया है। उन का फ़रमान बजा लाओ।

हज़रत जुनैद रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की आँखें खुल गईं और उन्हें मालूम हो गया कि हज़रत सिर्री सकती रहमतुल्लाहि

तआ़ला अलैहि उन के ज़ाहिर व बातिन (पोशीदा) से पूरे तौर पर वाक़िफ़ हैं। उन का दर्जा हम से ऊंचा है। इस लिए कि वह जुनैद के राज़ से वाक़िफ़ हैं। और जुनैद उनके हालात से बे ख़बर है।

(कश्फुलमहजूब पे0: 107)

और फ़रमाते हैं कि हज़रत जूनैद का एक मुरीद आप से नाराज़ हो गया। और समझा कि उसे भी मक़ाम हासिल हो गया है। अब उस को शैख़ की ज़रूरत नहीं रही, एक दिन वह आप का इम्तिहान लेने के लिए आया। हज़रत जुनैद उस के दिल की हालत से आगाह हो गए। उसने कोई बात पूछी। आपने फ़रमाया। लफ़्ज़ी जवाब चाहते हो या मानवी (पोशीदा)? मुरीद ने कहा दोनों जवाब चाहता हूँ। फ़रमाया लफ़्ज़ी जवाब तो यह है कि अगर तू अपना इम्तिहान कर लिया होता तो मेरा इम्तिहान लेने यहाँ न आता। और मानवी जवाब यह है कि मैं ने तुझे विलायत से ख़ारिज किया। इस जुमले के फ़रमाते ही मुरीद का चेहरा काला हो गया। फिर आपने फ़रमाया तुझे ख़बर नहीं कि औलिया असरार (राज़) से वाक़िफ़ होते हैं। (कश्फुलमहजूब पे0: 209)

और हज़रत अ़ल्लामा निबहानी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने जंगल में कूएं पर से एक हिरन को पानी पीते देखा। आप को भी प्यास लग रही थी। आप जब कूएं के क़रीब गए तो हिरन भाग गया और पानी जो ऊपर आ चुका था नीचे चला गया। आपने अर्ज़ किया ऐ मेरे परवर्दिगार! क्या तेरे नज़दीक मेरा वह मक़ाम भी नहीं जो इस हिरन का है? आपने एक बोलने वाले की आवाज़ सुनी जो कह रहा था।"तुम्हारी आज़माइश की गई मगर तुम सब्र न कर सके। हिरन तो मश्कीज़े और रस्सी के बग़ैर कूएं पर आया और तुम यह दोनों चीज़ें ले कर आए हो"

फिर आपने कूएं की तरफ़ देखा तो वह भरा हुआ था। आपने पानी पिया, पाकी हासिल की और अपना मश्कीज़ा (पानी का बर्तन) भरा। फिर हज को गए और वापस हुए मगर मश्कीज़े का पानी ख़त्म नहीं हुआ।

जब आप हज़रत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की खिदमत में हाज़िर हुए तो हज़रत ने आप को देखते ही फरमाया कि अगर आप थोड़ी देर सब्र करते तो पानी आप के कदमों के नीचे से बहता और आप के पीछे-पीछे चलता रहता। (जामेए करामाते औलिया पे0: 494)

पहले से साबित हुआ कि हज़रत सिर्री सक़ती अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के बारे में हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि का यह अक़ीदा था कि वह ग़ैब जानते हैं मेरे बातिनी अहवाल (छुपे हाल) से पूरे तौर पर वाक़िफ़ हैं। और दूसरे वाक़िए में मुरीद के दिल की कैफ़ियत से आगाही को ज़ाहिर फ़रमा कर आप का यह कहना कि औलिया राज़ों को जानते हैं। और हज़रत मुहम्मद शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि को देखते ही उन के कूएं वाले वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाना इस बात का खुला हुआ सुबूत हैं कि हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का अपने बारे में भी यह अक़ीदा है कि मुझे इल्मे ग़ैब हासिल है।

★★★

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी का अक़ीदा
(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 261 हि0)

आप अपने ज़माने के असफ़ियों में से हैं। उलूम ज़ाहिरी व बातिनी (इस्लामी व रूहानी इल्म) में कामिल हैं। आप की बुज़ुर्गी सारी दुनिया को मुसल्लम (स्वीकार) है। इल्मे ग़ैब के बारे में आप का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

हज़रत मौलाना रूमी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अपनी मस्नवी शरीफ़ में फ़रमाते है। कि हज़रत बायज़ीद बुस्तामी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि शहर "रै" के इलाक़े में खिरक़ान की तरफ़ से उन्हें खुशबू मालूम हुई। इस खुशबू से हज़रत इस कदर मस्त हुए कि चेहरे का रंग कभी सुर्ख होता था। और कभी सफ़ेद। एक मुरीद ने अर्ज़ किया हुज़ूर क्या मुआमला है कि मैं आप के चेहरे का रंग बदला हुआ पाता हूँ? फ़रमाया कि इस तरफ से एक दोस्त की खुशबू आ रही है। जहाँ अंकरीब एक बहुत बड़ा अल्लाह वाला तशरीफ़ लाने वाला है। "वह अल्लाह वाला इतने साल के बाद पैदा होगा जो आसमान की बुलन्दियों पर अपनी आरामगाह बनाएगा। किसी ने पूछा कि उन का नाम क्या है? फ़रमाया कि उन का नाम अबुल हसन है। फिर उन का पूरा हुलिया बयान फ़रमाया। भौं कैसी होगी? ठोड़ी कैसी होगी? सब बता दिया। उनके क़द, हद, शक्ल व सूरत और बाल वग़ैरा की हालतों को तफ़सील के साथ बयान फ़रमाया। हज़रत के बयान के मुताबिक़ अबुल हसन ख़िरक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की तारीख़े पैदाइश को लोगों ने नोट कर लिया। जब वह वक्त और वही तारीख़ आई तो ख़िरक़ान में हज़रत अबुल हसन

ख़िरक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह पैदा हुए।"

इस वाक़िए में हज़रत बायज़ीद बुस्तामी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने हज़रत अबुल हसन ख़िरक़ानी रहमतुल्लाह तआला अलैहि की पैदाइश से बहुत पहले उन के बारे में ख़बर दी उन का पूरा हुलिया बयान फ़रमाया, शक्ल व सूरत और बाल वग़ैरा के बारे में तफ़सील (विस्तार) के साथ बताया। यह सब ग़ैब की बातें हैं जिन्हें आप ने ज़ाहिर फ़रमा कर साबित कर दिया कि अल्लाह ने हमें इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है। हमारा यह अक़ीदा है।

नोटः- हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अताला अलैहि का इन्तिक़ाल 261 हि0 में हुआ और हज़रत अबुल हसन ख़िरक़ानी का 435 हि0 में। (नफ़्हातुलउन्स)

★★★

शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 632 हि0)

हज़रत अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि आप इराक़ के उन बुज़ुर्गों में से है। जिन पर बातिनी हुकूमत ख़त्म हो जाती है। आप आलिम व फ़ाज़िल थे और बहुत फ़सीह व बलीग़ कलाम फ़रमाते थे। अक्सर अक़्ल व आदत के ख़िलाफ़ करामात का आप से ज़ुहूर होता रहता था। किताब व सुन्नत पर शिद्दत के साथ अमल पैरा थे। और शरीअत व तरीक़त में मुजतहिद (अविश्कारक) का दर्जा रखते थे। मज़ारे मुक़द्दस बग़दाद शरीफ़ में है आप उन हस्तियों में से थे जिन के पास ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बज़ाते खुद तशरीफ़ लाए और फरमाया कि ऐ शहाबुद्दीन! तुम

मशहूर बुज़ुर्गों के आख़िरी सख़्स हो।(क़लायदुलजवाहर पे0: 391)

और अल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि आप के साथी शैख़ नजमुद्दीन नक़्तीसी फ़रमाते हैं। कि मैं हज़रत शैख़ सुहरवर्दी के इवादत वाले कमरे में दाख़िल हुआ। वह उनके चिल्ला का आख़िरी दिन, था। उस दिन मैं ने देखा कि शैख़ एक बहुत बुलन्द पहाड़ पर हैं और आप के सामने हिरे मोतियों का अंबार लगा हुआ है और आप मुठ्ठियां भर-भर कर लोगों की जानिब फेंकते जाते है। और लोग दौड़ दौड़ कर उठा रहे हैं जब मोती कम होते तो वह ख़ुद बख़ुद बढ़ जाते हैं। जब आप चिल्ला से बाहर आ गए तो मैंने इस वाक़िआ के बारे में तफ़सील मालूम करनी चाही तो आपने मेरे कुछ कहने से पहले ही फ़रमाया कि साहिबज़ादे! तुम ने जो कुछ देखा वह दुरूस्त है। और यह सब कुछ हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी का फ़ैज़ और उन की तालीम का नतीजा है। (क़लायदुलजवाहिर पे0: 391)

हज़रत तादनी अलैहिर्रहमा के मुताबिक़ आप ग़ैब के हालात भी बता दिया करते थे। और शैख़ नक़्तीसी के मुताबिक़ आपने मेरे कुछ कहने से पहले ही फ़रमा दिया। ज़ाहिर है कि हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान का यह अक़ीदा है कि मैं ग़ैब जानता हूँ वरना ग़ैब की बातों को वह ज़बान पर हरगिज़ न लाते।

★★★

शैख़ अली दाता गंज बख़्श का अक़ीदा
(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 465 हि0)

आप बुज़ुर्ग औलिया में से हैं, ज़ाहिरी और बातिनी (रूहानी) इल्म के ख़ज़ाना हैं। आप का मज़ार अक़दस लाहौर में ज़ियारतगाहे ख़ासो आम है। आप की अज़मत (महानता) का अंदाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि सुलतानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप के मज़ारे पुर अंनवार पर हाज़िर हुए। वहाँ चिल्ला किया और रुख़सती के वक़्त हज़रत की शान में यह शेर फ़रमाया।

गंज बख़्श फ़ैज़े आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाकिसां रा पीरे कामिल कामिली रा रहनुमा

इल्मे ग़ैब के बारे में हज़रत का अक़ीदा जानने के लिएं नीचे आने वाले वाक़िआत मुलाहज़ा हों।

ख़ुद हज़रत दाता गंज बख़्श अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान फ़रमाते हैं एक बूढ़े आदमी ने बयान किया कि वह एक दिन हज़रत अबू अली बिन हुसैन दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की मज्लिस में इस ख़्याल से गया कि मुतवक्किलों (यक़ीनवालों) की कैफ़ियत से मुतअल्लिक़ उन से कुछ दर्याफ़्त करे। हज़रत तिबरिस्तान का बना हुआ ख़ूबसूरत अमामा (पगड़ी) बांधें हुए थे। बूढ़े ने सवाल किया।"तवक्कुल अलल हक़ (अल्लाह पर भरोसा) क्या चीज़ है?" फ़रमाया लोगों की पगड़ियों को लालच से न देखने को तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) कहते हैं। यह फ़रमाया और पगड़ी उतार कर बूढ़े आदमी के सामने रखदी। (कश्फुलमहजूब पे0: 244)

और आप फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सईद फ़ज़्लुल्लाह

मैहनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि नीशापूर से तूस जा रहे थे। रास्ते में एक ढंडी घाटी थी सर्दी की वजह से आप के पाँव ढंडे हो गए। एक फ़क़ीर आप के साथ था। उस ने सोचा कि अपने कमरबन्द को फाड़ कर आप के दोनों पैरों में लपेट दे। फिर इस ख़्याल से रूक गया कि कमर बन्द वहुत खुवसूरत है उसे जाए (गंवाना) नहीं करना चाहिए। तूस पहुंच कर वह फ़क़ीर आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा वसवसा और इलहाम में क्या फ़र्क़ है? फ़रमाया कमरबन्द फाड़ कर पाँव पर लपेट देने का ख़्याल इलहाम और जो चीज़ रोकने वाली थी वह वसवसा था।

(कश्फुलमहज़ूब पे0: 247)

और फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रत अवुल फ़ज़्ल मुहम्मद खतली रहमतुल्लाहि तआला अलैहि को वुज़ू करवा रहा था। मेरे दिल में ख़्याल गुज़रा कि जव हर काम तकदीर से होता है तो आज़ाद लोग क्यों करामत की उम्मीद पर पीरों के गुलाम वने रहते हैं? आपने फ़रमाया अज़ीज़े मन! मैं तेरे दिल की कैफ़ियत समझ रहा हूँ। तुझे मालूम होना चाहिए कि हर चीज़ के लिए सबब होता है। जव खुदा-ए-तआला किसी शख़्स को तख़्त व ताज से सरफ़राज़ करना चाहता है तो अपने किसी दोस्त की ख़िदमत उस के सुपुर्द कर देता है ताकि वह ख़िदमत हुसूले करामत का सबव वन जाए। (कश्फ़ुलमहज़ूब पे0: 248)

और हज़रत दाता गंज वख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रत अवुल क़ासिम विन अली रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के सामने अपने हालात व तजर्बात बयान कर रहा था। इस ख़्याल से कि वह रहबरे वक़्त होने की हैसियत से मेरी हालत पर नज़र फ़रमायें। वह निहायत तवज्जह से सुन रहे थे। मैं ने वचकाना और ज़ोरे जवानी में बयान को

लम्बा किया और दिल में सोचा कि ग़ालिबन यह बुज़ुर्ग इन मक़ामात से नहीं गुज़रे हैं वरना इस तवज्जह और नियाज़मन्दी से न सुनते। उन्हों ने मेरे दिल की कैफ़ियत को समझ लिया। और फ़रमाया जाने पदर! मेरा शौक़ और तवज्जह तेरे लिए या अहवाल के लिए नहीं है बल्कि उस ज़ात के लिए है जो ख़ालिक़े अहवाल है। यह चीज़ें हर तालिब को पेश आती हैं। तेरे लिए कोई खुसूसियत नहीं, यह सुन कर मेरे होश उड़ गए।

(कश्फुलमहज़ूब पे0: 250)

एक बुज़ुर्ग का लालच की नज़र से पगड़ी के देखने को जान लेना, दूसरे का कमरबन्द फाड़ ने के इरादा से वाक़िफ़ होना और तीसरे व चौथे का दिल की कैफियत से आगाह होना सब गैब की बातें हैं जिन को हज़रत दाता गंज बख़्श अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने अपनी किताव में ज़िक्र फ़रमा कर साबित कर दिया कि बुज़ुर्गाने दीन को इल्मे ग़ैब हासिल होता है मेरा भी यही अक़ीदा है।

और सफ़ीनतुल औलिया में है कि जव हज़रत दाता गंज वख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने लाहौर में क़याम फ़रमाया तो मस्जिद की तामीर शुरू की जिस की मेहराव लाहौर की दूसरी मस्जिदों की वनिसवत दक्षिण की जानिव कुछ ज़्यादा झुकी हुई मालूम होती थी। वहाँ के उलमा ने एतेराज़ किया मगर आप ख़ामोश रहे। फिर जव मस्जिद तैयार हो गई तो आप ने शहर के तमाम उलमा-ए-किराम और बुज़ुर्गों को दावत दी। और खुद इमाम हो कर नमाज़ पढ़ाई नमाज़ के बाद सब लोगों का मुंह क़िब्ले की जानिव करके खड़ा किया और फ़रमाया देखा! क़िबला किस तरफ़ है। यह कहना था कि फ़ौरन सब लोगों की निगाहों से सारे हिजाबात उठ गए। क़ाब-ए-मुअज़्ज़मा सामने हो गया और उसे हर एक ने अपनी आँखों से देख लिया।

(हदाइक़ुलहन्फ़िया पे0: 198)

इस वाक़िए से मालूम हुआ कि हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि का ख़ुद अपने बारे में भी यह अक़ीदा था कि मैं इल्मे ग़ैब रखता हूँ। दर्मियान में हज़ारों हिजाबात (पर्दा) होने के बावजूद क़ाब-ए-मुअ़ज़्ज़मा को यहीं से देख रहा हूँ और ज़रूरत पड़ने पर दूसरों को भी दिखाता हूँ।

★★★

अ़ल्लामा शतनौफ़ी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 713 हि0)

आप को हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सयूती ने "हुसनुल मुहाज़रा" में बेनज़ीर इमाम फ़रमाया। और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी ने "अद्दौलतुल मक्किया" में आप को आरिफ़े अफ़ज़ल, वली-ए-अकमल और ज़ुबदतुल उरफ़ा लिखा है। वह अपनी किताब बहजतुल असरार शरीफ़ में बयान फ़रमाते हैं कि अबुल उफ़ाफ़ मूसा बिन उसमान ने 663 हि0: में हम से शहर क़ाहिरा में बयान किया कि मेरे वालिद माजिद अबुल मआ़नी उसमान ने हमें 614 हि0 में शहरे दिमिश्क़ में ख़बर दी कि हमें दो बुज़ुर्ग हज़रत अबू उमर व उसमान सरीफ़ीनी और हज़रत अबू मुहम्मद अब्दुल हक़ ने 559 में बग़दाद शरीफ़ में ख़बर दी कि हम 3 सफ़र इतवार के दिन 555 हि0 में हज़रत सय्यदेना ग़ौसे आज़म रजियल्लाह तआ़ला अ़न्हु के दरबार में हाज़िर थे तो हज़रत ने वुज़ू करके खड़ाऊँ पहनी और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी। सलाम के बाद एक अज़ीम नारा मारा और एक खड़ाऊँ हवा में फेंकी।

फिर दूसरा नारा मार कर दूसरी खड़ाऊँ फेंकी। वह दोनों

हमारी निगाहों से ग़ायब हो गईं। फिर हज़रत ने तशरीफ़ रखी मगर हैबत के सबब किसी को पूछने की जुरअत न हुई। 23 दिन के बाद अजम (ग़ैर अ़रबी मुल्क) से एक क़ाफ़िला बारगाह में हाज़िर हुआ और कहा हमारे पास हज़रत की एक चीज़ है। हम ने हज़रत से उस नज़र (तोहफा) के लेने में इजाज़त तलब की। आपने फ़रमाया ले लो। उन्हों ने एक मन रेशम, ख़ज़ के थान, सोना और हज़रत की खड़ाऊँ जो उस रोज़ हवा में फेंकी थी पेश की।

हम ने उन से पूछा यह खड़ाऊँ तुम्हारे पास कहाँ से आई? उन्होंने कहा हम 3 सफ़र इतवार को सफ़र में थे कि बहुत से डाकू दो सरदारों के साथ हम पर टूट पड़े। हमारे माल लूट लिए। और कुछ आदमियों को क़त्ल कर दिया। फिर एक नाले में माल तक़सीम करने के लिए उतरे। नाले के किनारे हम थे। "हम ने कहा बेहतर हो कि उस वक़्त हम हज़रत ग़ौसे आज़म को याद करें और निजात पाने पर कुछ माल हज़रत के लिए नज़्र पेश करें।"

हम ने हज़रत को याद ही किया था कि दो अज़ीम नारे सुने गए जिन से जंगल गूंज उठा। और हमने डाकुओं को देखा कि उन पर ख़ौफ़ छा गया। हम समझ गये कि उन पर कोई और डाकू आ पड़े। वह भग कर हमारे पास आए। और बोले अपना माल ले लो और देखो हम पर कैसी मुसीबत आ पड़ी। हमें अपने दोनों सरदारों के पास ले गए। हम ने देखा वह मरे पड़े है। और हर एक के पास एक खड़ाऊँ पानी से भीगी हुई रखी है। डाकूओं ने हमारे सब माल हमें वापस कर दिए और कहा कि इस वाक़िए की कोई अज़ीमुश्शान ख़बर है। (बहजतुल असरार पे0: 67)

और हज़रत अ़ल्लामा शतनौफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि ख़बर दी हम को शैख़ अबुल फ़ुतूह दाऊद बिन अबूल मआली नस्र बिन शैख़ अबुल हसन अ़ली बिन शैख़ अबुल

मज्द मुबारक बिन अहमद बग़दादी हरीमी हंवली ने। उन्होंने कहा ख़बर दी मुझ को मेरे वालिद ने कि मैं ने अपने दादा अबुल मज्द से सुना वह फ़रमाते थे कि मैं एक दिन हज़रत शैख़ मकारिम अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान के पास उन के घर नहर ख़ालिस पर था। (जो हज़रत शैख़ अ़ली बिन हीती रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के जलीलुलक़द्र ख़ुलफ़ा में से हैं।)

मेरे दिल में ख़्याल गुज़रा कि काश मैं हज़रत की कुछ करामत देखता। तो आपने मुस्कुराते हुए मेरी तरफ़ तवज्जुह की और फ़रमाया। बहुत जल्द पांच आदमी हमारे पास आयेंगे। उन में से एक गोरा लाल रंग वाला है जिस के गाल पर तिल है। उस की उम्र के सिर्फ़ 9 महीने बाक़ी है। फिर उसे बतहा में शेर फाड़ डालेगा और ख़ुदा-ए-तआ़ला उसे वहीं से उठाएगा। और दूसरा इराक़ का रहने वाला जो लाल व सफ़ेद और काना लंगड़ा है वह हमारे पास एक महीना बीमार रह कर मर जाएगा। और एक मिस्र का रहने वाला गेहूँआ रंग का है। उस के बाएं हाथ में छः उंगलियां हैं और उस की बाएं रान में नेज़े (भाले) के ज़ख़्म का निशान है जो उसे तीस बरस पहले लगा था। वह हिन्दुस्तान में तिजारत करते हुए तीस बरस बाद मरेगा।

और एक शामी गूहूँए रंग का है जिस की उंगली पर घट्ठा पड़ा हुआ है। वह ज़मीने हरीम में तेरे घर के दरवाज़े पर सात बरस तीन महीने सात दिन के बाद मरेगा। और एक यमन का रहने वाला जो गोरे रंग का है और काफ़िर है। उस के लिबास के नीचे जुन्नार (जनेऊ) है। तीन बरस हुए वह अपने मुल्क से निकला है और अब तक अपना काफिर होना उस ने किसी से नहीं बताया ताकि वह मुसलमानों को जांचे कि कौन उस का हाल ज़ाहिर करता है।

और बेशक अजमी (ग़ैर अ़रबी) ने भुना हुआ गोश्त खाना चाहा और ईराक़ी ने चावल के साथ बतख़ और शामी ने सेब खाना चाहा और यमनी ने अंडा आधा पका हुआ। और किसी ने अपनी ख़्वाहिश दूसरे को नहीं बताई और बहुत जल्द उन के खाने उनकी ख़्वाहिशात के मुताबिक बहुत ज़्यादा हमारे पास आएंगे।

अबुलमज्द ने फ़रमाया ख़ुदा की कसम अभी ज्यादा देर नहीं हुई थीं कि हज़रत शैख़ के फ़रमाने के मुताबिक़ पांचों आ गए और उन के हुलियों में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं था। मैं ने मिस्र वाले से उस की रान के ज़ख़्म का हाल पूछा तो उसे मेरे दरियाफ़्त करने पर बड़ा तअ़ज्जुब हुआ और कहा कि यह ज़ख़्म मुझे तीस बरस पहले लगा था। फिर एक शख़्स आया और उस के साथ उन की ख़्वाहिश के मुताबिक़ खाने की तमाम क़िस्में थीं। उसने सब को हज़रत शैख़ के सामने रख दिया। फिर शैख़ ने उसे हुक्म फ़रमाया जो तुम चाहते हो वह खाओ तो उन लोगों पर बेहोशी तारी हो गई।

जब सुकून हुआ तो यमनी ने हज़रत शैख़ से अ़र्ज़ किया कि ऐ सरदार! क्या तारीफ है उस शख़्स की जो लोगों के भेदों से आगाह है? फ़रमाया यह है कि उस ने जान लिया कि तू काफ़िर है और तेरे कपड़ों के नीचे जनेऊ है यह सुन कर वह शख़्स चीख़ पड़ा और शैख़ की ख़िदमत में खड़े हो कर इस्लाम ले आया। आपने फ़रमाया बेटा! हर वह शख़्स जिस ने बुज़ुर्गों में से तुझे देखा तो यक़ीनन तेरा हाल जान लिया मगर वह यह भी जानते थे कि तेरा इस्लाम मेरे हाथ पर है इस लिए वह तेरी बात से रूक गए।

और बिला शुबा उन की मौत वैसी ही हुई जैसी कि हज़रत शैख़ ने ख़बर दी थी उसी वक़्त बताए गए पर और ठीक उसी जगह बिना किसी फ़र्क़ के। और इराक़ी शैख़ के उसी गोशे में महीनें भर बीमार रहने के बाद मरा और मैं उस के जनाज़े के

नमाज़ियों में से था। और शामी मरा हमारे पास हरीम में। मेरे घर के दरवाज़े पर पड़ा था मुझे आवाज़ दी गई मैं बाहर आया तो नागाह वह हमारा रफ़ीक़ (दोस्त) शामी था उस की मौत में और उस वक़्त में कि शैख़ ने फ़रमाया था बिलकुल ठीक सात बरस तीन महीने सात दिन थे। (बहजतुल असरार पे0: 200)

आला हज़रत अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान इस वाक़िए के कुल ग़ैबों की तफ़सील यूँ बयान फ़रमाते हैं। बहुत जल्द हमारे पास पांच आदमी आयेंगे। उन में का एक अजमी है, दूसरा इराक़ी, तीसरा मिस्री, चौथा शामी और पांचवां यमनी। यह कुल आठ ग़ैब हुए। फिर अजमी के मुतअ़ल्लिक़ ग्यारह ग़ैबों की ख़बर दी कि वह गोरा होगा, उस की सफ़ेदी में सुर्ख़ी मिली हुई होगी, उस के तिल होगा, तिल गाल पर होगा और वह गाल दाहिना होगा। गोश्त की ख़्वाहिश करेगा और ख़्वाहिश भुने हुए गोश्त की होगी न पक्के हुए की होगी और न सूखे की। वह नौ महीने बाद मर जाएगा और उस की मौत शेर के फाड़ने से होगी और बताइह में होगी और वहीं दफन किया जाएगा और वहाँ से मुन्तक़िल (स्थान्तरित) न होगा और वहीं से उस का हश्र (दोबारा उठना)होगा।

इसी तरह इराक़ी के मुतअ़ल्लिक ग्यारह ग़ैबों की ख़बर दी। वह गोरा है उस में सुर्ख़ी झलकती है, उस की आँख में फुल्ली है, उस के पांव में लंगड़ापन है, वह बतख़ चाहेगा और यह कि उसे चावलों के साथ खाएगा। और यह शख़्स बीमार होगा एक महीना तक मर्ज़ में मुबतला रहे गा। और उसी से मर जाएगा, यहीं मरेगा। और एक महीने बाद मरेगा।

और शामी के मुतअ़ल्लिक़ नौ गैबों की खबर दी। वह गेहूँ रंग का होगा जिस में सफ़ेदी ज़्यादा होगी, मोटे मोटे घट्टे पड़ी हुई

उंगलियों वाला होगा, सेब की ख़्वाहिश करेगा, शामी सेब चाहेगा, ज़मीन हरीम में मरेगा, उस की मौत अबुलमज्द के घर के दरवाज़े पर होगी। उस की उम्र में सात बरस महीनों में से तीन महीने औद दिनों में से सात दिन बाक़ी रह गए हैं।

(अद्दौलतुलमक्किया पे0: 171)

पहले वाक़िआ में दूरदराज़ मक़ाम से क़ाफ़िले वालों के याद करने को हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का जान लेना, फिर उन को किस तरह की मदद चाहिए उस से वाक़िफ़ होना और डाकूओं के दो सरदार हैं इस से आगाह होना। और दूसरे वाक़िए में हज़रत शैख़ मकारिम अलैहिर्रहमतु वरिज़वान का पांच आदमियों के बारे में गुज़श्ता (पूर्व) और आइन्दा की तमाम ख़बरें देना सब ग़ैब की बाते हैं।

इन वाक़िआत को लिखने से मालूम हुआ कि बुज़ुर्गाने दीन को इल्मे ग़ैब होता है अ़ल्लामा शतनोफ़ी का भी यही अक़ीदा है। अगर वह ऐसा अक़ीदा न रखते तो इन वाक़िआत को अपनी किताब बहजतुलअसरार शरीफ़ में हरगिज़ बयान न फ़रमाते।

★★★

शैख़ बहाउद्दीन नक़्शबन्दी का अक़ीदा
(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 791 हि0)

आप सिलसिल-ए-आलिया नक़्शबन्दिया के मुर्शिदे आज़ाम (बुज़ुर्ग इमाम) हैं और अकाबिरीने अइम्म-ए-सूफ़िया के क़ाइद (रहबर) हैं नक़्शबन्दी सिलसिला आपही की तरफ़ मन्सूब किया जाता है आप की पैदाइश 717 हि0 मे हुई और इन्तिक़ाल 791 हि0 में। आप का मुबारक मज़ार बुख़ारा से चार किलो मीटर दूर क़स्रे

आरिफ़ाँ में ख़ासो आम की ज़ियारतगाह है इल्मे ग़ैब के बारे में हज़रत का अक़ीदा जानने के लिए चन्द वाक़िआत मुलाहज़ा हों।

हज़रत नवहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़्वाजा नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान के एक खादिम का बयान है कि मैं शहर मरो में हज़रत की ख़िदमत में था। मुझे अपने घर वालें की मुलाक़ात का शौक़ हुआ जो बुख़ारा में थे। इस लिए कि मुझे अपने भाई शम्सुद्दीन की मौत की ख़बर मिली थी मैं हज़रत से इजाज़त लेने की जुरअत न कर सका। मैं ने अमीर हुसैन से गुज़ारिश की कि मुझे हज़रत वाला से बुख़ारा जाने की इजाज़त दिलवादें। हज़रत नमाज़े जुमा के लिए निकले और जव मस्जिद से वापस हुए तो अमीर हुसैन ने मेरे भाई की मौत का ज़िक्र किया। हज़रत ने फ़रमाया यह कैसी ख़वर है वह तो ज़िन्दा है और यह देखो इन की ख़ुशबू महक रही है मैं तो उस की ख़ुशवू को विलकुल करीव पाता हूँ। अभी हज़रत का इरशादे गिरामी पूरा भी नहीं हुआ था कि मेरा भाई बुख़ारा से आ गया। इस ने आ कर हज़रत की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ किया। आपने फ़रमाया अमीर हुसैन! यह देखो शम्सुद्दीन हैं हाज़िरीन पर इस वाक़िए का वड़ा असर हुआ।

(जामेअ् करामाते औलिया पे0: 632)

और हज़रत अल्लामा नवहानी वयान फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत ख़्वाजा नक़्शबन्द रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि बुख़ारा में थे। मगरिव की नमाज़ के बाद आपने मौला नजमुद्दीन से फ़रमाया कि अगर में तुम्हें चोरी का हुक्म दूँ तो चोरी करोगे? वह वोले नहीं हुज़ूर! आपने फ़रमाया क्यों? उन्हों ने अ़र्ज़ किया अल्लाह के हक़ में कोताही हो तो उस का तदारूक (माफ़ी) तौवा से हो जाता है लेकिन चोरी का तअल्लुक़ तो बन्दों के हक़ से है

उस की तलाफ़ी (माफ़ी) तौवा से नही हो सकती। फ़रमाया अगर हमारा हुक्म नहीं मान सकते तो हमारा साथ छोड़ दो। मौला नजमुद्दीन बहुत परेशान हुए। तौबा की और अहद किया कि अव हज़रत के किसी हुक्म की भी नाफ़रमानी नहीं होगी लोगों ने उन की सिफ़ारिश की और माफ़ी की इल्तिजा की तो हज़रत ने उन्हे माफ़ कर दिया।

माफ़ी के वाद मौला नजमुद्दीन और कुछ गुलामों को साथ ले कर हज़रत चल पड़े। जब वाव समर क़न्द के मुहल्ला में पहुंचे तो एक घर की तरफ़ इशारा किया और फ़रमाया कि इस की दीवार तोड़ कर अंदर घुस जाओ और फ़लाँ जगह एक थैला सामान से भरा हुआ पड़ा है उसे ले आओ सव लोगों ने आप के हुक्म के मुताविक अमल किया और फिर एक कोने में जाकर बैठ गए। कुछ देर वाद कुत्ते भोंकने लगे। आपने मौला नजमुद्दीन और कुछ गुलामो को इस घर की तरफ़ भेजा। उन्होंने जा कर देखा तो दूसरी दीवार तोड़ कर चोर अंदर गए हैं मगर कोई चीज़ उन को नहीं मिली। यह चोर एक दूसरे से कहने लगे कि हम से पहले दूसरे चोर आएं हैं और सब कुछ लूट कर ले गए हैं। हज़रत के साथी यह वात सुन कर दंग हो गए।

घर का मालिक एक वाग़ में ठहरा हुआ था। सुवह सवेरे हज़रत ने सारा सामान अपने एक मुरीद के हाथ उसे भेज दिया। और मुरीद से फ़रमाया उसे बता देना कि उसके घर चोरी होने वाली थी फ़क़ीरों को इस बात का इल्म पहले हो चुका था इस लिए चोरों के आने से पहले उन्हों ने कपड़े और सामान वहाँ से निकाल लिए हैं। यह हुक्म दे कर हज़रत ने मौला नजमुद्दीन की तरफ़ मानी ख़ेज़ निगाहों से देख कर फ़रमाया अगर शरू ही में हमारे हुक्म की तामील करते तो बहुत ज़्यादा हिकमतें पाते।

(जामेअ् करामाते औलिया पे0: 640)

और हज़रत अ़ल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ज़िक्र फ़रमाते हैं कि पीर शैख़ कुतबुद्दीन जो हज़रत ख़्वाजा नक्शबन्दी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के मुरीदे हैं। उन्होंने हम से यह वाकिआ़ बयान किया कि मैं जब कि लड़का था उस वक़्त हज़रत ख़्वाजा नक्शबन्द ने मुझ से फ़रमाया फ़लाँ कबूतरखाने में जा और वहाँ से चन्द कबूतर ले आ। जब मैं कबूतरखाने में गया तो मैं ने एक कबूतर का बच्चा अपने पास रख लिया और बाक़ी कबूतर ज़िबह करके हज़रत ख़्वाजा के पास ले आया। कबूतर पकाए गए और हाज़िरीन में पका हुआ गोश्त तक़सीम हुआ तो मुझे नहीं दिया गया और फ़रमाया कि तुम ने अपना हिस्सा ज़िन्दा ले लिया है।

(नफ़हातुलउन्स पे0: 625)

शमसुद्दीन की ख़बर को रद फरमा कर यह कहना कि वह ज़िन्दा है बाबे समरक़न्द मोहल्ला के एक घर में चोरी होने वाली है और क़ीमती सामान कहां रखे हुए हैं। इन बातों को जानना और कबूतर का बच्चा लेने से वाक़िफ होना यह सारी बातें ग़ैब की हैं। जिन्हें ज़ाहिर फरमा कर हज़रत ख़्वाजा नक्शबन्द अलैहिर्रहम ने अपना यह अ़क़ीदा साबित कर दिया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझ इल्मे ग़ैब अता किया है बल्कि आप ने वाज़ेह लफ़्ज़ों में अपना यह अक़ीदा बयान फरमाया कि ज़मीन गिरोहे औलिया के नज़्दीक एक नाखुन के बराबर है उनकी नज़र से कोई चीज़ ग़ाइब नहीं।

(नफहातुलू-उन्स पेज:624)

★★★

अल्लामा जलालुद्दीन रूमी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 672 हि0)

आप वाक़िफ़े असरार शरीअत और दानाए रूमूज़े तरीक़त (ख़ुदाई राज़ों के माहिर) हैं। नाम आप का जलालुद्दीन मुहम्मद है लेकिन आम तौर पर मौलाना रूम के लक़ब (उपनाम) से मशहूर हैं। आप पैदाइशी वली थे। बचपन ही में तीन चार रोज़ के बाद सिर्फ़ एक मरतबा कुछ खाते थे और किरामन कातिबीन वग़ैरा को पाँच ही साल की उम्र में देख लिया करते थे। आप की किताब "मस्नवी-ए-मअ़नवी" सारी दुनिया में मशहूर है। आप की पैदाइश 613 हि0 और इन्तिक़ाल 672 हि0 में हुई। कोनिया (टरकी) में आप का मज़ारे मुबारक ख़ासो आम की ज़ियारतगाह है। इल्मे ग़ैब के बारे में आप का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

आप फ़रमाते हैं। कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया और जब मोज़ा की तरफ़ हाथ बढ़ाया कि उस को पहनें तो एक चील मोज़ा को ले कर हवा में उड़ गई। और ऊपर जाने के बाद उस का मुंह नीचे कर दिया तो उस में से एक सांप गिरा।

इस के बाद चील ने इस मोज़े को वापस ला कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया। और अ़र्ज़ किया कि अब आप उसे पहन कर नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाइये।

यहाँ पर एक शुब्हा पैदा हुआ कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम गैबदाँ है। और हर ज़ाहिर व पोशीदा चीज़ को जानते हैं तो उन्होंने मोज़े में साप के होने को क्यों नही जान लिया? इस शुब्हा का जवाब अल्लाह तआ़ला के महबूब सल्लल्लाहु

तआ़ला अलैहि वसल्लम ने जो दिया उसे मौलाना रूम अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान अपने अलफ़ाज़ में यूँ बयान फ़रमाते हैं कि यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर्चे अल्लाह तआ़ला ने हर गैब को मुझ पर जाहिर फ़रमाया है। लेकिन मेरा दिल उस वक्त अल्लाह तआ़ला की याद में मशगूल था। इस लिए मैं सांप को नहीं देख सका।

रही यह बात कि चील को कैसे मालूम हो गया कि मोज़े में साँप है? तो इस शुब्हा का जवाब देते हुए चील ने हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि साँप को मोज़े के अंदर हवा में उड़ते हुए देखना। यह ख़ूबी मेरी ज़ात में नहीं है। बल्कि ऐ प्यारे मुस्तफ़ा! सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम यह आप के करम और नूर की बरकत है कि मेरे लिए हर चीज़ रौशन हो गई। (मस्नवी शरीफ़ पे0: 205)

और हज़रत मौलाना रूम अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से दरियाफ़्त फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे सहाबी! तुम ने किस हाल में सुबह की? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं ने इस हाल में सुबह की है कि मैं अल्लाह तआ़ला का बन्दा और मोमिन हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने ईमान की कुछ निशानियां बयान करो।

अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! जिस तरह मख़लूक़ आसमान को देखती है इसी तरह मैं अर्श को अर्शियों यानी फ़रिश्तों के साथ देखता हूँ।

आठों जन्नतें और सातों दोज़ख़ें मेरे सामने इस तरह हैं जैसे कि पुजारी के सामने बुत होता है।

जन्नती और दोज़ख़ी मुझ पर ऐसे हैं जैसे आँख वाले के सामने चींटी और मछली।

हुज़ूर मुझे इजाज़त दें तो मैं बयान करूँ या हुक्म हो तो ख़ामोश हो जाऊँ प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बस करो।

इन वाक़िआ़त को मौलाना रूम अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान ने अपनी मस्नवी शरीफ़ में लिख कर अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इल्मे गैब हासिल है। और हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु भी गैब की बातें जानते थे। और पहले वाक़िए से यह भी मालूम हुआ कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अगर कभी किसी चीज़ को नहीं जाना तो इस लिए कि इस तरफ़ हुज़ूर की तवज्जुह नहीं थी। जैसे कि आप का दिले मुबारक यादे इलाही में मशगूल था तो मोज़े में छुपे हुए साँप को आप ने नहीं जाना।

इस की मिसाल यूँ है कि उस्ताद शागिर्दों के सामने तक़रीर करता है लेकिन उन में जिस तालिबे इल्म का दिल किसी दूसरे ख़्याल में लगा हुआ है। वह बहरा न होने के बावजूद कुछ नहीं सुनता है इस लिए कि उस्ताद की तक़रीर की जानिब उस की तवज्जुह नहीं है। यहाँ तक कि जलसे में लाउडिस्पीकर के ज़रिए तक़रीर करने वाला ख़ूब बुलंद आवाज़ से बयान करता है मगर जलसेगाह में स्टेज के क़रीब बैठ कर सुनने वालों में भी जो शख़्स किसी दूसरे ख़्याल में डूबा हुआ है तक़रीर की तरफ़ तवज्जुह न होने के सबब वह कुछ नहीं सुनता है।

इसी तरह कभी कोई चीज़ निगाह के सामने होती है मगर तवज्जुह न होने के सबब नज़र नहीं आती। जैसे स्टेशन पर ट्रेन के आवागमन का चार्ट निगाहों के सामने होता है मगर जिस ट्रेन

का वक़्त आप जानना चाहते हैं जब तक उस पर तवज्जुह नहीं होगी आप उसे नहीं देख पायेंगे। और जैसे अलमारी में किताबें लगी हुई हैं जिन की पीठ पर उन के नाम लिखे हैं। या दवाओं की शीशियां रखी हैं जिन पर उन के नाम दर्ज हैं। आप किसी किताब या दवा की शीशी को अलमारी से निकालने के लिए उस के सामने खड़े हुए। सारी किताबें और दवाओं की शीशियाँ आप की नज़र के सामने हैं यहाँ तक कि आप की आँख में सब का अक्स (तसवीर) भी आ गया मगर ऊपर से नीचे तक बार बार आप देखते हैं तो जिस किताब या शीशी की आप को तलाश है जब तक आप की उस पर तवज्जुह नहीं होगी निगाह के सामने होने के बावजूद नज़र नहीं आएगी।

इसी तरह ग़ैब की सारी चीज़ें अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की निगाहों के सामने हैं लेकिन जब कभी किसी चीज़ पर आप की तवज्जुह नहीं होती तो वह आप को नज़र नहीं आती।

अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने शके सदर यानी हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुबारक सीने को चाक करने के बाद जब आप के दिल को आबे ज़मज़म से धोया तो उस के बाद फ़रमाया यानी दिल हर क़िस्म की कमी से पाक है और बेऐब है। इस में दो आँखें हैं जो देखती हैं और दो कान हैं जो सुनते हैं। (फ़तहुलबारी जिल्दः 13 पे0: 410)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दिल की यह आँखें और कान ग़ैब की बातें देखने और सुनने के लिए हैं जैसा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने खुद फ़रमाया यानी मैं। वह चीज़ें देखता हूँ जो तुम नहीं देखते और मैं वह बातें सुनता हूँ जो

तुम नहीं सुनते। (अहमद, तिर्मीज़ी, इब्ने माजा, मिश्कात पे0: 457)

लिहाजा जिस तरह ज़ाहिरी आँख और कान हमेशा देखते और सुनते है। मगर जब कभी तवज्जुह नहीं होती तो कान नहीं सुन पाते और न आँखें देख पाती है। इसी तरह अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दिल की आँखें और कान हमेशा ग़ैब की बातें देखते और सुनते हैं लेकिन जब वह यादे इलाही में गर्क़ हो जाता है या तवज्जुह दूसरी तरफ़ होती है तो उस वक़्त ग़ैब की बातें हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को नहीं मालूम हो पाती हैं।

और हज़रत मौलाना रूम अलैहिर्रहमतु वरिज़वान फ़रमाते हैं कि लौहे महफ़ूज़ औलिया अल्लाह की निगाहों के सामने है और लौह महफ़ूज़ ऐसा है जो हर क़िस्म की ग़लती से महफ़ूज़।

और फ़रमाते हैं कि ऐ इन्सान! औलियाए किराम दूर से तेरा नाम सुनते हैं यहाँ तक कि तेरे ताने-बाने की गहराई में चलते हैं यानी तेरे रग व रेशा तक से आगाह हैं।

बल्कि पैदा होने से सालों पहले तुम्हारे हालात को मुलाहज़ा फ़रमाते रहते हैं।

तुम्हारे हर हाल से ज़र्रा-ज़र्रा आगाह हैं। इस लिए कि उनके अंदर खुदाई राज़ भरे हुए हैं।

इन अशआर से हज़रत मौलाना रूम अलैहिर्रहमतु वरिज़वान का यह अक़ीदा मालूम हुआ कि औलियाए किराम को भी इल्मे ग़ैब हासिल है इस लिए कि उनकी नज़रों के सामने लौहे महफ़ूज़ है जिस में हर चीज़ का बयान है। और औलिया-ए-कामेलीन लोगों के एक एक हाल से आगाह हैं बल्कि लोगों के पैदा होने से बहुत पहले उन के हालात को जानते हैं।

★★★

इमाम मुहम्मद गज़ाली का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमता, इन्तिक़ाल 505 हि0)

आप खुसूसियाते नुवूव्वत के बयान में फ़रमाते हैं कि वेशक नबी के लिए एक ऐसी सिफ़त होती है जिस से वह आइन्दा ग़ैव की वातें जान लिया करते हैं वेदारी की हालत में या ख़्वाव में इस लिए कि इसी सिफ़त (ख़ूवी-कमाल) से वह लौहे महफ़ूज़ को मुलाहज़ा फ़रमाते हैं तो उस में ग़ैव की जितनी वातें हैं उन को देखते हैं। (इहयाउलउलूम जि0: 4 पे0: 194)

और फ़रमाते हैं कि जव रूह-दिल साफ़ हो जाता है तो आइन्दा ज़माने में जो चीज़ होने वाली है वह दिल की आँख में ज़ाहिर हो जाती है। (इहयाउलउलूम जि0: 4 पे0: 504)

इन हवालों से हज़रत इमाम गज़ाली रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने सावित कर दिया कि हमारा भी यही अक़ीदा है कि नवी गैवदाँ होते हैं। इस लिए कि उन की ज़ात में ग़ैव जानने की एक ख़ूवी होती है वल्कि अल्लाह के दूसरे महवूव वन्दों के दिलों में भी ग़ैव की वातें ज़ाहिर होती हैं।

★★★

ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमता 633 हि0)

आप इरशाद फ़रमाते हैं कि जव मुसलमानों के दुआगो फ़क़ीर हक़ीर मुईनुद्दीन हसन सन्जरी(1) को ख़ास शहर वग़दाद ख़्वाजा जुनैद वग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की मस्जिद में

(1) सिज्ज़ी सिस्तान की तरफ़ मन्सूव (संवन्धित) जो लोग सन्जरी कहते हैं वह खुद ग़लती पर हैं। (हाशिया सवए सनाविल शरीफ़: 435)

हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी नव्वरल्लाहु मरक़दहू (इन्तिक़ाल 617 हि0) की क़दमवोसी हासिल करने के लिए ज़मीन पर सर रखा इरशाद हुआ कि जा दो रकअत नफ़िल शुक्राना अदा कर। हुज़ूर के इरशाद के मुताविक मैं दो रकअत पढ़ चुका तो हुक्म हुआ कि 21 वार दरूद शरीफ़ और 21 वार सुबहानल्लाह पढ़। मैं उस से फारिग़ हुआ तो उस वक़्त हुज़ूर ने खड़े हो कर मुंह आसमान की तरफ़ किया और उस फ़क़ीर का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि आ तुझ को खुदा तक पहुंचा दूँ और ख़ुदा रसीदा कर दूँ इस के वाद ही हुज़ूर ने मुवारक हाथ में कैंची ले कर इस दुआगो के सर पर चलाई और अपनी गुलामी में ले लिया। फिर चार कोने वाली टोपी इस अक़ीदतमन्द के सर पर रखी और इज़्ज़त वख़्शी और कमली ख़ास अता फ़रमाई। और फ़रमाया वैठ जा। मैं वैठ गया। इरशाद हुआ कि हमारे ख़ानवादे में एक रात दिन का मुजाहदा (ख़ास ज़िक्र व इवादत) आया है जा आज के दिन और आज की रात ज़िक्र में मशगूल हो।

चुनाँचे यह फ़क़ीर हुज़ूर के हुक्म व इरशाद के मुताविक़ कामिल एक दिन-रात ज़िक्र और इवादत में मशगूल रहा। दूसरे रोज़ जव ख़्वाजा नव्वरल्लाहु मरक़दुहू की वावरकत ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो फ़रमाया कि वैठ जा और हज़ार मरतवा सूरह इख़लास पढ़। जव मैं पढ़ चुका तो फ़रमाया कि ऊपर आसमान की तरफ़ देख। मैं ने देखा। फ़रमाया अव तू कहाँ तक देखता है? मैं ने अर्ज़ किया अर्शे आज़म तक फिर फ़रमाया कि ज़मीन की तरफ़ देख। जव मैं ने ज़मीन की तरफ़ देखा तो पूछा कि अव तू कहाँ तक देखता है? मैं ने अर्ज़ किया तहतुस्सरा (पाताल) तक। फिर फ़रमाया एक हज़ार वार सूरह-ए-इख़लास और पढ़। जव मैं पढ़ चुका फ़रमाया कि अव फिर असमान की तरफ़ देख। जव मैं

ने देखा फ़रमाया कि अब कहाँ तक देखता है? मैं ने कहा हिजाबे अज़मत (पर्दए खुदाई) तक। फिर फ़रमाया कि आँख बन्द कर मैं ने आँख बन्द करली। फिर फ़रमाया आँख खोल दे मै ने आँख खोल दी तो मुझ को दो उंगलियां मुबारक हाथ की दिखाई दीं। फ़रमाया कि इस में क्या देखाई देता है? मैं ने कहा अट्ठारह हज़ार आ़लम (संसार) मालूम होते हैं जब मैं ने यह अ़र्ज़ किया तो इरशाद फ़रमाया कि अब तेरा काम पूरा हो गया।

(अनीसुलअरवाह पे0: 5)

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इस रवायत से साबित हुआ कि उन का यह अक़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला ने उन को इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है कि पीरो मुर्शिद के पूछने पर उन्होंने कहा कि मैं ऊपर अर्श तक और नीचे तहतुस्सरा तक देखता हूँ। और फिर कहा हिजाबे अज़मत तक देखता हूँ और दो उंगलियों में अट्ठारह हज़ार आ़लम मालूम होते हैं।

नोटः- ग़ैर सहाबा का "रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु" कहने का मुकम्मल फ़तवा इस किताब के आख़िर में मुलाहज़ा हो।

★★★

ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 634 हि0)

आप सुलतानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हु के मुरीद व ख़लीफ़ा और हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान के पीरो मुर्शिद हैं आप बुज़ुर्ग औलिया और जलीलुल क़द्र असफ़िया (सूफ़ी) में से हैं। आप का मुबारक मज़ार दिल्ली में मेहरौली शरीफ़ में ख़ासो आम की ज़ियारतगाह है।

हज़रत ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किर्मानी रहमतुल्लाह तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि जब शैख़ फ़रीदुद्दीन गंज शकर अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान ने चाहा कि मुजाहदा (ख़ास ज़िक्र) इख़्तियार करें तो आपने इस के मुतअल्लिक़ हज़रत शैख़ क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह तआ़ला अलैहि की ख़िदमत में अर्ज़ किया। हज़रत शैख़ ने फ़रमाया कि "तै" करो चुनाँचे आपने तीन रोज़ तक कुछ न खाया तीसरे दिन इफ़तार के वक़्त एक शख़्स चन्द रोटियां लाया। आपने यह समझ कर कि यह ग़ैब से आई हैं उन्हें तनावुल फ़रमा लिया। खाने के बाद आपने देखा कि एक कव्वा दरख़्त पर बैठा हुआ मुर्दार की आँतों के टुक्ड़े खा रहा है। जैसे ही आप की नज़र उस कव्वे पर पड़ी। इस मन्ज़र को देख कर आप का जी मतलाया और जो कुछ खाया था वह कै के रास्ते बाहर निकल गया और आप का पाक मेदा इस खाने से ख़ाली हो गया।

जब आपने यह बात अपने पीर से बयान की तो उन्होंने फ़रमाया मस्ऊद! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम ने तीन रोज़ के बाद जो इफ़तार किया था वह एक शराबी के खाने से अफ़तार किया था। यह तुम पर अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी हुई कि तुम्हारे मेदे ने वह खाना क़ुबूल नहीं किया। अब जाओ और"तै" करो तीन रोज़ के बाद जो चीज़ तुम्हे ग़ैब से मिले उस से इफ़तार करना। चुनाँचे फिर आपने तीन रोज़ का"तै" किया। लेकिन छः रोज़ गुजर गए और कोई खाना आप को न पहुंचा। इन्तिहा दर्जे की कमज़ोरी पैदा हुई। यहाँ तक कि एक पहर रात गुजर गई कमज़ोरों और बढ़ गई। और भूख की हरारत (गर्मी) से नफ़्स जलने लगा। आपने मुबारक हाथ ज़मीन की तरफ़ बढ़ाया और ज़मीन से चन्द संगरेज़े (पत्थर के टुकड़े) उठा कर अपने मुंह में डाल लिए। आप के मुबारक मुंह की बरकत से वह संगरेज़े शकर हो गए।

और हज़रत ख़्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक के महीने में 584 को जब इस दुआगो ने दौलते क़दमबोसी हासिल की तो हुज़ूर क़ुतबुल इस्लाम बख़्तियार काकी ने इसी वक़्त चार कोने वाली टोपी मेरे सर पर रखी और बहुत सी शफ़क़त (मेहरबानी) फ़रमाई। इस दिन मैं क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागोरी, मौलाना अलाउद्दीन किर्मानी, सय्यद नुरूद्दीन गज़नवी, शैख़ निज़ामुद्दीन अबुल मुअय्यिद, मौलाना शम्सुद्दीन तुर्क, ख़्वाजा महमूद मौज़ा दोज़ और दूसरे अज़ीज़ भी ख़िदमत में हाज़िर थे कि औलिया अल्लाह की कश्फ़ो करामात (रूहानी ताक़त) का ज़िक्र छिड़ गया। हज़रत ख़्वाजा कुतबुल इस्लाम यह लफ़्ज़ ज़बान पर लाए कि मुझ को इस क़द्र रोशनी हासिल है कि अगर आसमान पर नज़र भर कर देखता हूँ तो अ़र्श तक साफ़ नज़र आता है और कोई पर्दा बीच में नहीं होता। और जब ज़मीन पर नज़र डालता हूँ तो तहतुस्सरा तक सब मालूम हो जाता है।

(मलफ़ूज़ाते ख़्वाजगाने चिश्त हि0 अव्वल पे0: 120)

हज़रत कुतबुल अक़ताब बख़्तियार काकी अलैहिर्रहमतु वरिज़ान के इस फ़रमान से कि तुम ने तीन रोज़ के बाद जो इफ़्तार किया था वह एक शराबी के खाने से इफ़्तार किया था। और इस फ़रमान से कि ऊपर अ़र्श तक और नीचे तहतुस्सरा तक मेरे लिए कोई हिजाब (पर्दा) नहीं। उन का यह अक़ीदा साफ़ ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मुझे इल्मे ग़ैब हासलि है। और ख़्वाजा अबू बक्र शिबली रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के मुरीद वाले वाक़िए से उन का यह अक़ीदा साबित हुआ कि अल्लाह वाले दिलों के ख्यालात से भी वाक़िफ़ हो जाते हैं।

★★★

शैख़ फ़रीदुद्दीन गंज शकर का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 670 हि0)

आप हज़रत क़ुतबुल अक़ताब बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह तआला अलैहि के मुरीद व ख़लीफ़ा (जानशीन) और सुलतानुल मशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया सिर्रूहूल अज़ीज़ के पीरो मुर्शिद हैं आप ही की निगाहे फ़ैज़ ने हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया को सुलतानुल मशाइख़ और महबूबे इलाही बना दिया। आप का मुबारक मज़ार अयोधन शरीफ़ (पाकिस्तान) में है। इल्मे ग़ैब के बारे में आप का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

हज़रत ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किर्मानी फ़रमाते हैं कि सुलतानुलमशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते थे कि शैख़ फ़रीदुलहक़ वद्दीन क़ुद्दिस सिर्रूहूल अज़ीज़ फ़ज्र की नमाज़ अदा करके ज़िक्रे हक़ में मशगूल थे और सर ज़मीन पर रखे हुए यादे ख़ुदा में थे। इसी हालत में बहुत देर गुजर गई सर्दी का मौसम था। सर्द हवाएं चल रही थीं इस लिए आप की पोस्तीन (खाल का कोट) लाई गई और आप के मुबारक जिस्म पर डाली गई कोई ख़ादिम इस जगह न था सिर्फ़ मैं था। इसी दरमियान में एक शख़्स आया और बुलंद आवाज़ से सलाम किया। शैख़ इस वक़्त भी सर ज़मीन पर रखे हुए थे और पोस्तीन ओढ़े हुए थे। इस वक़्त शैख़ ने पूछा यहाँ कोई है? मैं ने अ़र्ज़ किया कि मैं हूँ इस के बाद आपने फ़रमाया कि इस वक़्त जो शख़्स आया है वह कोताह (छोटी) गर्दन, तंग मुंह और पीले रंग का है। मैं ने देखा तो ऐसा ही था मैं ने अ़र्ज़ किया जी हाँ वह ऐसा ही है फ़रमाया ज़न्जीर लपेटे हुए है। मैं ने देखा कि वह ज़न्जीर लपटे हुए था। फिर फरमाया कि कान में

कोई चीज़ डाले हुए है। मैं ने देखा तो वाक़ई इस के कान में कोई चीज़ पड़ी हुई है। मैं ने अर्ज़ किया कि इस के कान में एक बाला है। फ़रमाया जाओ उस से कहो कि यहाँ से चला जाए इस से पहले के रूसवाई हो। अब जब मैं ने मुड़ कर उस की जानिब देखा तो वह खुद जा चुका था। (सेयरूलऔलिया पे0: 159)

और ख़्वाजा ख़ुर्द किर्मानी निज़ामी फ़रमाते हैं कि सुलतानुलमशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि हम अयोधन (पाकपटन) जा रहे थे कि सिरसी के जंगल में मुझे सांप ने काट लिया। वह आदमी जो हमारे साथ रहा था। उस ने सांप काटने की जगह को बांध दिया। ज़हर का असर जाता रहा और मैं अच्छा हो गया। जब हम अयोधन (पाक पटन) पहुंचे तो वे वक्त हो चुका था और शहर के तमाम दरवाज़े बन्द हो चुके थे। साथियों ने मशवरा किया मि हम हिसार (घेराबन्दी) की दीवार कूद कर दाख़िल हो जाए। हम ने देखा कि हिसार (चार दीवारी) में हर तरफ़ से सुराख़ पैदा हो गए। अलग़र्ज़ तमाम साथी ऊपर चढ़ गए और मैं डर रहा थ। साथियों ने मेरा हाथ पकड़ा और ऊपर चढ़ा लिया। जब सुबह हुई तो हम शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने सब की ख़ैरियत दरियाफ़्त की और मुझ से कुछ नहीं पूछा। कुछ देर के बाद फ़रमाया सांप का काटना एक बात है लेकिन दीवार का चढ़ना कहाँ आया है। (सियरूल औलिया पे0: 160)

और हज़रत ख़्वाजा अमीर खुर्द किर्मानी फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने चाचा सय्यद हुसैन से सुना है कि एक दफ़ा शैख़ फ़रीदुल हक़ क़ुद्दिस सिर्रूहू अज़ीज़ ने शैख़ुल इस्लाम बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को ख़त लिखना चाहा। कागज़ ले कर सोचने लगे के ख़त में उनको अलक़ाब क्या लिखूँ? फिर

आप के दिल में आया कि ख़िताब उन का लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है वही लिखूँ। चुनाँचे इस मक़सद के लिए आप ने आसमान की तरफ़ सर उठाया तो लौहे महफ़ूज़ में उन का लक़ब शैख़ुल इस्लाम लिखा हुआ देखा। तो आपने भी ख़त में यही अलक़ाब लिखा। किसी अल्लाह के वली ने कहा है कि यानी आरिफ़ों के दिलों को वह आँखें नसीब हैं जिन से वह ऐसी चीज़ें देखते हैं कि जिन्हें आम देखने वाले नहीं देखते। (सियरूल औलिया पे0: 161)

और ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किर्मानी फ़रमाते हैं कि सुलतानुलमशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते थे कि ऐ शख़्स दिल्ली से इस लिए रवाना हुआ कि अयोधन (पाक पटन) पहुंच कर शैख़ के हाथ पर तौबा करे। रास्ते में एक गाने वाली उस के साथ हो गई। उस गाने वाली ने बहुत चाहा कि वह मर्द इस की मुहब्बत में गिरफ़्तार हो और उस से तअल्लुक़ पैदा करे लेकिन चूंकि वह मर्द सच्ची नियत रखता था इस लिए उस फ़ाहिशा (तवायफ़) की तरफ़ जरा भी मुतवज्जेह न हुआ। यहाँ तक कि एक जगह वह दोनों एक बहली (बैलों की छोटी गाड़ी) में सवार हुए। वह औरत उस के नज़दीक आकर बैठ गई। चूंकि अब उन दोनों के दरमियान कोई चीज़ रुकावट न थी इस हालत में मर्द के दिल में कुछ मामूली सी इस की ख़्वाहिश हुई कि वह इस से कुछ बातें करे या दस्त हरकत करे लेकिन ऐन उसी वक़्त में एक आदमी को देखा कि वह आया और एक तमांचा उस शख़्स के मुंह पर मार कर कहा अफ़सोस है कि तुम फ़लाँ बुज़ुर्ग के पास तौबा की नियत से जा रहे हो और तुम्हारी यह हरकतें हैं। वह शख़्स फ़ौरन ख़बरदार हुआ। अलगर्ज़ जब वह शख़्स शैख़ हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की ख़िदमत में पहुंचा तो आपने सब

से पहले फ़रमाया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने उस रोज़ तुम्हारी बड़ी हिफ़ाज़त की। (सियरूल औलिया पे0: 165)

और लिखते हैं कि हज़रत सुलतानुल मशाइख़ कुद्दिस सिर्रहू फ़रमाते थे कि हज़रत शैख़ फ़रीदुल हक़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि के मुरीदों में से एक मुरीद मुहम्मद शाह गौरी था। कहा जाता है कि वह आप का निहायत पुख़्ता अक़ीदा आशिक़ और सच्चा मुरीद था। एक रोज़ वह निहायत परेशान व रंजीदा आप की ख़िदमत में आया आपने उस को परेशान देख कर पूछा। बताओ क्या बात है? इस ने कहा मेरा एक भाई निहायत सख़्त बीमार है। मैं ने उसको इस हालत में छोड़ा है कि इस में कुछ सांसें जान बाक़ी थी। शायद कि अब उस का इन्तिक़ाल भी हो चुका हो। इस वजह से मैं सख़्त मुज़तरिब और परेशान हूँ। आपने फ़रमाया जैसा तुम इस घड़ी परेशान हो मैं तमाम उम्र इसी तरह परेशान रहा हूँ। लेकिन मैं किसी से कुछ नहीं कहता। फिर इस से फ़रमाया जाओ। तुम्हारा भाई सिहतयाब (ठीक) होचुका है। मुहम्मद शाह जब घर वापस आया तो उस ने देखा कि उस का भाई तन्दुरूस्त हो चुका था और बैठा हुआ खाना खा रहा था।

(सियरूल औलिया पे0: 165)

और ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किर्मानी निज़ामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान के तमाम साहबज़ादों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ था कि आप को अयोधन की चहारदीवारी के बाहर उस मक़ाम पर दफन किया जाए कि जहाँ शहीद हज़रात दफ़्द हैं। इसी नियत से आप के जनाज़े को चहारदीवारी से बाहर ले कर आए ठीक उस मौके पर मियां ख़्वाजा निज़ामुद्दीन जो आप के महबूब तरीन साहबज़ादे थे और वह सुलतान ग़यासुद्दीन बलबन के

मुलाज़िम थे और क़स्वा पटियाली में मुक़र्रर थे पहुंचे। उन्हों ने ख़्वाब में देखा था कि शैख़ उन्हें बुला रहे हैं। ख़्वाजा निज़ामुद्दीन फ़ौरन ही इजाज़त ले कर अयोधन (पाक पटन) के लिए रवाना होगए। वह इस रात में अयोधन पहुंचे जिस रात में शैख़ ने मौत पाई। लेकिन शहर में दाख़िल न हो सके कि शहर की चहारदीवारी के तमाम दरवाज़े बन्द हो चुके थे इस लिए उन्होंने मजबूरन चहारदीवारी के बाहर रात गुज़ार दी। इन्तिक़ाल की रात में आप बार-बार फ़रमाते थे कि निज़ामुद्दीन आ तो गया है लेकिन क्या फ़ायदा जब उस से मुलाक़ात न हो सकी। जब सुबह हुई और ख़्वाजा निज़ामुद्दीन शहर में दाखिल होने के इरादे से रवाना हो कर चहारदीवारी के दरवाज़े तक पहुंचे ही थे कि सामने से आप का जनाज़ा आता हुआ नज़र आया। (सियरूल औलिया पे0: 171)

और लिखते हैं कि सुलतानुल मशाइख़ फ़रमाते थे कि शैख़ आरिफ़ को शैख़ फ़रीद ने सयूस्तान की तरफ़ भेजा था और उन को बैअत की इजाज़त दी थी। उन का वाक़िआ यूँ हुआ कि उच और मुलतान का एक बादशाह था और यह बुज़ुर्ग इस के इमाम थे या कोई और तअल्लुक़ था इस बादशाह ने सौ रुपए दे कर उन्हें शैख़ की ख़िदमत में भेजा। उन्होंने पचास रूपए ख़ुद रख लिए और पचास रुपए हज़रत की ख़िदमत में पेश किए। जब उन्होंने सिर्फ़ पचास रूपए आप की ख़िदमत में पेश किए तो शैख़ ने मुसकुरा कर फ़रमाया कि आरिफ़! तुम ने ख़ूब बिरादराना (भाई जैसा) हिस्सा तकसीम किया है। यह सुन कर शैख़ आरिफ़ निहायत शर्मिन्दा हुए और फ़ौरन दूसरे पचास रुपए भी आप की ख़िदमत में पेश किए बल्कि कुछ अपने पास से और इज़ाफ़ा कर के दिए और निहायत मअज़िरत की। और बैअत के लिए इल्तिजा की। शैख़ ने उन्हे बैअत कर लिया। (सियरूल औलिया पे0: 310)

सर सजदे में रखे हुए आने वाले का पूरा हुलिया जानना, सांप काटने और दीवार पर चढ़ने का इल्म होना, हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के लक़ब (पदवी नाम) को लौहे महफ़ूज़ में देखना तवायफ़ औरत के मुतअ़ल्लिक़ मर्द की नीयत को जानना, मुहम्मद शाह ग़ौरी के भाई की तन्दुरूस्ती से आगाह होना, अपने साहिबज़ादे ख़्वाजा निज़ामुद्दीन की आमद को जान लेना और नज़्र में भेजे हुए रुपयों की तादाद से वाक़िफ़ होना, यह सारी बातें ग़ैब की हैं। शैख़ हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने उन तमाम बातों को बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि अल्लाह ने हमें इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया है। अगर हज़रत का यह अक़ीदा न होता तो इन बातों को वह ज़बान पर हरगिज़ न लाते।

★★★

शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 725 हि0)

हज़रत ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द रहमतुल्लाह तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि एक बार एक शख़्स सुलतानुलमशाइख़ की ख़िदमत में खाना लाया। खाना लाते वक़्त रास्ते में इस के दिल में ख़्याल आया कि अगर सुलतानुलमशाइख़ अपने मुबारक हाथ से मेरे मुंह में निवाला रखें तो यह मेरी कितनी ख़ुशनसीबी होगी। जब वह शख़्स सुलतानुलमशाइख़ की ख़िदमत में पहुँचा तो दस्तरख़्वान बढ़ाया जा चुका था और सुलतानुलमशाइख़ उस वक़्त पान खा रहे थे। सुलतानुलमशाइख़ ने थोड़ा पान अपने मुंह से निकाल कर उस के मुंह में रखा और फ़रमाया लो यह उस निवाले से बेहतर है। (सियरूल औलिया पे0: 246)

और फ़रमाते हैं कि एक रोज़ दो मुरीद सुलतानुलमशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहिं की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन में से वुज़ू में एक ने एहतियात नहीं रखी थी। जब वह सुलतानुलमशाइख़ की ख़िदमत में पहुंचे तो सब से पहले जो बात आपने उन से की वह यह थी कि वुज़ू में एहतियात करनी चाहिए कि वुज़ू ख़ुदा के राज़ों में से एक राज़ है। (सियरूल औलिया पे0: 242)

और फ़रमाते हैं कि एक बार मौलाना वजीहुद्दीन हज़रत सुलतानुलमशाइख़ की ख़िदमत में हाज़िर हो रहे थे। जब वह कुरह के बाग़ात में पहुंचे तो उन्होंने एक बूढ़े आदमी को देखा जो ज़ाहिदों (सूफ़ी) की सूरत बनाए हुए अ़बा (जुब्बा) पहने और मुसल्ला कांधे पर डाले हुए सामने आया और मौलाना को सलाम किया। फिर इस तरह बात शुरू की कि मैं बहुत दूर से आया हूँ मुख़्तलिफ़ उलूम (कुछ इल्मी मसाइल) में मेरी कुछ इल्मी मुश्किलात हैं जिन्हें मैं आप से हल कराना चाहता हूँ। मौलाना ने फ़रमाया अच्छा। उस शख़्स ने निहायत अक़्लमन्दाना तरीक़े पर अपने सवालात शुरू किए। मौलाना ने उस के सवालात के निहायत माक़ूल जवाब दिए। लेकिन मौलाना इस की तक़रीर सुन कर हैरान थे कि वह आदमी इस शहर का रहने वाला नहीं फिर इस ने इतने उलूम कहाँ से हासिल किए। जब वह इन इल्मी बहसों से फ़ारिग़ हो चुका तो इस ने मौलाना से पूछा कि आप कहाँ जा रहे हैं? मौलाना ने फ़रमाया कि मैं सुलतानुलमशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन की ख़िदमत में जा रहा हू- उस शख़्स ने कहा मैं सुलतानुलमशाइख़ से बारहा मिला हूँ। वह इतने बड़े आ़लिम नहीं जितने बड़े आ़लिम आप हैं। फिर उस के बावजूद आप उन के पास जा रहे हैं। मौलाना वजीहुद्दीन ने फ़रमाया हरगिज़ नहीं।

यह तुम क्या कहते हो। सुलतानुलमशाइख़ इल्म के समन्दर हैं और उन का बातिन (दिल) इल्मे लदुन्नी खुदाई से मालामाल है। फिर उस आदमी ने कहा कि मैं ने चन्द मरतबा शैख़ निजामुद्दीन से मुलाकात की है वह इतना इल्म नहीं रखते। आप उन के पास कहाँ जा रहे हैं? मौलाना वजीहुद्दीन ने फ़रमाया। "लाहौल व ला कुव्वता इल्लाबिल्लाह" यह तुम क्या फ़ुज़ूल बातें करते हो। वह शख़्स जो क़रीब हो कर मौलाना से बातें कर हा था। अचानक मौलाना से ज़रा दूर हो कर खड़ा हो गया। मौलाना वजीहुद्दीन ने दूसरी मरतबा लाहौल पढ़ी। वह मरदूद लाहौल सुनते ही और भी दूर जा कर खड़ा होगया। अब मौलाना ने बार-बार लाहौल पढ़ना शुरू किया यहाँ तक कि वह शख़्स ग़ायब हो गया।

जब मौलाना वजीहुद्दीन हज़रत सुलतानुलमशाइख़ की ख़िदमत में पहुंचे तो इस से पहले कि वह सुलतानुलमशाइख से माजरा बयान करते सुलतानुलमशाइख़ ने नूरे बातिन (दिल) से मालूम करके फ़रमाया कि मौलाना तुम ने इस शख़्स को खुब पहचाना अगर इस के पहचानने में जरा भी ग़लती होती तो वह तुम्हारी ख़राबी कर ही चुका था। (सियरूल औलिया पे0: 447)

खाना लाने वाले की दिली तमन्ना से वाक़िफ़ हो जाना, वुज़ू करने वाले की बे एहतियाती से आगाह हो जाना और मौलाना वजीहुद्दीन को रास्ते में पेश आने वाले वाक़िए का जान लेना सब गैब की बातें है।। जिन को सुलतानुलमशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने ज़ाहिर फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से हम ग़ैब की बातें जान लेते हैं। हमारा यह अक़ीदा है।

और ख़्वाजा अ़मीर ख़ुर्द किर्मानी लिखते हैं कि सुलतानुल मशाइख़ फ़रमाते थे कि ग़यासपुर के क़याम (निवास) से पहले में

कैलोखरी की मस्जिद में जुमा पढ़ने के लिए जाया करता था। गर्म हवाएं चलती थीं और मस्जिद का फ़ासला एक कोस (तीन किलो मीटर) था और मैं रोज़े से था। मुझे चक्कर आने लगे और मैं एक दुकान पर बैठ गया। मेरे दिल में ख़्याल गुज़रा कि अगर मेरे पास सवारी होती तो मैं उस पर सवार हो जाता। बाद में शैख़ सअ़दी का एक शेर मेरी ज़बान पर आया।

मैं ने इस ख़्याल से तौबा की। इस वाक़िए को तीन रोज़ गुज़रे थे कि ख़लीफा मलिक यार परां मेरे लिए एक घोड़ी ले कर आया और मुझ से कहा इसे कबूल कीजिए। मैं ने उस से कहा कि तुम खुद एक दुर्वेश हो मैं तुम से यह कैसे कुबूल कर सकता हूँ। उन्होंने कहा तीन रातों से मैं। बराबर ख़्वाब में देख रहा हूँ कि मेरे शैख़ मुझ से बराबर फ़रमा रहे हैं कि फ़लाँ शख़्स के पास घोड़ी ले कर जाओ मैं ने कहा बे शक तुम्हारे शैख़ ने तुम से कहा है लेकिन अगर मेरे शैख़ भी मुझ से कहेंगे तो मैं यह घोड़ी तुम से ले लूँगा। उसी रात को मैं ने ख़्वाब में देखा कि शैख़ हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि मुझ से फ़रमाते हैं कि मलिक यार पराँ की दिलजोई के लिए वह घोड़ी कुबूल कर लो। दूसरे रोज़ घोड़ी ले कर आया तो मैं ने उसे तोहफ़ए हक़ समझ कर कुबूल कर लिया। (सियरूल औलिया पे0: 246)

इन दोनों वाक़िआ़त के बयान से हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि का यह अक़ीदा साबित हुआ कि हज़रत शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी और हज़रत शैख़ जमालुद्दीन हांसवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहिमा भी ग़ैब के जानने वाले हैं कि हिन्दु खुदा परस्त वाली हो जाएगा हज़रत शैख़ नागौरी वाक़िफ़ थे और हज़रत हांसवी दिल के ख़्याल से आगाह हो गए।

★★★

शैख़ हसन अफ़ग़ान का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 689 हि0)

हज़रत वहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि जिन का मरतबा यह है कि एक बार जब वह हज़रत कुतबुलअक़्ताब बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि से मुलाक़ात के लिए आए तो वापसी के वक़्त हज़रत बख़्तियार काक़ी ने अपने मुबारक हाथों से उन के जूते दुरूस्त किए।

(सियरूल औलिया पे0: 132)

हज़रत हसन अफ़ग़ान उन्हें बुज़ुर्ग हज़रत ज़करिया मुलतानी के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं, सिलसिलए सुहरवर्दिया के मशहूर शैख़ (इमाम) और बुज़ुर्गी के वुलंद मरतबे पर फ़ाइज़ हैं। यहाँ तक कि हज़रत महबूबे इलाही के मुताबिक़ हज़रत वहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी ने फ़रमाया अगर कल क़यामत में मुझ से पूछेंगे कि हमारी बारगाह में क्या लाए हो तो मैं कहूँगा कि हसन अफ़ग़ान को लाया हूँ। (फ़वाइदुलफ़वाद मलफ़ूज़ हज़रत महबूबे इलाही पे0: 17)

हज़रत हसन अ़ली सन्जरी कुद्दिस सिर्रूहू जो फ़वाइदुल फ़वाद के मुरत्तिब (संपादक) हैं वह लिखते हैं कि सुलतानुलमशाइख़ हज़रत महबूब इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने फ़रमाया कि एक बार गाँव में लोग मस्जिद बना रहे थे ख़्वाजा अफ़ग़ान वहाँ पहंचे और मस्जिद बनाने वालों से कहा कि मेहराव इस तरह सीधी करो क़िबला इस तरफ़ है। यह कहते हुए आपने एक तरफ़ इशारा किया। एक अक़्लमन्द वहाँ हाज़िर था वह आप से झगड़ने लगा। और कहा कि नहीं क़िबला दूसरी तरफ़ है। अलग़र्ज़ उन दोनों के दरमियान काफ़ी गुफ़्तगू हुई। आख़िर में

ख़्वाजा अफ़ग़ान ने अक़्लमन्द से कहा कि अपना रूख़ इसी तरफ़ करो जिधर कि मेरा रुख़ है और अच्छी तरह देखो कि क़िबला किधर है? अक़्लमन्द ने इसी तरफ़ मुंह किया तो क़िब्ले को इसी तरफ़ देखा जिस तरफ़ कि हज़रत हसन अफ़ग़ान ने कहा था।

(फ़वाइदुल फ़वाद पे0: 17)

और हज़रत हसन अ़ली सन्जरी लिखते हैं कि सुलतानुल मशइख़ हज़रत महवूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने फ़रमया कि एक बार हज़रत हसन अफ़ग़ान एक गली से गुज़र रहे थे मस्जिद में अज़ान की आवाज़ सुन कर मस्जिद में आए। मुअज़्ज़िन ने तकबीर कही इमाम ने मुसल्ले पर आ कर नमाज़ शुरू की। काफ़ी आदमी जमाअ़त में शामिल हुए। ख़्वाजा हसन अफ़ग़ान भी जमाअ़त में शरीक़ हुए। जब नमाज़ ख़त्म हो गई और लोग वापस होने लगे तो ख़्वाजा हसन अफ़ग़ान आहिस्ते से इमाम के पास आये और कहा। इमाम साहब! जब आप ने नमाज़ शुरू की तो मैं आप के पीछे-पीछे चल रहा था। आपने यहाँ से दिल्ली जा कर गुलाम ख़रीदे और वापस हुए। फिर उन गुलामों को खुरासान ले गए फिर वहाँ से मुलतान वापस आए और फिर मस्जिद में आए। मैं आप के पीछे-पीछे परेशान फ़िरता रहा इमाम साहब! आख़िर यह कैसी नमाज़ है?

(फ़वाइदुल फ़वाद पे0: 17)

मुलतान के इलाक़े से काबा शरीफ़ को देखना और इमाम साहब के दिल में नमाज़ के अंदर पैदा होने वाले ख़्यालात से आगाह होना। दोनों वातें ग़ैब की हैं। हज़रत ख़्वाजा हसन अफ़ग़ान रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने उन का बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि अल्लाह के फ़ज़्ल से हमें इल्में ग़ैब हासिल है। और ज़िक्र किए गए शख़्स को यहाँ से काबा

शरीफ़ दिखा कर आप ने यह भी साबित कर दिया कि हम तो गैब की बातें देखते ही हैं ज़रूरत पड़ने पर दूसरों को भी ऐसी बातें देखा दिया करते हैं।

★★★

शैख़ मख़दूमे बिहार का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 782 हि0)

महबूबे यज़दानी हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहांगीर सिमनानी किछौछवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि गुलबर्गा शरीफ़ से पंडवा शरीफ़ जाते हुए जिस रोज़ इलाक़ए बिहार में मुनीर शरीफ़ के क़रीब पहुंचे उसी दिन हज़रत मख़दूमुल मलिक शर्फ़ुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का विसाल (इन्तिक़ाल) हुआ। हज़रत मख़दूम कछौछवी को हज़रत शैख़ मुनीरी की मुलाक़ात का शौक़ था मगर हुक्मे खुदा व तक़दीर न था कि इस दुनिया में दोनों बुज़ुर्ग एक दूसरे से मिलें लेकिन शैख़ मुनीरी रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने वसियत फ़रमादी थी कि एक सय्यद सहीहुन्नसब तारिके सलतनत (बादशाहत छोड़ने वाले) सातों क़िरअत के हाफ़िज़ आने ही वाले हैं मेरे जनाज़े की नमाज़ वही आकर पढ़ाएंगे। मख़दूमुल मलिक काविसाल (इन्तिक़ाल) हो गया जनाज़ा तैयार करके लोग वसियत के मुताबिक़ हज़रत मख़दूम साहब का इन्तिज़ार कर रहे थे। जब कुछ देर हुई तो शैख़ जिलाई नामी एक शख़्स आप की तलाश में बाहर निकले। जब आबादी के बाहर पहुंचे तो दूर से एक क़ाफ़ला आता नज़र आया। क़ाफ़ले के क़रीब आने पर शैख़ जिलाई बड़ी बेताबी से आप को ढूंडने लगे। जब आप के करीब पहुंचे और आप की पेशानी पर नूरे वलायत को चमकता हुआ देख

कर पुछा कि हुज़ूर सय्यद हैं? आपने फ़रमाया हाँ फिर हिफ़्ज़े क़ुरआन और सलतनत छोड़ने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। जब उन्हें इत्मिनान हो गया कि मख़दूमुल मलिक ने आप ही की इमामत की वसियत फ़रमाई है तो बड़े एहतेराम व इकराम के साथ आप को आबादी में लाए और लोगों से मिलाया। फिर सब ने आप से इमामत के लिए कहा। पहले तो आजेज़ी के तौर पर फ़रमाया कि मैं मुसाफ़िर ग़रीब हूँ किसी दूसरे इमामत के लायक़ शख़्स से नमाज़ पढ़वाइए। लेकिन कुछ तो लोगों के इसरार और ज़्यादा मख़दूमुलमलिक की वसीयत के लिहाज़ से आप ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। (महबूबे यज़दानी पे0: 97)

सय्यद सहीहुन्नसब, तारिके सलतनत, सातों किरअत के हाफ़िज़ और फिर वह आने ही वाले हैं। ऐसे बुज़ुर्ग के बारे में बिना किसी ख़बर के जनाज़े की नमाज़ की वसीयत फ़रमा कर हज़रत शर्फ़ुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि अल्लाह तअ़ला ने हमें ग़ैब का इल्म अ़ता फ़रमाया है।

★★★

मख़दूम अशरफ़ जहांगीर सिमनानी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 808 हि0)

जब आप जाइस पहुंचे और सवाद कस्बा के दक्षिण पूरब में एक बुज़ुर्ग हज़रत मारूफ़ शहीद का मज़ार है उसी के करीब ठहरे तो रात में मामूल के मुताबिक़ आप के साथी ज़िक्र बुलंद आवाज़ से कर रहे थे। और जलाले इस्मे ज़ात (अल्लाह) की गूंज से आस पास की आबादी मुतअस्सिर (प्रभावित) हो गई क़रीब ही एक

मौलाना आलामुद्दीन रहते थे। उन्हों ने जो यह आवाज़ सुनी तो फ़रमाया यह ग़ोग़ाई (शोर करने वाले) कहाँ से आए हैं। मौलाना का दस्तूर था कि हर सुबह मारूफ़ शहीद के मज़ार पर फ़ातिहा ख़्वानी के लिए आते थे। आदत के मुताबिक़ उस दिन भी तशरीफ़ लाए। यहाँ आ कर देखा कि हज़रत मुरीदों व ख़ादिमों और हमराहियों के साथ क़याम फ़रमा (विराजमान) हैं और खुद हुज़ूर भी फ़ातिहा के वास्ते मज़ार के क़रीब ही थे। मौलाना ने किसी से पूछा कि कौन बुज़ुर्ग हैं।? हज़रत ने फ़रमाया कि हम सब ग़ोग़ाई हैं। मौलाना को अपना रात का जुमला (बात) याद आ गया बेहद शर्मिन्दा हुए और बहुत माज़िरत चाही। हज़रत ने फ़रमाया यह तो कोई बात न थी हमने उस से भी ज़्यादा मलामतें बरदाश्त की हैं। मौलाना ने कुछ ऐसी आजिज़ी से हज़रत की दिलजोई की कि आप का दिल खुश हो गया। (महबूबे यज़दानी पे0: 53)

हज़रत की ख़िदमत में एक फ़लसफ़ी आया और आकर आप की महफ़िल में बैठ गया। इस की शक्ल व सूरत और लिबास से ऐसा मालूम होता था कि बड़ा पक्का मुसलमान है जब आप की निगाह उस पर पड़ी तो फ़रमाया क्यों बहरूपिया बने हो? तुम सूफ़ियों की निगाह से अपनी हक़ीक़त नहीं छुपा सकते। फ़लसफ़ी अपने दिल में बड़ा शर्मिन्दा हुआ और दिल ही दिल में तौबा करने लगा। फिर थोड़ी देर के बाद आपने फ़रमाया अलहम्दु लिल्लाह खुदा ने तुम्हें तौबा नसीब फ़रमाई। हज़रत के इस कश्फ़ (आत्म ज्ञान)पर उस को बेहद हैरत हुई उठ कर क़दमों पर गिर पड़ा और मुरीद हुआ। (महबूबे यज़दानी पे0 71)

हज़रत निज़ामुद्दीन ग़रीब यमनी लतांइफ़े अशरफ़ी के मुरत्तिब (संपादक) लिखते हैं कि जब दरिया में जहाज़ रवाना हुआ तो मेरे दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि इस ज़माने में भी कोई ऐसा आरिफ़

है जो दरिया के रहने वाले आरिफ़ों और आबिदों की ख़बर दे लिखते हैं कि जैसे ही मेरे दिल में यह ख़्याल आया फ़ौरन हज़रत ने उस ख़ादिम को आगाह करते हुए इरशाद फ़रमाया कि फ़रज़न्द निज़ाम! फ़क़ीरों के लिए इस का जान लेना एक तिन्का तोड़ने से ज़्यादा आसान है। (महबूबे यज़दानी पे0 80)

हिरात का वाक़िआ है कि वहाँ का एक अमीर हज़रत से बदअक़ीदा हो गया। उस ने इम्तिहान के तौर पर आप की दावत की। दस्तरख़्वान पर क़िस्म क़िस्म के खाने चुने गए। एक थाल में दो मुर्ग़ मुसल्लम भी थे। हज़रत ने खाने के वक़्त उन मुर्ग़ों की तरफ़ तवज्जुह फ़रमाई। मेज़बान अमीर ने बहुत इसरार के साथ उसी काब को आप की तरफ़ बढ़ाया कि हुज़ूर उस को ज़रूर तनावुल फ़रमाएं ख़ास इन्तिज़ाम से पकवाए गए हैं। आप ने काब (थाल) में से एक मुर्ग़ अपने और दूसरे फ़क़ीर के लिए ले लिया और दूसरा मुर्ग़ अमीर और उस के साथियों की तरफ़ यह कह कर बढ़ा दिया कि पहला फ़क़ीरों के लायक़ था और यह तुम्हारे लिए मुनासिब है। अमीर ख़ामोश हो गया लेकिन मेहमानों को उस के चेहरे पर शर्मिन्दगी की लाली देख कर हैरत हुई बाद में लोगों को मालूम हुआ कि एक मुर्ग़ जिस का गोश्त हज़रत ने तनावुल फ़रमाया था मुनासिब क़ीमत दे कर ख़रीदा गया था और दूसरा मुर्ग़ जुल्म से हासलि हुआ था। (महबूबे यज़दानी पे0: 88)

हिरात से याग़िस्तान जाते हुए सफ़र के दर्मियान हज़रत का गुज़र एक ऐसे रास्ते से हुआ जहाँ कई दिन तक आबादी का नाम व निशान न मिला तीन रोज़ तक बग़ैर खाए पिए क़ाफ़ला चलता रहा। रोफ़क़ा-ए-सफ़र के साथी बेक़रार हो गए और जब बरदाश्त से बाहर हो गया तो हज़रत तक यह बात पहुंचाइ गई कि क़ाफ़ले वाले भूक की शिद्दत से निढाल हैं और अब आगे सफ़र उन के

लिए नामुम्किन हो रहा है। हज़रत ने क़ाफ़ले वालों से कमर खोल देने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि अगर किसी के पास लोहे की ज़ंजीर हो तो मेरे पास लाओ। तलाश करने पर एक क़लन्दर ने दी। ज़ंजीर आप की ख़िदमत में हाज़िर की गई आप ने उस पर तवज्जुह डाली निगाह के असर से वह लोहे की ज़ंजीर सोने की हो गई। वावा हुसैन जो आप के ख़ादिमे ख़ास थे। आप ने उन को हुक्म दिया कि उसे ले जाओ यहाँ से कुछ फ़ासले पर फ़लाँ तरफ़ एक वाज़ार है उसे फ़रोख़्त करके तीन दिन के खाने पीने का सामान ख़रीद लेना और जो रक़म वच जाए उसे वापसी पर मेरे पास मत लाना वल्कि पानी में डाल देना। चुनाँचे वावा हुसैन निशानी वाले मक़ाम पर पहुंचे तो उन के हैरत की इन्तिहा न रही कि एक ऐसी वीरान जगह में कि जहाँ तीन दिन तक कोई आवादी न मिल सकी रास्ते में खाने पीने का कोई इन्तिज़ाम न हो सका यहाँ इतना अज़ीमुश्शान वाज़ार कहाँ से आ गया। वहर हाल वह वाज़ार में फिरते फिराते सोने चाँदी की दुकान पर पहुंचे। अपनी ज़ंजीर फ़रोख़्त की और तीन दिन का राशन ख़रीद कर जानवरों पर लादा और वापस हुए। रास्ते में वाक़ी रक़म पानी में फेंक दी और क़ाफ़ले में पहुंच कर हज़रत को इस की ख़वर दे दी।

आप के एक मुरीद तंगर क़ुली महफ़िल में वैठे हुए थे उन्हों ने जव यह सुना कि वावा हुसैन ने वाक़ी रुपए वापसी पर पानी में फेंक दिए तो उन्हें यह ख़्याल पैदा हुआ कि रक़म पानी में फेंक कर नाहक़ वर्वाद की गई इस से अच्छा तो यह होता किसी फ़क़ीर और एहले हाजत को देदी जाती। वह यह सोच ही रहे थे कि हज़रत ने उन की तरफ़ सामने हो कर फ़रमाया कि तंगर क़ुली! तुम ख़ुदा के कामों में दख़ल देते हो और अरहमुर्राहिमीन को परवरिश का सवक़ सिखाते हो। तुम्हे क्या ख़वर कि वर्वाद हुआ

कि ठीक हुआ। तंगर क़ुली सख़्त शर्मिन्दा हुए और हज़रत से वहुत माफ़ी चाही। (महबूबे यज़दानी पे0: 89)

मौलाना आलामुद्दीन की कही हुई वात को जान लेना, फ़लसफ़ी की हालत से आगाह हो जाना, शैख़ निज़ाम के ख़्यालात पर वाख़वर होना, ज़ुल्म से हासिल किए गए मुर्ग़ से वाक़िफ़ हो जाना और तंगर क़ुली के ख़तराते क़ल्व (हालाते दिल) का जान लेना। सव ग़ैव की वातें हैं। हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी कछौछवी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान ने इन सारी वातों को जाहिर फ़रमाकर अपना यह अक़ीदा ज़हिर कर दिया कि हम ग़ैव की वातें जान लिया करते हैं। और लोहे की ज़ंजीर को सोना वनाकर आप ने यह अक़ीदा भी सावित फ़रमा दिया कि अल्लाह के महवूव वन्दों को चीज़ों की हक़ीक़तें वदल देने का इख़्तियार भी दिया गया है।

हाज़िर व नाज़िर

हाज़िर के लुग़वी माना हैं मौजूद, जानने वाला और शहर का रहने वाला। नाज़िर के माना हैं। देखने वाला, ग़ौर करने वाला और खेती की हिफाज़त करने वाला। और अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फ़रमाते हैं कि यानी हाज़िर होना जानने के माना में मशहूर है और नाज़िर होना देखने के माना में है। (रद्दुलमुहतार जि0: 3 पे0: 307)

और शरीअ़त की ज़वान में हाज़िर नाज़िर के माना हैं। सारी दुनिया को देखना और दूर व नज़दीक की आवाज़ों को सुनना। या थोड़े से वक़्त में दुनिया भर की सैर कर लेना और एक आन में रूहानी या जिस्म मिसाली के साथ सैंकड़ों किलोमीटर की दूरी पर

मदद के लिए पहुंच जाना।

अल्लाह के महवूब बन्दों का हाज़िर व नाज़िर होना हक़ है हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम और वड़े-वड़े उलमा-ए-किराम व बुजुर्गाने दीन का यही अक़ीदा है। सुबूत मुलाहज़ा हो।

हुज़ूर सय्यदे आलम का अक़ीदा

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्होंने फ़रमाया कि नवी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद हज़रत जाफ़र और हज़रत इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की शहादत की ख़वर आने से पहले उन लोगों के शहीद हो जाने की ख़वर देते हुए फ़रमाया कि ज़ैद ने झन्डा हाथ में लिया और शहीद किए गए फिर जाफ़र ने झन्डे को संभाला और वह भी शहीद हुए। फिर इब्ने रवाहा ने झन्डे को लिया और वह भी शहीद किए गए। आप यह वाक़िआ वयान फ़रमा रहे थे और आँखों से आँसू जारी थे। फिर आपने फ़रमाया अब झन्डे को उस शख़्स ने लिया जो खुदा-ए-तआ़ला की तलवारों में से एक तलवार है यानी खालिद विन वलीद ने यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को फ़तह अ़ता फ़रमाई।

(बुख़ारी शरीफ़ जि०: 2 पे०: 611)

और हज़रत अब्दुल्लाह विन उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रवायत है। उन्होंने कहा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

अल्लाह ने मेरे लिए दुनिया के पर्दे उठा दिए हैं। तो मैं

दुनिया को और जो कुछ भी उस में क़यामत तक होने वाला है सब को ऐसा देखता हूँ जैसे कि अपनी इस हथेली को।

(ज़रक़ानी अलल मवाहिब जि०: 7 पे०: 204)

इन अहादीसे करीमा से मालूम हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का अपने वारे में यह अक़ीदा है कि मैं हाज़िर व नाज़िर हूँ। इसी लिए जंग मोता जो मुल्के शाम में हो रही है मदीना मुनव्वरा ही से उस के सारे वाक़िआत को जानता हूँ और देखता भी हूँ वल्कि दुनिया में जो कुछ कयामत तक होने वाला है उस को मैं इस तरह जानता हूँ। जैसे अपनी हथेली। अगर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वसल्लाम का अपने बारे में हाज़िर व नाज़िर होने का अक़ीदा न होता तो आप ऐसा न फ़रमाते।

★★★

मुहद्दिसीन का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम)

जो हदीसें हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के अक़ीदे में बुख़ारी शरीफ़ और ज़रक़ानी शरीफ़ की लिखी गई हैं इन हदीसों से हुज़ूर का अक़ीदा मालूम होने के साथ हज़रत इमाम बुख़ारी और हज़रत अल्लामा ज़रक़ानी रजियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा का भी अक़ीदा साबित हुआ कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाज़िर व नाज़िर है। वरनां इन हदीसों को यह हज़रात अपनी किताबों में हरगिज़ न लिखते। और दुसरे मुहद्दसीन के अक़ीदे मुलाहज़ा हों।

इमाम तर्मिज़ी व साहिबे मिश्कात का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)

हज़रत सलमा रज़िल्लाहु तआ़ला अ़न्हा जो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ़ रज़िल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बीवी हैं उन्होंने फ़रमाया कि मैं उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा वह रो रही हैं। मैं ने अर्ज़ किया आप रोती क्यों हैं? उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि उन के सर मुबारक और रीशे अक़्दस (दाढ़ी) पर गर्दो गुबार है। मैं ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप का यह क्या हाल है? फ़रमाया मै। अभी हुसैन की शहादतगाह पर हाज़िर हुआ था।

(तिर्मिज़ी, मिश्कात पे0: 570)

हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का मदीना मुनव्वरा से करबला शरीफ़ के मैदाने जंग में जाना और वहाँ के हालात को मुलाहज़ा फ़रमाना हाज़िर व नाज़िर के मानां है। हज़रत इमाम तिर्मिज़ी और साहिबे मिश्कात अ़ल्लामा ख़तीब तबरेज़ी अलैहिमर्रहमतु वरिज़्वान ने अपनी-अपनी किताबों में इस हदीस शरीफ़ को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हाज़िर नाज़िर हैं।

★★★

अ़ल्लामा क़स्तलानी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 923 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि हमारे उलमाए किराम ने फ़रमाया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़िन्दगी और वफ़ात (दुनिया से पर्दा करने) में कोई फ़र्क़ नहीं वह अपनी उम्मत को देखते हैं और उन की हालतों, नियतों इरादों और दिल की बातों को जानते है। और यह आप पर बिलकुल ज़ाहिर हैं इस में कोई पोशीदगी नहीं।

(मवाहिबुल लदुन्निया जि0: 2 पे0: 387)

हज़रत अ़ल्लामा इब्ने हजर क़स्तलानी अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान की इस बात से ज़ाहिर हुआ कि उन का भी यही अक़ीदा है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तअ़ला अलैहि वसल्लम हाज़िर व नाज़िर हैं इस लिए कि अपनी उम्मत को देखते हैं और उनकी हालतों को जानते हैं।

★★★

क़ाज़ी अ़याज व मुल्ला अ़ली क़ारी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)

हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़याज़ अलैहिर्रहमतु वरिज़्वान फ़रमाते हैं कि जब घर में कोई न हो तो तुम कहो ऐ नबी! आप पर सलाम और अ़ल्लाह की रहमतें और उस की बरकतें हों।

(शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2 पे0: 52)

इस इबारत (लेख) की शरह में हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह लिखते हैं कि इस लिए कि हुज़ूर

अलैहिस्सलातु वस्सलामु की मुबारक रूह मुसलमानों के घरों मे मौजूद है। (शरहे शिफ़ा शरीफ़ मुल्ला अली क़ारी मअ नसीमुर्रियाज़ जि0: 3 पे0: 464)

इन इबारतों (लेख) से हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़याज़ और हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहिमा ने अपना अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम हाज़िर व नाज़िर हैं सब मुसलमानों के घरों में उन की मुबारक रूह मौजूद है उन पर सलाम अ़र्ज़ किया जाएगा।

★★★

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 911 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि अपनी उम्मत के आमाल पर निगाह रखना, उन के गुनाहों के लिए इस्तिग़फ़ार (बख़्शिश चाहना) करना, उन से बला दूर होने की दुआ करना, ज़मीन में इधर उधर आना जाना इस में बरकत देना और अपनी उम्मत में किसी नेक आदमी का इन्तिक़ाल हो जाए तो उस के जनाज़े में शरीक होना। यह चीज़ें हज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का मशग़ला (तरीक़ा) हैं जैसे कि उस के मुतअ़ल्लिक़ हदीसें और आसार आए हैं। (इन्तिबाहुल अज़किया पे0: 7)

इस इबारत (लेख) से हज़रत अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमतु वरिज़वान का अक़ीदा ज़ाहिर है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हाज़िर नाज़िर हैं कि सारी दुनिया में फैली हुई अपनी उम्मत के आ़माल पर नज़र रखते हैं और ज़मीन में जहाँ चाहते हैं आते जाते हैं।

★★★

शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, वन्तिक़ाल 1052 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि "उम्मत के उलमा में इतने इख़्तिलाफ़ और बहुत से मज़हब के बावजूद किसी शख़्स को इस मसअले में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हक़ीक़ी ज़िन्दगी के साथ क़ायम और बाक़ी हैं। हुज़ूर की ज़िन्दगी में मजाज़ (असलीयत के सिवा) की आमेज़िश (मिलावट) व तावील (ग़लत ब्यानी) का वहम (शक) नहीं है। और उम्मत के आमाल पर हाज़िर व नाज़िर हैं और हक़ीक़त के तलब करने वाले और जो लोग कि हुज़ूर की जानिब तवज्जुह रखते हैं हुज़ूर उन सब को फ़ैज़ पहुंचाने वाले और उन की तर्बियत करने वाले हैं।"

(अख़बारुल अख़बार प्रकाशक रहीमिया देवबन्द पे0: 161)

और फ़रमाते हैं कि "हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का ज़िक्र करो उन पर दरूद पढ़ो। और ज़िक्र की हालत में ऐसे रहो कि हुज़ूर ज़िन्दगी की हालत में तुम्हारे सामने हैं और तुम उन को देखते हो। अदब, इजलाल, ताज़ीम, हैबत और हया से रहो और जानो कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम तुम्हें देखते और तुम्हारे कलाम को सुनते हैं। इस लिए कि हुज़ूर हलैहिस्सलाम ख़ुदा-ए-तआ़ला की सिफ़तों (गुणों) के साथ मौसूफ़ है। और अल्लाह की एक एक सिफ़त यह है कि मैं अपने ज़िक्र करने वाले का हमनशीन (मित्र) हूँ।" (मदारिजुन्नुबूव्वत)

और शैख़ मुहक़्क़िक़ फ़रमाते हैं कि "अगर उस के बाद कहें कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने हुज़ूर के मुबारक जिस्म में ऐसी हालत व क़ुदरत बख़्शी है कि जिस जगह चाहें तशरीफ़ ले जाएं, चाहे

बिलकुल उसी जिस्म से चाहे जिस्मे मिसाली से, चाहे आसमान पर, चाहे ज़मीन पर चाहे क़ब्र में या कहीं और। तो दुरूस्त है। क़ब्र से हर हाल में तअल्लुक़ रहता है।"

(मदारिजुन्नुबूव्वत जि0: 2 पे0: 450)

और हज़रत शैख़ मुहक्क़िक़ देहलवी फ़रमाते हैं कि वाज़ आरिफ़ों (ज्ञानीयों) ने फ़रमाया है कि यह खिताब "अत्तहयात" में हुज़ूर को"अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबियु" कह कर सलाम अर्ज़ करना इस वजह से है कि हक़ीक़ते मुहम्मदिया मौजूदात के जर्रा-जर्रा और मुम्किनात (संभव) के हर-हर फ़र्द में सरायत किए हुए है! इस लिए कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम नमाज़ियों की ज़ात में मौजूद और हाज़िर हैं। नमाज़ी को चाहिए कि इस बात से आगाह रहे और इस शहूद से ग़ाफ़िल न हो ताकि कुर्ब के अन्वार और मारिफ़त के भेदों से रोशन और कामयाब हो जाए।

(अशअतुल लम्आत जि0: 1 पे0: 401)

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की इन तहरीरों (लेखों) से उन के अक़ीदे बिलकुल खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर हैं कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हाज़िर व नाज़िर हैं, अपने ज़िक्र करने वाले के हमनशीन (साथी) हैं, ज़मीन व आसमान में जहाँ चाहते हैं तशरीफ़ ले जाते हैं और आप की हक़ीक़त मौजूदात के हर-हर फ़र्द, ज़र्रे और मुम्किनात (संभव) के हर-हर फ़र्द में सरायत (मिले) किए हुए है।

★★★

अल्लामा ख़िफ़ाजी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1070 हि0)

आप लिखते हैं कि"अंबिया अलैहिस्सलाम जिस्मानी और ज़ाहिरी तौर पर बशर (इंसान) के साथ हैं, और उन के बातिन और रूहानी कुव्वतें फ़रिश्तों वाली हैं। इसी लिए वह ज़मीन के पूरब और पश्चिम को देखते हैं, आसमानों की चड़चड़ाहट सुनते हैं और हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम की खुशबू पा लेते हैं जब वह उन की जानिब उतरते हैं।"(नसीमुर्रियाज़ जि0 3 पे0 545)

इस लेख से हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का भी यह अक़ीदा साबित है कि अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हाज़िर व नाज़िर हैं कि वह पुरब और पश्चिम को देखते हैं और और उन को जानते हैं।

★★★

शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1176)

आप फ़रमाते हैं कि वालिद माजिद (पिता) क़िबला फ़रमाया करते थे कि माहे रमज़ान में एक दिन मेरी नकसीर फूट पड़ी तो मुझे कमज़ोरी हो गई। क़रीब था कि मैं कमज़ोरी की वजह से रोज़ा तोड़ दूँ। मगर रमज़ान के रोज़े की फ़ज़ीलत के जाए (बर्बाद) होने का ग़म लाहिक़ हुआ। इसी गम में थोड़ी गोनूदगी (ऊंघ) तारी हुई तो हज़रत पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा के आप ने मुझे लज़ीज़ और खुशबूदार ज़र्दा (मीठा चावल) अता फ़रमाया फिर इन्तिहाई खुशबूदार ढंडा पानी भी

मरहमत फ़रमाया जिसे मैं ने सैर हो कर पिया। मैं उस गोनूदगी के आलम से निकला तो भूक और प्यास बिलकुल ख़त्म हो चुकी थी और मेरे हाथों में अभी तक ज़र्दा के ज़अफ़रान की ख़ुशबू मौजूद थी, अक़ीदत मन्दों ने एहतियातन मेरे हाथों को धो कर पानी को महफ़ूज़ कर लिया और तबर्रूक के तौर पर उसे रोज़ा इफ़्तार किया। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0: 100)

और हज़रत शाह साहिब लिखते हैं कि वालिद माजिद क़िबला ने फ़रमाया। मुहम्मद फ़ाज़िल ने चाहा कि अपने बेटे को अजमेर भेज दे और रास्ते की बदअमनी के पेशे नज़र खुद भी उस के साथ जाना चाहा। जब मुझ से रुख़सत होने आया तो मैं ने कहा कि तुम्हारे जाने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह हिफ़ाज़त के साथ वापस आ जाएगा। हाँ अलबत्ता वापसी पर अजमेर से दो मन्ज़िल इधर डाकू क़ाफ़ला पर हम्ला करेंगे मगर उस की हिफ़ाज़त हमारे ज़िम्मे है। हाँ अलबत्ता उसे समझा दीजिए कि उस वक़्त अपनी बहली (गाड़ी) अलग एक तरफ़ खड़ी कर दे।

जब वह वक़्त आया तो हज़रत वाला इस तरफ़ मुतवज्जह हुए। और तवज्जुह के दौरान आप के बदन पर मलाल (ग़म) ज़ाहिर हुआ। हाज़िरीन ने सबब पूछा तो फ़रमाया कि कुछ दिनों के सख़्त सफर ने थका दिया है। जब वह लड़का वापस आया तो बयान किया कि हज़रते वाला मिसाली सूरत में मौजूद थे डाकूओं ने पूरे क़ाफ़ला को लूटा मगर मेरी बहली (गाड़ी) महफ़ूज़ रही।

(अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0 134)

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मदीना शरीफ़ से जान लेना कि दिल्ली में हज़रत शाह अब्दुल रहीम को इन्तिहाई भूक व प्यास के सबब बहुत कमज़ोरी पैदा हो गई है। और फिर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का उन को खाने

पीने के लिए ख़ुशबूदार ज़र्दा और ख़ुशबूदार ढंडा पानी मरहमत फ़रमाना (देना)। और ख़ुद हज़रत शाह अब्दुर्रहीम का अजमेर शरीफ से दो मन्ज़िल इधर डाका पड़ने को दिल्ली में बैठे हुए देखना और ऐन वक़्त पर मुहम्मद फ़ाज़िल के बेटे की हिफ़ाज़त के लिए मिसाली सूरत में वहां पहुंच जाना यह सब हाज़िर व नाज़िर का काम है। लिहाज़ा हज़रत शाह वलियुल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने इन वाक़िआत को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हाज़िर व नाज़िर हैं बल्कि औलिया अल्लाह भी हाज़िर व नाज़िर होते हैं जिन में से एक हमारे बाप हज़रत शाह अब्दुर्रहीम भी हैं।

★★★

अल्लामा निबहानी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1350 हि0)

आशिके रसूल हज़रत अल्लामा यूसुफ़ बिन इसमाईल निबहानी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान फ़िलीस्तीन के एलाक़े में 1265हि0 में पैदा हुए और 1350 में मक़ामे बैरूत में विसाल फ़रमाया। आप की लिखी हुई छोटी बड़ी किताबें पचास (50) से ज़्यादा हैं।

आप लिखते हैं। हज़रत शैख़ अदवी अपनी किताब "मशारिकुलअन्वार" में लिखते हैं कि शहरे बल्ख़ के एक अलवी का इन्तिक़ाल हो गया। तो उन की बीवी समरक़न्द चली गई साथ में चन्द बेटियां भी थीं जिन को उन्होंने मस्जिद में बठा दिया और ख़ुद जा कर उन्होंने शहर के रईस से मुलाक़ात की और उस से अपना दुख दर्द बयान किया। मगर मुसलमान होने के

बावजूद उस ने कोई तवज्जुह नहीं की। और कहा"अपने अलवी होने पर गवाह पेश करो।"

वहाँ से मायूस हो कर वह शहर के मुहाफ़िज़ के पास गई जो मजूसी काफ़िर आतिशप्रस्त था। उसने आप का और आप की बेटियों का बड़ा एहतिराम किया। अपने घर में उन के लिए अलग रहाइशगाह मुक़र्रर किया, गुस्ल का इन्तिज़ाम किया और बेहतरीन कपड़े पहनाए इस ताज़ीम व तकरीम (इज़्ज़त) की बरकत से मजूसी का पूरा घर मुसलमान हो गया।

रात के वक़्त शहर के रईस ने ख़्वाब देखा कि क़यामत क़ायम है और"लिवाउल हम्द" हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सर पर लहरा रहा है। हुज़ूर ने शहर के रईस से मुंह फेर लिया। उस ने अर्ज़ किया हुज़ूर! आप मुझ से मुंह फेर रहे है। हालांकि मैं मुसलमान हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया"अपने मुसलमाने होने पर गवाह पेश करो" वह शख़्स यह सुन कर हैरत ज़दा हो गया। रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम ने फ़रमाया तू ने उस अलवी (सय्यद) औरत से जो कुछ कहा था उसे भूल गया। और जन्नत के एक आलीशान महल की तरफ़ इशारा करते हुए शहर के मुहाफ़िज़ (पहरेदार) से फ़रमाया"यह महल तुम्हारे और घर वालों के लिए है और तुम लोग जन्नती हो।"

(अशरफुल मुअय्यद लिआलि मुहम्मद पे0 97)

और अल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि अल्लामा मक़रीज़ी फ़रमाते हैं मुझ से रईस शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया कि मैं एक दिन क़ाज़ी जमालुद्दीन महमूद अज़मी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जो क़ाहिरा के गवर्नर थे। वह अपने नायबों (उत्तराधिकारी) और ख़ादिमों के

हमराह सय्यद अब्दुर्रहमान तबातबी मुअज़्ज़िन के घर तशरीफ़ ले गए। उन से इजाज़त तलब की। वह अपने घर से बाहर आए तो उन्हें गवर्नर के अपने यहाँ आने पर सख़्त हैरत हुई। वह उन्हें अंदर ले गए। हम भी उन के साथ अंदर चले गए और सय्यद अब्दुर्रहमान के सामने अपने अपने मरतबे के मुताबिक़ बैठे।

सब लोग जब इत्मिनान से बैठ गए तो गवर्नर ने सय्यद साहब से कहा कि हज़रत मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए। उन्हों ने कहा जनाब क्या चीज़ माफ़ कर दूँ? गवर्नर साहब ने कहा कल रात मैं क़िले पर गया और बादशाह ज़ाहिर बरकौक़ के सामने बैठा तो आप तशरीफ़ लाए और मुझ से बुलन्द जगह पर बैठ गए मैं ने अपने दिल में कहा कि यह बादशाह की मजलिस में मुझ से ऊंचे क्यों बैठे हैं? रात को मैं सोया तो मुझे नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई। आप ने मुझ से फ़रमाया।"महमूद! तू इस बात से शर्मिन्दगी महसूस करता है कि मेरी औलाद से नीचे बैठे।"

यह सुन कर सय्यद अब्दुर्रहमान रो पड़े और कहा जनाब! मैं ऐसा कहाँ हूँ कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुझे याद फ़रमाएं। यह सुनना था कि तमाम हाज़िरीन भी रो पड़े और सब की आँखें अश्कबार (आंसू से तर) हो गईं। सय्यद साहब से दुआ की दरख़्वास्त की और वापस आ गए।

(अशरफुल मुअय्यद पे0: 98)

समरक़न्द के रईस शहर से अलवी ख़ातून (सय्यद) का अपना हालज़ार बयान करना, जवाब में शहर के रईस का यह कहना कि तुम अपने अलवी होने पर गवाह पेश करो। और मुहाफ़िज़े शहर (कोतवाल) मजूसी का अलवी ख़ातून की ख़ातिर व मदारात करना और उन के साथ ताज़ीम व इज़्ज़त से पेश आना।

और महमूद गवर्नर का नीचे बैठना, सय्यद साहब का बुलन्द मक़ाम पर तशरीफ़ रखना और फिर गवर्नर का अपने दिल में यह ख़्याल लाना कि यह मुझ से ऊंचे क्यों बैठे।

इन सारी बातों को अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम देखने और जानने वाले हैं। और इसी क़िस्म की बातों के देखने और जानने वाले को हाज़िर व नाज़िर कहते हैं। अ़ल्लामा निबहानी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने इन वाक़िआ़त को लिख कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हाज़िर व नाज़िर हैं। अगर वह हाज़िर व नाज़िर न होते तो इन वाक़िआ़त व हालात को वह हर्गिज़ न देख पाते और न जान पाते।

और फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली बिन सईद अलमारूफ़ ज़ेज़ीर रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने जवानी के ज़माने में हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन अबू बक्र बिन क़िवाम अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान (इन्तिक़ाल 598 हि0) के साथ अहद (वादा) कर लिया। एक बार मुझे बैतुल मुक़द्दस की ज़ियारत का ख़्याल हुआ तो मैं ने हज़रत से हाज़िरी की इजाज़त चाही। फ़रमाने लगे। बेटा! जवान हो और मुझे ख़ौफ़ है कोई ख़राबी न हो। मैं ने बड़ी मिन्नत और समाजत से काम लिया तो मुझे यह कहते हुए इजाज़त मरहमत फ़रमाई (दी) कि मेरा भेद तेरी हिफ़ाज़त यूँ करेगा जिस तरह लोहे का पिन्जरा हिफ़ाज़त करता है। और फ़रमाया जब दमिश्क़ के दरवाज़े पर महल के सामने आओ तो शहर में दाख़िल हो कर शैख अ़ली बिन महल को पूछना और उन की ज़ियारत करना वह अल्लाह के वली हैं।

जब मैं वहाँ पहुंचा तो उन के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। लोगों ने मुझे उन का पता बताया मैं ने उन के घर पहुचं कर दरवाज़ा

खटखटाया तो उन के घर का एक आदमी निकला और मुझे कहा अली! तशरीफ़ लाएं। हज़रत ने आप के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया है कि अली नाम का एक फ़क़ीर तुम्हारे पास आएगा। वह हज़रत शैख़ अबू बक्र बिन किवाम का ग़ुलाम है। उसे मेरे आने तक अंदर आने की इजाज़त दे देना। उन के कहने पर मैं अंदर जा कर बेठ गया यहाँ तक कि हज़रत शैख़ अ़ली बिन जुमल तशरीफ़ ले आए। मैं ने उठ कर उन्हें सलाम अ़र्ज़ किया। उन्होने मुझे खुश आमदीद कह कर फ़रमाया, अ़ली! पिछली रात हज़रत शैख़ मुहम्मद अबू बक्र आए थे और तुम्हारी ख़बरगीरी के लिए कहा था। अब तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी इस लिए कि आप साय-ए-शैख़ में यूँ महफ़ूज़ हैं जैसे कोई पिन्जरे में महफ़ूज़ रहता है।

मैं उन के पास ठहरा रहा फिर बैतुल मुक़द्दस चला। जब वहाँ पहुंचा तो सख़्त गर्मी में शहर से बाहर एक शख़्स को देखा। मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने मुझे जवाब दे कर फ़रमया बेटा! बहुत देर कर दी है मैं सुबह से तुम्हारा यहाँ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। मुझे उस से ख़ौफ़ आने लगा। मैं ड़रा यह कोई ग़लत आदमी न हो। मुझे फ़रमाया अ़ली! डरो नहीं। हज़रत शैख़ ने आ कर मुझे तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ हुक्म फ़रमाया था। मैं उन के साथ उन के घर चला गया। उन्होंने खाना मंगवाया और उसे तनाउल करने (खाने) का हुक्म दिया। मैं ने खाना खाया। जब नमाज़ का वक़्त आया तो कहा अब उठिए। नमाज़ हरमे अक़दस में पढ़ेंगे। हम दोनों आदमी निकल कर हरमे अक़दस (बैतुल मुक़द्दस) में पहुंचे। वहाँ नमाज़ें पढ़ीं और घर वापस आ गए। रात हुई तो वह पूरी रात नमाज़ पढ़ते रहे। जब उन्हें महसूस होता कि मैं जाग रहा हूँ। तो वह बैठ जाते और जब मेरे सो जाने का यक़ीन हो जाता तो खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगते। (यह सब इस लिए कि

रियाकारी न हो)

मैं कई रोज़ उनके यहाँ ठहरा रहा। फिर मैं हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम की ज़ियारत के लिए निकला। उन्हों ने मेरे साथ चल कर अलविदा कहा। मैं हज़रत सय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के माज़र के क़रीब पहुंचा तो चार डाकू मेरी तरफ़ बढ़े। जब मेरे क़रीब आए तो हैरान हो कर मेरे पीछे देखने लगे। मैं ने पीछे देखा तो सफ़ेद कपड़ों में मुंह लपेटे एक शख़्स को खड़ा हुआ पाया। उस ने मुझे कहा अपना रास्ता चलते जाएं। मैं चलता गया वह उस वक़्त तक मेरे साथ रहा जब तक कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ब्र और शहर सामने नहीं आ गया। अब वह खड़े हो कर दुआ़ करने लगा और मैं शहर में दाख़िल हो कर ज़ियारत करने लगा। जब मैं अपने शहर वापस पहुंचा तो सब से पहले हज़रत शैख़ की सलामी के लिए हाज़िर हुआ। जब मैं ने ख़िदमत में हाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया तो आपने मेरे सफ़र के सब वाक़िआ़त बयान फ़रमा दिए। और कहने लगे कि अगर वह मुंह लपेट कर आने वाला न होता तो डाकू तेरे कपड़े तक उतार लेते। यह सुन कर मुझे यक़ीन हो गया कि वह ख़ुद हज़रत शैख़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु थे। (जामिअ़ करामाते औलिया, पे0 577)

और फ़रमाते हैं कि एक ईसाई ख़ातून मुलके फरंग (अंग्रेज़ी) में रहती थी और हज़रत मुहम्मद बिन अहमद फ़रग़ल सईदी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 860 हि0) से अक़ीदत रखने वाली थी। उस ने नज़्र मानी कि अगर अल्लाह ने उस के लड़के को शिफ़ा देदी तो वह हज़रत फ़रग़ल के लिए दरी बनाएगी। एक दिन आप फ़रमाने लगे अब उन लोगों ने दरी के लिए पशमीना (ऊन) काटना शुरू कर दिया। अब उन्होंने सूत कोनलों पर चढ़ाया। अब वह बनाने लग गए हैं। अब उन्होंने दरी भेज दी

है। अब मक़ाम मरक़ब पर वह उतर गए हैं और फ़लाँ जगह पर वह हैं। अब उस ने दरी पकड़ रखी है। और दरवाज़े पर पहुंच गया है। लोगों ने देखा तो वाक़ई ऐसा ही हुआ।

(जामिअ़ करामाते औलिया, पे0 686)

हज़रत शैख़ इब्ने क़िवाम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि का ख़ादिम के सारे वाक़िआ़ते सफ़र का बग़ैर किसी आले (चीज़) के देखना और जानना। इसी तरह हज़रत फ़रग़ल अ़लैहिर्रहमा का दरी के मुतअ़ल्लिक सारे हालात को मुलाहज़ा फ़रमाना। हाज़िर व नाज़िर का होने का सबूत है। हज़रत अ़ल्लामा निबहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने इन वाक़िआ़त को किताब में लिख कर अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि अल्लाह के कुछ वली भी हाज़िर व नाज़िर होते हैं।

★★★

ताज़ीम

(सम्मान)

ताज़ीम के माना हैं क़ौल या फ़ेल (वात या काम) से किसी की बड़ाई ज़ाहिर करना। तो सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम और दूसरे अंविया-ए-किराम व मशाइख़े इज़ाम वग़ैरा की ताज़ीम जाइज़ है या नहीं? इस के वारे में वुज़ुर्गों का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

हुज़ूर सय्यदे आ़लम का अक़ीदा
(सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

(1) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि“जो हमारे छोटों पर मेहरवानी न करे और हमारे बड़ों की ताज़ीम व इज़्ज़त न करे वह हमारे रास्ते पर नहीं।”

(तिर्मिज़ी, मिश्कात, पे0: 423)

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के नज़दीक अपने वड़े की ताज़ीम करना शिर्क नहीं वल्कि ऐसा न करने वाला हुज़ूर के रास्ते पर ही नहीं है।

(2) हज़रत मिस्वर विन मुख़रिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि उरवा विन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब कि वह मुसलमान न हुए थे। हुदैविया के मक़ाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से सुलह (सम्झौता) की गुफ़्तगू करने के लिए आए। उस मौक़े पर सहावा को हुज़ूर की ताज़ीम

करते हुए जो उन्होंने देखा था वापसी के वाद मक्का शरीफ़ के काफ़िरों से इन लफ़्ज़ों में उन्हों ने बयान किया कि“क़सम ख़ुदा की मैं वादशाहों के दरवारों में वफ़्द (प्रतिनिधिमण्डल) ले कर गया हूँ। मैं क़ैसर व किसरा और नजाशी के दरबारों में हाज़िर हुआ हूँ। लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं ने कोई वादशाह ऐसा नहीं देखा कि उस के साथी इस तरह ताज़ीम करते हैं जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तअ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथी उन की ताज़ीम करते हैं। ख़ुदा की कसम जव वह थूकते हैं तो उन का थूक किसी न किसी आदमी की हथेली पर ही गिरता है जिसे वह अपने चेहरे और वदन पर मल लेता है और जव वह कोई हुक्म देते हैं तो फ़ौरन उन के हुक्म की तामील होती है। और जव वह वुज़ू फ़रमाते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि लोग वुज़ू का पानी हासिल करने के लिए एक दूसरे के साथ लड़ने मरने

पर आमादा हो जाएंगे और जव उन की वारगाह में वात करते हैं तो अपनी आवाज़ों को पस्त रखते हैं और ताज़ीम के तौर पर उन की तरफ़ आँख भर कर नहीं देखते।”

(बुख़ारी शरीफ़ जि0: 1, पे0: 379)

(3) हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है उन्होंने ने फ़रमाया कि“मैं नवी करीम अ़लैहिस्सलातो वत्तसलीम की वारगाह में हाज़िर हुआ तो आप चमड़े के लाल कुब्बे में तशरीफ़ फ़रमा थे और में ने हज़रत विलाल को देखा कि उन्हों ने हुज़ूर के वुज़ू का पानी (एक वर्तन) में लिया और लोग उस पानी की तरफ दोड़ रहे हैं तो जिस को उस में से कुछ हासिल हो गया उसने (अपने चेहरे वग़ैरा) पर उसे मल लिया और जो नहीं पाया तो उसने अपने साथी के हाथ से तरी ले ली।”

(बुख़ारी शरीफ़ जि0: 2, पे0: 871)

इन अहादीसे करीमा से मालूम हुआ कि सहाब-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अ़लैहिम अजमईन हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम करते थे मगर आप उन्हें मना नहीं फ़रमाते थे जिस से ज़ाहिर तौर पर हुज़ूर का यह अक़ीदा साबित हुआ कि मुसलमान उन की ताज़ीम करें तो यह शिर्क नहीं। अगर यह बात शिर्क होती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम सहाबा को उस से ज़रूर मना फ़रमाते।

(4) हज़रत साइब बिन ख़ल्लाद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि"एक शख़्स अपनी क़ौम को नमाज़ पढ़ा रहा था तो उस ने किबले की तरफ़ थूक दिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम देख रहे थे। जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हो गया तो हुज़ूर ने उस की क़ौम से फ़रमाया कि आइन्दा यह शख़्स तुम लोगों को नमाज़ न पढ़ाए। हुज़ूर के मना करने के बाद उसने नमाज़ पढ़ानी चाही तो लोगों ने रोक दिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से उस को आगाह किया। उस शख़्स ने यह बात हुज़ूर से दर्याफ़्त की तो आप ने फ़रमाया कि हाँ मैं ने मना किया है हदीस के रवायत करने वाले हज़रत साइब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं मेरे ख़्याल से हुज़ूर ने यह भी फ़रमाया कि तूने अल्लाह को तकलीफ़ दी।"

(अबूदाऊद, मिश्कात पे0: 71)

हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि काबा शरीफ़ की जानिब उस की ताज़ीम के लिए थूकने से मना किया गया है।

(मिरक़ात शरहे मिश्कात जि0: 1, पे0: 455)

तो इमाम पर चूंकि काबा शरीफ़ की ताज़ीम लाज़िम थी मगर उस ने नहीं की इस लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाने से उस शख़्स को मना फ़रमा दिया। हालांकि यह वाक़िआ मदीना तय्यबा का है जहाँ से वह काबा शरीफ़ को देख नहीं रहा था। मालूम हुआ हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का यह अक़ीदा है कि ताज़ीम के लिए मुअज़्ज़म यानी जिस की ताज़ीम करनी है उस का सामने होना और देखना ज़रूरी नहीं बल्कि वह निगाहों से ओझल हो तब भी उस की ताज़ीम की जाएगी।

★★★

इमाम बुख़ारी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 256 हि0)

हज़रत मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रबरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि कहते हैं कि हज़रत इमाम बुख़ारी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान ने फ़रमाया कि"बुख़ारी शरीफ़ में हर हदीस लिखने से पहले मैं ने ग़ुस्ल किया और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी।"

(मुकद्दिमा फ़तहुलक़दीर शरह, पे0 5)

हदीस शरीफ़ की ताज़ीम हक़ीक़त में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम है। तो हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने हदीसे रसूल की इस तरह ताज़ीम फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम हक़ (सही) है।

और बाज़ सहाबा हदीस शरीफ़ लिखते थे (देखिए बुख़ारी शरीफ़ जिल्द अव्वल पे0 22 सतर (8) मगर वह हर हदीस शरीफ़ लिखने से पहले न ग़ुस्ल करते थे और न दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते

थे। हज़रत इमाम बुख़ारी ने हर हदीस के पहले गुस्ल व नमाज़ से अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम का हर तरीक़ा सहाबा से साबित होना ज़रूरी नहीं बल्कि हर वह तरीक़ा कि जिन से हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बड़ाई ज़ाहिर हो उन तमाम तरीक़ों से हुज़ूर की ताज़ीम जाइज़ व बेहतर है।

और नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस तरह हदीसे पाक की ताज़ीम से अपनी ताज़ीम का हुक्म नहीं फ़रमाया लेकिन इमाम बुख़ारी ने हदीस की ताज़ीम से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला वसल्लम की ताज़ीम फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा भी साबित कर दिया कि हर तरह की ताज़ीम के लिए क़ुरआन व हदीस का साफ़ लफ़्ज़ों के साथ हुक्म देना ज़रूरी नहीं इस लिए कि अल्लाह तआला का आम इरशाद "रसूल की ताज़ीम व एहतेराम करों" (पाराः 26, रु0: 9) ताज़ीम की तमाम क़िस्मों को शामिल है।

★★★

इमाम मालिक का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 179 हि0)

(1) हज़रत अबू मुसअब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि "हज़रत मालिक बिन अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस शरीफ़ की ताज़ीम व एहतेराम की ख़ातिर बिना वुज़ू के बयान नहीं फ़रमाते थे।" शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2, पे0: 35)

(2) हज़रत मुतरिफ़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास जब

लोग कुछ पूछने के लिए आते तो ख़ादिमा (सेविका) आप के दौलतख़ाने से निकल कर दर्याफ़्त किया करती कि हदीस शरीफ़ पूछने के लिए आए हो या फ़िक़ही मसअला? अगर वह कहते मसअला दर्याफ़्त करने के लिए आए हैं तो इमाम मालिक फ़ौरन बाहर तशरीफ़ ले आते और अगर वह कहते कि हदीस शरीफ़ के लिए आए हैं तो हज़रत इमाम मालिक गुस्ल फ़रमा कर ख़ुशबू लगाते फिर लिबास बदल कर निकलते। आप के लिए तख़्त बिछाया जाता जिस पर आप वक़ार के साथ बैठ कर हदीस शरीफ़ बयान फ़रमाते। और मज्लिस की इब्तिदा से आख़िर तक ख़ुशबू सुलगाई जाती। और तख़्त सिर्फ़ हदीस शरीफ़ बयान करने के लिए मख़सूस किया गया था। जब इमाम मालिक से उस की वजह पूछी गई तो आप ने फ़रमाया कि "मैं चाहता हूँ कि इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस शरीफ़ की ताज़ीम व एहतेराम करूं।" (शिफ़ा शरीफ़ जि0 2, पे0 36)

(3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर था आप हदीसें बयान फ़रमा रहे थे कि उसी दर्मियान में एक बिच्छू ने आप को सोलह बार डंक मारा जिस से उन का रंग बदल कर पीला हो रहा था मगर उन्होंने ने हुज़ूर सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस शरीफ़ को बयान करना बन्द न किया। जब आप हदीस के बयान से फ़ारिग़ हो गए और लोग चले गए तो मैं ने अर्ज़ किया कि आप के अंदर मैं ने एक अजीब बात देखी है। हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि "मैं ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस शरीफ़ की ताज़ीम में सब्र किया।"

(शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2, पे0: 36)

हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने भी हदीस की ताज़ीम से हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम हक़ है। और सहाब-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अजमईन चलते फिरते और उठते बैठते हर हाल में एक दूसरे से हदीसें बयान किया करते थे। उस के लिए गुस्ल करने, इत्र लगाने, खुशबू सुलगाने और तख़्त बिछाने का एहतेमाम (इन्तेज़ाम) नहीं करते थे। मगर हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हदीस बयान करने के लिए इन बातों का एहतेमाम फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा भी साबित कर दिया कि हर क़िस्म की ताज़ीम का सहाबा से साबित होना ज़रूरी नहीं बल्कि मुसलमानों के दिल का जज़्बा जिस तरह भी रहबरी करे उस तरीक़े से सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बड़ाई ज़ाहिर करना जाइज़ है।

★★★

अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़याज़ का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 544 हि0)

(1) खुदाए तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि "रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर (एहतेराम) करो।" (पारा: 26, रु0: 9)

इस आयत को नक़्ल फ़रमाने के बाद हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़याज़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की हुरमत व तौक़ीर (तअ़ज़ीम) को वाजिब क़रार दिया और उन की तकरीम व ताज़ीम को लाज़िम फ़रमाया।" (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2, पे0: 28)

इस तहरीर (लेख) में हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपना अक़ीदा ज़ाहिर तौर पर लिख दिया कि नबी करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तसलीम की ताज़ीम वाजिब है।

(2) इरशादे खुदा-ए-तआ़ला है कि "ऐ ईमान वालो "राइना" मत कहो "उनज़ुरना" कहो।" (पारा: 1, रु0: 13)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम जब कुछ कलाम फ़रमाते और सहाबा की समझ में न आता तो अ़र्ज़ करते "राइना या रसूलल्लाह!" यानी या रसूलल्लाह! हमारी रियायत फ़रमाइये और इस बात को दोबारा फ़रमा दीजिए। मगर यहूदियों की बोली में यह गाली थी। वह लोग हुज़ूर से यह कलमा (लफ़्ज़) गाली के माना में कहने लगे। तो मुसलमानों की नियत अगर्चे सही थी मगर उन को "राइना" कहने से रोक दिया गया और उस की जगह लफ़्ज़ "उनज़ुरना" यानी हम पर नज़र रखें। कहने का हुक्म दिया गया। हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अयाज रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि इस आयत करीमा को लिखने के बाद फ़रमाते हैं कि "सहाब-ए-किराम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम व एहतेराम के लिए लफ़्ज़ राइना कहने से रोके गए।"

(शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2, पे0: 29)

हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़याज़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपना यह अक़ीदा साबित फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम सिर्फ़ खड़े होने के साथ ख़ास नहीं है। बल्कि "राइना" की जगह "उनज़ुरना" कहना यह भी हुज़ूर की ताज़ीम है।

(3) आप और फ़रमाते हैं कि "सहाब-ए-किराम ने जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम की है

उन में से एक यह भी है कि जब कुफ़्फ़ार कुरैश ने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से काबा शरीफ़ के तवाफ़ के लिए कहा। इस मौक़ा पर कि आप को हुदैबिया से हुज़ूर ने सुलह (समझोते) के मामले में मक्का शरीफ़ भेजा था तो आप ने तवाफ़े काबा से इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस का तवाफ़ नहीं करेंगे मैं तवाफ़ नहीं कर सकता।" (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2, पे0: 31)

मालूम हुआ कि हज़रत क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह तआला अलैहि के नज़दीक हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह फरमाना कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तवाफ़ किए बग़ैर तवाफ़ नहीं कर सकता। यह भी हुज़ूर की ताज़ीम है।

(4) और फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम व तौक़ीर में से यह भी है कि वह तमाम चीज़ें जो हुज़ूर से निस्वत (संवन्ध) रखती हैं उन की ताज़ीम की जाए। और मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना तय्यवा के जिन मक़ामात को आपने मुशर्रफ़ फ़रमाया उन का भी अदव व एहतेराम किया जाये और जिन जगहों में आपने क़याम (निवास) फ़रमाया और वह सारी चीज़ें कि जिन को आप के मुवारक हाथ ने छुआ या वह आप के किसी हिस्से से टच हुई हो या आप के नाम से पुकारी जाती हैं। उन सब की ताज़ीम व तकरीम की जाए।

(शिफ़ शरीफ़ जि0: 2, पे0: 44)

यानी हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कीं ज़ात तो वहुत वुलंद व महान है हज़रत क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के नज़दीक जो चीज़े हुज़ूर से निस्वत (संवन्ध) रखती हैं उन की भी ताज़ीम की जाएगी।

अ़ल्लामा मरग़ीनानी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 593 हि0)

आप का नाम अ़ली, कुन्नियत (उपनाम) अवुल हसन और लक़व (पदवी) वुरहानुद्दीन है। वालिद गिरामी (पिता जी) का नाम अवू वक्र है। मरग़ीनान की तरफ मन्सूव (संवन्धित) किए जाते हैं जो फ़रग़ाना के शहरों में से मावराउन्नहर में एक शहर है। आप का सिलसिलए नसव (वं-ा) हज़रत सय्यदना अवू वक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मिलता है। 8 रजवुल मुरज्ज़व 511 हि0 सोमवार के दिन अ़स्र के वाद पैदा हुए। और 544 हि0 में हज्जे वैतुल्लाह व ज़ियारत रौज़ा-ए-मुनव्वरह सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से मुशर्रफ़ हुए।

आप ने मुफ्तियुस् सक़लैन नंजमुद्दीन अवू हफ्स उमर नसफी, अवुल फतह मुहम्मद विन अव्दुर रहमान मरूज़ी, शैख़ुल इस्लाम ज़ियाउद्दीन अवू मुहम्मद साइद मरग़ीनानी, अवू शुजाअ़ ज़ियाउल इस्लाम उमर विन मुहम्मद वलख़ी वुस्तामी और अवू अमर उस्मान वेकन्दी तिल्मीज़ शम्सुल अइम्मा सरख़सी वग़ैरा वड़े-वड़े उलमा से इल्म हासिल किया जो अपने ज़माने के हर फ़न में माहिर थे।

इन मुक़द्दस हस्तियों के फैज़ाने सोहवत ने आप को किशवरे इल्मो- फ़ज़्ल का ताजदार बना दिया जिसकी मुकम्मल तस्वीर साहिव जवाहिर मुज़िया ने इस तर खींची है कि साहिवे हिदाया इमामे वक़्त, फक़ीहे वेवदल, हाफिज़े दौरां, मुफस्सिरे कुरआं, मोहद्दिसे ज़माना, जामे उलूम, ज़ाविते फुनून, पुख़्ता इल्म वाले मुहक़्क़िक़, वसीउन्नज़र, वारीक वीं, आविद व ज़ाहिद, परहेज़गार,

फाइकुल् अक़रान, फ़ाज़िलुल अअ्वान, माहिरे फुनून, उसूली, बेमिस्ल अदीब, और बेनज़ीर शाइर थे, इल्मो-अदब में आप का सानी देखा नहीं गया।

आप के हमअसर उलमा फ़क़ीहुन्नफ़्स इमाम फख़्रुद्दीन क़ाज़ी महमूद बिन अहमद साहिबे मुहीत व ज़ख़ीरा, शेख़ ज़ैनुद्दीन अबू नसर अहमद बिन मुहम्मद इताबी और मुहम्मद बिन अहमद बुख़ारी मोअल्लिफ फ़तावा ज़हीरियह वग़ैरा ने आप के फ़ज़्लो-कमाल का इक़रार किया है! बल्कि क़ाज़ी ख़ां और ज़ैनुद्दीन इताबी से मन्कूल है कि साहिबे हिदाया फ़िक़्ह में अपने हमअसरों पर फ़ौक़ियत रखते थे बल्कि अपने असातिज़ा से भी सबक़त ले गये थे।

बहुत से अकाबिर उलमा ने आप से फ़िक़्ह हासिल किया जिन में आप के दो साहिबज़ाद शैख़ुल इस्लाम जलालुद्दीन मुहम्मद, निज़ामुद्दीन उमर और इब्नुल इब्न शेख़ुल इस्लाम इमादुद्दीन, शमसुल् अइम्मा कुरदरी, बुरहानुल इस्लाम ज़रनोजी और क़ाज़ियुल कुज़ुात मुहम्मद बिन अली समरक़न्दी जैसे आफताब व माहताब ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

आप की जुम्ला तसनीफात बिदायतुल मुब्तदी, किफायतुल मुन्तही, अल्-मुन्तक़ा, अत्तज्नीस वल्-मज़ीद, मनासिकुल हज, नशरुल् मज़्हब, मुख़्तारुन् नवाज़िल और फराइज़ुल उस्मानी वग़ैरा निहायत गिरांक़दर और मुफीद हैं। ख़ास कर हिदाया तो आप का वह बुलन्द पाया इल्मी शाहकार है जिस की दुनियाए इल्मो-फन में कोई नज़ीर नहीं। इस मायए नाज़ किताब के मुतअल्लिक़ किसी ने मन्द्रजा ज़ैल क़ितअ् कहा जिस में मुबालग़ा नहीं है।

यानी कुरआने करीम ने पहले शरीअतों की किताबों को मन्सूख़ कर दिया तो हिदाया इस मामले में गोया कुरआन के मिस्ल

है कि उसने फ़िक़्ह में लिखी गई पहले की सारी किताबों को मन्सूख़ कर दिया। लिहाज़ा इसको पढ़ते रहो और इसकी ख़्वांदगी लाज़िम पकड़ो। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारी गुफ्तगू कजी और ग़लती से पाक रहेगी।

हिदाया की तस्नीफ की वजह यह हुई कि आप ने चाहा कि फ़िक़्ह में एक किताब लिखी जाए जिस में हर तरह के मसाइल हों, तो कुदूरी व जामेअ् सग़ीर से इन्तिख़ाब फरमा कर "बिदायतुल मुब्तदी" लिखा और उसमें वअ्दा फरमाया कि बशर्ते फुर्सत इसकी "शरह किफायतुल मुन्तही" तस्नीफ करूंगा तो वअ्दे के मुताबिक़ इसकी 80 जिल्दें तहरीर फरमायीं। फिर अन्देशा हुआ कि शायद इतनी बड़ी शरह से लोग पूरा फायदा न उठा सकें तो इसका इख़्तिसार बनाम हिदाया तहरीर फरमाया जो ऐसी मक़्बूल हुई कि अब तक इसके 36 शुरूह व हवाशी लिखे गए और बअ्ज़ लोगों ने इसे मुकम्मल ज़बानी याद किया।

माहे ज़ीकअ्दा 573 हि0 में बरोज़े चहार शंबा (बुध के दिन) आप ने हिदाया की तस्नीफ शुरू की और निहायत अरक़रेज़ी के साथ मुसलसल तेरह साल तक इस तरह मसरूफ रहे कि अय्यामे मनहिय्या (जिन दिनों में रोज़ा रखना मना है) के अलावा हमेशा रोज़ा रखते और किसी को अपने रोज़े से मुत्तलअ् न करते। जब ख़ादिम खाना लाता तो आप उससे फरमाते कि रख कर चले जाओ। जब वह चला जाता तो आप किसी तालिब इल्म को बुला कर खिला देते।

14 ज़ुलहिज्जा 593 हि0 में आप का विसाल (इन्तिक़ाल) हुआ समरक़न्द में आप का मज़ारे अक़्दस मख़्लूक़ की ज़ियारतगाह है।(माख़ूज़ हदाइक़ुल हन्फ़िया व अहवालुल मुसन्निफ़ीन)

रहता है नाम इल्म से ज़िन्दा हमेशा दाग़

औलाद से तो बस यही दो पुश्त चार पुश्त

आप मुर्दा नहलांने के तख़्त को धूनी देने की इल्लत (वजह) बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि"धूनी देने में मय्यत की ताज़ीम व एहतेराम है।" (हिदाया जि0: 1, पे0: 158)

मालूम हुआ कि मरग़ीनानी के नज़दीक जब नहलाने के तख़्त को धुनी दे कर मय्यत की ताज़ीम जाइज़ है तो अल्लाह के महबूब जनाब अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम बदर्जा औला जाइज़ है।

★★★

हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1014 हि0)

(1) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि नबी करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तसलीम ने इरशाद फ़रमाया कि"जब तुम पाख़ाना (संडास) जाओ तो क़िबले की तरफ़ न मुंह करो न पीठ।" (मिश्कात शरीफ़ पे0: 42)

हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि इस हदीस शरीफ़ की शरह में फ़रमाते हैं कि"काबा शरीफ़ की जानिब मुंह और पीठ न करने का हुक्म उस की ताज़ीम के लिए है।"

(मिरक़ात जि0: 1, पे0: 283)

(2) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि"जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो तो अपने सामने न थूके। (मिश्कात पे0: 69)

हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इस हुक्म की इल्लत (वजह) बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि"क़िबले (काबा) की जानिब थूकने से उस की ताज़ीम के लिए मना किया गया है।

(मिरक़ात जि0: 1, पे0: 455)

मालूम हुआ कि हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के नज़दीक ताज़ीम के लिए मुअज्ज़म यानी जिस की ताज़ीम करनी है उस का सामने होना और देखना ज़रूरी नहीं। इसी लिए पाख़ाना करने वाले और नमाज़ पढ़ने वाले से काबा शरीफ़ चाहे हज़ारों किलो मीटर दूर निगाहों से ओझल हो फिर भी उस को काबा शरीफ़ की ताज़ीम करना ज़रूरी है।

(3) हज़रत मुग़ीरा बिन शुअ़बा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हदीस शरीफ़ रवायत है कि"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सहाबा उन के दरवाज़-ए-मुबारक पर नाख़ुनों से दस्तक (खटखटाते) देते थे।" (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 1, पे0: 23)

हज़रत मुल्ला अली क़ारी इस हदीस की शरह में बयान फ़रमाते हैं कि"हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम व तकरीम और उन की तौक़ीर (एहतेराम) के लिए हलकी चोट से बहुत हलकी दस्तक देते थे।

(शरहुश्शिफ़ा मअ़ नसीमुर्रियाज़ जि0: 3, पे0: 395)

मालूम हुआ कि हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के नज़दीक नाख़ुनों से हलकी दस्तक देना भी घर वाले की ताज़ीम है।

★★★

इमाम तक़ीयुद्दीन सुबकी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 756 हि0)

आप दीन के इमाम व पेशवा और बहुत बड़े ज्ञानी थे। तक़रीबन एक सौ पचास किताबों के मुसन्निफ़ (लेखक) हैं। उन का वाक़िआ हज़रत अल्लामां इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ज़िक्र फ़रमाते हैं कि हज़रत की ख़िदमत में उलमा का मजमा था तो एक नअ़तख्वाँ ने नात शरीफ़ के दो शेर पढ़े।"तो फ़ौरन इमाम सुबकी और तमाम हाज़िरीने मज्लिस खड़े हो गए और उस मज्लिस में बहुत लुत्फ़ आया। और पैरवी के लिए इसी क़द्र काफ़ी है।" (तफ़सीरे रूहुलबयान जि0 9, पे0 56)

मालूम हुआ कि हज़रत इमाम तक़ीयुद्दीन सुबकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नज़दीक हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ास ज़िक्र के वक़्त ताज़ीम के लिए खड़ा होना जाइज़ है। और हज़रत इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का अक़ीदा भी इस इबारत (लेख) से साबित है कि पैरवी के लिए इसी क़द्र काफ़ी है।

★★★

ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 634 हि0)

सुलतानुल मशाइख़ हज़रत महबूब इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते थे कि रईस नामी एक शख़्स ने एक रात ख़्वाब में देखा कि एक कुब्वा है और

लोगों का एक हुजूम उस कुब्वे के गिर्द जमा है। उन में से एक छोटे कद का आदमी बार बार उस कुब्वे के अंदर आता जाता है और लोगों के सवालों के जवाबात ला कर उन्हें बताता है। रईस ने पूछा कि इस कुब्वे में कौन है? और यह छोटे से क़द का आदमी कौन है जो कुब्वे के बाहर आता जाता है लोगों ने कहा कि इस कुब्वे में हज़रत रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा है। और वह मर्द हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जो कुब्वे के अंदर आते जाते है। रईस कहता है कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गया और मैं ने उन से कहा कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ कीजिए कि मेरी तमन्ना है कि मैं आप की ज़ियारत से मुशर्रफ हूँ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अंदर गए और बाहर आकर फ़रमाया कि रसुले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते है कि अभी तुझ में इस की अहलियत (समझ) नहीं कि तु मुझे देख सके लेकिन ना और मेरा सलाम बख़्तियार काकी को पहुंचा और उन से कह कि हर रात जो तुहफ़ा तुम मुझ को भेजते हो वह पहुंचता है लेकिन कुछ रातें ऐसी गुज़रीं कि वह तुहफ़ा नहीं पहुंचां इस रुकावट का सबब ख़ुदा करे कि ख़ैर हो। रईस कहता है कि जब मैं बेदार हुआ तो फ़ौरन हज़रत ख़्वाजा कुतबुलअकताब बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि कि ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैं ने उन से अर्ज़ किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आप को सलाम भेजा है। हज़रत ने जब सलाम सुना तो ताज़ीम के लिए खड़े हो गए।

(सियरूलऔलिया, फ़वाइदुलफ़वाद, मज्लिस नहुम पे0: 197)

मालूम हुआ कि हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि के नज़दीक हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के मुतअ़ल्लिक़ किसी ख़ास ख़बर के मौक़े पर ताज़ीम के लिए खड़ा होना जाइज़ है।

★★★

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 725 हि0)

हज़रत मीर अब्दुल वाहिद बलग्रिामी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 1017हि0) फ़रमाते हैं।"एक मरतबा हज़रत महबूबे एलाही निज़ामुद्दीन औलिया अपने अहबाब के साथ तशरीफ़ फ़रमाते कि नागाह खड़े हो गए फिर बैठ गए। हाज़िरीने मजलिस ने आप से दरयाफ़त किया हुज़ूर किस बिना पर खड़े हुए? फ़रमाया कि हमारे पीर दसतगीर की ख़ानक़ाह में एक कुत्ता रहता था। आज उसी सूरत का एक कुत्ताा मुझे नज़र आया कि उस गली में गुज़र रहा है। मैं उस कुत्ते की ताज़ीम की ख़ातिर उठा था।

(सबा सनाबिल शरीफ़ मुतर्जुम पे0: 143)

जिस बुज़ुर्ग के नज़दीक ऐसे कुत्तो की ताज़ीम के लिए खड़ा होना जाइज़ है सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताज़ीम के बारे में उस का अक़ीदा बिल्कुल वाज़ेह है।

★★★

हुज़ूर का जिस्म बे साया

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम)

हुज़ूर सय्यदे आ़लम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की तमाम ख़ुसूसियात में से एक ख़ुसूसियत यह भी है कि आप के जिस्म अक़्दस का साया नहीं पड़ता था। न सूरज की रौशनी में और न चाँद की चाँदनी में। यही अक़ीदा सहाबा, ताबईन और तमाम बुज़ुर्गाने दीन का है जिस की तफ़सील किताबों में मज़कूर है। इस मुक़ाम पर बतौर इख़्तिसार चंद अहम ख़ुसूसियतें के अक़ीदे मुलाहिज़ा हों।

★★★

हज़रत उसमान ग़नीका अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 35हि0)

रईसुल मुफ़स्सेरीन हज़रत अ़ल्लामा इमाम नसफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि (इन्तिक़ाल 701हि0) फ़रमाते हैं।"हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुज़ूर की बारगाह में अर्ज़ किया कि ख़ुदा-ए-तआ़ला ने आप का साया ज़मीन पर नहीं डाला ताकि कोई इंसान इस पर अपना क़दम न रख दे।" (तफ़सीर मदारिक जि0: 2, पे0: 103)

इस हदीस शरीफ़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्म अक़्दस का साया न होने के बारे में अमीरूल मोमेनीन हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का अक़ीदा वाज़ेह

तौर पर मालूम हुआ जिस की ताईद हुज़ूर से भी साबित हुई कि आप के सामने हज़रत उसमान ग़नी ने इस बात को पेश किया और आप ने उस का इंकार नहीं फ़रमाया और यह भी साबित हुआ कि हज़रत अ़ल्लामा इमाम नसफ़ी का भी यही अक़ीदा है कि हुज़ूर के जिस्म अक़्दस का साया नहीं पड़ता था वर्ना इस हदीस शरीफ़ को बिला तरद्दुद वह अपनी तफ़सीर में हर्गिज़ न तहरीर करते।

★★★

हज़रत ज़कवान ताबई का अक़ीदा
(रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

हज़रत हकीम तिर्मिज़ी ने आप से रवायत किया "हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्म का साया न सूरज की धूंप में नज़र आता था न चाँद की चाँदनी में।

(ख़साइस कुबरा जि0: 1, पे0: 68)

हज़रत ज़कवान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जब इस हदीस शरीफ़ को रवायत किया तो साबित हो गया कि उनका भी यही अक़ीदा था कि हुज़ूर के जिस्म का साया किसी चीज़ की रौशनी में नज़र नहीं आता था। और उसी बुनियाद पर हकीम तिर्मिज़ी का भी यही अक़ीदा साबित हुआ।

★★★

अ़ल्लामा क़ाज़ी अयाज़ का अक़ीदा
(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 544 हि0)

यह जो ब्यान किया गया है कि सूरज और चाँद की रौशनी में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का साया नहीं पड़ता था तो इस लिए कि हुज़ूर नूर थे।"

(शफ़ा शरीफ़ जि0: 1, पे0: 242)

हज़रत क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि का अक़ीदा इस तहरीर से बिल्कुल वाज़ेह है कि नूर होने के सबब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का साया नहीं पड़ता था।

★★★

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती का अक़ीदा
(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 911 हि0)

आप ख़साइस कुबरा में मुसतक़िल एक बाब मुरत्तिब करते हुए तहरीर फ़रमाते हैं। "इस मुजज़ा का ब्यान कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्म का साया नहीं देखा गया।"

(ख़साइस कुबरा, जि0: 1, पे0: 68)

फिर अ़ल्लामा सुयूती हकीम तिर्मिज़ी से हज़रत ज़कवान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की हदीस नक़्ल कर ने के बाद हज़रत इमाम इब्ने सबा से इस पर शहादत इस तरह पेश फ़रमाते हैं। "इब्ने सबा ने कहा यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की खुसूसियात में से है कि आप का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता था इस लिए कि वह नूर थे। तो जब चाँद व सूरज की रौशनी में वह चलते थे तो साया नज़र नहीं आता था। बाज़ अइम्मा ने कहा कि

इस खुसूसियत पर हुज़ूर की वह हदीस शाहिद है कि जिस में आप की यह दुआ मंकूल है कि ऐ अल्लाह! मुझे नूर बना दे।"

(ख़साइस कुबरा, जि0: 1, पे0: 68)

इन तहरीरों से हज़रत अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि का अक़ीदा भी ज़ाहिर हो गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्मे अक़्दस का साया नहीं पड़ता था। साथ ही हज़रत इमाम इब्ने सबा का भी यही अक़ीदा साबित हो गया।

★★★

शैख़ मुजद्दिदे अलफ़े सानी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1035 हि0)

आप फ़रमाते हैं।"बेशक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का साया नहीं था। उस की वजह यह है कि आलम शहादत में हर चीज़ से उस का साया लतीफ़ होता है और हुज़ूर से लतीफ़ कायनात में कोई चीज़ नहीं तो फिर आप का साया किस सूरत से हो सकता है।" (मक्तूबात शरीफ़, जि0: 2, पे0: 187)

और फ़रमाते हैं।"जब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के लिए लतीफ़ होने के सबब साया नहीं है तो हुज़ूर के खुदा के लिए कैसे साया हो सकता है।"

(मकतूबात, जि0: 2, पे0: 237)

हज़रत मुजद्दिद अल्लिफ़ सानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने इन तहरीरों से अपना अक़ीदा बिल्कुल वाज़ेह कर दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से ज़्यादा लतीफ़ चुंकि कायनात में कोई चीज़ नहीं इस लिए आप का साया नहीं हो सकता।

शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1052 हि0)

आप फ़रमाते हैं।"हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का साया न सूरज की धूप में पड़ता था न चाँद की चाँदनी में।" (मदारिजुन नबुव्वत, जि0: 1, पे0: 21)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम सरापा नूर हैं और नूर के लिए साया नहीं होता। (मदारिजुन नबुव्वत, जि0: 1, पे0: 118)

शैख़ मुहक़्क़िक़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि का अक़ीदा इन तहरीरों से बिल्कुल ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्म अक़्दस का साया नहीं पड़ता था।

★★★

शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1239 हि0)

आप हुज़ूर सय्यदे आ़लम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्म अक़्दस की खुसूसियात लिखते हुए फ़रमाते हैं।"आप का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता था।"

(तफ़सीर अज़ीज़ी, पाराः अम्मा, पे0: 219)

आप का अक़ीदा इस तहरीर से बिल्कुल वाज़ेह है।

वसीला

जिस के ज़रीए किसी से कुरब और नज़दीकी हासिल की जाए उस को वसीला कहते हैं (अल तारीफ़ात, पे0: 225) सहाब-ए-किराम और तमाम बुज़ुर्गाने दीन बल्कि ख़ूद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यही अक़ीदा है कि बुज़ुर्गों को वसीला बनाना जाइज़ है ज़िंदगी में भी और वफ़ात के बाद भी। तफ़सील मुलाहिज़ा हो।

हुज़ूर सय्यदे आलम का अक़ीदा

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम,

(वसाल अव्वल 11 हि0, मुताबिक़ 632 ई0)

हज़रत उसमान बिन हुनीफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है।"एक अंधा आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि आप अल्लाह से दुआ करें कि वह मुझे आंख वाला कर दे। हुज़ूर ने फ़रमाया अगर तू चाहे तो मैं तेरे लिए दुआ करूं। और तू चाहे तो सबर कर ले कि वह तेरे लिए बेहतर है। अर्ज़ किया कि दुआ फ़रमाएं। हुज़ूर ने उसे हुक्म दिया कि अच्छा वुज़ू करो दो रकात नमाज़ पढ़ो और यह दुआ करो। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से माँगता हूँ और तेरी तरफ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वसीला से तवज्जह करता हूँ जो नबी रहमत हैं। या रसूलुल्लाह! मैं आप के वसीला से अपने रब की तरफ अपनी इस हाजत में तवज्जह करता हूँ तो उसे पूरी फरमा दे। ऐ अल्लाह! मेरे बारे में

हुज़ूर की शफ़ाअत कुबूल फ़रमा तो वह शख़्स जब आप के फ़रमाने के मुताबिक़ कर के खड़ा हुआ तो आंख वाला हो गया।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जि0: 2, पे0: 197)

इमाम तिर्मिज़ी ने फ़रमाया कि यह हदीस सही है। और अल्लामा सुयूती ने फ़रमाया कि इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में रवायत किया। और बैहक़ी ने अद्लाइल वद्दावात में इस हदीस शरीफ़ को रवायत कर के फ़रमाया सही है। और अबू नईम ने इसे मार्फ़ा में रवायत किया।

इस हदीस शरीफ़ से वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह अक़ीदा है कि मुझे अल्लाह की बारगाह में वसीला बनाना जाइज़ है। अगर शिर्क होता तो हुज़ूर अपने वसीला से दुआ करने के लिए उस नाबीना को हर्गिज़ हुक्म न फ़रमाते।

★★★

हज़रत फ़ारूके आज़म का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 23 हि0)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है।"जब लोग क़हत में मुबतला होते तो उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीला से दुआ करते और कहते ऐ अल्लाह! हम तेरी बारगाह में अपने नबी को वसीला बनाया करते थे तो हमें तू सैराब फ़रमाता था। और अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी के चचा को वसीला बनाते हैं। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हर मर्तबा पानी बरस पड़ता।" (बुख़ारी शरीफ़ जि0: 1, पे0: 137)

हज़रत अ़ल्लामा इब्ने हजर असक़लानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 852 हि0) इस हदीस शरीफ़ की शरह में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रवायत करते हैं।"फिर हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने लोगों को ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम हज़रत अब्बास के साथ वैसा ही सुलूक करते थे जैसा कि बेटा अपने बाप के साथ करता है। लेहाज़ा ऐ लोगो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास के साथ हुज़ूर का तरीक़ा अपनाओ और उन्हें ख़ुदा-ए-तआ़ला की बारगाह में वसीला बनाओ।"

(फ़तहुल बारी, शरह बुख़ारी जि0: 2, पे0: 413)

इन अहादीस करीमा से हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का अक़ीदा बिल्कुल वाज़ेह है कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को वसीला बनाया करते थे। फिर उन्होंने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ख़ूद वसीला बनाया और दूसरों को इन्हे बनाने का हुक्म दिया ताकि यह साबित हो जाए कि ग़ैर नबी को भी वसीला बनाना जाइज़ है। और फिर किसी सहाबी ने उन के इस क़ौल व अ़मल पर एतराज़ नहीं किया जिस से ग़ैर नबी को वसीला बनाने पर सहाबा का इजमा भी साबित हो गया।

★★★

हज़रत अमीरे मुआ़विया का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 60 हि0)

अ़ल्लामा इब्ने सअद (इन्तिक़ाल 845 हि0) असनाद के साथ हज़रत सलीम बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत करते हैं।"बारिश नहीं हुई क़हत पड़ गया तो हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और दमिश के लोग नमाज़े इसतसक़ा के लिए निकले। जब हज़रत अमीर मुआ़विया मिंबर पर बैठे तो फ़रमाया यज़ीद बिन असवद जर्शी कहाँ है? रावी ने कहा कि लोगों ने उन्हें पुकारा तो वह क़दम बढ़ाए हुए नमुदार हुए और हज़रत अमीर मुआ़विया के हुक्म से मिंबर पर चढ़े और उन के क़दमों के पास बैठ गए। फिर हज़रत अमीर मुआ़विया ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! हम तेरी बारगाह में आज के दिन अपनी जमाअ़त के अफ़ज़ल और बेहतरीन शख़्स को वसीला बनाते हैं। ऐ अल्लाह! हम तेरी बारगाह में यज़ीद बिन असवद को सिफ़ारशी ठहराते हैं। यज़ीद! अपने हाथों को ख़ुदा की बारगाह में उठाए। तो हज़रत यज़ीद ने अपने हाथों को उठाया और लोगों ने भी अपने हाथ उठाए। थोड़ी देर भी नहीं गुज़री कि पश्चिम की तरफ़ बादल का एक टुकड़ा ज़ाहिर हुआ और उस के साथ हवा भी चली और हम पर ऐसी बारिश हुई कि अपने घरों तक पहुंचना दुश्वार हो गया।

(तबक़ात इब्ने सअद जि0: 7, पे0: 444)

इस हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि सहाबी रसूल हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का भी यही अक़ीदा है कि अल्लाह की बारगाह में बुज़ुर्गों को वसीला बनाना जाइज़ है। और आप के इस अमल का सहाबा व ताबईन में से किसी ने इंकार नहीं किया तो इस मसला में इन का इजमा भी साबित हो गया।

★★★

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 561 हि0)

हज़रत अ़ल्लामा नूरुद्दीन शतनौफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि ख़वर दी हम को अवुल हसन विन ज़करिया बग़दादी ने। उन्होंने कहा (629 हि0) में हम को क़ाज़ीयुल कुज़ा अबू सालेह विन हाफ़िज़ अबू वक्र अब्दुर्रज़ाक़ विन शैख़ुल इसलाम मुहय्युद्दीन अबू मोहम्मद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बग़दाद में ख़वर दी। उन्होंने कहा हम को शैख़ अबू अब्दुर्रज़ाक़ ने ख़वर दी। और (690 हि0) में हम को शैख़ अबू मोहम्मद अलहसन फ़क़ीया अबू इमरान मूसा विन अहमद विन अलहसन क़र्शी शाफ़ई ने क़ाहिरा में ख़वर दी। इन दोनों ने कहा कि (613 हि0) में हम को शैख़ पेश्वा अवुल हसन क़र्शी ने दमिश्क़ में ख़वर दी कि मैं ने शैख़ अबू मोहम्मद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से सुना वह फ़रमाते थे।''जव तुम अल्लाह तआ़ला से कोई हाजत तलव करो तो मेरे वसीले से तलव करो।'' (वहजतुल असरार पे0: 23)

हुज़ूर सय्यदना ग़ौस आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस फ़रमान से वसीला के बारे में उन का अक़ीदा विल्कुल वाज़ेह है।

★★★

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 150हि0)

आप का नाम नामी नोमान, कुनयत अबू हनीफ़ा और लक़व इमाम आज़म व इमामुल मुसलेमीन है। आप फ़ारस के वादशाह नौशेरवाँ की औलाद से हैं। सिलसिलए नसव इस तरह है। नोमान विन सावित विन नोमान विन मर्ज़वान विन सावित विन क़ैस विन यज़्द गर्द विन शहर यार विन परवेज़ नौशेरवाँ।

आप के दादा मुर्शरफ़ वा-इसलाम हो कर कूफ़ा शहर में सुकूनत पज़ेर हुए। वहीं आप 80 हिजरी में पैदा हुए। आप के वाप सावित अपने वचपन के ज़माना में हज़रत अ़ली रज़ीयल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में लाए गए तो आप ने उनके लिए और उनकी औलाद में ख़ैर व वरकत की दुआ फ़रमाई।

आप के ज़मानए मुवारक में तक़रीवन 22 सहावा ज़िन्दा थे जिन में से सात सहावए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से आप की मुलाक़ांत सावित है। ख़ुसूसन हज़रत अनस विन मालिक हज़रत जाविर विन अब्दुल्लाह, हज़रत अब्दुल्लाह विन औफा, हज़रत मअ़क़ल विन यसार और हज़रत वासिला विन अल्-अस्क़अ़् वग़ैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम से आप ने हदीसें भी रिवायत की हैं।

हदीस शरीफ में आप के मुतअल्लिक़ वशारत भी दी गई है जैसा कि मुहद्दिसे ज़माना हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ई अलैहिर्रमतु वर्रिज़वान तहरीर फरमाते हैं: मैं कहता हूं कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने सय्यदना इमाम अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के बारे में इस हदीस शरीफ में वशारत दी है जिसे अबू नुऐम ने हिलया में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की रिवायत से नक़ल किया है कि

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया यनी अगर इल्म सुरैया पर पहुंच जाये तो फारस के जवांमर्द में से एक जवांमर्द ज़रूर उस तक पहुंच जायेगा।

(तब्यीजुस्सहीफा फी मनाक़िबिल इमाम अबी हनीफा उर्दू, पेज:6)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की वह हदीस जिस के असल अल्फाज़ सहीह बुख़ारी और मुस्लिम में यह हैं: यानी अगर दीन सुरैया में मुअ़ल्लक़ हो जाए तो यक़ीनन मर्दाने फारस के लोग उसे हासिल कर लेंगे।

(तब्यीजुस्सहीफा उर्दू, पेज:7)

इन अहादीसे करीमा में "अबनाए फारस" और "रिजाले फारस" से हज़रत सय्यदना इमामे आज़म अबू हनीफा और उनके अस्हाब (साथी)मुराद हैं।

आप ने चार हज़ार मशाइख़ ताबेईन व तबए ताबेईन से हदीस व फ़िक़्ह हासिल किया जिन में से बाज़ हज़रात के नाम यह हैं: हज़रत जाफर सादिक़, नाफेअ़् मौला बिन उमर, मूसा बिन अबी आइशा, सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब, सईद बिन मसरूक़, सलमा बिन कुहैल, सुलैमान बिन महेरान अअ़्मश, ताऊस बिन कीसान, अब्दुल्लाह बिन दीनार, अब्दुर रहमान बिन हुरमुज़ अअ़्रज, अता बिन अबी रिबाह, अता बिन यसार, मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन बिन अली अल्-मुरतज़ा, मुहम्मद बिन अमर बिन अल्-हसन बिन अली अल्-मुरतज़ा वलीद बिन सुरैह उमर बिन अल्-ख़त्ताब और हिशाम बिन उरवा बिन अज़-ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम।

आप ने तमाम उलूम में कामिल होने के बाद गोशा नशीनी का इरादा फरमाया तो एक रात आप सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ हुए, हुज़ूर ने

इरशाद फरमायां ऐ अबू हनीफा! आप को अल्लाह तआ़ला ने मेरी सुन्नत ज़िन्दा करने के लिये पैदा फरमाया है तो आप गोशा नशीनी का इरादा हरगिज़ न करें। इस बशारत के बाद आप दरसो-तदरीस और मसाइले शरइय्या के इज्तिहाद व इस्तिंबात में मश्गूल हुए यहां तक कि आप का मज़हब सारी दुनिया में फैल गया।

आप के शागिर्द बेशुमार हुए जिन में से साठ शागिरदों का ज़िक्र बाज़ मुहद्दिसीन ने तफसील के साथ लिखा है, उनमें से चन्द बुज़ुर्गों के अस्माए गेरामी यह हैं: इमाम अबू यूसुफ, इमाम मुहम्मद, इमाम ज़ुफर, हसन बिन ज़ियाद लुअ़्लुई, अबू मुतीअ़् बलख़ी, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, वकीअ़् बिन जर्राह, ज़करिया बिन अबी ज़ाइदा, हफ़्स बिन ग़यास नख़ई, रईसुस् सूफ़ियह दाऊद ताई, यूसुफ बिन ख़ालिद, असद बिन अमर और नूह बिन-मरयम वग़ैरहुम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम।

हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को मसाइल के इज्तिहाद और अहकाम के इस्तिंबात की मशगूलियत के सबब रिवायते हदीस का बहुत कम मौक़ा मिला जैसे कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा को उमूरे ख़िलाफत की मशगूलियत के सबब हदीस की रिवायत का इत्तिफाक़ कम हुआ। मगर इसके बावुजूद हज़रत इमामे आज़म की रिवायत करदा हदीसों की पंद्रह मुस्नदें जमा की गयीं हैं और आप के शागिर्द अकाबिर मुहद्दिसीन के शुयूख़ में शुमार किये गये हैं। जैसे यहया बिन मईन, वकीअ़् बिन जर्राह, मुसइर बिन कदाम, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, इमाम अबू यूसुफ, अहमद बिन हंबल, और बिलवास्ता अस्हाबे सिहाहे सित्ता यानी हज़रत इमाम बुख़ारी और हज़रत इमाम मुस्लिम वग़ैरा भी हज़रत इमाम आज़म की शागिरदी से बाहर नहीं हो सकते।

ज़रक़ानी शारेह मोअत्ता ने हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत करदा हदीसों की तादाद में कई क़ौल नक़ल किये हैं। अव्वल गह कि आप की मरविय्यात पांच सौ हैं। दूसरे यंह कि सात सौ हैं, तीसरे यह कि एक हज़ार से कुछ ज़ायद हैं। चौथे यह कि एक हज़ार सात सौ हैं। पांचवें यह कि छेः सौ सरसठ हैं। और ग़ैर मुक़ल्लिदीन जो यह कहते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सिर्फ सत्तरा हदीसें पहुंची हैं और सुबूत में इब्ने खुल्दून का हवाला पेश करते हैं तो वह सरासर ग़लत है। इसलिये कि यह इब्ने खुल्दून का अक़ीदा नहीं है और उसका क़ौल है बल्कि उसने दूसरे का क़ौल हिकायतन नक़ल किया है। और अग़लब यह है कि उसने सब्अ्-मिअत (सात सौ) लिखा था और कातिब की ग़लती से "सब्अ़त-अशर" (सत्तरह) हो गया। या अज़ राहे हसद क़सदन् ऐसा किया गया। इसलिये कि बक़ौल हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 83 हज़ार मसाइल हल फरमाए हैं जिन में से 38 हज़ार मसाइल इब़ादात से मुतअ़ल्लिक़ हैं और बाक़ी मसाइल मुआमलात के बारे में हैं।

तो अगर आप को सिर्फ 17 हदीसें पहुंची होतीं तो इतने ज़्यादा मसाइल आप हरगिज़ नहीं हल कर सकते थे, न अल्लामा ज़हबी शाफई तज़किरतुल् हुफ्फाज़ में आप का ज़िक्र हुफ्फाज़े हदीस में करते, न अकाबिर उलमाए हदीस आप को अपना शेख़ बनाते, न आप के लिये इमाम का लक़ब तस्लीम करते, न मुहद्दिसे ज़माना हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफई और दीगर उलाए सलफ आप के फज़ाइल व मनाक़िब में बड़ी बड़ी किताबें लिखते।

ग़रज़े कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन का यह प्रोपेगंडा कि हज़रत अबू

हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सिर्फ 17 हदीसें पहुंची हैं बिल्कुल झूट है। इसे वही शख़्स सही मान सकता है जिसे आप के इल्म से हसद होगा और या तो वह आप के इल्म से जाहिल होगा। जो आप की मरविय्यात को देखना चाहे वह मोअत्ता इमाम मुहम्मद, किताबुल आसार, किताबुल हज, सियरे कबीर और हज़रत इमाम अबू यूसुफ क किताबुल ख़िराज, किताबुल अमाली मुजर्रद बिन ज़ियाद वग़ैरहा का मुतालआ़ करे। इन में इमामे आज़म की रिवायत करदा कई सौ हदीसें सहीह और हसन मिलेंगी।

आप की तस्नीफात फिक़्हे अक्बर, किताबुल वसिय्यत, किताबुल आ़लिम वल्-मुतअ़ल्लिम और किताबुल मफ्क़ूद वग़ैरा हैं। आप का विसाल 150 हि0 में हुआ मज़ारे अक़्दस बग़दाद शरीफ के खेज़रां क़ब्रिस्तान में ज़ियारतगाहे ख़ासो-आम है जिस पर सबसे पहले सुलतान मलिक शाह सलजूक़ी ने 459 हि0 में शानदार गुम्बद बनवाया और आप के आस्तानए आलिया पर हनफियों के लिये मदरसा हनफिया क़ायम किया। (माख़ूज़ अज़ तब्यीज़ुस् सहीफा, ख़ैरातुल हिसान, हदाइक़ुल हनफिया, मुफीदुल मुफ्ती, सवानेह इमामे आज़म)

आप अपने मशहूर क़सीद-ए-नोमानिया में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बारगाह में यूँ अर्ज़ करते हैं कि "आप ही वह हैं कि जब हज़रत आदम ने आप को वसीला (सहारा) बनाया तो वह कामयाब हुए क़बूलियते दुआ से, हालांकि वह आप के बाप हैं।"

हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु का अक़ीदा इस शेर (पंकति) से ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़ाहिरी वुजूद से पहले हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने जो आप को वसीला (सहारा) बनाया तो वह भी जाइज़ है शिर्क नहीं है कि इसी वसीले से उनकी तौबा क़ुबूल हुई।

इमाम मालिक का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 179 हि0)

हज़रत इमाम क़ाज़ी अ़याज़ अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान (इन्तिक़ाल 544 हि0) इरशाद फ़रमाते हैं कि अमीरूल मोमिनीन अवु जाफ़र मन्सूर यानी बनी अब्बास का दूसरा ख़लीफ़ा (वादशाह) जव हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मज़ारे अक़दस की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ तो उस वक़्त मस्जिदे नववी में हज़रत इमाम मालिक रिज़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मौजूद थे। ख़लीफ़ा मन्सूर ने आप को मुख़ातव (संवोधित) करते हुए कहा कि ऐ अवू अब्दुल्लाह! मैं कावे की तरफ़ मुंह करके दुआ़ करूं या रसूलुल्लाह सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ मुंह करूँ? हज़रत इमाम मालिक ने फ़रमाया किस तरह तुम अपना चेहरा हुज़ूर की तरफ़ से फेर सकते हो हालांकि वह अल्लाह की वारगाह में तुम्हारे और तुम्हारे वाप आदम अलैहिस्सलाम के वसीला (सहारा) हैं लिहाज़ा तुम हुज़ूर ही की तरफ़ रुख़ करो और उन से शफ़ाअ़त तलव करो अल्लाह तआ़ला उन की शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) कुवूल फ़रमाएगा। (शिफ़ा शरीफ़ जि0: 2, पे0: 33)

हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस फ़रमान से उन का अक़ीदा जाहिर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ख़ुदा की वारगाह में लोगों के वसीला हैं।

★★★

इमाम शाफ़ई का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अन्हु, इन्तिक़ाल 204 हि0)

अ़ल्लामा ख़तीव वग़दादी (इन्तिक़ाल 463 हि0) वयान फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जिन दिनों वग़दाद में थे हज़रत इमाम आज़म अवू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का वसीला तलव करते। उन की क़ब्र पर हाज़िर हो कर उस की ज़ियारत करते उन्हें सलाम करते। फिर अपनी हाजत (ज़रूरत) पूरी होने के लिए अल्लाह की वारगाह में उन्हें वसीला वनाते। (तारीख़ ख़तीव वग़दादी जि0: 1, पे0: 123)

और अ़ल्लामा इब्ने हजर मक्की शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 974 हि0) लिखते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि"आले नबी मेरे लिए ज़रिय-ए-नजात हैं और वह अल्लाह की वारगाह में मेरे लिए वसीला हैं। मैं उम्मीद रखता हूँ कि उन के तुफ़ैल कल (क़यामत के दिन) अल्लाह मेरा नाम-ए-आमाल मेरे दाहने हाथ में देगा।"

(सवाइक़े मुहरिक़ा पे0: 180)

हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का अक़ीदा इन रवायतों से विलकुल ज़ाहिर है कि हज़रत इमाम आज़म अवू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इन्तिक़ाल के वाद उन को अपनी हाजत के लिए वसीला वनाते थे और आले रसूल को अपने लिए वसीला होने का अक़ीदा रखते थे।

★★★

इमाम अहमद बिन हंबल का अक़ीदा

(रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इन्तिक़ाल 241 हि0)

हज़रत अ़ल्लामा निवहानी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का वसीला तलब किया तो इमाम अहमद बिन हंबल के साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह ने तअ़ज्जुब किया। उस पर इमाम अहमद ने फ़रमाया कि हज़रत इमाम शाफ़ई ऐसे हैं जैसे लोगों के लिए सूरज और बदन के लिए तनदुरूस्ती।

(शवाहिदुल हक़ पे0: 166)

साबित हुआ कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के नज़दीक भी वसीले का अक़ीदा हक़ (सही) है कि उन्हों ने ख़ुद हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का वसीला हासिल किया।

★★★

हज़रत उबैदुल्लाह बिन मसऊद का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 747 हि0)

आप का नाम उबैदुल्लाह और लक़ब (पदवी नाम) सदरूश्शरिया सानी है। आप के वालिद का नाम मसऊद और दादा का नाम महमूद है जिन का लक़ब (पदवी नाम) ताजुश्शरीआ है। और परदादा का नाम अहमद है जो सदरूश्शरीआ़ से मशहूर हैं। आख़िर में आप का सिलसिल-ए-नसब मशहूर सहाबी हज़रत

उबादा बिन सामित रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हु से मिल जाता है।

आप बड़े ज़बर्दस्त आलिम, हाफ़िज़े क़वानीने शरीअ़त, हल्लाले मुश्किलात फ़ुरूअ़ व उसूल, वाक़िफ़े रुमूज़े मअ़कूल व मन्कूल, मुहद्दिसे जलील, फ़क़ीहे बेमसील, उसूली बेनज़ीर, मुफ़स्सिर, नहवी, लुग़वी, अदीब, मुतकल्लिम, मन्तक़ी, अपने वक़्त के इमाम उलूमे मुरव्वजा मुतआरेफ़ा में ज़रबुल मसल थे। आप के दादा ताजुश्शरीआ़ ने आप की परवरिश अपने सायए आतिफ़त में की, इन्तहाई शफ़क़त व मुहब्बत के साथ आप को तमाम उलूम व फ़ुनून पढ़ाया, और आप के हिफ़्ज़ करने के लिये विक़ाया तस्नीफ़ फ़रमाया।

फिर जब आप ने देखा कि दूसरे लोग इसको ज़बानी याद करने में सुस्ती करते हैं तो आप ने विक़ाया का मुख़्तसर तहरीर फ़रमाया। जब आप के साहिबज़ादे महमूद ने मुख़्तसरुल विक़ाया हिफ़्ज़ कर लिया तो आप से विक़ाया की शरह लिखने के लिये बहुत इस्रार किया जिस में मुख़्तसरुल् विक़ाया के भी मुग़लक़ात हल किये जायें। लिहाज़ा आप ने साहिबज़ादे की ख़्वाहिश के मुताबिक़ शरह विक़ाया लिखना शुरू किया मगर किताब मुकम्मल होने से पहले साहिबज़ादे का इन्तिक़ाल हो गया जिस का आप को बेइन्तिहा क़लक़ हुआ।

विक़ाया की कुल 15 शरहें लिखी गयीं जिन में आप की शरह ऐसी उम्दा है जो सारी दुनिया में मक़बूल होकर तमाम मदारिसे इस्लामिया में दाख़िले दर्स हुई जिस पर अब तक 42

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मरवी है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: एक फ़क़ीह, शैतान पर हज़ार आबिदों से ज़्यादा भारी है। (मिश्कात शरीफ़: पेज:34)

हवाशी लिखे गए और हज़ारों बल्कि लाखों उलमा उससे मुस्तफीज़ हुए यहां तक कि ग़ैर मुक़ल्लिद जो तक़्लीद को गुमराही क़रार देते हैं वह भी हनफी मज़हब की इस किताब शरहे विक़ाया से फाइदा उठाने पर मजबूर हुए।

और आप ने उसूले फ़िक़्ह में एक लतीफ मतन "तन्क़ीह" के नाम से तस्नीफ किया फिर उसकी शरह "तौज़ीह" तालीफ फरमाई जिस की शरह हज़रत अल्लामा सअ्दुद्दीन तफ्ताज़ानी (मुतवफ्फ़ा 792 हि0) ने तल्वीह के नाम से की। इनके अलावा अल्-मुक़द्दमातुल अरबा, तअ्दीलुल् उलूम (अक़्सामे उलूमे अक़्लिया में) व शाह (इल्मे मआनी में) शरह फुसूलुल् ख़म्सीन (नहव में) किताबुश्-शुरूत और किताबुल मुहाज़िरा वग़ैरा आप की अहम तस्नीफात हैं।

747 हि0 में आप का इन्तिक़ाल हुआ। मज़ारे मुबारक शारिअ् आबाद बुख़ारा में ख़ास आम की ज़ियारत गाह है।

आप शरहे वक़ाया (व्याख्या) के दीबाचा (फुटनोट) में फ़रमाते हैं कि मैं ख़ुदा-ए-तआ़ला की बारगाह का वसीला ज़्यादा ताक़तवर ज़रिये का ढूंढने वाला हूँ।

मौलाना अब्दुलहय्य साहब फ़रंगी महल्ली"अलमुतवस्सिल" के हाशिया (फुटनोट) में लिखते हैं कि नेक आमाल और बुज़ुर्गाने दीन से तवस्सुल (सहारे) का जाइज़ होना हदीसों से साबित है।

और हाशिये में लिखते हैं कि सबसे ज़्यादा ताक़तवर वसीला और ज़रिया से या तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं या क़ुरआन या हुज़ूर पर दुरूद या शरीअ़त और उन अहकाम का इल्म मुराद हैं जो फ़िक़्ह, उसूल और कलाम को शामिल हो। और या तो इल्मे फ़िक़्ह (धार्मिक शिक्षा) मुराद है।

लेकिन ज़ाहिर यह है कि ताक़तवर ज़रिए से हुज़ूर सय्यदे

आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ही मुराद है। इस लिए कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह के लिए सब से ताक़तवर वसीला (सहारा) हुज़ूर ही हैं। उन से बढ़ कर कोई वसीला नहीं। बहर हाल साहब शरहे वक़ाया हज़रत उबैदुल्लाह बिन मसऊद रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के बयान से उन का अक़ीदा साबित है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और सारे बुज़ुर्गानेदीन को ख़ुदा-ए-तआ़ला की बारगाह का वसीला (सहारा) बनाना जाइज़ है। और मौलाना अब्दुल हई फ़रंगी महल्ली का भी यही अक़ीदा साबित हुआ।

★★★

साहबे फ़तहुलक़दीर का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 861 हि0)

आप किताबुल हज बाबे ज़ियारतुन्नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम में फ़रमाते हैं कि और अल्लाह से अपनी हाजत (कामना) के बारे में उसके नबी को वसीला बनाते हुए सवाल करे फिर नबी से शफ़ाअ़त का तलबगार हो कर कहे ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप की शफ़ाअ़त चाहता हूँ आपको अल्लाह की बारगाह में वसीला (सहारा) बनाता हूँ।

(फ़तहुलक़दीर जि0: 3 पे0: 95)

इस बयान से इमाम इब्ने हुमाम अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान का अक़ीदा बिलकुल ज़ाहिर है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पर्दा फ़रमाने के बाद भी उन को वसीला (सहारा) बनाना जाइज़ है।

★★★

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सयूती का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 911 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि अबू अमामा बिन सहल बिन हुनैफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि एक शख़्स हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास किसी ज़रूरत के लिए जाता था मगर हज़रत उसमान उस की तरफ़ तवज्जह नहीं फ़रमाते थे और न उस की ज़रूरत के सिलसिले में तवज्जुह करते थे तो उस ने हज़रत उसमान बिन हुनैफ से मुलाक़ात करके उस की शिकायत की। उन्होंने उस से फ़रमाया कि वुज़ूगाह पे जा कर वुज़ू करो और मस्जिद में आ कर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो फिर दुआ़ करो ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी बारगाह में तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के वसीला से मुतवज्जेह होता हूँ जो नबी-ए-रहमत है। या रसूलल्लाह! मैं आप के वसीला से अपने रब की तरफ़ मुतवज्जह होता हूँ कि वह मेरी हाजत पूरी फ़रमाए। और (यह दुआ़ करते हुए) अपनी हाजत (कामना) का ज़िक्र करो फिर शाम को मेरे पास आओ ताकि मैं तुम्हारे साथ (हज़रत उसमान की ख़िदमत में) चलूँ। तो वह शख़्स चला गया और उन के फ़रमाने के मुताबिक़ किया फिर हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दरवाज़े पर आया तो दरबान आया और उस का हाथ पकड़ कर अमीरूलमोमिनीन के पास ले गया तो उन्होंने उस को अपने साथ मसनद (तख़्त) पर बैठाया और फ़रमाया कि में तुम्हारी हाजत (कामना) पूरी करूंगा। फिर वह शख़्स अमीरूलमोमिनीन के यहाँ से जाकर उसमान बिन हुनैफ़ से मुलाक़ात की और कहा अल्लाह आप

को बेहतर बदला अ़ता फ़रमाए अमीरूलमोमिनीन मेरी ज़रूरत के बारे में कोई तवज्जुह नहीं फ़रमाते थे और न मेरी तरफ़ नज़र फ़रमाते थे यहां तक कि आप ने मेरे बारे में उन से बात की। उसमान बिन हुनैफ़ ने कहा मैं ने उन से बात नहीं की है लेकिन मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पास एक नाबीना शख़्स ने आकर अपने अंधेपन की शिकायत की हुज़ूर ने फ़रमाया क्या तुम सब्र कर सकते हो? अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे कोई राह बताने वाला नहीं है और यह मेरे लिए तकलीफ़दायक है तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वुज़ूगाह में जा कर वुज़ू करो और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो फिर दुआ़ करो। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी बारगाह में तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के वसीला से मुतवज्जेह होता हूँ जो नबी-ए-रहमत है। या रसूलल्लाह! मैं आप के वसीला से अपने रब की तरफ मुतवज्जह होता हूँ कि वह मेरी आंख की तकलीफ़ दूर फ़रमाए। ऐ अल्लाह तू हुज़ूर की शफ़ाअ़त (सिफ़ारि-ा) मेरे बारे में कुबूल फ़रमा। और मेरी शफ़ाअ़त मेरे बारे में। हज़रत उसमान बिन हुनैफ़ रजियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया खुदा की क़सम! हम अभी वहाँ से गए नहीं थे कि वह शख़्स आया गोया कि वह अंधा ही नहीं था।(ख़साइसे कुबरा जि0: 2, पे0: 202)

हज़रत अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने इस हदीस शरीफ़ को अपनी किताब में ज़िक्र फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि विसाल (पर्दे) के बाद हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को खुदा की बारगाह में अपनी हाजत (कामना) के लिए वसीला (सहारा) बनाना जाइज़ है अगर उन का यह अक़ीदा न होता तो बिला शक इस हदीस को अपनी किताब में शामिल न फ़रमाते।

शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी का अक़ीदा
(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1239 हि०)

आप फ़रमाते हैं कि मदद तलब करने की सूरत सिर्फ़ यही है कि ज़रूरतमन्द अपनी हाजत को अल्लाह तआ़ला से उस नेक बन्दे की रूहानियत के वसीले से तलब करे जो अल्लाह तआ़ला की बारगाहे आ़ली में क़रीब व महबूब है। और कहे खुदावन्द! इस बन्दे की बरकत से कि जिस पर तूने रहमत व इकराम (इनआ़म) फ़रमाया है मेरी हाजत को पूरी फ़रमा। या उस महबूब बन्दे को पुकारे कि ऐ बन्द-ए-खुदा और अल्लाह के वली! मेरे लिए शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) कर और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कर कि मेर मक़सद को पूरा फ़रमाए। लिहाज़ा बन्दा दर्मियान में सिर्फ़ वसीला है। क़ादिर, देने वाला और जिस से सवाल किया गया है खुदा-ए-तआ़ला ही है उस में शिर्क का गुमान तक नहीं जैसा कि मुन्किर ने वहम (शक) किया। यह उसी तरह है कि नेक लोगों और अल्लाह तआ़ला के दोस्तों को ज़ाहिरी ज़िन्दगी में वसीला बनाया जाता है। उन से दुआ़ तलब की जाती है और यह बिलइत्तिफ़ाक़ (आम सहमती) जाइज़ है। तो इन्तिक़ाल के बाद वही बात क्यों जाइज़ न होगी? बुज़ुर्गाने दीन की रूहों में ज़ाहिरी ज़िन्दगी और इन्तिक़ाल के बाद सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उन्हें और ज़्यादा कमाल हासिल हो जाता है। (फ़तावा अ़ज़ीज़िया जि0: 2, पे0: 108)

इस फ़तवा में हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने साफ़ तौर पर अपना अक़ीदा बयान फ़रमा दिया कि बुज़ुर्गानेदीन को जिस तरह उन की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में वसीला बनाना जाइज़ है ऐसे ही विसाल के बाद भी जाइज़ है। और उस में शिर्क का गुमान तक नहीं। इस लिए कि सवाल अल्लाह तआ़ला ही से होता है और बुज़ुर्गाने दीन सिर्फ़ वसीला होते हैं।

क़ब्रों की ज़िन्दगी

अल्लाह के महबूब बन्दे अंबिया-ए-किराम और औलिया का अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा होना हक़ है। सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और तमाम उलमा बुज़ुर्गानेदीन का यही अक़ीदा है। सुबूत निमलिखित है।

हुज़ूर सय्यदे आ़लम का अक़ीदा
(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बेशक खुदा-ए-तआ़ला ने ज़मीन पर अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम के जिस्मों को खाना (नुक़सान पहुँचाना) हराम फ़रमा दिया है तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रिज़्क़ दिए जाते हैं।

(इब्ने माजा, मिश्कात पे0: 121)

इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का यही अक़ीदा है कि अंबिया-ए-किराम अपनी अपनी क़ब्रों में दुनियावी ज़िन्दगी की हक़ीक़त के साथ ज़िन्दा हैं। और सहाबि-ए-रसूल हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस हदीस शरीफ़ को रवायत किया तो उन का भी यह अक़ीदा साबित हुआ कि अंबिया-ए-किराम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं।

★★★

मुहद्दिसीन का अक़ीदा

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रवायत की हुई हदीसे पाक को मुहद्दिस हज़रत इब्ने माजा और साहिबे मिश्कात अल्लामा ख़तीब तबरेज़ी ने अपनी अपनी किताबों में लिख कर साबित कर दिया कि हमारा यह अक़ीदा है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम अपनी क़ब्रों में हक़ीक़ी ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा है। और दूसरे मुहद्दिसीन के अक़ीदे मुलाहज़ा हों।

अल्लामा जलालुद्दीन सयूती का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 911 हि0)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम ने फ़रमाया कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं नमाज़ पढ़ते हैं।

(ख़साइसे कुबरा जि0: 2, पे0: 281)

अल्लामा सयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने ख़साइसे कुबरा में इस हदीस शरीफ़ को लिख कर क़ब्रों में अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की ज़िन्दगी के मुतअल्लिक़ अपना अक़ीदा बिलकुल साफ़ कर दिया।

★★★

हज़रत मुल्ला अली क़ारी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1014 हि0)

आप हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रवायत की हुई हदीस की शरह में फ़रमाते हैं कि अंबिया-ए-किराम की दुनियावी और विसाल के बाद की ज़िन्दगी में कोई फ़र्क़ नहीं। इसी लिए कहा जाता है कि अल्लाह के महबूब बन्दे मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर की तरफ़ चले जाते हैं।

(मिरक़ात जि0: 2, पे0: 212)

और हज़रत औस बिन औस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि ख़ुदा-ए-तआला ने अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम के जिस्मों को ज़मीन पर खाना हराम फरमा दिया है। (अबू दर्दा, नसई दारमी, बैहक़ी, इब्ने माजा, मिश्कात पे0: 20)

इस हदीस शरीफ़ की शरह में हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि अंबिया-ए-किराम अलैहिस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं। (मिरक़ात जि0: 2, पे0: 209)

और फ़रमाते हैं कि बेशक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बाहयात (ज़िन्दा) हैं उन्हें रोज़ी (खाना) पेश की जाती है और उन से हर किस्म की मदद तलब की जाती है।

(मिरक़ात जि0:1, पे0: 284)

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की इन लेखों से उन का अक़ीदा खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर है कि हज़रात अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं। बल्कि अल्लाह के दूसरे महबूब बन्दे भी नहीं मरते हैं सिर्फ़ दारेफ़ानी दुनिया से दारेबक़ा की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाते हैं।

★★★

शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1052 हि०)

आप फ़रमाते हैं कि उलमा-ए-उम्मत में इतने इख़्तिलाफ़ात और बहुत मजहब होने के बावजूद किसी शख़्स को इस मसअले में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हयात (दुनियावी ज़िन्दगी) की हक़ीक़त के साथ कायम व बाक़ी है।। इस ज़िन्दगि-ए-नबवी में मजाज़ (ग़ैर हक़ीक़त) की मिलावट और तावील का वहम नहीं है और उम्मत के आमाल पर हाज़िर व नाज़िर है। और हक़ीक़त के तलबगार के लिए और उन लोगों के लिए कि हुज़ूर की जानिब तवज्जह रखते हैं हुज़ूर उन को फ़ैज़ बख़्शने वाले और उनके पालने वाले हैं।

(मकतूब सुलूकि अकरबिस्सुबुल बित्तवज्जुहि इला सय्यदिर्रुसुल मअ अख़बारिलअख़्यार पे०: 161)

और हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुँ की रवायत की हुई हदीस के तेहत फ़रमाते हैं कि खुदा-ए-तअ़ला के नबी दुनियावी जिन्दगी की हक़ीक़त के साथ ज़िन्दा हैं।

(अशअ़तुलम्आत जि०: 1, पे०: 576)

और हज़रत औस बिन औस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रवायत की हुई हदीस के तहत फ़रमाते हैं कि अंबिया अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी सब मानते हैं किसी को इस में इख़्तिलाफ़ नहीं है। उन की ज़िन्दगी जिस्मानी हक़ीक़ी दुनियावी है शहीदों की तरह सिर्फ़ मानवी (पोशीदा) और रूहानी नहीं है।

(अशअतुलम्आत जि०: 1, पे०: 574)

इन रवायतों में हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि ने अपना अक़ीदा साफ़ तौर पर

बयान फ़रमा दिया कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम दुनियावी ज़िन्दगी की हक़ीक़त के साथ ज़िन्दा हैं जिस में मजाज़ (ग़ैर हक़ीक़त) की मिलावट और किसी क़िस्म की तावील का वहम नहीं है बल्कि तमाम अंबिया-ए-किराम की ज़िन्दगी दुनिया की तरह जिसमानी हक़ीक़ी है। और शैख मुहक्क़िक़ की रवायत से यह भी मालूम हुआ कि उन के ज़माने तक इस मसअले में किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं रहा।

★★★

अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी का अक़ीदा

(अ़लैर्रिहमा, इन्तिक़ाल 1070 हि०)

आप फ़रमाते हैं कि अंबिया-ए-किराम अ़लैहिस्सलाम हक़ीक़ी ज़िन्दगी के साथ अपनी क़ब्रों मे ज़िन्दा हैं।

(नसीमुर्रियाज़ जि०: 1, पे०: 196)

आप का अक़ीदा इस इबारत (लेख) से खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर है।

★★★

शाह वलीयुल्लाह देहलवी का अक़ीदा

(रहमतुल्लाहि अ़लैहि, इन्तिक़ाल 1176 हि०)

आप लिखते हैं कि वालिद माजिद शाह अब्दुर्रहीम फ़रमाया करते थे कि जिन दिनों औरंग ज़ेब अकबराबाद में था मैं मुहतसिबे लश्कर मिर्ज़ा ज़ाहिद हरवी से कुछ सबक़ पढ़ता था। उसी बहाने में अपने वालिद के हमराह अकबराबाद गया। सय्यद अब्दुल्लाह भी सय्यद अब्दुर्रहमान की दोस्ती के सबब वहाँ मौजूद

थे। वहाँ उन्हें एक मर्ज़ हो गया और रहमते हक़ से जा मिले। उन्होंने वसीयत की थी कि मुझे मिस्कीनों के क़ब्रिस्तान में दफ़न करना ताकि कोई पहचान न सके। चुनाँचे लोगों ने ऐसा ही किया मैं भी उस दिन सख़्त बीमार था जनाज़ा के साथ जाने की सकत (ताक़त) नहीं थी। जब मैं तन्दुरूस्त हुआ और चलने फिरने की ताक़त पैदा हुई तो एक ऐसे शख़्स के साथ जो उन के जनाज़े व दफ़न में मौजूद था ज़ियारत व बरकत के लिए उन के मुबारक मज़ार की तरफ़ चल पड़ा। यह उन की आख़िरी वसीयत का कमाल था कि मेरे साथी काफ़ी ग़ौर व फ़िक्र के बावजूद उन की क़ब्र नहीं पहचान सके। आख़िर अंदाज़े से एक क़ब्र की तरफ़ इशारा किया। मैं वहाँ बैठ कर कुरआन पढ़ने लगा। मेरी पुश्त की तरफ से सय्यद साहब ने आवाज़ दी कि फ़क़ीर की क़ब्र इधर है लेकिन जो कुछ शुरू कर चुके हो उसे वहीं तमाम करलो और उस का सवाब उसी क़ब्र वाले को बख़्शो। जल्दी मत करो। जो कुद पढ़ रहे हो उसे अंजाम तक पहुंचाओ। यह सुन कर मैं ने साथी से कहा। अच्छी तरह ग़ौर करो सय्यद साहब की क़ब्र वही है जिधर तुम ने इशारा किया या मेरी पीठ के पीछे है? थोड़ी देर सोच कर कहने लगा मैं ग़लती पर था। हज़रत सय्यद साहब की क़ब्र तुम्हारे पीछे है? मैं उसी तरफ़ हो कर बैठा और कुरआन पढ़ना शुरू किया उसी दर्मियान में दिली रंज और ग़मगीन होने के सबब अक्सर मक़ामात पर कुरआन के उसूल की रियायत न कर सका। क़ब्र में से आवाज़ आई कि फ़लाँ फ़लाँ जगह पर सुस्ती से काम लिया है। कुरआन के मामले में बाख़बरी व एहतियात की ज़रूरत है। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0: 57)

और लिखते हैं कि रवायत है कि मीर अबुलउला (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि, बानी सिलसिला अबुलउलाइया) के

घरवालों ने उन के फ़रज़न्द मीर नूरूलउला के बीमार होने के सबब एक रुपया और एक चादर नियाज़ के तौर पर हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती के मज़ार पर भिजवाई थी जिस की ख़बर हज़रत मीर अबुल उला को नहीं थी एक दिन हज़रत ख़्वाजा की तरफ़ मुतवज्जह थे कि मज़ार से आवाज़ आई के तुम्हारे फ़रज़न्द की सिहत के लिए तुम्हारे घर से यह जो कुछ नियाज़ आई है और एहले-खाना (घर वाले) ने दूसरे फ़रज़न्द के लिए भी इल्तिजा की है नियाज़ कुबूल और इल्तिजा मब्ज़ूल है।

(अन्फ़ासुल आरिफ़ीन पे0: 69)

और लिखते हैं कि वालिद माजिद शाह अब्दुर्रहीम साहब ने फ़रमाया कि शैख़ बायज़ीद ने हरमैन शरीफ़ैन की हाज़िरी का इरादा किया तो आप के साथ में बहुत से ज़ईफ़ुल उम्र, बच्चे और औरतें भीं तैयार हो गईं हालांकि सफ़र ख़र्च का कोई इन्तिजाम न था। बड़े भाई और मैं मुत्तफ़िक़ हो कर इरादा किया कि उन्हें वापस लाया जाए। जब हम तुग़लक़ाबाद पहुंचे तो दिन बहुत गर्म हो चुका था हम लोग एक सायादार दरख़्त के नीचे आराम की ग़र्ज़ से बैठ गए उस दौरान तमाम दोस्त व साथी सो गए और मैं अकेला उन के कपड़ों और सामानों की हिफ़ाज़त के लिए जागता रहा। अपने आप को बेदार रखने के लिए मैं ने कुरआन मजीद की तिलावत शुरू करदी चन्द सूरतें तिलावत करके मैं ख़ामोश हो गया। अचानक क़रीब की क़ब्रों में से एक साहिबे क़ब्र मुझ से मुख़ातब (संबोधित) हुआ और कहा कि मैं कुरआन मजीद के ज़िन्दगी बख़्श नग़मात सुनने के लिए मुद्दत से तरस रहा हूं अगर कुछ वक़्त और तिलावत करें तो एहसानमन्द हूंगा। मैं कुछ और तिलावत करके फिर ख़ामोश हो गया। साहिबे क़ब्र ने और दरख़्वास्त की। मैं ने फिर पढ़ा। मेरे चुप होने पर उस ने तीसरी बार दरख़्वास्त की। मैं

ने इस वार भी उस की दरख़्वास्त कुबूल की और कुरआन मजीद की चन्द आयात तिलावत कीं।

इस के वाद यह साहिबे क़ब्र मख़दूमी विरादरे गिरामी (वड़े भाई) को जो पास ही सो रहे थे ख्वाव में आया और कहा मैं ने उन को वार वार तिलावत के लिए कहा है। अव मुझे शर्म आती है। आप उन्हें फ़रमाएं कि कुरआन मजीद का कुछ ज़्यादा हिस्सा तिलावत करके मेरे लिए रूह की ग़िज़ा फ़राहम करें। वह नींद से उठे और मुझे सूरते हाल से आगाह किया मैं ने निस्वतन ज़्यादा तिलावत की और उस पर उन कब्र वालों में ख़ुशी व मुसर्रत की ख़ास कैफ़ियत महसूस की और उन्हों ने मुझे फरमाया। अल्लाह तआला तुम्हें इस का वेहतर वदला दे।

इस के वाद मैं ने उन से आलमे वरज़ख (क़ब्र की दुनिया) के मुतअल्लिक़ पूछा। उस ने कहा मैं उन क़रीवी कब्रों में से किसी के मुतअल्लिक़ कुछ भी नहीं जानता। अलवत्ता मैं अपना हाल आप को सुनाता हूँ जव से मैं ने दुनिया से इन्तिक़ाल किया है मैं ने किसी क़िस्म का अज़ाव या सज़ा नहीं देखा। अगर्चे वहुत ज़्यादा इनाम व इकराम भी नहीं है। मैं ने पूछा तुम्हें मालूम है कि कौन से अमल की वरकत से तुम्हें निजात मिली है? उस ने कहा मैं ने हमेशा इस वात की कोशिश की थी कि दुनियावी वखेड़ों से खुद को आज़ाद रखूं। और ज़िक्र व इवादात से ग़ाफ़िल करने वाली चीज़ों से अलैहदा रहूँ। अगर्चि अपने इस इरादे को मुकम्मल अमली लिवास न पहना सका फिर भी खुदा-ए-तआला ने मेरी अच्छी नीयत को पसन्द फ़रमा कर मुझे यह सिला (वदला) अता फ़रमाया। (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन उर्दू पे0: 114)

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने उन तमाम वाक़िआत को किताव में लिख कर अपना यह

अक़ीदा सावित कर दिया कि अल्लाह के महवूव वन्दे इन्तिक़ाल के वाद अपनी कब्रों में ज़िन्दा रहते हैं और वक़्ते ज़रूरत दुनिया वालों से वात चीत भी करते हैं।

★★★

अल्लामा निबहानी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1350 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद सदरूद्दीन विकरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 918 हि0) जव हज के लिए गए और नवी-ए-मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत की तो लोगों ने सुना कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन के सलाम का जवाव दिया।

(जामिए करामाते औलिया पे0: 723)

और फ़रमाते हैं हज़रत मुहम्मद विन मुहम्मद विन शर्फ़ुद्दीन ख़लीली शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 1147 हि0) जो वैतुलमुक़द्दस में मुक़ीम थे वह अपनी ज़वानी यूँ वयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ हमारा वाक़िआ यूँ है कि मैं रात को आप की ज़ियारत के लिए आप के मज़ारे अक़्दस के पास उतरा मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ाते अक़्दस पर सलातो सलाम वाली किताव "दलाइलुलख़ैरात" पढ़ना शुरू किया। एक वार ख़त्म करके जब दोवारा पढ़ना शुरू किया तो मुझे ख़्याल आया वेहतर यह है कि सय्यदना मूसा और सय्यदना हारून अलैहिमस्सलाम पर दुरूद व सलाम भेजूं। तो मैं ने यूँ दुरूद शरीफ़ पढ़ा। "ऐ अल्लाह! मूसा और उन के भाई हारून पर दुरूद भेज। मैंने क़ब्र शरीफ़ से वेहतरीन उम्दा आवाज़ सुनी "नसव (ख़ानदान) का रिश्ता आज़ादी के रिश्ते से अफ़ज़ल

और मुक़द्दम है।" मैं इस जुमले (वाक्य) का मतलव समझ गया। मक़सद यह था कि हुज़ूर सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से तुम यूँ मन्सूब (संवन्धित) हो जैसे नसव का रिशता होता है इस लिए कि नवी करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तसलीम ने इरशाद फ़रमाया है।"मेरी उम्मत मेरा अ़सवा व रिश्ता है।" और दूसरों से तुम्हारा रिशता विला (दोस्ती) का है। और नसव का रिश्ता विला के रिश्ते से मुक़द्दम (प्रथम) है। यह सुन कर फिर मैं ने दलाइलुलख़ैरात पढ़ना शुरू किया।

(जामिए करामाते औलिया पे0: 840)

और फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि और एक आदमी हज़रत मुहम्मद विन कवीर हक्मी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान (इन्तिक़ाल 617 हि0) की ख़िदमत में उन के इन्तिक़ाल (मौत) के वाद हाज़िर हुआ और इलितजा की कि उसे अपनी दोस्ती का शर्फ़ वख़्शें। आप क़ब्र से निकले और उसे दोस्ती का वादा किया। (जामिए करामाते औलिया पे0: 536)

अ़ल्लामा यूसुफ़ निवहानी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने इन वाक़िआ़त को लिख कर सावित कर दिया कि अंविया व औलिया अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा है। यह अक़ीदा हक़ है।

★★★

फुक़हा का अक़ीदा

अ़ल्लामा शुरंबुलाली का अक़ीदा
(अ़लैहिर्रहमा, वफ़ात 1069 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि यह वात अरवावे तहक़ीक़ (खोजी विद्वान) के नज़दीक सावित है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (हक़ीक़ी दुनियावी ज़िन्दगी के साथ) ज़िन्दा है। उन पर रोज़ी पेश की जाती है। सारी लज़्ज़त वाली चीज़ों का मज़ा और इवादतों का सुरूर पाते हैं। लेकिन जो लोग कि वुलन्द दर्जों तक पहुंचने से मजवूर हैं उन की निगाहों से ओझल हैं।

(मराक़िउल फ़लाह मआ़ तहतावी पे0: 447)

हज़रत अ़ल्लामा शैख़ हसन शुरंवुलाली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने खुल्लम खुल्ला अपना और तमाम मुहक़्क़िक़ीन (खोजी विद्वान) का अक़ीदा लिख दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ज़िन्दा हैं। मगर आ़म लोगों की निगाहों से ओझल हैं।

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरी चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

★★★

अ़ल्लामा इब्ने हजर मक्की का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 974 हि0)

और फ़रमाते हैं कि बाज़ लोगों ने कहा मैं कल ज़ुहर के वक़्त इन्तिक़ाल कर जाऊँगा तो कहने के मुताबिक़ ही उन का इन्तिक़ाल हुआ। और जब क़ब्र में रखे गए तो उन्होंने अपनी आंखें खोल दीं। दफ़्न करने वाले ने उनसे कहा क्या आप मौत के बाद ज़िन्दा है? उन्होंने कहा कि मैं ज़िन्दा हूँ और अल्लाह से मुहब्बत करने वाला हर एक ज़िन्दा है। (फ़तावा हदीसिया पे0: 267)

इस से हज़रत अ़ल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपना अक़ीदा साबित कर दिया कि अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम की ज़ात तो अ़ज़ीमुश्शान और बहुत बुलन्द व बाला है। अल्लाह का हर वह नेक बन्दा जो उस से मुहब्बत करने वाला है वह भी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा रहता है।

★★★

औलिया अल्लाह का अक़ीदा

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 561 हि0)

अ़ल्लामा तादनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि शैख़ कीमियाई, शैख़ बजाज़ और शैख़ अबुल हसन बयान करते हैं कि हम लोग हज़रत शैख़ अब्दुलकादिर जीलानी के हमराह 27

ज़िलहिज्जा जुमेरात के दिन 523 हि0 मक़बरा शोनीज़ में मज़ारात की ज़ियारत के लिए गए। उस वक़्त आप के साथ मुफ़्तियों व क़ारियों की एक बड़ी जमाअ़त भी थी। वहाँ आप शैख़ हम्माद (इन्तिक़ाल 525 हि0) के मज़ार पर बहुत देर खड़े रहे। यहाँ तक कि गर्मी ने शिद्दत इख़्तियार करली। लेकिन आप को देख कर तमाम लोग भी आप के पीछे खामोश खड़े रहे। जब आप वापस हुए तो आप के चेहरे पर बहुत ही ताज़गी थी। लोगों ने जब देर तक खड़े रहने की वजह दरयाफ़्त की तो आप ने एक वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाया।

मैं जुमा 15 शाबान 499 हि0 में शैख़ हम्माद के हमराह जुमा की नमाज़ के लिए जामियुर्रिसाफ़ा की तरफ़ रवाना हुआ। उस वक़्त हमारे साथ बहुत बड़ी जमाअ़त थी। चुनाँचे जब हम लोग कन्तूहे यहूद (यहूदी पुल) के क़रीब पहुंचे तो शैख़ हम्माद ने शदीद सर्दी के बावुजूद मुझे पानी के अंदर धक्का दे दिया। मैंने बिस्मिल्लाह कह कर जुमा के गुस्ल की नीयत करली। इस वक़्त मेरे जिस्म पर एक ऊनी जुब्बा था और दूसरा ज़ुब्बा मेरी आस्तीन में था जिसे निकाल कर मैं ने हाथ में उठा लिया ताकि भीगने से महफ़ूज़ रहे। शैख़ हम्माद मुझे धक्का दे कर आगे बढ़ गए चुनाँचे मैं ने पानी से निकल कर अपना जुब्बा निचोड़ा और उन के पीछे रवाना हो गया। मुझे देख कर लोगों ने अफ़सोस किया तो शैख़ हम्माद ने उन्हें झिड़क कर फ़रमाया मैं ने तो महज़ इम्तिहान के तौर पर उस को नहर में ढ़केला था। लेकिन यह तो ऐसा मज़बूत है जो अपनी जगह से हरकत ही नहीं करता।

फिर हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ने फ़रमाया कि आज मैं ने शैख़ हम्माद को क़ब्र के अंदर ऐसी हालत में देखा कि उन के जिस्म पर हीरे जवाहरात से आरास्ता एक हुल्ला (सुंदर

वस्तू) है और आप के सर पर याक़ूत (मोती) का ताज, हाथों में सोने के कंगन और दोनों पाँवों में तिलाई जूते है। लेकिन आप का दाहिना हाथ शल (बेकार) है। जब मैं ने पूछा कि आप के हाथ को क्या हो गया है? आप ने फ़रमाया कि इस हाथ से मैं ने तुझे पानी में धक्का दिया था क्या तू मुझे माफ़ नहीं कर सकता? मैं ने कहा बिला-शुबा-माफ़ किया। फिर आप ने फ़रमाया कि खुदा से दुआ कर कि यह मेरा हाथ ठीक हो जाए। चुनाँचे मैं जिस वक़्त खड़ा हुआ दुआ कर रहा था तो पांच हज़ार औलिया किराम अपने मज़ारात में मेरी दुआ पर आमीन कह रहे थे। अल्लाह तआला ने मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा कर शैख़ हम्माद के हाथ की तकलीफ़ दूर करदी और आप ने मुझ से मुसाफ़ह किया। इस तरह मेरी और उन की खुशी पूरी हो गई। (क़लाइदुल जवाहिर पे०: 99)

इस वाक़िए से साबित हुआ कि हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह अक़ीदा है कि अल्लाह वाले अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं आप ने फ़रमाया हज़रत हम्माद ने मुझ से गुफ़्तगू की और हाथ ठीक होने के लिए खुदा-ए-तआला से दुआ करने की दरख़्वास्त की।

★★★

शैख़ अ़ली बिन हैती का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 564 हि0)

आप हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने के मशहूर बुज़ुर्ग है। हज़रत अ़ल्लामा तादनी रहमतुललाहि तआला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत शैख़ अ़ली बिन हैती मशाइख़े इराक़ में बड़े साहबे करामत बुज़ुर्ग हुए है। और उन बुज़ुर्गों में से एक

जो अंधों और कोढ़ियों को अच्छा कर देते थे और आप अक्सर ग़ैब की खबरें भी बता देते थे। हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि आप की बहुत तारीफ़ करते और निहायत मुहब्बत व एहतेराम के साथ पेश आते और अक्सर फ़रमाया करते कि बग़दाद में जो औलिया-ए-किराम दाख़िल होते हैं वह हमारे ही मेहमान होते हैं लेकिन हम शैख़ अ़ली बिन हैती के मेहमान रहते हैं। (क़लाइदुल जवाहिर पे०: 313)

हज़रत शैख़ अ़ली बिन हैती रहमतुल्लाह तआला अ़लैहि बयान करते हैं कि मैंने हज़रत शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और शैख़ बक़ा बिन बुतू रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि के हमराह हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के मज़ार की ज़ियारत की तो देखा कि इमाम अहमद बिन हंबल ने क़ब्र से निकल कर हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी से मुआनक़ा (गले मिलना) किया और आप को ख़लअत (विशेष लिबास) अ़ता करके फ़रमाया कि ऐ अब्दुल क़ादिर! तमाम लोग इल्मे शरीअ़त व तरीक़त में तेरे मुहताज होंगे।

फिर मैं हज़रत के हमराह हज़रत शैख़ मारूफ़ करख़ी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 200 हि0) के मज़ार पर गया वहाँ हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ने फ़रमाया "ऐ शैख़ मारूफ़! अस्सलामु अ़लैकुम हम आप से दो दर्जा बढ़ गए हैं।" उन्हों ने क़ब्र में से जवाब दिया "ऐ अपने ज़माने वालों के सरदार! व अ़लैकुमुस्सलाम। (क़लाइदुल जवाहिर पे०: 141)

हज़रत शैख़ अ़ली बिन हैती रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि ने इस बयान से अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि बुज़ुर्गाने दीन इन्तिक़ाल के बाद अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा रहते हैं कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल ने अपनी क़ब्र से निकल कर हज़रत

ग़ौसे पाक से मुआनक़ा (गले मिलना) किया और हज़रत मारूफ़ क़रख़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने क़ब्र से आप के सलाम का जवाब इस तरह दिया कि बाहर सुनाई दिया।

★★★

सय्यद अहमद कबीर रिफ़ाई का अक़ीदा

(अलैहिर्रमा, इन्तिक़ाल 578 हि0)

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अपनी किताब "अल्हावी" में फ़रमाते हैं कि हज़रत सय्यद अहमद रिफ़ाई अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान जो मशहूर बुज़ुर्ग ख़ास सूफ़िया में से हैं उन का वाक़िआ मशहूर है कि जब वह सन् 555 हि0 में हज से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूर सय्यद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत के लिए मदीना तय्यबा हाज़िर हुए और क़ब्रे अनवर के सामने खड़े हुए तो यह दो शेर पढ़े। अर्थः "मैं दूर होने की हालत में अपनी रूह की ख़िदमते मुबारका में भेजा करता था जो मेरी नाइब (उपअधिकारी) बन कर हुज़ूर के मुबारक आस्ताने को चूमा करती थी।

अब जिस्मों की हाज़िरी का वक़्त आया। लिहाजा अपने मुबारक हाथ को बढ़ाएं ताकि मेरे होंठ उस को चूमें।

हज़रत सय्यदे अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की इस अर्ज़ पर सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने क़ब्रे अनवर से अपने मुबारक हाथ को बाहर निकाला जिस को उन्होंने चूमा।

"अलबुनयानुल मुशय्यिद" में कि इस वक़्त कई हज़ार का मजमा मस्जिदे नबवी में था जिन्होंने इस वाक़िए को देखा और

हुज़ूर के मुबारक हाथ की ज़ियारत की उन लोगों में महबूब सुबहानी हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी यानी ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम भी ज़िक्र किया जाता है।

इस वाक़िए से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत सय्यद अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का भी यह अक़ीदा है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपनी क़ब्रे अनवर में ज़िन्दा हैं वरना वह हर्गिज़ हुज़ूर से यह अर्ज़ न करते कि अपना हाथ मुबारक बढ़ाऐं ताकि हम उसे बोसा (चूमे) दें।

★★★

ख़्वाजा उसमान हारूनी का अक़ीदा

(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 617 हि0)

आप हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़न्दनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इन्तिक़ाल 584 हि0) के मुरीद व ख़लीफ़ा (जानशीन) हैं। और सुलतानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के पीरो मुर्शिद हैं आप ही की निगाहे करम ने हज़रत ख़्वाजा को सुलतानुलहिन्द और सुलतानुल आरेफ़ीन बना दिया। आप का विसाल (इन्तिक़ाल) मक्का शरीफ़ में हुआ। मज़ारे मुबारक मस्जिदे जिन्न के क़रीब था जिस को नज्दी हुकूमत ने तोड़ कर रोड बना लिया। अल्लाह के महबूब बन्दे इन्तिक़ाल के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं इस के बारें में आप का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि ख़्वाज-ए-ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने फ़रमाया कि शम्सुलआरिफ़ीन का

यह हाल गुज़रा कि जिस रोज़ वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के रौज़-ए-अनवर पर हाज़िर हुए थे और सलाम अ़र्ज़ किया था तो वहाँ से आवाज़ आई"व अ़लैकस्सलाम या शम्सुल आरिफ़ीन!" पस जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुबारक रौज़े से बाहर निकले तो जो कोई मिलता था वह"अस्सलामु अ़लैक या शम्सुल आरिफ़ीन!" कहता था। फिर उसी जगह इसी के मुतअ़ल्लिक़ यह हिकायत बयान फ़रमाई कि हज़रत इमाम आज़म रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के साथ भी यही मामला गुज़रा कि जब शुरू में हज़रत नोमान कूफ़ी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के रौज़ा पर हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया।"अस्सलामु अ़लैक या सय्यदल मुरसलीन!" तो वहाँ से सलाम का जवाब आया कि"व अ़लैकस्सलाम या इमामुल मुस्लिमीन!" (अनीसुल अरवाह पे0: 28)

हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के ज़िक्र किए गए बयान से साबित हुआ कि उन का भी यह अक़ीदा है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अपनी क़ब्र मुबारक में ज़िन्दा हैं।

★★★

ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 633 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि हम अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहु तआ़ला अ़लैहि के साथ मक्का मुअज़्ज़मा से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के रौज़-ए-अनवर की ज़ियारत के लिए मदीना तय्यबा की तरफ़ रवाना हुए। जब रौज़-ए-पाक की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए तो हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी ने फ़क़ीर की तरफ़ मुतवज्जह हो कर इरशाद फ़रमाया कि अब तू हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर है सलाम कर। मैं ने सलाम अर्ज़ किया। रौज़-ए-अनवर से आवाज़ आई।"व अ़लैकस्सलाम या कुतबुल मशाइख़ लिलबर्रि वल बह्र!" जब यह आवाज़ आई तो हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि ने फ़रमाया कि बस अब तेरा काम पूरा हो गया। (अनीसुल अरवाह पे0: 6)

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी इस बात से साबित कर दिया कि हमारा भी यही अक़ीदा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अपनी क़ब्रे मुबारक में ज़िन्दा हैं कि आप ने हमारे सलाम का जवाब इतनी बुलन्द आवाज़ से दिया कि हम लोगों ने सुन लिया।

★★★

ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन गंज शकर का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 670 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि अंबिया-ए-किराम क़ब्रों में ज़िन्दा हैं।

(सियरूलऔलिया पे0: 151)

इस फ़रमान से अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का क़ब्रों में ज़िन्दा रहने के बारे में हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि का अक़ीदा बिलकुल रोशन है।

★★★

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 725 हि0)

सुलतानुल माशाइख़ फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा शैखुलइस्लाम हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के मुबारक मज़ार की ज़ियारत के लिए गया। मेरे दिल में ख़्याल गुज़रा कि इतने ज़्यादा लोग इन बुजुर्गों की ज़ियारत के लिए आते हैं उनके आने की इन बुजुर्गों को ख़बर होती है या नहीं? मेरे दिल में यह ख़्याल गुज़रा ही था और मैं रौज़-ए-मुबारका के क़रीब मुराक़बे (खुदा के ध्यान) में मशगूल था कि मैं ने रौज़-ए-मुबारका से यह शेर सुना।

अर्थः मुझ को अपनी तरह ज़िन्दा समझो। मैं जान के साथ आता हूँ अगर तुम जिस्म के साथ आते हो।

(सियरुलऔलिया पे0: 117)

आप हज़रत ख़्वाजा अमीर खुर्द किरमानी निज़ामी मुसन्निफ़ (लेखक) सियरुल औलिया फ़रमाते हैं कि जिस ज़माने में सुलतानुल मशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ग़यास पुर में रहते थे। मौलाना फ़सीहुद्दीन और. क़ाज़ी मुहय्युद्दीन काशानी आप की ख़िदमत में ग़यासपुर हाज़िर हुए। क़दमबोसी की नेकी हासिल करने के बाद इन दोनों ने बैअ़त (मुरीद) होने के लिए अ़र्ज़ किया। आप ने फ़ौरन ही क़ाज़ी मुहय्युद्दीन काशानी को मुरीद कर लिया और मौलाना फ़सीहुद्दीन से फ़रमाया कि मैं तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ शैख़ गंज श्कर से पूछूँगा। यह सुन कर मौलाना फ़सीहुद्दीन को बड़ी हैरत हुई और वह सोचने लगे कि शैख़ गंज श्कर तो इन्तिक़ाल पा चुके हैं सुलतानुल मशाइख़ उन से कैसे पूछेंगे? यह बात उन के दिल में गुज़री लेकिन उन्होंने ज़बान से कुछ नहीं कहा और क़दमबोसी के बाद लौट आए।

जब वह दूसरी मरतबा महबूबे इलाही से मिले तो महबूबे इलाही ने उन से फ़रमाया कि मैं ने तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ शैख़ गंज शकर से अ़र्ज़ किया आपने क़ुबूल फ़रमा लिया है। अब तुम बैअ़त (मुरीद) हो सकते हो। चुनाँचे वह महबूबे इलाही से बैअ़त हो गए। जब वह बैअ़त करचुके तो मौलाना फ़सीहुद्दीन ने अ़र्ज़ किया कि मेरे मख़दूम! शैख़ गंज श्कर तो इन्तिक़ाल (मौत) पा चुके हैं आप ने किस से पूछा है? फ़रमाया जब मुझे किसी बात में हिचकिचाहट होती है तो मैं शैख़ गंज श्कर ही से पूछता हूं और आप के हुक्म के मुताबिक़ काम करता हूँ।(सियरुलऔलिया पे0: 452)

महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के इस फ़रमान से कि मैं ने रौज़ा मुबारका से फ़ारसी का एक शेर सुना। और इस फ़रमान से कि जब मुझे किसी बात में हिचकिचाहट होती है तो मैं शैख़ गंज श्कर ही से पूछता हूँ। साफ़ ज़ाहिर है कि आप का भी यह अक़ीदा है कि अल्लाह के वली इन्तिक़ाल के बाद अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा रहते हैं। और पहले वाक़िए से आप का यह अक़ीदा भी साबित हुआ कि बुजुर्गाने दीन क़ब्रों में रहते हुए दुनिया वालों के दिलों के ख़्यालात से भी वाक़िफ़ हो जाते हैं।

★★★

अ़ल्लामा जामी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 898 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि एक लाइक़े यक़ीन शख़्स से जो हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद पारसा बुख़ारी क़ुद्दिस सिर्रूहू (इन्तिक़ाल 822 हि0) के साहिबज़ादे ख़्वाजा बुरहानुद्दीन अबू नस्र रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 865 हि) के ख़ास लोगों में से थे। वह ख़्वाजा बुरहानुद्दीन अबू नस्र से रवायत करते हैं कि जब मेरे वालिद माजिद की रूह परवाज़ हुई थी तो उस वक़्त मैं हाज़िर न था। जब मैं हाज़िर हुआ तो मैं ने आप का मुबारक चेहरा इस ग़र्ज़ से खोला कि इस की ज़ियारत करूँ। आप ने फ़ौरन अपनी आंखें खोल दीं और तबस्सुम (मुस्कुराना) फ़रमाया जिस से मेरा ग़म और परेशानी बहुत बढ़ गया। मैं आप के पायतीं गया और अपना चेहरा आप के मुबारक तलवे से मलने लगा। आप ने उसी वक़्त अपने पाँव समेट लिए। (नफ़हातुल उन्स पे0: 631)

हज़रत अ़ल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने इस वाक़िआ़ का अपनी किताब में बिला तरदीद (खण्डन) ज़िक्र फ़रमा कर साबित कर दिया कि हमारा भी यही अक़ीदा है कि औलिया अल्लाह इन्तिक़ाल के बाद ज़िन्दा रहते हैं।

★★★

ज़ियारते क़ब्र और उस से फ़ायदा हासिल करना

क़ब्रों की ज़ियारत करना और उन से फ़ायदा हासिल करना जाइज़ है या नहीं? उस के बारे में सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और बुज़ुर्गाने दीन का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

हुज़ूर सय्यदे आ़लम का अक़ीदा

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)

(1) हज़रत बुरीदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने तुम लोगों को क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया था (अब मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ कि) उन की ज़ियारत करो।

(मुस्लिम, मिश्कात पे0: 154)

मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ (सर्वमान्य इस्लामिक महान विद्वान) हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि इस हदीस शरीफ़ की शरह (व्याख्या) में फ़रमाते हैं कि ज़मान-ए-जाहिलियत से क़रीब होने के सबब इस अंदेशे से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने पहले क़ब्रों की ज़ियारत से मना कर दिया था कि लोग उन के साथ फिर कहीं जाहिलियत वाला रवैया न इख़्तियार कर लें। फिर जब इस्लाम के क़ानून से लोग ख़ूब आगाह हो गए तो आप ने क़ब्रों की ज़ियारत

के लिए इजाज़त दे दी। (अशअतुल्लम्आत जि0: 1 पे0: 717)

(2) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से बयान है कि रसूले करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तसलीम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने तुम लोगों को क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था तो अब तुम उन की ज़ियारत करो। (इब्ने माजा, मिश्कात पे0: 154)

(3) हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा से रवायत है। उन्होंने फ़रमाया कि जिस रात को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम उन के यहाँ क़याम (आराम) फ़रमाते तो आख़िर रात में उठ कर मदीना के क़ब्रिस्तान में तशरीफ़ ले जाते। (मुस्लिम, मिश्कात पे0: 154)

(4) हज़रत मुहम्मद बिन नोमान रिज़यल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो अपने माँ-बाप की क़ब्रों की ज़ियारत करे या उन में से किसी एक की क़ब्र की हर जुमे के दिन तो उसे बख़्श दिया जाएगा और उसे नेकी करने वाला लिखा जाएगा।

(मिश्कात शरीफ़ पे0: 154)

इन अहादीसे करीमा से मालूम हुआ कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के नज़दीक क़ब्रों की ज़ियारत जाइज़ है बल्कि जो शख़्स हर जुमा को अपने माँ-बाप की क़ब्रों की ज़ियारत करे वह बख़्श दिया जाएगा।

★★★

इमाम शाफ़ई का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 204 हि0)

हज़रत अ़ल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि (इन्तिक़ाल 1253 हि0) फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने फ़रमाया कि मैं इमाम अबू हनीफ़ा से बरकत हासिल करता हूँ और उनकी क़ब्र के पास आता हूँ। तो जब मुझे कोई हाजत दरपेश होती है तो मैं दो रकअ़त नमाज़ पढ़ता हूँ और उन की क़ब्र के पास अल्लाह तआ़ाला से दुआ़ करता हूँ तो हाजत जल्द पूरी हो जाती है।

(रद्दुलमुहतार जि0: 1 पे0: 38)

और हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा काज़िम रज़ियल्लाह तआ़ाला अ़न्हु की क़ब्र दुआ़ की मक़बूलियत के लिए अनमोल आज़माई हुई जगह है।

(अशअ़तुल्लम्आत जि0: 1 पे0: 715)

इन दलीलों से हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु के यह अक़ीदे मालूम हुए कि बुज़ुर्गों के मज़ार की ज़ियारत के लिए जाना, साहिबे मज़ार से बरकत हासिल करना, उन के मज़ारों के पास जा कर दुआ़ करना और साहिबे मज़ार को हाजत पूरी करने का ज़रिया ठहराना जाइज़ है और बाज़ बुज़ुर्गों का मज़ार दुआ़ की मक़बूलियत के लिए आज़मूदा तिरियाक़ (नुस्ख़-ए-कीमिया) है।

★★★

अ़ल्लामा सावी मालिकी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान)

आप आयते करीमा''वब्तग़ू इलैहिलवसीला'' की तफ़सीर (व्यख्या) में फ़रमाते हैं कि औलिया अल्लाह की ज़ियारत के सवब मुसलमानों को इस ख़्याल से काफ़िर कहना कि उन की ज़ियारत अल्लाह के अलावह की इवादत है सरासर गुमराही और खुली हुई हलाकत है (औलिया अल्लाह की ज़ियारत अल्लाह के अलावह की इवादत) हर्गिज़ नहीं बल्कि यह 'अलहुव्वु फ़िल्लाह' यानी अल्लाह की मुहव्वत में से है। (तफ़सीरे सावी जि0: 1 पे0: 245)

मालूम हुआ कि आरिफ़ विल्लाह हज़रत अ़ल्लामा सावी मालिकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के नज़दीक औलिया अल्लाह की ज़ियारत के लिए जाना जाइज़ है कि वह अल्लाह के अलावह की इवादत नहीं है बल्कि 'अलहुव्वु फ़िल्लाह' में से है।

★★★

सूफ़ी हमीदुद्दीन नागौरी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 677 हि0)

आप फ़रमाया करते थे जिस शख़्स को कोई हाजत दरपेश हो वह मेरी वीवी सय्यदा ख़दीजा की क़ब्र पर जा कर अ़र्ज़ करे क्योंकि आप ने किसी हाजतमन्द को अपने दरवाज़े से महरूम नहीं किया। (सुलतानुत्तारिकीन पे0: 93)

हज़रत सूफ़ी हमीदुद्दीन नागौरी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के इस फरमान से उन का अकीदा विलकुल रौशन है कि अल्लाह के

महवूव वन्दे अपनी क़ब्रों से लोगों की हाजतें पूरी करते हैं। मुसलमानों को चाहिए कि अपनी हाजतों के लिए वुज़ुर्गों की क़ब्रों पर जाएं और उन से फ़ायदा हासिल करें।

★★★

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 725 हि0)

आप ने फ़रमाया कि मौलाना कथेली ने मुझ से वयान किया कि दिल्ली में एक साल क़हत पड़ा। मैं किरबासी बाज़ार से गुज़र रहा था और भूका था। मैं ने खाना ख़रीदा और खुद से कहा कि इस खाने को तन्हा नहीं खाना चाहिए। किसी को बुलाकर खाने में उसको भी शरीक करूँ। एक कमली (चादर) वाले फ़क़ीर को मैं ने देखा जो गुदड़ी पहने हुए मेरे सामने से गुज़र रहा था। मैं ने उस से कहा कि ऐ मेरे ख़्वाजा! मैं दर्वेश (फ़क़ीर) हूँ और तुम भी दर्वेश (फ़क़ीर) हो। और मैं ग़रीव हूँ तुम भी ग़रीव दिखाई देते हो। कुछ खाना मौजूद है आओ मिल कर खाएं। वह दर्वेश राज़ी हुए। हम नानबाई की दुकान के ऊपर गए और खाना खाया।

इस दौरान मैं उस दरवेश की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहा ऐ ख़्वाजा! मुझ पर बीस रुपया क़र्ज़ हो गया है मेरा वह क़र्ज़ अदा होना चाहिए। उस दरवेश ने कहा तुम आराम से खाना खाओ। मैं बीस रुपया तुम को देता हूँ। मौलाना कथेली ने कहां कि मेरे दिल में आया कि इस फटे हाल शख़्स के पास वीस रुपया कहां होंगे। जो मुझ को देगा। अलग़र्ज़ जब खाना खा चुके वह उठे और अपने साथ मुझ को ले चले। वह मस्जिद की तरफ़ गए। मस्जिद में एक क़ब्र थी उसके सरहाने खड़े हो कर

उन्होंने कुछ मांगा। और एक छोटी लकड़ी उन के हाथ में थी आहिस्ता से उसको दोबारा क़ब्र पर मारा और कहा इस दरवेश को बीस रुपए की ज़रूरत है इसको दो यह कहा और मेरी तरफ़ मुंह करके मुझ से कहा 'मौलाना! वापस जाओ बस आप को बीस रुपय मिल जाएंगे।

मौलाना कथेली ने कहा जब मैं ने यह बात सुनी उस दरवेश (फ़क़ीर) का हाथ चूमा और उन से जुदा हो कर शहर की तरफ़ चल पड़ा। मैं उस वक़्त हैरत में था कि वह बीस रुपए मुझको कहां से मिल जाएंगे। मेरे पास एक ख़त था जो किसी के घर पर मुझे देना था। उस दिन वह ख़त ले कर दरवाज़े कमाल पहुंचा। एक तुर्क अपने घर के छज्जे पर बैठा था। उस ने मुझ को देखा और आवाज़ दी और अपने गुलामों को दौड़ाया वह मुझे पूरी कोशिश से ऊपर ले गए। उस तुर्क ने मुझे बहुत खुश किया। मैं ने हरचन्द कोशिश की मगर उस को नहीं पहचान सका। वह तुर्क यही कहता क्या तुम वह अक़लमन्द नहीं हो जिस ने फ़लाँ जगह मेरे साथ बहुत नेकी की थी। मैं ने उस से कहा मैं तुम को नहीं पहचानता। उसने कहा मैं तुमको पहचानता हूँ। खुद को क्यों छुपाते हो। अलगर्ज़ इस क़िस्म की बहुत सी बातें कीं। उसके बाद बीस रुपए लाया और बड़ी गुज़ारिश के साथ मेरे हाथ में दे दिया।

(फ़वाइदुलफवाद मज्लिस 21 पे0: 124)

हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने इस वाक़िए को बिला हिचकिचाहट के बयान फ़रमा कर अपना यह अक़ीदा साबित कर दिया कि जिस तरह ज़ाहिरी ज़िन्दगी में औलिया अल्लाह से किसी चीज़ को देने के लिए अर्ज़ करना जाइज़ है ऐसे ही इन्तिक़ाल के बाद उन की क़ब्र के पास हाज़िर हो कर किसी चीज़ को देने के लिए कहना जाइज़

है। इस लिए कि हक़ीक़त में देने वाला खुदा-ए-तआला है और औलिया अल्लाह की तरफ़ निसबत (संबन्ध) ग़ैर हक़ीक़ी है जैसे हक़ीक़त में बीमार को अच्छा करने वाला अल्लाह है लेकिन मरीज़ कहता है डॉक्टर साहब हम को अच्छा कर दीजिए।

★★★

अ़ल्लामा जामी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 898 हि0)

आप लिखते हैं कि हज़रत शैख़ अबुलहारिस ओलासी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने बयान फ़रमाया कि मैं ने हज़रत जुन्नून मिस्री अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान की बहुत शुहरत सुनी थी। चन्द मस्लों के हल करने के लिए मैंने उन की ज़ियारत का इरादा किया। जब मैं मिस्र पहुंचा तो लोगों ने मुझे बताया कि उनका तो कल इन्तिक़ाल हो गया। यह सुन कर मैं उन के मज़ार पर गया वहाँ पहुंच कर मुराक़बे (खुदा के ध्यान) में बैठ गया। कुछ देर के बाद मुझे नींद आ गई। ख़्वाब में उन का दीदार हुआ और मुझे जो मुश्किल मसअले दरपेश थे वह मैं ने उनसे दर्याफ़्त किए उन्होंने उन सब का मुझे जवाब इनायत फ़रमाया।

(नफ़हातुल उन्स पे0: 193)

हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तअला अ़लैहि ने इस वाक़िए को ज़िक्र फ़रमाकर अपना यह अक़ीदा ज़ाहिर कर दिया कि औलिया अल्लाह के मज़ारात पर अपनी किसी हाजत को ले कर जाना जाइज़ है और वह अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त से लोगों की मुश्किलात को हल फ़रमाते हैं।

★★★

अ़ल्लामा इब्ने हजर मक्की का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 973 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि हमेशा उलमा और हाजतमन्द का तरीक़ा रहा कि वह हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हु के मुबारक मज़ार की ज़ियारत करते और उसके वसीले से अदा-ए-हाजत चाहते और उस ज़रीए से कामयाबी का यक़ीन रखते और मुंह मांगी मुराद पाते थें। इसके अ़लावा हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब बग़दाद में मौजूद थे फ़रमाया कि मैं इमाम अबू हनीफ़ा से बरकत लेता हूँ। उन की मुबारक क़ब्र की ज़ियारत करता हूँ। जब मुझे कोई हाजत पेश होती है दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर उन की क़ब्र के पास जाता हूँ। खुदावन्दे आ़लम से वहाँ दुआ़ करता हूँ तो फ़ौरन हाजत पूरी होती है।

(अलखैरातुलहिसान मुतरजम पे0: 166)

इस से हज़रत अ़ल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि का अक़ीदा बिलकुल ज़ाहिर है कि बुज़ुर्गों के मज़ारात की ज़ियारत करना और उनके वसीले से हाजतरवाई चाहना जाइज़ है जैसा कि हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु किया करते थे।

★★★

शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1052 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि क़ब्रो की ज़ियारत बिलइत्तेफ़ाक़ मुस्तहब (बेहतर) है। (अशअतुल्लम्आत जि0: 1 पे0: 715)

और फ़रमाते हैं कि मय्यत का एहतेराम उस की ज़ियारत के वक़्त वाजिब है ख़ासकर बुज़ुर्गाने दीन का। और अदब की रिआ़यत उन लोगों के मरतबे के लिहाज़ से ज़रूरी है। जैसा कि उन की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में था। इस लिए कि बुज़ुर्गों की मदद उन की ज़ियारत करने वालों के लिए अदब के ऐतिबार से पहुंचती है।

(अशअतुल्लम्आत जि0: 1 पे0: 720)

इन दलीलों से हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के यह अक़ीदे खुल्लम खुल्ला साबित हुए कि क़ब्रों की ज़ियारत के लिए जाना शिर्क बिदअ़त नहीं बल्कि बिलइत्तफ़ाक़ मुस्तहब (बेहतर) है और ज़ियारत करने वालों के लिए बुज़ुर्गों की मदद पहुंचती है।

★★★

सय्यद तहतावी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1231 हि0).

आप फ़रमाते हैं कि शरीअ़त के ख़िलाफ़ कोई तरीक़ा इख़्तियार किए बग़ैर बूढ़ी औरतें बुज़ुर्गों की क़ब्रों की ज़ियारत से बरकत हासिल करें तो कोई हर्ज नहीं। और वह जो उन औरतों के लिए, नाजाइज़ है जैसे कि उन का मस्जिदों में जमाअ़तों के लिए हाज़िर होना जाइज़ नहीं। खुलासा यह कि औरतों के लिए

इजाज़त सिर्फ़ उस सूरत में है जब कि ज़ियारत ऐसे तरीक़े पर हो कि उस में कोई फ़ितना न हो। (तहतावी अ़ला मराक़ी पे0: 341)

यानी हज़रत सय्यद अहमद तहतावी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के नज़दीक मर्दों को बुज़ुर्गों की क़ब्रों की ज़ियारत से बरकत हासिल करना जाइज़ है और औ़रतों को सिर्फ़ उस सूरत में जाइज़ है जब कि फ़ितना न हो।

★★★

अ़ल्लामा इब्ने आबिदीन शामी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1253 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि औलिया अल्लाह ख़ुदा-ए-तआ़ला की बारगाह में मुख़्तलिफ़ दर्जा रखते हैं। और ज़ियारत करने वालों को अपने मआरिफ़ व असरार (रूहानी राज़) के लिहाज़ से फायदा पहुंचाते हैं। (रद्दुलमुह्तार जि0: 1 पे0: 604)

और फ़रमाते हैं कि बुज़ुर्गों की क़ब्रों की ज़ियारत से बरकत हासिल करना बूढ़ी औ़रतों को हर्ज नहीं और जब कि जवान हों तो नाजाइज़ है जैसे कि जमाअ़त के लिए मस्जिदों में हाज़िर होना जाइज़ नहीं। (रद्दुलमुहतार जि0: 1 पे0: 604)

इन हवालों से हज़रत अ़ल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाह तआ़ला अलैहि ने अपना अक़ीदा बिलकुल साफ़ कर दिया कि औलिया अल्लाह अपने दर्जे के एतिबार से ज़ियारत करने वालों को फ़ायदा पहुंचाते हैं। और बूढ़ी औ़रतों को बुज़ुर्गों की क़ब्रों की ज़ियारत से बरकत हासिल करने में हर्ज नहीं अ़लबत्ता जवान औ़रतों को नाजाइज़ है।

★★★

शाह वलियुल्लाह देहलवी का अक़ीदा

(अ़लैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1176 हि0)

आप लिखते हैं कि वालिद गिरामी (पिता श्री) शाह अब्दुर्रहीम क़िबला ने फ़रमाया।। एक बार मैं हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि के मज़ार की ज़ियारत के लिए गया। आप की मुबारक रूह ज़ाहिर हुई और मुझ से फ़रमाया कि तुम्हें एक फ़रज़न्द पैदा होगा। उस का नाम कुतबुद्दीन अहमद रखना। उस वक़्त मेरी बीवी उम्र के उस हिस्से को पहुंच चुकी थी जिस में औलाद का पैदा होना नामम्किन होता है। मैं ने सोचा कि शायद इस से मुराद बेटे का फ़रज़न्द यानी पोता है। मेरे इस वहम पर आप फ़ौरन आगाह हो गए और फ़रमाया मेरा मक़सद यह नहीं। बल्कि यह फ़रज़न्द (जिसकी ख़ुशख़बरी दी गई है।) ख़ूद तुम्हारे नुत्फ़े से होगा। कुछ अ़र्सों बाद दूसरे निकाह का ख़्याल पैदा हुआ और उसी से फ़क़ीर वलियुल्लाह पैदा हुआ। मेरी पैदाइश के वक़्त वालिद माजिद के ज़हन से यह वाक़िआ़ उतर गया। इस लिए उन्होंने वलीयुल्लाह नाम रख दिया। कुछ अर्सा बाद जब उन्हें यह वाक़िआ़ याद आया तो उन्हों ने मेरा दूसरा नाम कुतुबुद्दीन अहमद रखा। (अन्फ़ासुलआरिफ़ीन पे0: 110)

इस वाक़िए के ज़िक्र करने से हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के यह अक़ीदे ज़ाहिर तौर पर साबित हुए कि बुज़ुर्गों के मज़ारात की ज़ियारत के लिए जाना जाइज़ है, औलिया अल्लाह को विसाल (इन्तिक़ाल) के बाद भी इल्मे ग़ैब होता है कि हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने फ़रज़न्द के पैदा होने की ख़बर कई साल पहले देदी और साहिबे मज़ार बुज़ुर्ग ज़ियारत करने वालों के दिल में पैदा होने वाले वहम (ख़्याल) से भी आगाह हो जाते हैं।

★★★

शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी का अक़ीदा
(अलैहिर्रहमा, इन्तिक़ाल 1239 हि0)

आप फ़रमाते हैं कि शरहे मक़ासिद में है कि क़ब्रों की ज़ियारत और नेक लोगों की ज़ात से इन्तिक़ाल के बाद फ़ायदा हासिल किया जाता है। बेशक इन्तिक़ाल के बाद नफ़्स (रूह) का बदन और क़ब्र के साथ एक तअल्लुक रहता है। लिहाज़ा जब कोई शख़्स उस क़ब्र की ज़ियारत करता है और मय्यत के नफ़्स की तरफ मुतवज्जह होता है तो दोनों नफ़्सों (रूह) के दर्मियान मुलाक़ात और फ़ैज़ान का तअल्लुक़ क़ायम हो जाता है। इस में इख़्तिलाफ़ है कि ज़िन्दा की इमदाद ताक़तवर है या मय्यत की। बाज़ मुहक्क़िक़ीन ने मय्यत की इमदाद को ताक़तवर क़रार दिया है बाज़ हज़रात ने इस सिलसिले में रवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब किसी काम में हैरान हो जाओ तो क़ब्र वालों से मदद तलब करो। शैख़े अजल हज़रत अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने मिश्कात की शरह में फ़रमाया है कि किताब व सुन्नत और बुज़ुर्गाने दीन के क़ौल में कोई ऐसी बात नहीं पाई जाती जो उसके मुख़ालिफ़ हो और बात को रद करे।

(फ़तावा अज़ीज़िया जि0: 2 पे0: 108)

इस हवाले से हज़रत शाह अब्दुलअज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का अक़ीदा रौशन हो गया कि बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारों की ज़ियारत करना और अपनी मुश्किलात के हल होने के लिए उन से मदद तलब करना जाइज़ है।

★★★

फ़त्वा
ग़ैर सहाबा को "रज़ियल्लाहु अन्हु" कहना कैसा है?

सवालः क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन व मुफ़्तियाने शरीअत इस मसअले में कि "रज़ियल्लाहु तआला अन्हु" का लफ़्ज़ ग़ैर सहाबा के लिए इस्तेमाल करना कैसा है? बकर कहता है कि "रज़ियल्लाहु तआला अन्हु" का लफ़्ज़ बड़े-बड़े उलमा और बुज़ुर्गों के लिए भी जाइज़ है कि यह लफ़्ज़ सहाब-ए-किराम के साथ ख़ास नहीं है और ज़ैद कहता है कि कोई दीनी पेशवा ख़्वाह कितना ही बड़ा हो अगर सहाबी न हो तो उसे "रज़ियल्लाहु तआला अन्हु" कहना जाइज़ नहीं कि यह लफ़्ज़ सहाब-ए-किराम के साथ ख़ास है इसी लिए हज़रत अवैस क़रनी को जो आशिक़े रसूल और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह के मक़बूल थे। मगर इतने बड़े बुज़ुर्ग को भी "रज़ियल्लाहु तआला अन्हु" नहीं लिखा जाता। तो किसी दूसरे बुज़ुर्ग को जो सहाबी न हो "रज़ियल्लाहु तआला अन्हु" लिखना ग़लत है। लिहाज़ा इस के बारे में किस का क़ौल सही है? तफ़सीली जवाब बयान फ़रमाएं करम होगा।

मुस्तफ़ती मुहम्मद हनीफ़ रिज़वी
ख़तीब सुन्नी रिज़वी मस्जिद, कुर्ला, बम्बई

जवाबः ग़ैर सहाबा के लिए "रज़ियल्लाहु तआला अन्ह" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करना जाइज़ है। जैसा कि दुर्रेमुख़्तार मअ शामी जि0: 5 पे0: 480 में है "सहाबा के लिए" रज़ियल्लाहु तआला अन्हु" कहना मुस्तहब (बेहतर) है और ताबेईन वग़ैरा के

लिए"रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि" मुस्तहब है और उस का उलटा यानी सहाबा के लिए "रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि" और ताबेईन वग़ैरा उलमा व मशाइख़ (बुज़ुर्ग) के लिए राजिह (बेहतर) मज़हब पर "रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु" भी जाइज़ है।

और हज़रत अ़ल्लामा अहमद शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि नसीमुर्रियाज़ शरहे शिफ़ा क़ाजी अ़याज़ जि0:3 पे0:509 में फ़रमाते हैं"और अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के अ़लावह अइम्मा वग़ैरा उलमा व मशाइख़ को ग़ुफ़रान व रज़ा से याद किया जाए। तो "ग़फ़रल्लाहु तआ़ला लहुम" व "रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम" कहा जाए।

लिहाज़ा बकर का क़ौल सही है कि"रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु" का लफ़्ज़ सहाब-ए-किराम के साथ ख़ास नहीं है। बड़े-बड़े उलमा और बुज़ुर्गों के लिए भी जाइज़ है और ज़ैद का यह कहना ग़लत है कि कोई दीनी पेशवा ख़्वाह कितना ही बड़ा हो अगर सहाबी न हो तो उसे "रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु" कहना जाइज़ नहीं। और यह भी ग़लत है कि हज़रत अवैस क़रनी को इसी लिए"रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्ह" नहीं लिखा जाता है कि वह सहाबी नहीं थे। इस लिए कि मुहद्दिसे कबीर हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि जिन को कुतुब ख़ाना रहीमिया देवबन्द ने "अख़बारूलअख़्यार शरीफ़" के टाइटल पेज पर सय्यदुलमुहक़्क़िक़ीन और बरगुज़ीद-ए-जनाबे बारी लिखा है। उन्हों ने अपनी मशहूर किताब अशअतुल्लम्आत में जि0: 4. पे0: 743 पर हज़रत अवैस क़रनी को"रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु" लिखा है।

और हुज़ुर अवैस क़रनी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ऐसे ताबेई है कि जिस की मुलाक़ात बहुत बड़े-बड़े जलीलुलक़द्र (महान)

सहाबा से हुई है और हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ऐसे ताबेई हैं जिन की मुलाक़ात सिर्फ़ चन्द सहाबा से हुई है उनको महान आ़लिम हज़रत अ़ल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने शामी जि0: 1 मतबूआ देवबन्द पे0: 37, 36, 35 और पे0: 42 पर कुल छः जगह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है।

और उन्हीं हज़रत अल्लामा शामी ने अपनी इसी किताब उसी जि0 मतबूआ (प्रकाशित) देवबन्द पे0: 41, 38, 35 और 43 पर कुल सात जगह हज़रत इमाम शाफ़ई को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है और पे0: 37 पर हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है हालांकि यह दोनों बुज़ुर्ग ताबेई भी नहीं थे कि इमाम शाफ़ई की पैदाइश 150 हि0 में हुई और इन्तिक़ाल 204 हि0 में हुआ और हज़रत तुस्तरी का इन्तिक़ाल 283 हि0 में हुआ।

और हज़रत अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन मुहम्मद बिन अ़ली हसकफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने अपनी मशहूर किताब दुर्रेमुख़्तार मअ रद्दुलमुहतार जि0:1 मतबूआ देवबन्द पे0:45 पर हज़रत इमामा शाफ़ई को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा और पे0:43 पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा और यह भी ताबेई न थे कि उन की पैदाइश 118 हि0 में हुई।

और हज़रत अ़ल्लामा इमाम फ़ख़्रूद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने तफ़सीरे कबीर जि0:6 पे0:382 पर हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है। और हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने भी मिरक़ात शरहे मिश्कात जि0:1 मतबूआ बम्बई पे0:3 पर हज़रत इमाम आज़म और हज़रत इमाम शाफ़ई को रज़ियल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु लिखा है।

और सय्यदुल उलमा हज़रत सय्यद अहमद तहतावी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपनी मशहूर किताब तहतावी अ़ला मराक़ी मतबूआ कुस्तुनतुनिया पे0: 11 पर हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है।

और हज़रत अ़ल्लामा इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने एहयाउलउलूम जि0: 2 पे0: 7 पर हज़रत इमाम मालिक और हज़रत इमाम शाफ़ई को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम लिखा है।

और बुख़ारी की कुंजी लिखने वाले अ़ल्लामा इब्ने हजर असक़लानी ने मुक़द्दमा फ़तहुलबारी पे0:18 पर इमाम बुख़ारी को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा जिन की पैदाइश 194 हि0 में हुई इन्ही अ़ल्लामा इब्ने हजर असक़लानी ने इसी किताब के मुक़द्दमा (दीवाचा) पे:21 पर हज़रत इमाम शाफ़ई को भी रज़ियल्लाहु अ़न्हु लिखा। और हज़रत अबू ज़करिया इमाम मुहय्युद्दीन नुववी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने मुक़द्दमा (दीवाचा) शरहे मुस्लिम शरीफ़ 11 पर हज़रत इमाम मुस्लिम को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा जिन की पैदाइ-1 204 हि0 में हुई।

और हज़रत शैख़ अब्दुलहक़ देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अशअतुल्लम्आत जि0:1 पे0:16 पर हज़रत इमाम शाफ़ई को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है और इसी किताब इसी जि0 के पे0:9 पर हज़रत शैख़ ने इमाम बुख़ारी को भी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है।

और हदीस की मशहूर किताब मिश्कात शरीफ़ के मुसन्निफ़ (लेखक) हज़रत शैख़ वलीउद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़तीब तिब्रेज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने मिश्कात शरीफ़ के मुक़द्दमा पे0:11 पर हज़रत अ़ल्लामा अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसऊद बग़वी

को रज़ियल्लाहु अ़न्हु लिखा। और इन्ही अ़ल्लामा बग़वी को तफ़सीरे मआलिमुत्तनज़ील मतबूआ मिस्र के पे0: 2 पर भी रज़ियल्लाहु अ़न्हु लिखा गया है जो तबए ताबेई भी नहीं थे कि उन का इन्तिक़ाल छठी सदी हिजरी में हुआ।

और हज़रत अ़ल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी मिसरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपनी मशहूर किताब नसीमुर्रियाज़ जि0:1 मतबूआ मिस्र पे0:5 पर हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़याज़ को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है और यह भी तबए ताबेई न थे छटी सदी हिजरी के आ़लिम थे कि इनका इन्तिक़ाल 554 हि0 में हुआ।

और हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अशअ़तुल्लम्आत जि0: 1 पे0:17 पर और अख़बारूलअख़्यार मतबूआ कुतुब ख़ाना रहीमिया देवबन्द के पे0: 15, 16, 18, 21, 22, 23, 24, 209, 210, 211, 212, 213, 214 कुल 15 मक़ामात पर हज़रत ग़ौसे पाक शैख़ अब्दुल क़ादिर मुहय्युद्दीन जीलानी को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है जिन की पैदाइश 470 हि0 और बाज़ के मुताबिक़ 471 हि0 में हुई है।

और हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी ने मिरकात शरहे मिश्कात जि0:1 पे0: 27 पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक, हज़रत लैस बिन साद, हज़रत इमाम मालिक बिन अनस, हज़रत दाउद ताई, हज़रत इब्राहीम बिन अदहम और हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ वग़ैरहुम को रज़ियल्लाहु तअ़ला अ़न्हुम अजमईन लिखा हैं हालांकि इन में से कोई सहाबी नहीं हैं।

और हज़रत शैख़ अहमद सावी मालिकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपनी तफ़सीरे सावी जि0: 1 पे0: 3 पर हज़रत अ़ल्लामा शैख़ सुलैमान जुमल, अ़ल्लामा शैख़ अहमद दर्द, अ़ल्लामा शैख़ अमीर, अ़ल्लामा शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन सालिम हफ़नावी,

इमाम अवुल हसन शैख़ अ़ली सईदी अदवी, अ़ल्लामा मुहम्मद विन बदेरी दमयाती, अ़ल्लामा नूरूद्दीन अ़ली शवरा-मलसी, अ़ल्लामा हल्वी साहवे सीरत, अ़ल्लामा अ़ली अजहोरी, अ़ल्लामा बुरहान अलक़मी, अ़ल्लामा शम्सुद्दीन नुहम्मद अलक़मी, अ़ल्लामा इमाम ज़ियादी, अ़ल्लामा शैख़ रमली, शैख़ुलइस्लाम अ़ल्लामा ज़करिया अंसारी, अ़ल्लामा जलालुद्दीन महल्ली और अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती इन तमाम उलमा को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम लिखा है जिस में से कोई सहावी नहीं।

और अ़ल्लामा अवुल हसन नूरूलमिल्लत वद्दीन अ़ली विन यूसुफ़ शतनोफ़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपनी मशहूर किताब• वहजतुल असरार में ग़ैर सहावा को वे शुमार मक़ामात पर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है और हिदाया में साहवे हिदाया को उन के शगिर्दो ने कई मक़ामात पर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखा है।

इन तमाम हवालाजात से रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिर हो गया कि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लफ़्ज़ सहाव-ए-किराम के साथ ख़ास नहीं है अगर यह लफ़्ज़ उन के साथ ख़ास होता यानी ग़ैर सहावा को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखना जाइज़ न होता तो इतने बड़े-बड़े उलमा जो अपने ज़माने में इल्म के आफ़ताव व माहताव थे यह लोग ग़ैर सहावा को रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हरगिज़ नहीं लिखते।

यहाँ तक कि आम देवबन्दी वहावी जो रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सहावा के साथ ख़ास समझते हैं और ग़ैर सहावा को रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहने पर लड़ते झगड़ते है। उन के पेशवा मौलवी क़ासिम नानौतवी और मौलवी रशीद अहमद गंगोही को भी रजियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा लिखा गया है जैसा कि तज़किरतुर्रशीद जि0: 1 पे0: 28 पर है।''मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहव व मौलाना रशीद अहमद साहव रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा चन्द रोज़ के

वाद ऐसे हम सवक़ बने कि आख़िरत में भी साथ न छोड़ा'' और कुतुव ख़ाना रशीदिया देहली ने बुख़ारी शरीफ़ की दोनों जिल्दों के टाइटल और पहले वर्क़ (पेज) पर हज़रत इमाम बुख़ारी को रज़ियल्लाहु अ़न्हु लिखा है।

कुरआन करीम से भी इस बात की ताईद होती है कि रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लफ़्ज़ सहाव-ए-किराम के साथ ख़ास नहीं है। पारा तीस सूरह ''अलवय्येनह'' में है 'रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व-र-ज़ू अ़न्हु। ज़ालि-क लिमन ख़शि-य रव्वहु' यानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम वरज़ू अ़न्हु उन लोगों के है जो अपने रव से डरें। जैसा कि तफ़सीरे मदारिक जि0: 4 मिस्री पे0 371 में है। (ज़ालिक) अइर्रिज़ा लिमन ख़शि-य रव्वहू इस का मतलव यह है कि रज़ा यानी रज़ियल्लाह अ़न्हुम व-र-ज़ू अ़न्हु उन लोगों के लिए है जिन के दिल में रव का ख़ौफ़ हो।

और रव की ख़शियत (ख़ौफ़) उलमा ही का ख़ास्सा है। जैसा कि अ़ल्लामा इमाम फ़ख्रूद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह आयते करीमा''ज़ालिक लिमन ख़शिय रव्वहू'' के तेहत फरमाते हैं''इस आयते करीमा को दूसरी आयत से मिलाने पर इल्म और उलमा की फ़ज़ीलत सावित हुई है इस लिए कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि सिर्फ़ उस के वन्दे उलमा ही को ख़शियते इलाही (खुदा से डर) हासिल होती है तो इस आयते करीमा से सावित हुआ कि ख़शियते इलाही उलमा का ख़ास्सा है।

(तफ़सीरे कवीर जि0: 8 पे0: 460)

और तफ़सीरे रूहुल वयान जि0: 10 पे0: 491 में इस आयते करीमा''ज़ालिक लिमन ख़शिय रव्वहू'' के तेहत है यानी ख़शियते इलाही जो खुदा-ए-तआ़ला के मामलात व हालात जानने वालों का ख़ास्सा है इसी पर तमाम कमालात इल्मिया व अमलिया का दारो मदार है कि जिन से दीनी और दुनियवी वरकतें हासिल

की जाती हैं।

खुलासा यह हुआ कि रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम व-र-ज़ू अन्हु उसके लिए है जिसे ख़शियते इलाही हो। और ख़शियते इलाही खुदा-ए-तआला के आमाल व हालात जानने वालों के लिए है लिहाज़ा साबित हुआ कि रज़ियल्लाहु अन्हुम वरज़ू अन्हु खुदा-ए-तआला के उमूर व अहवाल जानने वालों के लिए है यानी जलीलुल क़द्र उलमा व मशाइख़ के लिए न कि वे अमल उलमा के लिए है जब वह बे अमल हैं तो उन को ख़शियते इलाही (खौफ़े खुदा) हासिल नहीं है। और ख़शियते इलाही नहीं है तो वह सिर्फ़ नाम के आलिम हैं हकीकत में आलिम नहीं हैं।

तफ़सीरे ख़ाज़िन और तफ़सीरे मआलिमुत्तनज़ील जि0 5 पे0 302 में हैं: इमाम शोबी ने फ़रमाया कि आलिम सिर्फ़ वह शख़्स है जिसे खुदा-ए-तआला की ख़शियत हासिल हो।

और तफ़सीरे ख़ाज़िन के इसी पे0 302 पर है: इमाम रबीअ़ बिन अनस ने फ़रमाया कि जिसे ख़शियते इलाही (खुदा का डर) हासिल न हो वह आलिम नहीं।

साबित हुआ कि रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाअमल उलमा व मशाइख़ के लिए है। मगर यह लफ़्ज़ चूंकि उर्फ़ में बड़ा तअज़ीम वाला है यहाँ तक कि बहुत से लोग उसे सहाब-ए-किराम ही के लिए ख़ास समझते है। लिहाज़ा उसे हर एक के लिए न इस्तेमाल किया जाए बल्कि उसे बड़े-बड़े उलमा व मशाइख़ (बुज़ुर्ग) ही के लिए इस्तेमाल किया जाए जैसे कि हमारे बुज़ुर्गों ने किया है।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

ख़ादिम इफ़्ता अमजदिया अरशदुलउलूम

ओझागंज, ज़िला बस्ती

21 सफ़र 1401 हिजरी

अनवारे शरीअ़त (अच्छी नमाज़)

इस किताब को फकीहे मिल्लत मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद साहब किबला अमजदी ने बीस साला फतवा नवेसी के तजरेबा के बाद लिखी है जो ७७ उनवान पर दीनी मालूमात का खज़ाना है। मुख़तसर होने के साथ इतनी मुफीद किताब आज तक निंगाह से नही गुज़री-इस किताब के कुछ उनवानात इस तरह हैं।

अल्लाह तआला के बारे में अकीदा, फरिशते, खुदाए तआला की किताबें, रसूल और नबी, हमारे नबी अलैहिस्सलाम, कियामत का बयान, मरने के बाद जिन्दा होना, शिर्क व कुफ्र और बिदअत का बयान, वजू और गुस्ल का बयान, तयम्मुम का बयान, इस्तिनजा का बयान, पानी और जानवर के झूटे का बयान, कूयें का बयान, नजासत का बयान, हैज़ व नेफास और जनाबत का बयान, नमाज़ के वक़्तों का बयान, वजू और नमाज़ के तरीके वगैरा वगैरा खुलासा यह कि फकीहे मिल्लत किबला ने दरया को कोज़ा में बन्द कर दिया है। फोटू आफसेट छपाई-बेहतरीन कागज़, खूब सूरत चार रंग का टाइटल...........

उर्दू - हिन्दी



Rs. 120/-

MAKTABA FAQIH-E-MILLAT
523/2, Waheed Kutub Market, Matia Mahal
Jama Masjid, Delhi-6, Mob.: 8595439366

KUTUB KHANA AMJADIA
Town Club, Pakka Bazar, Gandhi Nagar
Basti-272001 (U.P.), Mob.: 9415162692